CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

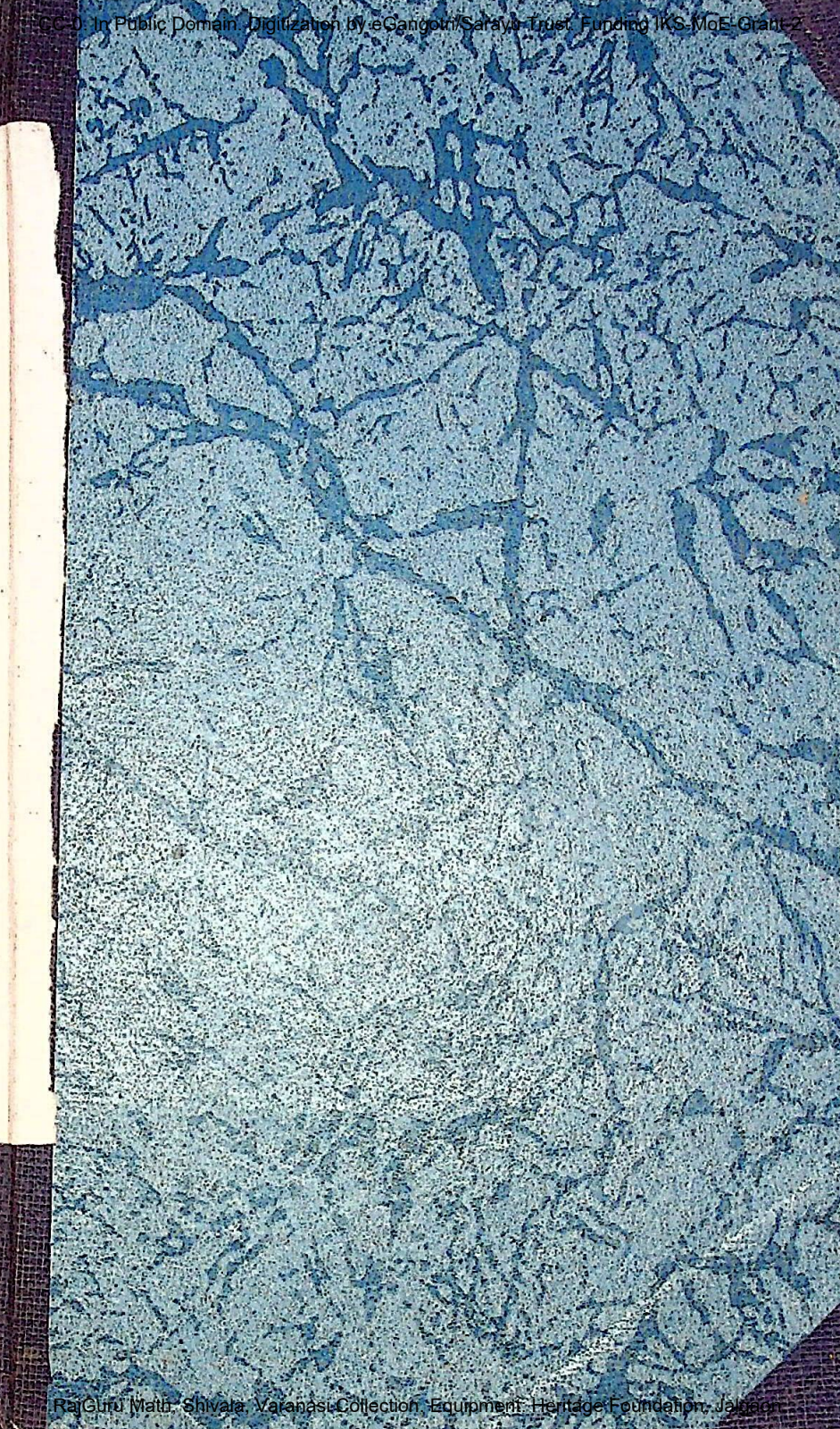

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgac

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding, IKS-MoE-Grant

भोजपुरी के चेतनगर पत्रिका

कोइल

सर अंक—७-८-९ फरवरी से अप्रील '९०

कहानी विशेषांक-२

☐ प्रबन्ध सम्पादक :
डॉ० धीरज कु० भट्टाचार्य

थि सम्पादक :
वंती प्रसाद द्विवेदी

☐ सम्पादक :
ब्रजभूषण मिश्र

☐ संयुक्त-सम्पादक :
कुमार विरल

☐ सहायक सम्पादक :
दिनेश्वर मिश्र 'दिनेश'

संरक्षक मण्डल :

वंश मिश्र (मंत्री जी), श्री शैलेन्द्र नारायण सिंह, श्री सोनालाल साहू,
वर नाथ मिश्र, श्री भैरव राय, श्री नन्दकिशोर मतवाला ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

चिट्ठी मिलल

कोइल के कहानी विशेषांक—१ मिलल मन अगराइल। रउआ सभे के भगीरथ प्रयास से भोजपुरी के गंगा बहत रहस इहे मनोकामना बा।

एह अंक के बारे में हम आपन कुछ विचार आ सुझाव देल चाहत बानी। पहिला नंबर त ई कि रउआ जे सम्पादकीय लिखले बानी ऊ हड़बड़ में लिखल बा आ ओकर हाल हड़बड़ कइले गड़बड़ होला, हो गइल बा। रउरा पढ़ के नइखीं लिखले। सुनले सुनावल बात प लिख मरले बानीं। जइसे भोजपुरी संगम, आ छोटीमुटी गाजी मियाँ कहानी संकलन ना ह। पहिला में हो सकत बा कुछ कहानी होखे। पूरा ना। दूसरा लघु-कथा संकलन ह। ओंही तरे हमरा जानकारी में चन्द्रभूषण सिन्हा जी कवनो भोजपुरी कहानी नइखन संकलित कइले। एह प्रतिनिधि कहानी भोजपुरी के सम्पादक खाली श्रीमंते जी नइखन। दोसरा सम्पादक के भी नाम देवे के चाहत रहे। कुछ अइसनो पुस्तक के चरचा बा जे प्रकाशित होखे के रहे बाकिर प्रकाशित ना हो पावल आ रउरा सूचना मात्र देख के ओकर चरचा क देले बानीं जइसे कथा सरोवर हम नइखी देखले आ हमरा जानकारी में किताब प्रकाशित नइखे भइल। महिला कथाकारन में रूपश्री आ राधिका देवी श्रीवास्तव के नाम छूटल बा। पुरवैया कहानी प्रधान पत्रिका ना रहे। भोजपुरी कथा आन्दोलन के आगे बढ़ावे में, भोजपुरी अँजोर, उरेह, पाती आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय बा।

सपना [जगन्नाथ] आसरा [कपिलदेव सिंह] आज के गाँवन में होत बदलाव के कहानी कहे में सफल रहल बा। उहंवे प्रो० ब्रजकिशोर के रिहर्सल विश्वविद्यालय में व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ गोलबंद होत लोगन के माध्यम से समूचा समाज के गोलबंद होखे के प्रेरणा दे रहल बा। भगवती प्रसाद द्विवेदी के कहानी आर्थिक दबाव के चलते बदलत मानसिकता आ इ पीढ़ी के वैचारिक संघर्ष के सशक्त अभिव्यक्ति कर रहल बा। शेष कुशल बा।

राउर

कृष्णनन्दन 'कृष्ण' पटना

कोइल के अंक ४, ५, ६—कहानी विशेषांक मिलल धन्यवाद। एह अंक के कहानियन पर बिस्तार से चरचा होखे के चाहीं। गाँव के पढ़ुआ लोग शहर में नौकरी करे जाता आ गाँव में साल-दू-साल पर लौटत बा। इ लोग त पिकनिक नजर से गाँव के देखत बा। सब खरावे लागत बा।

शेष पृष्ठ ३३ पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादकीय

समस्या सेराए ना

तपिस तवे लागल। देखते-देखते, हँसते-खेलते, रोवते-गावते, दिन पंक्षी फुर्र-फुर्र उड़ि गइल। समूचा भोजपुरी के कउल-करार तँवाता एही तरी। चुनाव आइल मुकुटो बन्हाइल। दरबारो लागे के शुरु हो गइल। एंही दँवरी में भोजपुरी के पंवटा असही परल, पचरवो ना लागल। पंजाब, बोड़ो, झाड़-खण्ड आ कश्मीर कँहरे लागल। बाबरी मस्जिद आ राम जन्म-भूमि अजगर लेखा मुँह बवले तिकवत बा। भागलपुर भोग चुकल। युद्ध कि महायुद्ध? साइत हिछते-हिछत बोला लिहली। हऊ का निअरे पिआना प होखत बा जुटान, साइत होई घमाशान।

समस्या सेराए ना, भीतरे-भीतरे दँवकत रहेला। भाषा के छुआ छूत। भाषा के जाति-पाँति। भाषा के हेंठई। सब कुछ जनता के नाँवे छोड़ल बा। आखिर जनता चुप काहे बिआ। कतहुँ ओकरा भीतरे कुछ धधकत त नइखे? सेतिहे साहित्यकार बनल बा। सूत मत जाव। आखिर जबाव देही ओकरा बा।

भोजपरी भँजावल जाए वाला भाषा मति बनो। खाली अएना-बएना खा के भोजपुरी के कथा साहित्य ना पोख्ता होई। धरे के जड़ त धँरा गइल धड़। आधुनिक कहानिअन के शुरूआत कुछ असहीं बा। गद्य-युग में भोजपुरी के कहानी आन भसन के कहानिअनो अइसन पँतरा बाजी सिख रहल बा। कुछेक के छोड़ि के नकल पचिसीएं जादे देखल जा सकेला। जादे कथाकार लोग एके बिषय आ ऐके बतिया के रूई धुनले बा। पाठक के कब्बो परवाह कइले बिना लोग हिन्दी लेखा हहुआइल हुड़दंग शुरु कइल। जबकि हिन्दी में पाठकन के संख्या बढ़ावे में चन्द्रकांता संतति, भूतनाथ अइसन चवगर काम भइलि सन। कुशहबाहा कान्त जइसन कथाकार बदनाम होइयो के सरस कथा गढ़ के पाठक बढ़वलसि। भोजपुरी में एके हाली बड़का पुरस्कार वास्ते खाली टेकनिकल चीज के गढ़ाई होखे लागल। आपन राह अपना से तय करे के सोंचे ना रह गइल। पाठक एह से भोजपुरी के कबनो गद्य साहित्य के साथे नइखे। अइसन बात भोजपुरी कविता ला गीत के संगे नइखे।

आजु भोजपुरी कहानी कारन के एहि दिसाई सोंच के पाठक तइयार करे वाली साहित्य रचे के शुरुआत करे के चाही जवना में साहित्यकि संस्कार पनपे के काम शुरू हो सको।

—कुमार विरल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुलुदा आ गोहाली

गुलुदा के साथ फेरु भेंट हो गइल। चेहरा त ओइसने झलमलात रहें, बाकिर, चले के बेरा कुछ लंगरातों रहलन। पुछलीं, गुलुदा अपने के ई हाल कइसे ?

चट से जवाब ना दिहलन। अबकी बेर आसन पर बइठ के धीरे-धीरे पयेर के धूड़ा अपना गमछा से झाड़े लगलन, आ मनही मन कहलन, केकर गोहाली आ केकरा देवेके पड़ता दांना-चाड़ा !

बात कुछो समझ में ना आवत रहे। चुप रहलीं। आ धीरे से खइनी-चून्ना के डिबिया आगे बढ़ा दिहलीं।

तवले गुलुदा के परेशानी आ थकावट कुछ दूर हो गइल रहे। कहलन, ईसा-मसीह भगवान बुद्ध के शिष्य भगवान आनन्द से दीक्षा आर बारह साल के कठोर तपस्या ईहे तक्षशीला के घोर वन में लेले रहें, जानेल कि ना ?

अइसन कवनो इतिहास आज तकले जानत ना रहीं। कहलीं, गुलुदा, इतिहास के पन्ना में त ई बात नइखे ! बाकिर, अनजान बानी, गस्ताखी माफ कइल जाव।

—धिक् तोहनी के इतिहास आ ओकर पढ़ाई। अंगरेज-साहब जे लिखले होइहन ओकर पन्ना चटला से नू हमनी के ई दशा बा। जाये द, कबहीं मोका मिले त "भारत-इतिहास के अंधकार-युग के एगो दस्तावेज" उलिट के देख लिह।

ई नाम के कवनो किताब अबहीं ले हमरा नजर ना आइल रहे। मन ही मन आपन सन्देह चांप के पुछलीं, गुलुदा, एकर लेखको अपने बानी ?

गुलुदा के मुँह पर खुशी के लहर बिखरे लागल, तोहर दिमाग के ताजगी वेमिसाल बा, आ इहे कारण बा कि तोहरा जवरे कुछ बतियवाला से आनन्द आवेला। हँ ठ, ई किताब के पुरान एडिशन उपलब्ध नइखे, बाकिर, नइका एडिशन "टरेन्टो-इउनिवर्सिटि" के देख-रेख में छप रहल बा। नइका एडिशन के एगो कांपी तोहरा के देहब।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"भारत इतिहास के....." टरेन्टो से काहे छापे के पड़ल पूछे जात रहीं।
बाकिर, बात बढ़ जाई एहि से चुप हो गइलीं।

गुलुदा तबले खइनी के पहिलका चुटुकी मुँह में डाल देले रहलन। कहलन, देख, अब उमीर के पन्ना धीरे-धीरे घट रहल बा। बहुतो काम करे के रहल, ना कर पवनी। आफशोस रह जाता कि आगे केहुं लउकत नइखे जे सम्भाल के ले जाये नइया! परभु के मरजी बा (कहके मुड़ी पर कर जोड़ के परनाम कइलन)!

कहलीं, गुलुदा, एतने निहाश रउरा के कहिओ ना देखले रहीं। काहे अतना उदास बानी?

छोड़; हँ त, जे बतावत रहलीं—उरियेन्टोलाजी (प्राच्य-विद्) के महान सेवक आ संस्कृत के धुरंधुर पण्डित प्रो० किगली सिमारटीन कुछ दिन पहिले हमरा से मिले अइलन। एशियाटिक सोसाइटी के फाइल उलिटते-पुलिटते आ धूरा झाड़त-पोंछत एकबेर उनकरा से हमर परिचय भइल रहे। करीब पचीस-तीस साल के बात होई। एगो विदेशी-सज्जन के हमरे लेखा किताब-दस्तावेज के धूरा पोछत देख के हमरा बड़ा लाज लागे लागल। ऊ घड़ी सोसाइटी के हालत नाजुक रहे। हम आगे बढ़ के उनकरा से छमा मंगली आ कहली, दियाव, कितबवा हम पोंछ देतानी।

तेसे का, तेसे का, करते-करते कहलन, किताब में जतने गरदा-धूरा बइठेला ओतने ओकर किमतो बढ़ जाला।

बुझलीं कि एगो सांचो के विद्वान हमरा से भेंटा गइलन। मित्रता बढ़े लागल। बहुतो बेर ऊ भारत के दौड़ा कइले रहलन आ हमरो के उनकर कर्मस्थल टरेन्टो (TORENTO) बुलवले रहलन। बाकिर, हमरा के जायँ के सवाँस कहिओ ना मिलल।

एह बेर के बात कुछ अलग रहे। प्रो० किगली अबले हमरा से व्यवहार में सिरिफ 'किगु' बन गइल रहे। हमरा डेरा पहुंचतही किगु हमरा के छाती से लगा लिहलन आ कहलन. डियर गुलु, एह बेर तोहर कुछ बात ना चली, काहे की हम धर्म-संकट में बानी। जब-जब संसार में धर्म के संकट आवेला भारत में शंकर आ तोहरा जइसन महापुरुष के आविर्भाव होला।

बुझली की मामला खास रुप से बिगड़ल बाटे। पुछलीं, चनऊ के सत्तु पियब नू?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding KS-MoE-Grant-2

आह, सत्तु, कतना दिन ले छूट गइल रहे ! भउजी के बुला के एक गिलास तुरन्त मंगाव ।

कहलीं. भउजी के जरुरत ना पड़ी, एतही सब कुछ तइयार बा । बुइयाम से सत्तु निकाल के गिलास में घोड़े लगलीं । किगु सांचो कुछ भूखल-पियासल रहे । हमरा हाथ से सत्तु-गिलास करीब-करीब छिनके पिये लगलन ।

पुछलीं, कइसन संकट, खुल के वतइव तब नू जानब आ राहता दिखाई दी ?

तू त जानते बाड़ कि ईसा-मसीह के माने वाला भक्तन के कइ-कइगों गोट बा, जेमे "जिउनाइट सम्प्रदाय" के बात कुछ अजवे बा । मसीहा के 'पुनर्ज्जीवन' के बाद के इतिहास अबहीं तकले घन-घोर अंधेरा में डूबल रहलख ह, बाकिर, राउर क्रांतिकारी उन्मोचोन के बाद धीरे-धीरे साफ हो रहल बा ।

बाकिर, एह में धर्म-संकट के बात कहाँ से आ रहल बा ?

ईसा-मसीह पुनर्ज्जीवन के बाद भारत के प्राचीन वानिज्य-सड़क (जे इरान-तुरान होके, हिन्दकुशखाइबार पार होत) धंइले काश्मीर में पहुंचलन आ कुछ दिन पर्यटन कइलन । बाकिर, उनकरा आत्मा के तुष्टी ना भइल, आ उ आगे पूरब के ओर बढ़े लगलन । ओह समय तक्षशीला में बुद्ध-शिष्य आनन्द (जे 'धम्मानन्द' के नामो से जानल जाता) के धर्म-मत के प्रचार-प्रसार रहे । ईसा आनन्द से मिललन आ शिष्य बनके तपस्या आ एगो नया मोड़ अपना धर्म में कइलन, जेकर नतीजा से पयदा भइल 'जिउनाइट' सम्प्रदाय । ई सब बात के विस्तृत रुप से अपने 'भारत-इतिहास के....दस्तावेज' में लिखले बानी । आ अपने इहो कहले बानी कि संस्कृत 'जीवन' शब्द से आइल बा 'जिउन', आदि, आदि ।

धर्म-संकट अबही तकले नइखे लउकत । हम बीच में टोकलीं ।

तनका बात पर अउरो ध्यान दीं । 'जिउनाइट' धर्म भारत के माटी पर पयदा भइल । बाकिर, उ फुले-फले लागल तिब्बत-चीन-साइवेरिया-अंटार्टी का पार होत अमेरिका के 'माया-सभ्यता के बीच । आज ऊ सम्प्रदाय के लोग वेहद धन-जन से पूरल बा, आ अपन आत्मा के शान्ति खातिर अपन तीर्थ ईसा-के-जन्म-स्थली खोज रहल बा ।

इउ आर राइट किगु, एबसलिउटलि राइट (you are right Kigu, absolutely right) ! बाकिर, इ धर्म-संकट त हमरो बा, हमरो राम के जन्मस्थली अबहीं ले शिला-स्तर में बा ! हमनी कुछ कर न पवली !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाकिर, अपने आकर लोकेशन (Location) जाने गइल बानी आ कुछ दिन में एगो सुरम्भ-मन्दिर बना के भक्त-जन के मनोकामना पूरा करी।

जाये द, जाये द ! केकी इच्छा के केहु ना जानस। बाकिर, जानेल तू हिथरो-हवाइ-अड्डा पर हमरा जूता ना पहिनला के नतीजा (पुरान बात इयाद पर गइल)।

किगु कहलन, हम अपने के बारिक-से-बारिक मरक्को-चमरा के जूता बनवा देहब, तनको कष्ट ना होई।

बाकिर किगु, बेथलहेम के बाथान तक त हमनी पहुंचीये जायेब, घोड़सारा (घोड़ा के रहे के जगह) कइसे नजर आई ?

अतने में किगु अपन सूटकेस खोल के कुछ प्राचीन पेपीरस कागज पर 'सेगुती-भाषा' (प्राचीन माया-केन के एगो मृत-भाषा) में लिखल कुछ दस्तावेज हमरा सामने पसार देलन।

बुझाइल ईसा-मसीह के कवनो शिष्य के लिखल मसीहा के जीवनी सेगुती-लिपि में लिखके रखले रहे। प्रोफेसर किगलु के मेहनत के फल-स्वरूप आज दुनिया के सामने आइल होखे।

कहलीं, ई लिपि के पढ़े वाला जे दू-चार जना विद्वान अंतर्राष्ट्रीय स्तर में बाड़न से में हमरो नाम आवेला। बाकिर, लिपि पढ़े के कठिनाइ के छोड़ीये दीं। मुस्किल बा प्राचीन पहचान (नामोनिशान) के वर्तमान नवीकरण के सही-सही मिलावल आ ओकर सही निरुपन कइला के (Locaton)।

डियर गुलु, इ काम हमनी सही जगह पर पहुंचला के बाद ही कर सकतानी। अब के ना जानता की राम-जन्म स्थली सही-सही निरुपन करे में राउर कतना महान योगदान रहे।

बुझली किगु हमरा के धीरे-धीरे फंदा में बांधे ही लिहले रहे। अवर हम हाँ कहिये देनी। जेकर नतीजा इहे भइल कि मरक्को-चमरा के मुलायम नरमी हमरा पयेर के रक्षा करे ना सकल।

× × × ×

अबही तकले गुलुदा के कहानी में होस खो देले रहीं। गुलुदा के चुप हो गइला के बाद पुछली, तब का यीशु-के-जन्मस्थर्ल, के सही निरुपन हो गइल ?

इहो कहे के पड़ी ! जिउनाइट सम्प्रदाय के ओर से बहुत मार-दंगा के बाद ऊ जगह में भक्त-चर्च बने जा रहल बा, कालु के समाचार में छपले रहे।

कहके गुलुदा लगरते-लगरते उठ के चल देलन।

□धीरज कुमार भट्टाचार्य

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का लिखाव

□ विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव

ऊ सब लोग जे भोजपुरी भाषी बा, जे भोजपुरी क्षेत्र में रहत बा, जेकरा भोजपुरी से प्रेम बा, जे भोजपुरी के बढ़न्ती चाहत बा, ऊ एह दिसाईं का करो ई सवाल ओ लोग का मन में उठत होई। संभे कविता, कहानी, उपन्यास नाटक ना लिख सकेला काहे कि साहित्य रचना के प्रतिभा—चाहे ऊ शास्त्रीय होए जइसे काव्य-शास्त्र आलोचना, चाहे ललित साहित्य होए जइसे उपन्यास कविता, कहानी सबका में ना होए। मगर भाषा के सेवा एतने से ना होए। शुद्ध साहित्य का अलावे बहुत कुछ करेके होला। ऊ सब कल्पना प्रधान ना होके यथार्थ प्रधान बा। ओ सब में क्षेत्र विशेष के इतिहास, भूगोल, सामाजिक-राजनीतिक-धार्मिक परम्परा, उत्थान-पतन, ह्रास-विकास, के रूप छिपल बा। ऊ सब सांस्कृतिक परम्परा के दर्पण बा। अइसन काम करेला पांडित्य के बहुत जरूरत नइखे लगन के परिश्रम के, समर्पण के जरूरत बा। इहाँ कुछ अइसने विषय के चर्चा कइल जात बा।

आदमी जहाँ भी रहेला-बसेला उहाँ का इतिहास, भूगोल आ परम्परा से जुड़ल रहेला। उ भी जहाँ बा एह प्रभाव से अछूता नइखे। ई सब बोल-चाल, खान-पान, रहन-सहन, लोकाचार के प्रभावित करेला। आदमी जहाँ भी बा ओकरा आस-पास मठमंदिर, कवनो स्मारक, खंडहर, कुँआ, पोखरा, नदी-नाला, अवशेष जरुर होई। हो सकेला ओकर स्वयं कवनो इतिहास होए, कवनो घटना ओकरा से जुड़ल होए। ओकर कारण, ओकरा पीछे के भावना, लोकरुचि आस-पास का लोक स्मृति में मौजूद होई। ओकरा के खोजल-जानल, संग्रह कएल जरुरी बा। लोक-मानस में परम्परा के धरोहर सँईत के धएल रहेला, धईल बा, ओकरा के जाने के, बूझे के, जोगावे के जरुरत बा। आज ऊ पीढ़ी खतम होए का सीमा पर पहुँच रहल बा। पहिले ओकरा पास जाके ई सब प्राप्त करेके होई। फेर लिखेके काम आसान हो जाई।

हर क्षेत्र में मनोरंजन के तरह-तरह के रूप चलन में रहेला। नाच के कएगो रूप मिली जवन आज आधुनिकता का प्रवाह में अब धीरे-धीरे लोप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होए का रास्ता पर बा। अब त लाउड-स्पीकर पर टेप बजा के श्लील-अश्लील सब तरह के गीत बजा के जादातर काम चलावल जाता। मँगर अलग-अलग तरह का नाच के जरिए जे शुद्ध मनोरंजन होए, से अब मिटल जा रहल बा। एकरा कलाकारन का पास केतना कथा गीत होई, केतना अइसन गीत होई जेकर अबही ले केहू संग्रह ना कर सकल होई। हर नाच का विद्या के अपन विशेषता, अलग पहचान बा। एकरा विषय में बहुत काम करे के गुंजाइश बा, ओइसहीं ग्राम-गीतन में मौनवीय संवेदना के जे मोहक मर्मस्पर्शी रूप मौजूद बा। ओकरा के उजागर करे वास्ते ओकर संग्रह क्षेत्रीय आधार पर कइल जा सकत बा। अब ऊ सब गीत ऊ सब धुन भी लोप होए का राह पर बा। ओकरा के सहेजल जाय। अगर और केहू कर चुकल बी त एसे उत्साह में कमी के जरुरत नइखे। हम-रऊरा, जहाँ बानी उहाँ का बारे में त काम करीं। बाद में ओकरा उपयोग का बारे में विचार होई, ओकर महत्व ठहरावल जाई।

हर क्षेत्र में ग्राम-देव-देवी, कुल-देव-देवी का पूजा, अनुष्ठान के परम्परा बा। एकर विधि-विधान, एकर परम्परा से हस्तांतरित इतिहास आ महत्व बा एकर पता लगावे के काम बा। एतने ना, एह से संबंधित तरह-तरह के गीतों चलन में बा। समाज का जातिगत संरचना से भी ई सब जुड़ल बा। एमे खोज करे के बहुत अवसर बा। लगभग चार-पाँच दशक पहिले पेशेवर घूमन्त भिक्षादन परम्परा से जुड़ल छिट-फूट लोग विभिन्न छन्द शैली में कथा-गीत सुना-सुना के जीविका कमाय। सामाजिक आर्थिक बदलाव का चलते आजीविका के ई साधन दिने-दिन मन्द पड़त गइल बाकिर मौखिक परम्परा से आवत ऊ सब कथागीत आ छन्द भी अब विस्मृति का गहिराई में डूबल जा रहल बा। एकरा के जोगावे वास्ते एकर खोज-पूछ कइल जरूरी बा। बुन्देलखण्ड का "हरगंगा" कह के गावत-घूमत-माँगत पेशेवर भिक्षाटने टोली का मुँह से सुन के सुभद्रा कुमारी चौहान का "झाँसी की रानी" कविता लिखे के प्रेरणा मिलल रहे।

(१) बुंदे ले हर बोलो के मुख
हमने सुनी कहानी थी;
खूब लड़ी मरदानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gfant-2

गुलामी से आजादी का तरफ समाज का गति से जुड़ल केतना आदमी आ केतना घटना के इतिहास सगरो बिखरल पइल बा। एह "स्वतन्त्रता महायज्ञ" में हर क्षेत्र के योगदान बा। बड़ा इतिहास ग्रंथ में ओकर उल्लेख भले ना होए बाकिर अपना छोटा स्तर पर ओकरा के भूला देहल का उचित बा ?

एही तरह हर क्षेत्र के खेल-कूद, उद्योग धन्धा, पहनावा, फसल, जीवन शैली अतीत आ वर्त्तमान का संदर्भ में जाने के चीज बा। हर क्षेत्र में विलक्षण मानवीय गुण, बल-पौरुष साहस से भरल समय-समय पर कुछ आदमी भइल होई, जे निस्वार्थ भाव से देश आ समाज ला समर्पित रहल होई।

जेकरा बारे में दिनकर के ई पाँती सटीक लागु होत बा—

जो अनगिन लघुदीप हमारे
तूफानो में एक किनारे।
जल-जल कर बुझ गये, किसी दिन,
माँगा नही स्नेह मुँह खोले।

अपना स्तर पर ऊ भुला देवे लायक नइखे। एह सब का विषय में बहुत कुछ कएल जा सकेला। ई जरुरी नइखे कि सभे-कविता-कहानी लिखे। पहिले सोचे के, खोजे के मानसिकता बन जाई तब लिखे ला बहुत विषय मिल जाई।

भोजपुरी पत्रिकन का सामने प्रकाशन लायक सामग्री के अभाव एगो समस्या का रूप में खड़ा बा। सामग्री का अभाव में अंक समय पर निकाले में दिक्कत होत बा। जे पाठक वर्ग कौनो भोजपुरी पत्रिका के तैयार हो चुकल बा आ हो रहल बा ओकरा समय पर पत्रिका ना मिलला से मन में कुछ अकुलाहट होला। एसे भोजपुरी भाषी सब स्त्री-पुरुष जे पढ़ल लिखल बा, जे कुछ लिख सकत बा, ओकरा चाहीं कि एह दिसाई कुछ करे। रऊरा गाँव घर का स्तर पर दू-चार आदमी एक राय के एकट्ठा होके, मिल के कुछ करे के चाहीं। डेग बढाएवं त आगे के रास्ता अपने आप निकलत जाई। एकरा ला एगो और मददगार मिली। ऊ होई भोजपुरी पत्रिका। गाँव में एगो-दूगो भोजपुरी पत्रिका मंगाई। ओ में प्रकाशित सामग्री पढ़लो से कुछ प्रेरणा मिली रास्ता लउकी। साधारण विषय पर लिखते-लिखते १०-२० आदमी मे से कुछ लागे स्तरीय साहित्य लिखेवाला निकल जाई। जरुरत बा भाषा-प्रेम के व्यावहारिक रूप देवे के, मन लगावे के कुछ कर के।

□ सुगौली, चम्पारण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूख

□ डॉ० शंकर प्रसाद

ट्रेन हिचकोला खात बढ़ल जात रहे। अंधियारा में दूर भागत बिजली के लट्टू जोनीह अस बुझात रह सन। रामू खिड़की के पासे बइठल दूर भागत बिजली के लट्टू के ओर अइसे देखत रहे, जइसे वोही रौसनी में ओकर भविष्य छुपल वा। पसिंजर गाड़ी छुक-छुक-छुक-छुक-छुक आवाज करत रात के अनहरिया के छाती चीरत आगे बढ़त रहे। जवना डिब्बा में रामू खिड़की के पास बइठल रहे, ओहमें ओकर सीट के साथे एगो भिखारी ठंढ में ठिठुरत मोटरा अस बन्हाइल बैठल रहे। गोड़ मुड़ीं से सटवले ऊ एगो सम्मने लागत रहे। पूरा डिब्बा में दु गो सवारी। ऊपर लट्टू अईसन वल्व अइसे जलत रहे जइसे केहू ढिबरी के टेम्हीं छोट क देले होखे। समय करीब बारह वजे के होखी। चिचियात, चिघाड़त छुक-छुक के आवाज करत गाड़ी कवनो टुटही प्लेटफार्म पर रूकल। बिजली नदारद। अनहरिये में एकाध आदमी के चढ़े के आवाज सुनाई पड़ल। अब ऊ डिब्बा तनी गरमाए लागल। दोई सांसन के बीच में तीन चार अउर सांसन के आवाज आवे लागल। रामू के खाली ई एहसास भइल कि एकाध आदमी अउर ओकरा साथे डिब्बा में सह-भागी बनि गइले। जइसे ठहरल तालाब के पानी में केहू ईंटा फेंकि के ओकर पानी के हिला देला। ओसहीं डिब्बा के ठहरल हवा में दू तीन सांस के हिलोरा अउर बढ़ि गइल। कुछ देर बाद गाड़ी हिचकोला खाके आगे बढ़े लागल। ई पसिंजरों के इंजिन कमाल के ह। आगे बढ़े खातिर पीछे हटे के एकरा पड़ेला। बुझाला कि अब पीछे से आगे लौटी ना। ई दर्शन गाड़ी के आदमी के दार्शनिक बना देला कि आगे बढ़े खातिर पीछे लौटे के चाहीं। रामू सोचत रहे, कतना पीछे लौटल जाए। आजु एह दुनिया में ऊ अकेला वा। आँख के आगे कवनो भविष्य ना। जइसे अपाहिज ज़िनगी ओकरा के उठा के एह डिब्बा से ओह डिब्बा में फेंकत चल रहल वा, आ ऊ मोटरी अस् लुढ़कत नियति के हाथ में एह जगह से ओही जगह मारल-मारल फिरत वा। अचानक पासे के सीट वाला बूढ़ा कुन भुनाइल। खाँसी के भभुका उठल। ऊ खाँसत-साँसत बुझाए कि दम तूरि दी। रामू चुपचाप ओकर लड़खड़ात साँस के गति सुनत रहे। अनहरिया में बूढ़ा के आँख से बुझाए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पेट पकड़ के बइठ गइल। गाड़ी के हिचकोला के साथ छुक-छुक-छुक के आवाज ओसही आवत रहे। भला गाड़ी के केहू के दुःख दर्द से का रिश्ता ऊ त बस् मंजिल का ओर खाली दौड़े के जाने ला। रूके ले ई बतावे खातिर कि केहू चढ़े वाला होखे त चढ़ी जाए। ऊ विश्वास करेले आगे बढ़े में। के कहाँ छूटि गइल, एकरा से ओकरा का मतलब। बूढ़ा सीट से नीचे बइठ के हाँफे लागल। रामू आपन नजर ओहीजा से हटा ले ल स। ऊ अनहरिया में देखे खातिर आँख गड़ा देलस्। करिया-करिया दूर भागत कुछ छाया के सिवा ओ अनहरिया में का दिखाई पड़ीत।

एह ठंढ़ में खिड़की के पास बइठल एगो सजा रहे। ई पसिंजर ट्रेन में खिड़की के शटर सब टूटि गइल रह सन। नंगा खिड़की से हवा के रोके के मजाल केकरा में रहे। एगो फाटल कुरता, फाटल चदर आ फाटल पैजामा के अलावा रामू के देह पर कवनो अउर कपड़ा ना रहे। एह ठंढ़ से बचे खातिर आपन शरीर के गरमी से रामू काम चलावत रहे। भला शरीर में गरमी रहे तब नू। गरमिओ त खइला पिअला से पैदा होले। आज तीसरका दिन ह, जब पेट में अन्न गईल होखे। रह-रह के अतड़ियन में अईसन दर्द उठे कि बुझाए कि प्रान मुँह से बाहर निकल जाई। आँखी के आगे तरेगन सूझे लागे। ओह बूढ़ा आ रामू के दसा में कवनो फरक ना रहे। गाड़ी के छुक-छुक-छुक के आवाज से बुझाए कि दुनिया अभीओ चल रहल बिया ना त रामू खातिर सब कुछ ठहर गइल रहे। अन्तहीन यात्रा पर निकलल रामू के पैर अब कहाँ विश्राम करो। ठंढ़, भूख, आ लाचारी से ओझर पूरा अस्तित्व काँप उठल रहे। तीन-चार महीना पहिले के दृश्य आँख के सामने नाचे लागला। ऊ आपन छोट भाई बहिन के साथ एगो छोट घर में कतना खुश रहे। बबलू आ छोटकी रानी के साथे कतना आनन्द में रहे। बाबूजी जब फैक्ट्री से लउटस त जलेबी के दोंना जरूर लिआवत रहस। बड़ा प्रेम से बबलू आ रानी के साथ ओकरो जलेबी मिले। पढ़ाई-लिखाई में ओकर कतना मन लागत रहे। रोज रात के बेरा बाबूजी बबलू के आपन गोद में सुतावस आ रानी लड़ाई क के बाबूजी के साथे जब सट के सूते लागे त एगो खटिया प अकेले बाबूजी के आवाज सुनत रामू सूतत रहे। बाबूजी के आवाज आवे-आरे हमरा बाद रामू तोहनी के देख-भाल करी। बड़ बेटा बाप समान होला। बबलू के बहुते पढ़े के बा, आ हमार रानी बेटी त औफिसर बनी हें। हम मजदूर हई त का, तोहनी के बड़ बना के छोड़ब। एह बीच में बाबूजी पुकारस रामू सूती गईल ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामू जागतो रहत रहे बाकिर महटिया जाए जइसे कि ऊ सूत गईल होखे। धीरे-धीरे सब कोई नींद के चादर में मोटरी असं बन्हा जाए तब नींद रानी रामूअे के अपना गोद में समेट लेस। झटका लागल। दृश्य के तार टूट गइल। कवनो बड़ प्लेटफार्म पर गाड़ी आके धड़ाक से रूकल। रामू सीट से गिरत-गिरत बचल। चाय गरम ऽ ऽ ऽ गरम चाय ऽ ऽ ऽ ऽ बीड़ी पान सिगरेट ऽ ऽ ऽ ऽ गरम-गरम समोसा ऽ ऽ ऽ ऽ ई आवाज रामू खातिर दूर मे आवत बुझात रहे। आँख के अनहरिया में बिजली के जगमगाहट रोशनी के बजाए अउर अनहरिया भर दलेस। तब ले कवनो सेठ के परिवार ओह डिब्बा में दाखिल भइल। लइकन के छोट फउ। तोंद वाला सेठ के मेहरारू खूब रोआ दार। ए तनी ठीक से बइठो। ई बूढ़ सीट के नीचे काहें बइठा है।' सेठ के गरजदार आवाज डिब्बा में गूँज गईल। कवनो भिखारी होगा। उठाइये इसको नाहीं तो सामान लेके भाग जायेगा।' सेठाइन शेरनी अस गुर्रा के बोलली। ऊँफर लइका के फउज पड़ी गईल सन ओह बूढ़ा पर। बेचारा के उठा के डिब्बा के दरवाजा के पास पटकी देल सन।

'कहाँ-कहाँ से एह देसू में भिखारिन का गिरोह बढ़ रहा है। बुझाता है पूरा देस भिखमंगा हो जायेगा।' सेठ बुद-बुदा के रामायण अस मन्त्र पढ़ल। आ तब उँकर निगाह रामू पर पड़ल। 'आरे एगो अउर भिखारी सामने बइठा है। बुझाता है पूरा गाड़ी में भिखमंगवे सब चल रहा है।' 'बाबूजी, इसको भी उठा के दरवाजा के पास कर दें।'

'ना ना छोड़ दो सीट पर ठीक से बइठा है। बदमासी करेगा त दु-तीन झापड़ रसीद करके गाड़ी से नीचे उतार दिया जायेगा'

रामू के कुछ सुनाई ना पड़ल। ऊ त अपना अतीत के छाया में एगो प्रेत अस घूमत रहे। कइसे ई दुनिया के आग ओकर सब कुछ लील गईल। बाबूजी कह ले—'हम फैक्ट्री जात बानी बबलू आ रानी के तैयार कराके स्कूले भेज दीह आ तुहु कुछ नश्ता बना के कवलेज चली जइह। दोपहर में आके हम खाना बना देब।'

रामू हुँकारी पार के बाबूजी के बात इयाद कइलेलस। बाबूजी फैक्ट्री चल गइले। रामू बबलू आ रानी के तैयार कइके स्कूल भेजलस। जवन नाश्ता बनल रहे ओकरा के हाथ-मुँह धोअंला के बाद खाइल चाहतें रहे कि चारो तरफ से मारो-मारो के आवाज आवे लागल। ई भूकम्प, ई जलजला देखते-देखते शहर में फैल गईल। रामू के बुझाइल ना कि ई का भगइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देश में आइसन विपत्ति के सामना कब कर के पड़ जाई ई भला ओकरा बुझा सकेला। रामू के आंगे दुनिया घूम गईल। तब ले हाथ में लुकाठी ले ले कुछ आतंकवादियन के दश्ता रामू के घर के तरफ बढ़ल। आवाज सुनी के रामू बाहर निकलल त पैर से जमीन निकल गईल। बस ओकरा ईहे बुझाइल कि भागे के चाहीं। कइसे ऊ ओहीजा से निकल के भागल आ स्टेशन पर आइल, ई ओकरा बुझायल नहीं। स्टेशन पर लोगन के भीड़ जमा होते गईल। पुलिस के गाड़ी हार्न बजावत स्टेशन के चारो ओर जमा होखे लागल।

'ए लड़का, कहाँ जायेगा ?' सेठ के आवाज सुनाई पड़ल। रामू सेठ के टुकुर-टुकुर ताकत रहे। ओकरा लागल कि ई हे ऊ राक्षस ह जवन ओकर परिवार लूट लिहलस। माई दवा के आभाव में कईसे दम तूरिके मरी गईल खाली ऊ हे ई दर्द के जानत रहे काहें से कि बबलू आ रानी त बहुते छोट रह सन।

'आरे बोलता काहें नहीं है। कहाँ जायेगा ?' सेठ अबकी बेर गरजलें।

रामू मुँह फेर के खिड़की के बाहर देखे लागल जइसे आपन अतीत के भुलाइल मोती खोजत होखे। ओह आग के लुकाठी से घर जलल। जब ऊ घर लौट के आइल त सब कुछ स्वाहा हो चुकल रहे। फैक्ट्री से बाबूजी के लौटे के प्रतीक्षा करते रही गई ल। बबलू आ रानी के लासो तक ना मिलल। कई दिन तक ओह राख के ढेर पर बइठल ऊ आपन भाई-बहिन आ बाबूजी के प्रतीक्षा करत रह गइल। केहू ना लवटल तब से एही गाड़ी पर बइठ के ऊ आपन एह खोज के यात्रा प्रारम्भ कइले बा। दू बार बिना टिकट यात्रा के अपराध में जेल्हो गइल। बाकिर अब करो त का करो। एह आसा में कि शायद ओकर बाबूजी मिल जास, एह सहर से ओह सहर मारल-मारल फिरत रहे।

'रमेश बेटा तुमलोगों को भूख लगी हो तो खाना निकाल के खा लो।'

'आरे अभी ई सब का खायेगा। अभी घर से खाइ के नू चला हैं कवनो राक्षस है का ?'

'नहीं मां भूख लग गई है।'

'तो खा लो।'

मिठाई, पूरी, सब्जी के डिब्बा खुले लागल। ओकर गंध से रामू के आँख खुलल। जइसे सम्पूर्ण शरीर जीभ भ गइल होखे। ओकरा सामने ई भोजन के स्वाद के नंगा नाच होखत रहे। ऊ भूल गईल कि ओकरु बाबूजी एह दुनिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
में शामिल लइसन, ई भूलि गइल कि ओकर भाई बहिन भर जिनगी इहे सम
कि जिन्दा बाड़ सन। चपर-चपर मुँह चलावत सेठ के परिवार ओकरा
सामने रहें।

'बाबूजी ई देख रहे हैं कि ई कइसे देख रहा है।'

'बुझाता है साला भिखमंगा है।'

'आरे भिखमंगा त पूरा देस हो गया है तनी खाना-पीना भी हराम हो गया है। ए'

'अइसे का देख रहा है। कभी खाना देखा नहीं है क्या? आरे बोलता काहें नहीं है?'

'साला गूंगा होगा। अरे बेटा, खा लो छोड़ो इसको'

'कइसे खाएं बाबूजी सला एक टक इधरे आँख गड़ाए है,

रामू की अंतड़ी में दर्द के भभुका उठे लागल। कई दिन से अन्न के एको दाना पेट में ना गइल रहे। सामने के स्वादिष्ट भोजन के कौर फुटबॉल के गेंद जइसन आँख के सामने उछले लागल। बुझाइल कि पित्त के थईली में में जोर-जोर के हलचल मच गईल। अतने में गाड़ी छुक-छुक करत सीटी बजावत प्लेटफार्म पर रूकल। अब रामू के हाथ यन्त्रवत भोजन के प्लेट के ओर चल गईल। सेठ के लइका रामू के कलाई पकड़लस, चोर-चोर के हल्ला से भीड़ जमा होखे लागल। रामू के अंतड़ी अंइठाए लागल। ऊपर से जूतन, लात, घूसा आ थप्पड़ के मार।

'मार साले के।'

'चोर ह साला।'

'बताव सामने से कौर छीनत रहल ह।'

'आरे ई जमाने आतंकवादियन के ह'

'कौनो शरीफ आदमी सफर कइसे कर सकेला.....'

खाली शोर, और हल्ला के आवाज कान में सुनाई पड़त रहे। रामू भर जोर के रोटी के कवर हाथ में पकड़ले रहे। ओकरा बुझात रहे कि रोटी के कौर जहाँ छिनाइल कि प्राण पखेरु उड़ जइहें। अमेंन में पुलिस डंडा बजावत पहुँचल। रामू के अचते अवस्था में प्लेटफार्म से नीचे घसीट के ले जाइल गइल ओकरा हाथ में रोटी के कवर अबहूँ फँसल रहे। मुँह खुल गईल रहे अउर आँख पथरा गईल रहे। भीड़ बढ़त गईल। सोर बढ़त गइल अउर अभागा रामू के हाथ में रोटी के कौर फँसल के फँसले रहि गईल। □

कोइल/फरवरी-अप्रील-९०/पृ०—१३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मउवत

□ कृष्णानन्द कृष्ण

'शिफ्ट' खतम भइला का बाद ऊ 'वर्कशाप' से बहरी आ गइले। साइकिल 'शेड' में जाके आपन साइकिल निकललस, एक बेर ओकरे ठोक बजा के देखलस आ चले खातिर तइयार भइल तले तुलसी टोकलस--'का ओस्ताद आज गूंगी काहे सधले बाड़।'

उ कुछ कहे के चहलस बाकिर कुछ कह ना सकल आ तुलसी के साथे-साथे चले लागल। दुनो एक दोसरा के कनखी से देखत आगे बढ़ल चलल जात रहन स। एकदम चुपचाप।

—'ओस्ताद सुनली हाँ आज सहेबवा से तोहरा कुछ गरमा-गरमी हो गइल हा।' तुलसी पूछलस।

--'ना, ना, तुलसी तू साहेब के नइख जानत उ त हीरा बाड़न, हीरा। भला उनका से झगड़ा कइसन।'

—'ना ओस्ताद तूँ नइख जानत। इ सरवा बड़ा कमीना होलन स। ओकनी के काम क द त बड़ा खुस ना त नाराज। जइसे हमनी के ओकनी के गुलाम होखीं जा।'

—'ना तुलसी ना, हमनी के अइसन ना सोंचे के चाहीं।'

—'ओस्ताद तूँ त ठहरल गान्हीं जी के चेला' चुपचाप सब कुछ सुन लेवेल। तूँहु गरम-गरम दू चार गो सुना देत निमनका तव सरऊ के आँटा-दाल के भाव मालूम होइत।'

तुलसी के बात चुपचाप सुनत ऊ ओकरा साथे चलल जात रहे। कुछ आगे से तुलसी के दोसरा ओर जाये के रहे एह से दूनो अदिमी रुक गइलन कुछ देर बतिअवला के बाद तुलसी ई कहत दोसरा ओर घूम गइल कि ओस्ताद घबड़ाए के जरुरत नइखे। सब कुछ ठीक हो जाई।

उ कुछ देर तुलसी के जात देखत रहल। आ मने-मने बुदबुदाइल--कतना खेआल राखेला हमार। अबहीं नवही बा। खून गरम हइस। पाछे सब ठीक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हो जाई। आ ऊ अपना डेरा का ओर चल देलस।

साहेब के कहल बात ओकरा कान में बार-बार गूंज जात रहे। —'हरामखोर कहीं का, हराम का खाते-खाते तुम्हारी आँखें मोटी हो गयी हैं।' ऊ सोंचलस साइत गलती ओकरे बा तबे नू साहेब ओकरा के बोललन हा। आ ऊ अपना गलती के खोज शुरू क देलस। का ऊ काम प लेट आइल? का ऊ इहाँ आके दिन भर बइठल रहल? ना, अइसन बात नइखे। त ऊ कवन अइसन गलती कइलस जवना से साहेब के शान में बट्टा लाग गइल।..... ऊ आपन गलती खोजत-खोजत परेशान हो गइल। बाकिर कहीं कवनो गलती ना मिलल। ऊ मने-मन सोंचलस अइसन सोंचला से का फायदा? आ ऊ उदासी के धुंध में भटके लागल।.....'हरामखोर'..... 'कमीना'.....आखिर साहेब ओकरे काहे अइसन बात बोललन। बीस बरीस से बेसी हो गइल इहाँ काम करत-करत। आजु ले ओकरा के अइसन लहजबान ना बोलल। एह वर्कशाप में त दोसरा खातिर ओकरे आदर्श के रूप में पेश कइल जाला। टंडइल मिस्त्री के हाथ काम कइल बन क देवे त समझीं कि छुट्टी के टैम हो गइल।.....आखिर साहेब काहे ओकरा के अइसन बात बोललन।..... आ ओकरा बुझाइल जे बीस बरीस के अरजल ओकर शाख आ इज्जत प्रतिष्ठा छने भर में बालू के भीत अइसन भरभरा के गिर गइल होखे।

ऊ अपना सिर के झटका देके मन के दोसरा ओर लगावे के कोसिस कइलस आ सामने चौधरी के पान दोकान भिरी आपन खड़खड़िया खड़ा क देलस, आ कहलस—'चउधरी भाई एक पाकिट हिरन छाप सुर्ती बढ़इह।'

—'अच्छा ओस्ताद।'

चौधरी के हाथ में चलत कई ची के देख के ओकरा बुझाइल जे ओकरो हालत ओह कच्चा पान के पत्ता अइसन वा जेकर नियति खाली कटाइले बा।

'—भाई तनी जल्दी कर। घरवाली बीमार बीया।' केहू के आवाज सुनके ओकर ध्यान टूटल। ऊ एक नजर फेरू चौधरी के ओर देखलस। ओकर नजर सामने टाँगल शीशा में से झाँकत अपना चेहरा प पड़ल। गालन प नागफेनी के काँट अइसन उग आइल बाल सब पसेना से तर चटचटात रहे। ओकरा बुझाइल जइसे केहू ओकरा चेहरा प हजार-हजार जूता मरले होखे। ओकर मन घृणा से भर उठल।

खइनी बनाके ओठ में जांत के ऊ अपना डेरा का ओर चल देलस। मन के भीतर उठत सवालन के आन्ही के रोके के ऊ एगो असफल कोसिस कइलस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तले ओकरा इयाद परल कि दिलिपना के भोरहीं से खूब तेज बोखार लागल हइस। चल के ओकरा के अस्पताल में देखा देब। तबहीं ओकरा आँख के आगा अस्पताल के टेबुल प बड़का-बड़का बोतल में रखल लाल पानी में दिलिपवा के मासूम चेहरा तैर गइल। ऊ साइकिल के पैडिल खूब तेज चलावे लागल रहे।

एही उहा-पोह में ऊ कब अपना डेरा पहुँचल ओकरा थाहे ना लागल। दरवाजा प साइकिल से उतरते ओकरा बुझाइल जे श्रीवास्तव साहेब के मेहरारू ओकरा मेहरारू से बतिआवत बाड़ी। श्रीवास्तव साहेब के मेहरारू यानि ओकरा साहेब के मेम साहेब। सामने वाला सड़क के ओहपार जे अफसर लोगन के कोलनी बा ओही में रहलीं। बड़ा हँसमुख, मिलनसार आ मयार बाड़ी। तबे नू अतना बड़ अफसर के मेम भइलो प बिना भेद भाव के छोट-छोट कुरमचारियो किहाँ चल जाली।..... तबहीं ओकरा कान में साहेब के आवाज गूँज उठल.... ...हरामखोर .... कमीना..... आ ओकर चेहरा तमतमा गइल। उ सोचलस की चलके मेम साहेब के कुछ गरम-गरम सुना देब। आ एही ताव में परदा उठा के भीतर घुस गइल बाकिर मेम साहेब के मुसकात, खिलल चेहरा आ मिसरी अस मीठ बोली सुनके ओकर सब हवा-पानी हो गइल। आ थनियासे ओकर दूनो हाथ उपर उठ गइल।

—'मिस्त्री जी आप लड़के को किसी अच्छे डाक्टर से दिखा दीजिए।'

—'जी मेम साहेब।'

—'देखिए आप घबराइये नहीं जाकर डाक्टर को बुला लाइये। ये पैसा अपने पास रख लीजिए।'

मेम साहेब के बात सुन के ओकरा लागल जे केहू ओकरा के भींजाबल जूता से मारत होखे। ऊ कुछ ना बोलल, चुपचाप खड़ा रहल। उ मने-मन सोचलस कि मेम साहेब से ऊ रोपेया ना लिहि बाकिर अपना मेहरारू के आँखिन से झलकत लाचारी आ छलकत करूणा के देख के ऊ कुछ कह ना सकल। रोपेया लेके डाक्टर किहाँ चल पड़ल। रास्ता में सरकारी अस्पताल देख के सोंचलस काहे ना सरकारीये डाक्टर के ले चलीं। कमें में काम चल जाई। तबहीं ओकरा आँखिन में खिड़की प लागल लम्बा लाइन आ भीतरे टेबुल प रखल बड़का-बड़का बोतल में के रंगीन पानी तैर गइल।..... .....इहे कुल्ह सोंचत ओकर साइकिल पोर्टिको में जाके रूक गइल। सामने में डा० सिंह बइठ के कुछ लिखत रहन, ऊ भीरी जाके सलामी दगलस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—का मिस्त्री ? का बात हैं ? तुम ऐसे ही चले आये हो। कुछ इमर्जेंसी है क्या ?

डाक्टर के बात से ओकर ध्यान अपना कपड़ा का ओर गइल। सामने बेसिन के उपर लागल शीशा में आपन दागदार चेहरा आ पसीना से चीकट भइल कुरता देख के ओकरा बुझाइल जे ओकरे केहू हजार जूता मरले होखे। उ भरभराइल कंठ से कहलस—'डाक्टर साहेब हमरा लरिका के बहुत जोर के बोखार बा चल के देख दीहीं।'

डाक्टर साहेब आपन बेग उठाके ओकरा साथे चल देलन। लइका के देख के दवाई देत सब हिदायतो दे देलन। चले के बेरा ऊ डाक्टर साहेब के बेग उठा के रेक्सा प रख देलस। रिक्सा जाते ओकरा मुँह से एगो भद्दा गाली निकलल। आ उ जमीन प पच्च से थूक देलस।

—'अच्छा मिस्त्री जी अब हम भी चलते हैं।' मेम साहेब के आवाज सुन के ओकर ध्यान टूटल। उ मेम साहेब के सड़क के ओह पार ले छोड़े खातिर साथे हो गइल। जब ऊ मेम साहेब के छोड़ के लौटे खातिर तइयार भइल त मेम साहेब कहली—'मिस्त्री जी अबहीं ले झूला ना बनल नू।'

मेम साहेब के मिसरी अस मीठ बोली ओकरा कान के चदरा फारत गरम लोहा अस उतर गइल। दुपहरिया के घटल घटना। सहेबवा के एक-एक गो बात सब पल भ में ओकरा आँख का आगा घूम गइल। ओकर मन घिरना से भर उठल। सोंचलस कि मेम साहेब से कह देव कि—ओकरा प मेहरबानी करे के कवनो जरुरत नइखे।' बाकिर मंदिर के घंटी अस मेम साहेब के आवाज सुन के ओकर दूनो हाथ अभिवादन में जुट गइल आ ऊ मेम साहेब के छोड़ के चुपचाप अपना डेरा में लौट गईल।

लइका के नियरा बइठत उ ओकर माथा टोअलस। माथा तावा अस लहरत रहे। उ उठके दवाई के गोली आ मिक्सचर ओकरे पिया के ओकरा भिरी बइठ गइल। सामने आंकर नजर रोशनदान से आवत पीयर उदास घाम प पड़ल आ उ भीतरे से एकदम उदास हो गइल। ओकर मन फेरू दुपहरिया के घटना में अझुरा गइल। ओकरा मन के रेगिस्तान में विचारन के अन्हड़ बहत रहे। ऊ ओह में से निकले के जतने कोसिस करे ओतने अझुराइल जात रहे। ऊ भागल जात रहे ···· भागल जात रहे ···· आ रेत के आन्ही ओकरे पिछुअवले जात रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

चाह के कप टेबुल प रखत पारवती कहली—'हई चाह पीहीं तबले खाये के बना देत बानी।'

पारवती के आवाज से ओकर ध्यान टूटल। उ चाह के कप उठा के चाह पीये लागल। पारवती रसोई घर में जाके चूल्हा धरा देले बाड़ी धुआँ के धीरे-धीरे जमत परत एहू रूम में घुस रहल बा। धुआँ के बीच में घेराइल ओकरा बुझाता जइसे उ छने-छने बौना होत जा रहल बा। ओकर अस्तित्व खतम हो रहल बा। अपना ना रहला के बाद परिवार के स्थिति के खेआल आवते गनगना के ओकर रोंआ खाड़ हो गइल। उ मल भ खातिर इयाद के कुहा में डूब गइल।

दवाई देला के बाद लरिका सुत गइल रहे। उ खिड़की के पर्दा उठा के बहरी झँकलस, बाहर अन्हरिया के करिया पहाड़ आकाश घूवत रहे। ओकरा बुझाइल जे खिड़की के राहे अन्हरिया भीतरी घुस के ओकरा के दबोच ले ले होखे। आ ओकरा आँख का आगा सहेबवा के दइत अइसन चेहरा नाच गइल। उ भीतर ले डेरा गइल।

अकेले बइठल-बइठल ओकर मन अकुता गइल रहे। कहलो बा कि खाली दिमाग शैतान के होला। मन के घोड़ा के लगाम तनिकी सा ढील भइला प उ सरपट भागे लागेला।

उ अपना मन के स्थिर करे के प्रयास करत रहे तले ओकर नजर सामने टाँगल अपना बिअहुती फोटो प पड़ल, एकदम शांत, अस्थिर. बुझाइल जइसे फोटो में से पारवती कुछ कहे के चाहतारी आ ओकर मन अपना पिछिला जिनगी के अंगनई में हरिन अइसन चौकड़ी मारे लागल। बाकिर ई सुख के बीतल छन-छने भर में ओकरा आँख के आगा से अलोपित हो गइल आ सहेबवा के जमराज अइसन क्रूर चेहरा ओकरा आँख के आगा नाच गइल। .... कमीना .... कामचोर .... हरामजादा .... आ उ फेरु असहाय होके ओइसन आदमी अइसन सपना के भगवान भरोसे छोड़ देलस जे पानी के भँवर में फँस गइल होखे।

—'खाना खा लीहीं।'

पारवती के आवाज से ओकर ध्यान टूटल। सामने खाना परोसल रहे। उ खाये के शुरू कइलस। बाकिर सूखल रोटी रेंगनी के काँट अस गरदन में अँटकत रहे। ऊ जइसे-तइसे दू-चार कवर पानी के घोंटे लील के उठ गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भीतरे ओकरा बड़ा बचैनी लेसले रहे। ऊ मन के संतोष धरावे बाकिर मन ना मानत रहे। ओकरा बुझाय जे बीस बरीस के अरजल इज्जत प्रतिष्ठा पले भर में बिला गइल। एह स्थिति में अब जीयला के कवनो अर्थ नइखे रह जात। आखिर जीअलो त जाला इज्जते प्रतिष्ठा खातिर।

ओकर मन बेचैन भइल आवत रहे। ऊ कुरसी से उठके घर में बेचैनी कम करे खातिर टहले लागल। तबहूँ बेचैनी कम होखे के नाँव ना लेत रहे। ओकरा बुझाय जे केहु ओकरा के उफनात नदी के बीच में डाल देले होखे आ ऊ भँवर में फँसल निकले के बेकार कोसिस करत नीचे-खूब नीचे···· नदी के तह में चलत जात होखे। उ धम से कुरसी प बइठ गइल। ओकरा बुझाइल जइसे ऊ धीरे-धीरे डूब रहल बा। ओकर आँख धीरे-धीरे मुंदा गइल।

भोरे कालोनी में सुरुज के किरिन आइल त ओह में ऊ उत्साह ना रहे। बुझात रहे ओकरो टण्डइल मिस्त्री के मउवत के अहसास हो गइल रहे।

लघुकथा

नींव

अपना विद्यालय के लइकन से टोपी पेन्हे के नियम के पालन प्रधान शिक्षक सख्ती से करावस। टोपी ना पेन्ह के आवे वाला लइकन के डाँट खाये के पड़े। एक दिन देखल गइल कि एगो छोट लइका लंगटे-उघारे कपड़ा फींचत रहे, बाकिर ओकरा माथा में टोपी रहे।

—कुशी, कांटी, मुजफ्फरपुर

कोइल/फरवरी-अप्रील/९०-पृ०—१९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरामी

☐ रूपश्री

कहियो-कहियो अइसन बुझाला कि सुरुज भगवान का रात भर नीने ना पड़े एही से एक भिनुसहरे जाग जाले आ हमार नीनो ना पूरा हो पावे कि मलिकार के चिघ्घाड़ सुनि के हड़बड़ाइले उठ जाइले। उठत ना भइल कि काम में नधा जाए के पड़ेला। एक त सभ कार एकोरा करत राति के एगारहे त बजिए जाला ओपर से फजीरहीं उठि के बयल नियर जोता जाईं काम में। काम काऽ सउँसे घर में झाड़ू लगावल, पोंछा मारल, बरतन-बासन माँजल, सभका के पानी भरि-भरि के बाल्टिए-बाल्टी पहुंचावल ? ई बलवो का हमरे से जरतवाही बा। अनका घरे ह-ह कके गिरेला ऊ एजवाँ ठोपे-ठोपे चुएला। पीए भर पानी केहुंग जवराला बाकिर आउर सभ काम खातिर त इनारे के असरा बा। भरते-भरते बाँहि भरि जाले। रात के सुते जाइले त सउँसे देह टभके लागेला। पानी के इन्तजाम करे के केहू का चिन्ता-फिकिर नइखे—ई ना कि पम्प लगवा लीं। हम त बड़ले बानीं घींच-घींच के नहवाके खातिर।

सोझा जूठ बरतन के अम्बार लागल रहे। जोअना के हाथ लूड़ा से मँटिआवत बरतन धोए में लागल रहे आ दिमाग अपना जिनगी के पोथा खोल के हिसाब-किताब करत रहे। घर के नोंकर के जिनगिए का! कुल्हि मिला के आउर घर का नोंकरन से हमार त नीमने निभत जाता। खाए-पीए के कवनो तकलीफ नइखे—दूनू जून भर पेट भोजन भेंट जाला; नस्तो-चाय के कमी नइखे। आउर घरे त नोंकर खातिर अलगे बनेला—उसीना उसीनाला आ पिआज-मरीचा में घोंटाला बाकिर एजवाँ मलकिनी का मयार भइला से हमरो ऊहे मिलेला जें आउर लोगन का परोसाला—मांस, मछरी, अंडा, मर-मिठाई सभकुछ कम-बेश दीहल जाला। कम पड़ला पर पलखत पाके हम हाथो साफ क दीले कवो-कबो। तनी-मनी ऐने-ओने भइला से केकरा पता चलेला बाकिर एकाध हाली धराइओ गइल बानीं। पूछला पर मुँह से झूठ निकल जाला—'ना, हम खइलीं हँ !! अब मुँह में बिस्कुट के टुका सटल होखे था हम कहत रहीं 'नां' त के पतिआई ! मलकिनी के एक-दू हाथ लाग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाला—'झूठ बोलत बा। जानत बाड़े कि हमरा झूठ से कतना नफरत बा। तोरा ना मिले का ? पेट भरत नइखे ? बोल !'

—'भरता मलकिनी।'

'तब काहे चोरवले ह ?'

हम चुप्प। का बोलीं। लड़िका के मन। सोझा देखि के ललच जाला। फेरू ऊहे गलती। बाकिर अइसन कबहीं-कबहीं होला। हमरा एह सभके तकलीफ नईखे। हमरा भरपेट रोटी-सब्जी आ भात-दाल भेंट जाला। एही खातिर नू हम गाँव से एजवाँ आइल बानीं। घरे त कै दिन मुट्ठी भर सतुओ दुलभ रहे। बाबूजी हउअन अलहदी आदमी। काम उसरे ना। बइठल चांमे के चाहेलन। बिना जांगर चलवले भला केकर पेट भरेला ! बाबू लोगन खाली खेत-पथार त बा ना कि जाना—बनिहार कमाई आ खरिहान से अनाजो निकाल के घर का डेहरी में भर जाई। इहाँ त बनिहारिए के आस ठहरल। बाबूजी के केहू बनिहारो राखे के ना चाहे। उनकर आपने पेट पहाड़ बा त तीन-तीन गो लड़िकन के का घंटा खिअइहें।

जिअना के मन खट्टा हो गइल। ऊ एक ओरी पच्च से थूक दिहलस जनुक अपना बाप का नाँव पर थूकत होखे। जे खिआवे-पिआवे में ना सके, कपड़ा-लत्ता ना पेन्हा सके, पढ़ावे लिखावे के कूवत ना होखे जेकरा ओकरा त बाल-बच्चा जनमावहीं के ना चाहीं। बाकिर के सोचेला ई कुल्हि। नीमन भइल कि हमरा के पटना मलिकार का जवरे भेज दीहले। रोज़-रोज का कुफुत से त जान बांचल। पता ना नन्हकी के आ भुचेंगना के का हाल होई !

नन्हकी के ढेर इयाद पड़ेला। ओकरा खातिर फराक आ जांघिया हर साल भेज दीले। भुचेंगना खंच्चर ह बाकिर बड़ी डेराला हमरा से। गांवे पलानी में एकोरी रसोइयो बनेला आ ओही में सभ जना सुतवो करेला। पढ़ साल जाड़ा में मलकिनी के निहोरा कके एगो पुरान कम्बल बाबूजी खातिर भेज देले रहीं। ओही में तीनू जने लपेटा के सुत जाला लोग। माई त भागिए गइल। माइयो खूब रहल। पहिले जेकस जवरे रहलि ओकरा से बनल ना। का जाने कइसे आ कहवाँ बाबूजी में साँठ-गाँठ भइल आ ऊ एक राति हमरा के अँगुरी धरवले ओह घर से निकलल आ किरिन उगते बाबूजी का घरे हाजिर हो गइल। नया लोग, नया गाँव-गिरान। बोले चाले में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुँहफट हिअ माई। एहूजा बनिहारिए करे के रहे आ पेट पोसे के रहे। बनिहारा खातिर सउँसे संसारे एक जइसन बा। हमरा पटना आ गइला पर सुनलीं कि माई फेर आपन घर बदल दिहलसि आ कहवाँ चलि गइलि पता ना चलल।

पते चल जाइत त हमरा खातिर का अन्तर पड़ जाइत ? होस सम्हार के जेकरा के हम बाबूजी कहत अइलीं ऊ हमार बाप ना हवन। माई उनुका लगे आइलि, ओकरा पहिलहीं हमार जनम हो गइल रहे। नन्हकी आ मुमुचेंगना बाबूजी का देह से आ हम माई का ओह घर से हईं। एही से कुछ लोग लरिकाई में हमरा के 'हरामी' कहे ! हमरा बुझाय ना बाकी दु कइसन दू लागे। आज जानतानीं 'हरामी' गाली ह बाकिर एहि से का। 'हरामी' त हमरे अइसन लड़िकन के कहल जाला। जब केहू कहेला 'हरामी' या 'हरमजादा' गारी देला त अब खीस ना बरे—देह में लुत्ती ना लेसे। मन का कइसन लागेला हम नइखीं कह सकत। हमहीं त एगो 'हरामी' बानी ना। ना मालूम कतना लोग हरामी जामल बा, जाम रहल बा आ जामी कहल कठिन बा। के कह सकेला कि ऊ अपना बापे के ह ? माई असल बीज ह, जेकर कोख साँच होला। बाप केहू होखे, माई त बड़ले बिआ आज भले ओकर पता नइखे। अब त हम घूम-फिर के पता लगा सकीले, टोह लगा के माई के हालचाल देखि सकीले। कइसन बिआ, केकरा जवरे बिआ, आउरी भाई-बहिन के जनम देले बिआ कि ना ! कवन ठीक बा, एक-दूगो भाई-बहिन भइलो होखे त ओकनी के हमरे खानी केहू का लगे टुअर-टापर छोड़ के चिरई खानी कवनो दोसरा डाढ़ि पर जा के बइठ गइल होखे।

जीअना के हाथ एकदम रुक गइल रहे। बरतन मँटिआवल सोझा पड़ल रहे आ ऊ अपना मन के अपना अतीत में अझुरवले एकदम बेसुध रहे—नन्हकी मुचेंगना का संगे हमरा दया लागेला; माई आउरो केहू से अगर बच्चा पैदा कइले होई त ओहू लड़िकन खातिर हमरा मन में दया बरेला। ओकनी के का दोष बा; कवन गलती कइले बाड़े सन ! काहें खातिर ऊ 'हरामी' बन के जिनकी के बोझ ढोअत रहिहन सँ ! माइयो कवनो बबुआइन त रहल ना। उहो अइसहीं कवनो 'हरामी' होई आ सयान भइला पर लतर खानी जिनगी के अलम्मा खोजति चल रहल बिआ ! अवलम्ब का चक्कर में कबहीं गछि पर, कबहीं ठठुर पर त कबहीं गोबरौरा पर पसरत रहल बिआ। कबहीं अवलम्ब मिलल, कबहीं ना मिलल आ फेरु कवनो दोसरा सहारा खोजे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri. Funding by MoE-Grant-2
चल दिहलस जब-जब हम गंगा किनारे आइले आ लगातार बहत पानी के धार देखीले त बुझाला कि माइयो के जिनगी अइसहीं नदी खानी बह रहल बा—पेट आ देह का किनारा में बँन्हाइल एगो धारा हिअ माई जवना के जनम के नइखे पता आ अन्त कहवाँ होई एकरो पता नइखे। एह नदी से निकले वाला हर स्रोत के ऊहे हाल होई जवन एह नदी के बा ! माई एगो नदी हिअ; गंगा खानी कि नाला खानीं—से त ऊहे जाने बाकिर एगो नदिए हिअ ऊ। तबे नू एक जगे असथिर ना रहे ।"

खटका भइल। केहू आ रहल बा आंगन कावर। किचन में से शायद दीदी, चाहे मलकिनी पुकरली ह। कवनो बरतन के जरुरत होखी। आरे, दूध वाला बरतन त अबहीं जूठे बा। जब ले खोज-ढूँढ़ नइखे होत तबले एकोरी बइठ के सरऊ तूँ इयाद क ल माई के, बाप के, नन्हका आ भुचेंगना के ! एकाध हाथ बजरला से जे चोट लागी ओकरा से ज्यादा घाव त जाने-अनजाने मन पर पहिलहीं लागल बा। जस-जस उमिर बढ़ल जाता, ओकर टीस बढ़ल जाता ! मन करत बा कि पाँख होइत त उड़ि के चल जइतीं आ नन्हकी के गोदी में लेके, भुचेंगना के माथा पर हाथ रख के कहतीं कि हम अवलम्ब बनब, हम बाप बनब तोहनी के तोहनी अइसन टुअर-टापर औलादन के हमरा अइसन हरामी अदमिए नू सहारा बन सकेला ।

हमहीं का, हरामी त करनो रहे। महाभारत जे टी० वी० में देखा रहल बा रोज एतवार के ऊ कतना नींक लागत बा। करन के बाप के पता नइखे, जाति के पता नइखे, कुल-खानदान के ठेकान नइखे तबहूँ ओकरा भीतर के आग त सुरुज खानी दप-दप करत बा। दुरजोधन से नेह मिलल त ओकरा हाथे बेमोल बिका गइल। करन के महतारी कुन्ती छोड़ दिहले रहली आ दहात-दहात जब ऊ किनारे लागल त केहू निकाल के पालल-पोसल। राजा का नोंकरी में सुयोग जुटल आ दुरजोधन से भेंट भइल, इयारी भइल, राज-पाट मिलल बाकिर अन्त-अन्त ले रहल त ऊ हरामिए नू समाज का सोझा ! हरामी त हमहूं बानी। हमरा के माई घूरा पर ना फेंकलस, नदी में ना दहव-वलस काहे कि ऊ ओघरी जेकरा संगे रहत रहे, ओकर बिअही रहे ऊ मांग टीक के घर में डलले रहले। जब मन भर गइल त अपना जमला करन के अँगुरी धइलस आ हिम्मत का जवरे पहुंच गइल कवनो दोसरा देवता का लगे; मंतर मरलस आ देवता सोझा ठाढ़। ई क्रम चल रहल बा। एह करन का ना मालूम कि माई कुन्ती केवना-कवना देवता से पाण्डव के अवतार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ऊ करन बनीं। लोग चाहे जे कहो ..... !

—'का रे, का सोचत बाड़े। कब से चाल करतानी ! आज केहू के नाश्ता-पानी देवे के नइखे का ? जब देखीं त कुछ-ना-कुछ सोचते रहताड़े।' मलकिनी लगहीं आके ठाढ़ हो गइल बाड़ी। ऊ मूड़ी उठा के उनुका ओरी ना ताकी। जब मन अकुला जाला, रोए-रोए के करेला त ई हरामी जिवना मलकिनी का गोड़ पर जाके मूड़ी पटक देला, गवें-गवें रगड़े ला त मलकिनी नेह से पूछेली—काहे रे, माथा पिराता का ? चाय पिअवे कि तेल लगइवे।"

—"मलकिनीऽऽ ?" ऊ मूड़ी उठवलस।

—"काहे रे ? का बात ह ?"

—"मलकिनी, माई त भाग के का जाने कहवाँ गइल। हम ई कह के कि 'बम्बई हिरोइन बने गइल बिआ' आपन मन हलुक करीले। बाकिर अबगे सोचते-सोचते हमरा बुझाइल ह कि हम महाभारत के 'करन' बानीं—हमरे खानी ऊहो हरामिए रहे नू ?"

मलकिनी चिहा के ओकर मुँह देखे लगली आ ऊ जल्दी-जल्दी हाथ चलाके बरतन माँजे लागल।

□

लघुकथा

माफ कर दिआई

□चन्द्रभूषण सिंह 'चन्द्र'

रधिया आ सुनरी अपना-अपना प्रेमी के सङे भाग गइल। दुनों एके बाप के जवान बेटी रहली स। गाँव-जवार में ई चर्चा के बात हो गइल। मतारी-बाप दुख में डूबल रहसु। जाते-जाते ऊ दुनों एगो पर्ची छोड़ गइली। ओह में लिखल रहे—"बाबूजी, हमनीं अपना सोझा रउरा के भिखार बनल नइखीं देखे के चाहत। एही से आपन भाग्य अपना साथे लेले जा रहल बानी। माफ कर दिआई।"

कोइल/फरवरी-अप्रील ९०/पृ०—२४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust Funding IKS-MoE-Grant-2

बनिहार

महेन्द्र गोस्वामी

"घुरा-गनउरा पर फेंकाइल तरह-तरह के बिरवाइन के, बौआ अस बनिहार-बनिहारिन के जिनिगी। जवन आषाढ़ के पहिलके फुहरा पावत, आसमान छुए के असरा लिहले बनबना के खदर-बदर एके जगहा जाम जाल-नस। आगे बढ़े के हौसिला लिहले एक दोसरा के जात देवेलन स। सुतरिया देवेलन स। ओकनी के भीतर बड़का कहाए, शासन करे आ रूआब मनवाव के जवन चाह रहेला ओइसन अलगठ उपजल बिरवाइन में ना होखे। छोहा-मोहा के सहारा बनके केहू अपना खढ़ी-छरदवाली का भितरे ओकर कमीनी खाए का लालचे अगर गाड़ देला तब ऊ आपन जात-भाई, गोतिया बिरादरी सबका के भुला जाला। सहारा बनल झाँधी लम्बा चौड़ा आलन पसरे के पूरा जगहा पाके अगरा-अगरा दिन-रात धरती से रस चूसे आ कमीनी कमा-कमा केहू के मालिक मलकीनी बनावे में मस्त रहे लागेला। बड़के ना बड़का घर के कहाए लागेला।" कुदारी से घर काट-काट सुघर छइटी में भरत जात रहन, विचारत जात रहन। ओने उनकर मेहरारू रमरतिया माथ पर छइटी लिहले मालिक के खेत से एहिजा तक दुलुकिया नधले रहे।

गाँव के दखिनवारी कोना जहवाँ से कोड़ाड़ के शुरूआत बा, जेकरा बगल से गाँव में ढुके खातिर मुख राह बा, जेने से भर गाँव के डीह में जाए खातिर राह बा। जहवाँ महल्ला भर के मलगज फेंकाला, सुघर ओकर सफाई में भिरल रहन। खदर-बदर, सतपुतिया, केकरी, लउका-कोंहड़ा, भिंगुनी खरोई, एक से एक बीरवाई के कटात देख के उनकर मन छटपटा के रह जात रहे। आज अगर एक-आध कट्ठा आपन जर-जमीन रहित तब ऊ थाला के थाला लगइले बिना ना मनतन। अतिना मिहनत कइला का बादो हर कुदारी धइला का बादो उनका रहे खातिर एक धूर जमीन नइखे। लोहा के कुदारी बिना मोह दया के सबके भन-भन कटले जाता। आखिर ऊ करीए का संकेलन? कहवाँ बाप-दादा का नामे जिरात बा जवना में जाके लगा आवस गाज आवस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भइल तहबन पर साँस बान्ह के रोवत छटपटात अढ़ाई तीन महीना के अशोकवा के छँइटी फेंक के हहुअइले उठा के करेज से साट लेलस। माई का अँचरा के भितरे अमृत के धइला चोका में लगइले आ दोसरका पर हाथ धइले अशोकवा चुमुर-चुमुर पीए में बाझल रहे। खजूर के पेड़ से पीठ टेका के रमरतिया ओठंघ के पिआवते-पिआवत मलिकार के बड़का टोपरवा देने नजर गड़ा के पता ना कवना लोक में पहुँच गइल। संसार के समुन्दर में पंवरे के कला से अनजान रमरतिया डूबे-उतराए लागल। ओकरा बुझाते ना रहे आखिर ई बनिहारी के बोझा से कब तक ओकर परिवार दँवाइल रही? कबो कवनो किनारा मिली कि ना? जेनहीं नजर दउड़ावे ओनहीं अथाह भयानक आ लहर-पर-लहर उठत समुन्दर भेंटाए। कहिया स्वतन्त्र होके आध पेट रोटी खाए के कहिया कवनो राह भा मोका मिली? आखिर एह बन्धन से कइसे छुटकारा मिली? का ओकर अशोकवो के ओकनिए नियन हरवाह-चरवाह बनके एही हवेली के सेवा करत, करजा भरत, बापे-दादा अस एहिजे जिनिगी खपा देवे के परी? का इहो बिआह-शादी, मरनी-हरनी, छठि-हार छेका, दर-दवाई, परब-पूजा बेर एही हवेली से करजा लेके अपना माथ पर बोझा लदवाई? का हमनिए अस सरबे चीज उपराज के इहो मलिकार के घर भरत रही? का एक थान कचरी खातिर एकरो मन हमनीए अस तरसते रह जाई? का दिन-रात खून-पसेना एक क-कके घाम-बरखा आ पाला में दिने-रात खटला का बादो एकरा तन पर वस्तर आ रोटी पर नून नाहिए जुरी? का एकरो घर सरकारी दया पर बनी? ना ना ना। ई कबही ना हो सके। हमार अशोक पढ़-लिख के समुझदार नागरिक बनी। मलिकार के सरबे करजा हमनी दूनो परानी खट-खट के तुरन्त वसूल क देहब जा, भर देहब जा। हमार बेटा गुलाम ना बनी। गुलाम ना बनी। खजूर पेड़ से ओठंघल सुरसतिया पता ना कब उँघा गइल।

घाम कटाह नियन कइले रहे। कुदारी चलावल छोड़ के सुधर सेमरवा के छँहिरा, कुदारी के बेंटे पर दूनो तरहथी धइले बइठ के कुदारी आ धरती पर आँख गड़ा देले रहन। आपन मेहारू आ बेटा के जिनिगी सँवारे के राह खोजे में खुदे भुला गइल रहन। जतिने भूत उटिकेरस, भविष्य ओतिने राख अस उधिआत दिखाई पड़े आ वर्त्तमान धधकत आग अस। वर्त्तमान में सूर्योदय के सुनहुला सपना देखे खातिर जतिने, आस, जतने छटपटास, भविष्य ओतने गाढ़ अन्हार में ढूकत जाय। कवनो ना कवनो समय में हमरो वर्तमान माह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain: Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मझधार में तूफान का हाथे घेरा गइल होई, आज चकोह का संगे गँठ जोड़उ-अल करके अंधाधुन चक्कर काट रहल बा, रेंहट नियन एके जगह पर घुमत-घुमत मन अनसा गइल बा। ना, ना। ना ई कबहीं ना होखे देब। हमार अशोक हमनी नियन हरगिज ना बनी। ओकर देह बन्हकी ना रखाई। ऊ स्वतन्त्र रही। घुरा गनउरा पर के बिरवाइयन खातिर अलान बनी अलम बनी।

आज जेकरा से ई समूचा गाँव बसल बा, राघो बाबू के पुरनिया लोग पछिम से भाग के हाथ में एगो लोटा डोरी अरवन लिहले भिखार अस एह गाँव में आइल रहन। भगइ के सिवा देह पर कुछुओ ना रहे। ई गाँव थोड़िए रहे। चारों तरफ खाली जंगले जंगल। बीच में साफ-सुथरा चउरस मैदान देख के ठहर गइलन, बस गइलन, गाँव बस गइल। हाथ में लोटा उठाके मैदान जाए का बेर जहाँ तक घूम गइलन, गाँव के एरिया हो गइल। आपन मन लगावे आ काम चलावे खातिर एक से एक कारीगर के ले आके लोग बसावल। एगो नया उमंग-उत्साह से भरल-पूरल शान्तिपूर्ण जिनिगी के शुरू-आत भइल रहे।

आज के राघो बाबू आ राघो बाबू के पुरनिया लोगिन के रहन-चाल में धरती-आकाश के अन्तर बा। इनिका अइसन लरछुत, जरनिआह, कउड़ीचीप गाँव भर का, जवार में केहू नइखे। कनजुसइयो में एके नम्बर। अगर खुश होके केहू के पइचा-उधार अन्न-दाना देवो करीला त सड़क पिहिकल। बर-जूई उदास करके दिहल आ नेवता करके लिहल राघो जी के आपन पढ़ाई ह। हालां कि गाँव जवार से दोगिना-तेगुना सूद पर इहां के रोपेआ चलाइला तेहू पर धक्के भइल रहेला।

उहाँ के सुभाव के ठीक उलुटा धर्मपत्नी जी के सुभाव बा। जड़ चेतन सब में परमात्मा के छवी निहारेवाली धर्मशीला देवी के चरित्र अपने आप में अकेला रहे। का जाने कइसन आँवा में सिरजेवाला उनुका के सिरिज के धरती पर भेजले रहे। हाथी से लेके चूंटी तक में जेकरा परमतमे लउकत होखे, जड़-चेतन सबके सामने जे दसो नोह जोड़के हरदम क्षमा-विनती करत रहत होखे, जेकर समूचा जीवन दोसरे खातिर होखे ऊ चेहरा भगवान के अलावा दोसरा के ना हो सके। दया के समुद्र आरत लाचार के, भूखा-दुखा के अपना आगे के थारी बढ़ा देवेवाली उनुका रहन-सुभाव के दोसर देवी सायदे संसार में होखस। बर-बनिहार, नाउन-चमइन मेस्तरीन केहुए के संगे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: IKS-MoE-Grant-2

एके व्यवहार। बुढ़ठा के सुख-दुःख पुछल, फाटल पुरान कपड़ा देख के आपन -लूगा भूला दे देवे के सुभाव उनुका के मलकीनी बने ना देलस।

-लम्बू बाबू साहेब के आँख पहचान गइल। ऊहाँ के सद्य कुछ पर रोक लगा पहिलीं। केकरो से मिलल जुलल बन्द करवा दिहलीं। यमभरिन, हलखोरिन त्यर कड़ुआ पहड़हा बड़ठवा दिहलीं। अगर खजाना के चाबी उनुका हाथ में रह जाय तो ओकरा खाली होखे में तनिको देर ना लागी। बाप दादा के दांते नोहे कमाइल सम्पत्ति कुल एके दिन में गरीबन में बंटा जाई।

हालांकि सबकुछ रहला का बादो दूनो प्राणी निःसंतान रह गइलन। अतिना बड़हन दड़ मिलला का बादो बाबू साहेब के आँख पर के पटर नाहिए खुलल। एगो संतान के इच्छा उनुका के कठोर से कठोर बना देलस। चिड़-चिड़ाह बना देलस। खाली घृणा, क्रोध आ अन्याय के लसर चारो तरफ से सभ अस पसरल जात रहे। जवन नेह छोह-प्यार दुलार के उपजहीं ना देत रहे। देह के रोआं रोआं मरुभूमि रहे बनल चलल जात रहे। पता ना एक एक दिना एक-एक बूंद के इहो कवनो दिन रात खातिर बिटोर-बिटोर के धरत रहत रहन।

सुघर के मुअला अढ़ाई-तीन बरिस हो चुकल रहे। उनुका मुअत दुख के जवन पहाड़ ओकरा माथे आ के असवार हो गइल, ऊ चिता तक संग ना छोड़ल। ऊ नीमन तरी जान बूझ के रहे खेत से खरीहानी तक माथ पर चढ़ा के दुलुकिया नधवावे का बात होखे भा सुघर के मरला उतर गइला पर आपन इज्जत लड़िका के बड़हन कहीं राह लेवना लेदा गइल जवन दिन, दुपहरिया सांझ अधिरात इहे कील्हे से नइखे देत।

आखिर एह गांव में ऊ रहतिया ऊहो त मलिकवा के जिरात के नाम से बा। घर जवना में ऊ रहतिया ऊहो त मलिकवा के जिरात लिखलस। एह गांव में, एह देश में, कहां कवनो मरीब गुरुवा के केहू सुनवाई करतबा। खाए के ठेकाने नइखे आ मकान खातिर हम लड़े जाइबा। हमार के गोहार मिली? ना, हमरा नाक छोड़िए देला में भलाई बा।

रात-रात भर जाग-जाग के ऊहां के हमरा के भी हरदम सिखावत रहत रहीं। इहे ज्ञान के पेड़ तरे गमछी बिछा के पर जात रहीं। हमके देह-नेह के सुधे ना रहीं। ऊ चांदनी रात में कतिना नेह से ऊहां के समुझइले रहीं— "हमरी तू दोसरा हो गइलू हो। हम पत्थर के मूरत बनके सन रहीं गइल रहीं हमरा अपना गलती बुझाते ना रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: MoE-Grant-2

"रामरती सुख-दुख भगवान भा कवनो देवता-पितर के दिहल विरासत ना हई सब हमनी के करतब के फल ह हो। एकरा के आपन बुद्धि आ मेहनत के बले पर हमनी बदल सकीला जा। हमनी जवन कर धर के जाइब जा ओकरे फल अबिबाला संतान के भोगे के परी। गरदन में पड़ल बेगारी आ तबेदारी के फसरी जबतक काट के स्वतन्त्र नइखी जा हो जात तब तक कवनो संतान पैदा कइल उचित नइखे। अस्पताल में जाके गिरवा द।" -हम भावुक नियम मुंह ताके लागल रहीं। हमार चेहरा पढ़के कुछ देर का बाद ऊहां के हमार माथ सुहरावत कतिना खुशी से कहले रहीं—"रामरती! कवनो घबड़ाए के बात नइखे। बेटा होखो भा बेटी ओकरा के पाल-पोस के, पढ़ा-लिखा के अइसन समुझदार हथियार बनाइब जा जवन हमनी नियम हजारों-लाखों-करोड़ों बन्धुआ मजदूरन के गरदन में पड़ल फसरी के काट सको। आज कपिल, चन्द्रशेखर, भगत, अइसन औलाद के जरूरत बा जवन घर में कैद कइल आजादी के स्वतन्त्रता दिलवा सके।'

'रामरती, आज ओइसन संतान पैदा करे के जरूरत बा जवन बुदीराम बोस आ नेता जी बन के कागज पर के मिलल आजादी धरती पर उतार के धर सको। गिरल के उठाओ, बे-सहारा के सहारा बन सको।'

भितरे भितर खलखलात ऊहां के गरदन में आपन दूनों हाथ डाल के हम मुंह चुनिआ के जोहा लागवत कइसे कहले रहीं—हे जी, चाहे जे कुछ भी होखे जाय, हम आपन संतान के पढ़ा-लिखा के समुझदार नागरिक बनाइब अनकर गाय-भईंस चरावे, गिलास-प्लेट धो-धो के गोड़ हाथ ससुरे, मालिक मलकीनी के लॉड़कमा करे खातिर अनपढ़ बना के नाहीं रहे देबो।"

दिन-रात खटनी के बादो भविष्य के सुनहुला सपना आ पति मरला के सोग रमरतिया के लमछर छरहर, सुनर, सुभेख चेहरा के खा के बइठ गइल। हड्डी के ढांचा खाली रह गइल। आज अशोक जे सामने रहित त ओकर ई गति ना भइल रहित। भूखले अधइले आपन संतान के देखिए के जुड़ा जाइत। जड़इया बुखार सालो सतावे ना पाइत। आज देह परला पर एह गाँव नगर टोला महल्ला में ओकरा के बा, जे एक कवर भात द जाव। ओकर देह एही गाँव के बेगारी करत-करत गल गइल। केकरा भिरी जाके फरियाद करो। के ओकर सुनेवाला बा। जवन आपन बचपन जवानी आ बुढ़ारी सब एही गाँव के सेवा करत खपा देलस ओकरा आज ओकरा खातिर पिनसिन ना मिले के चाहीं?

कोइल/फरवरी-मार्च-२९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Archive

रमरतिया के हालत कहत बनत रहल कि खाइल पिअल ओकर सब बन हो गइल। हरिन नियन बड़का-बड़का आँख सिकुड़ के गहिड़ा में समा गइली स। जुना कुजुना दुध मुँहा खातिर कवर भर भात देवे में जे खानदान तक उकिट देत रहे, संकोच के बहाना करके मुँह फेर लेत रहे, कुकुर अस दुरदुरा देत रहे ऊहाँ अब मोहे छोहे नीक चीज बनाकें खिआवे पहुँच जात रही। जवना घरी खाए खातिर मुँह खुलत रहे ओह घरी केहू कुछ ना दिहल आ अब जब बंद हो गइल त गाँव भर खिआवे जुट गइल। मुंह में के डालल कवर लेदरा पर लुढ़क जाय। दू-तीन दिन तक एही तरी साँस टँगाइल। रहल कए बेर तुलसी गंगाजल पड़ल। सिरहाने बइठल बएद जी घंटे-घंटे मकरध्वज देत जात रहीं। पड़ोस के गोतिया आपन बाझियो दे दिहलन। छुआइयो दिआइल। एके प एक हाथ गोड़ तड़नावत ओह कइलस आ आँख खोल देलस।

अब रमरतिया बाहर-भितर आवे जाए लागल रहे। खेत में कटनी करके बोझा ढ़ोके खरिहानी में पहुँचा देवे के ताकत ओकरा देंह में ना रह गइल तब लोगबाग के सलाह पर विनिया करे लागल।

चइत के महाधार कटनी पड़ल रहे। अशोक काशी से घरे चल आइल रहन। बाबू साहेब के शरीर थाक गइल रहे। खटिए पर किरिया करम सब करे के परत रहे। सुबह से दस बजे तक बाबू साहेब के सेवा में बिते फिर साइकिल उठा के खेत-खरीहान देखे के पर जाय। रात के बोझा उँझा ढोअवा उऊवा के घरे जास।

सुरसतिया के विनिया करत चार-पाँच दिन हो गइल रहे। छोट-छोट लइका लइकीन के साथ सिकहुती में एगो छोट डाली डलले रमरतिया विनिया करे निकल गइल रहे। काटल डाँठ के बोझा उठाके खरीहानी में चल गइला का बाद खाली खेत में चिरई चुरुगुन के गिरल हिस्सा बिननिहारिन बीनत रही सँ। रमरतियो डेढ़ दू किलो के लपेट बीन के कड़ा घाम के चलते मालिक के ओही टीपरा के आर पर जवना खजूर पेड़ के नीचे आपन अशोकवा के फाटल तहबन पर से उठा के अमृत पिआवत भविष्य सँवारे में एक दिन लागल रहे, ओहिजे बइठ के आराम करत रहे। पहिलका बात के इयाद करत रहे।

अचके मुँहा-मुँही भइल। सब लोग भागे लगलन। मलिकार आवत बाड़न। रमरतिया अतीत के गीत में मीत बनल आपन अशोक के इयाद करत रहे।

कोइल/फरवरी-अप्रील—३०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: IKS-MoE-Grant-2

भाग पराह लोग गइल। अशोक के नाम से बीनहार बीनहारिन, भीतिन लोग डेरात रहन जतिना बाघ शेर के भय से हरिन। एगो बोरह-तेरह बरिस के बेटी बुढ़िया के दूनो पंखुरा में हाथ लगा के भर जोर उठइलस। हाउ-हाउ सिकहुती काँख तर जँतवा के अपने भाग चलल। बेचारी बुढ़िया के दुख का मारल देह से दउड़ ना हो सकल। खेत के बीचो बीच खुटिए खूंटी तिरछे भागल।

आरि पर साइकिल पंटक के खीसे हाँफत अशोक बिननिहारन पर मुरगी के बच्चा पर गीध नियन टुट पड़लन। सब लइका लइकी छने में आन्हीं बन गइलन स। रमरतियो भर जोर भागल जात रहे। ऊ अबहीं एकाधो टोपरा पार ना कइले रहे तब तक अशोक के नजर ओकरा पर पड़ गइल। ऊ तिरछे दउड़ के ओकरा के पकड़ लेलन। चील्ह अस पीछही से अइसन झपट्टा मरलन कि बीनल अन्न के सिकहुती डलिया सहिते दूर फेंका गइल। कुछ अन्न सिकहुती में आ कुछ भूँइयाँ छिटा गइल। आँख गुड़ेड़ के चटकन उठइले ऊ कड़ेड़ होके पुछलन—"कवना बाप के बिगहा में से बीन के ले ले जात रहिस गे? खाद बीआ आ पनिवट देत-देत हमनी के परान निकलल जात बा आ तें लूट ले ले जात रहिस। कह ना घेंटी दबा दीं कि सोआहा हो जो। सुरसतिया मुड़ी झुका लेलस। आँख भर अलइस। कुछ जबाब ना मिलला का बाद 'खटकीन' कहके अइसन लात चलइलस कि बेचारी हबकुरीए गिर गइल। ऊ बुदबुदात आगे निकल गइल।

गेहूँ बूँट के सोइलार खूँटी से तरहथी आ ओठ छेदा गइल। कसहुँ आँह ऊँह कर के उठल आ मालिक के पुतवा देन निहारे लागल; विचारे लागल। आज ओकरो अशोकवा जे रहित त इनिका के बता देले रहित। ऊ कहाँ ना कहाँ चल गइल। घूरा पर के वीरवाइयन के सुतरीआए से बचा ना सकल। सहारा आ अलान ना बन सकल।

ओने अशोक बीननिहारिन के खदेड़ले-खदेड़ले गाँव के गयेड़ा पहुँच गइल रहन। एने बुढ़िया अन्हरिया में लुकइले जात रहे।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुक्तक

'सुरेन्द्र सुमन'

कबो नरम त कबो गरम बाटे
लोर में डूबल सभे शरम बाटे
सरापी-सरापी इ किरिया कसम
उनकर प्रीत के अतिने मरम बाटे

× × ×

अचके दियरी केहू जब बार जाला
मन के अन्हरिया के जार जाला
जिनिगी के बाती ओराइल त बुझाइल
साचो प्रीत में आदमी हार जाला ॥

गीत

—जनार्दन पाण्डेय 'विप्र'

कह कइसे हम आयब तोहार नगरी ।
पइया पीराइल बा बीच में समुन्दर,
काँटे कुशवा आंधी बवडर
पापवा से भरल हमार गठरी ॥ कह कइसे

रहिया ना सुझे मनवा ना बुझे
हमारा लउकतार तूहू बाड़ दुजे
ना हमरा लउके तोहारा घर के डगरी ॥ कह कइसे

माया के बाजार में हमहूं भुलाइनी
स्वार्थ में रहके सब कुछ हेरइनी
दया करके हमरो तू खींचल टंगरी ॥ कह कइसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिट्ठी मिलल के शेष

एह में कबनों सक ना कि गाँव के पारंपरिक सम्मिलित परिवार बड़ा तेजी से टूट रहल बा लेकिन हए अर्थ प्रधान जमाना में एह टूटन के कारण खोजे के चाहीं ना कि लोर चुवावे के चाहीं । कहानियन के बारे में इहे कहल जा सकेला कि एह अंक के पहिलका दुनों कहानी अपना समय से २० साल पीछे बा। रिहर्सल समय के साथ बा ।

सब रचनाकार लोग के बधाई। एह आयोजन खातिर सम्पादक के धन्यवाद ।

राउर

जवाहर सिंह, इम्फाल; मणिपुर

आपके 'कोइल' नवम्बर-जनवरी के कहानी विशेषांक अंक मिलल । अंक सुरुचिपूर्ण, विविध आयाम से युक्त, स्तरीय बा। एह प्रयास खातिर बहुत-बहुत बधाई। गुड़ नीयर केनियों से चखल जाव। पूरा स्वाद मिलत बा। एह में लघुकथा अनुवाद भी बा जेवन वात्सल्य-रस के गागर बा। कविता दे के मन फेर काम भइल बा।

अपना परिवेश में ई अंक प्रशंसनीय त बटले बा। मुख्य पृष्ट, अन्तिम पृष्ठ भी आकर्षक आ मुद्रण साफ-सुथरा। भाई भगवती प्रसाद जी द्विवेदी एह अंक के अतिथि सम्पादक बानी उहाँ के विशेष-विशेष धन्यवाद। अब आँख में मोतियाबिन्द आ रहल बा। पढ़ल-लिखल एकदम कम।

आशा बा स्वस्थ बानी। मित्र मण्डली के सादर स्मरण। चौबे जी के सादर प्रणाम ।

राउर

डॉ० लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी, नरही, बलिया

'कोइल' के साल तीसर, अंक ४–६ मिलल। बहुत खुशी भइल। ई कहानी विशेषांक [1] बहुते अच्छा निकलल बा। एकर चारो कहानीकार भोजपुरी के सिद्ध लोग बा। हमरा सुनील कुमार पाठक जी के 'कविता के एगो संज्ञा' बहुते अच्छा लागल। उनकर कविता-बोध बहुत ठीक बा। ग़जल में लाल स लाल तरंग के ग़गल त बहुते प्रशंसनीय बा। काहे? मिलके जाने के परी। कहानियन के पढ़लीं हाँ ना। वे पढ़ले कहल बेईमानी होई। आनन्द सन्धि दूत ग़जल में का कहल चाहत बानीं? शुभ कामना के साथ।

राउर

डॉ० शम्भुशरण, पटना

कोइल फरवरी-अप्रील पृ०—३३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

१. भोजपुरी कवनो भाषा के बोली ना ह, ई स्वयं एगो भाषा ह। एकर आपन रूप आ आपन एगो अलग संस्कार बा।

२. हिन्दी प्रेमी लोग के मन में ई डर नाहक बा कि मैथिली, भोजपुरी, हरियानवी, ब्रजी आदि के अगर भाषा मान लिआई त हिन्दी के घाटा होई। एही से एह लोग का एह सब भाषा के स्वीकार करे में डर लागत बा।

३. भाषा के विवाद राजनीति के पचड़ा ह। जे जवना भाषा में आपन अभिव्यक्ति ठीक से कर सकत बा, ऊ त ओह में करे के बड़ल नहीं बा।

४. जइसे विद्यापति मैथिली भाषी खातिर मैथिली के कवि हवन आ अऊर क्षेत्र खातिर हिन्दी के, ओइसहीं कबीर भोजपुरी भाषी खातिर भोजपुरी के आ आन क्षेत्र खातिर हिन्दी के।

५. भोजपुरिया जहाँ गइल बा, भोजपुर बनवले बा।

—माननीय न्यायमूर्त्ति प्रभाशंकर मिश्र जी के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दशवाँ अधिवेशन के अवसर पर बोकारो में दिहल भाषण के अंश।

कबीर भोजपुरी पुस्तकालय, अलमस्तनगर, गोटीघर, साहेबगंज, करनौल, मुजफ्फरपुर से दिनेश्वर मिश्र दिनेश के द्वारा प्रकाशित आ शकुन्तला प्रेस मुजफ्फरपुर में मुद्रित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोइल

भोजपुरी के चेतनगर पत्रिका

साल पांचवा । अंक—सितम्बर १९९१ । दाम दू रुपया ।

प्रबन्ध-सम्पादक :
डा. धीरज कुमार भट्टाचार्य

सम्पादक :
डा. ब्रजभूषण मिश्र

संयुक्त-सम्पादक :
कुमार विरल

सहायक-सम्पादक :
दिनेश्वर मिश्र 'दिनेश'

—: शुभाकांक्षी-मण्डल :—
श्री सतीश्वर सहाय 'सतीश', श्री रिपुसूदन प्र. श्रीवास्तव,
श्री तैयब हुसैन "पीड़ित"

सम्पादन-आ सहयोग अवैतनिक :
श्री दिनेश्वर मिश्रद्वारा कबीर भोजपुरी पुस्तकालय प्रेस से मुद्रित ।

बुलेटिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिट्ठी मिलल

आदरणीय भाई जमशेदपुर

सादर प्रणाम ९.९.९१

राउर भेजल 'कोइल' के जून ९१ अंक मिलल कृतज्ञ बानी। शिल्प आ भाव के दिशाई राउर कहानी 'पछतावा' प्रभावकारी बन परल बिया। कुमार विरल जी के व्यथा कथा 'अउरो रीतु ना अइल' पढ़ के पाठकीय सहानभूति त जागल बाकिर एकर शिल्प बहुत पुरान हो चुकल बा। विरल जी के गीत पसंद परल। अश्वनी कुमार 'आँसू' जी के गजल के पांति पांति तन भइल बांसुरी छेद छाती में बा गीत बनके दरद सब निकते रही। बहुते मार्मिक आ संवेदना के अति कोमल तह तक पहुचे में समर्थ बिया एह स्तरीय गजल ख तिर आँसू जी के हमार बधाई। बाकी सभ रचनो ठीक बाड़ी सन। संपादकीय-चिंतन मंथा बा। आशा बा सानन्द बानी।

राउर

कन्हैया सिंह 'सदय'

पोस्ट-लुवांबांसा, वाया-इन्द्रा नगर ८३१००८

—०—

बन्धुवर, जय-भोजपुरी ससना

सादर नमन, १३.५.९१

कुशलोपरान्त कुशलता के मंगल कामना। राउर पाति पाबूत हम अपन कविता संग्रह 'लहोक' रउवा सेवा में बुक-पोस्ट कर दिहनी। आशा बा रउवा मिल गइल होई। किताब पर अपनी विचार से हमरा के राह देखावे के कृपा करीं इहे निहोरा बा। हम एगो अदारी कवि बानी रउवा सभन के सुभाव आ सम्मति हमर सम्बल आशा बा 'लहोक' पर रउवा आपन बिचार जरुर भेजे के कष्ट करब। अगर आउर प्रति के जरुरत पुस्तकालय खातिर होखे त सूचित करब। स्नेह भाव बनवले राखब। एकरा साथे पत्रोतर के इन्तजार में :—वीरेन्द्र कुमार मिश्र 'अभय' ग्रा.—ससना पो.—सिसई सहाजितपुर, सारण ८४१४२२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादकीय —

राष्ट्रभाषा

१४ सितम्बर के हरेक साल हिन्दी दिवस के आयोजन कईल जाता। जगह-जगह संगोष्ठी, सम्मेलन आ मनोरंजनार्थ कवि-सम्मेलन करके, हिन्दी के गुण-अवगुण के चर्चा चला के लाखों-लाख रुपया स्वाह कर दिआला। एह से हिन्दी कागज में भले राजरानी बन जाओ, असली स्थिति ओकर चेरी के ही बा। राजनेता आ अफसरशाह लोग हिन्दी दिवस में लमहर-लमहर भाषण देके फेर अंग्रेजी के पाला पकड़ लेवेला।

जवना देश में ओकरा राष्ट्रभाषा के सम्मान नइखे, ओह देश के बाढ़-बढ़न्ती कइसे होई? देशे के भाषा के देश में प्रचार प्रसार के जरुरत पड़े, एकरा खातिर करोड़ों खर्च करे के पड़े, ई कतना लाज के बात बा। ई कवन मजबूरी बा? चोर कहाँ बा, खोजे के चाहीं। चोर तनिका सा आँख खोलला पर साफ-साफ चिन्हाजाई। मुट्ठी भर ओह लोग के मनसा हिन्दी खातिर ठीक नइखे बुझात, जे कवनो बहाने अंग्रेजी के बरकरार राख के आपन वर्चस्व बनवले राखे के चाह बा, आपन उल्लू सीधा कर रहल बा।

भारत में अंग्रेजी कवना प्रदेश, कवना केन्द्रशासित प्रदेश के भाषा बा? जवना चार प्रदेश के विरोध के नाम पर आज अंग्रेजी के बरकरार राखल गइल बा, ओह तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक आ आन्ध्र प्रदेश में आपन-आप तमिल, मलयालम, कन्नाड़ आ तेलगु भाषा बाड़ी स जवन उहाँ के राजो-काज के भाषा बाड़ी स। एह चारो प्रदेश प्रदेशन में तमिलनाडु ही अइसन बा जहाँ हिन्दी के नाम पर अन्धा-विरोध बा आ उहो राजनीतिक करण से। बाकी के तीन प्रदेशन में हिन्दी के उपस्थिति ना बढ़िया त बेजाय ना कहल जाई। अगर राजनीतिक विरोध बड़लो बा त उग्र नइखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सवाल मनसा के बा। ई मुट्ठी भर लोग के स्वार्थ आ चालाकी बा, जवना से ऊ लोग अंग्रेजी के बनवले राखे के चाहत बा। अगर मनसा सही बा, त काहे ना भारतीय भाषा के आ ओकरा जानकार लोग के मौका दिआत बा? तामिल नाडु अगर हिन्दी के माध्यम केन्द्र आ अन्य राज्यन से सम्पर्क ना राख सके त तमिल में ही करे। कम से कम तमिल-हिन्दी अनुवाद कन के संख्या त बढ़ी। ओइसहीं आन प्रदेशिक भाषा के साथो ई संबंध राखल जा सकत बा। एह से हिन्दी आ आन भारतीय भाषा के त विकास होई? सबसे बढ़के गुलामी के भाषा माया से उतरी। अस्तु।

—ब्र. भू. मि.

आपन भाषा खातिर

'कोइल' के यात्रा आगे जारी रही एकरा खातिर पाठक लोग आ लेखक लोग के तनी फेर से विचार करे के होई। खास करके एह दिसाई कि जवन रचना 'कोइल' में छप रहल बा ऊ अपने के कइसन लागता। काहे कि अपने के प्रतिक्रिया के आधारे पर हम अपने लायक रचना परोस सकतानी। पाठक लोग सही मायने में एह ओर सोचसु आ ततकाल आपन प्रतिक्रिया भेजसु। हमनी अपने सभे के प्रतिक्रिया के बाट जोहत रहिला। लेखक भ ई जी लोग से अनुरोध बा कि 'कोइल' के स्तर जानिये के आपन रचना भेजसु। काहें कि 'कोइल' भोजपुरी भाषा साहित्य खातिर प्रतिबद्ध बिया। हमनी का लगे ओइसन प्रौढ़ रचनन के अभाव रहता जवना का चलते काम चलावे वास्ते कुछ छापही पड़ता। खास कइके भोजपुरी के पुरान धुरान लेखक कवि आपन रचना भेजे में कोताही करतारे त नवका पीढ़ी के रचनाकारो लोग चुप गइल बड़े। भोजपुरी के भाग खाली भूसा ओसावे में बाझल बा। हम मानतानी भोजपुरी पत्रिका छापे-छपवावे में आर्थिक तंगी के लम्बा पहाड़ खड़ा बा त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लांघहुं के मिजाज भोजपुरिहा होखे के चाहीं। कुछ ततकाल फायदा वाला अंदाज भोजपुरी के रचनाकारन में घुन अइसन पइसल जात बा। जवन बहुते भयानक आ खराब बा। हम एकरा से नकार नइखी सकत कि भोजपुरी पत्रिका पढ़े के, चाहे किताब पढ़े के चाव पाठकन में नइखे जागत। हमनी कोशिस में बानी कि लोग भोजपुरी किताब, पत्रिका खाली पलटबे ना करे पढ़बो करसु। हम मानत बानी। 'कोइल' अकेले सब अदिमी के मन के सम्पूरन चाह ना मेटा सके। बाकिर हमर प्रयास इहे बाकि केहु ग अपने सभे भोजपुरी पढ़ी समझी आ विचार करीं। भोजपूरी के पत्रिकन में कुछ अइसन रचना रहो जवना के पढ़ के फेकल मत जाव। सहेज के राखल जाव। एकरा खातिर निबंध पर जोड़ दिहल जादा उचित बुझाता। गद्य विधा पर रचना लिखे के चाव तनी कम बा। जादे रचनाकार कविए लोग बा। एह से कविता गीत त अनठेकाने भटाता बाकिर गद्य रचना के अभाव हर एक अंक में बनल रहता। नाटक विधा में एकांकी छोट-मोट भेंजल जा सकेला। यात्रा संस्मरण, रिपोतार्ज, इन्टरभियू, समीक्षा ललित निबंध, शब्द-चित्र वगैरह विधा पर रचना लिखाए त भोजपुरी के पत्रिका भरल पूरल लागिहें स।

हमनी के 'कोइल' में कवनो सुझाव सीधे भेजल जाई त हमनी विचार करब आ एगो नया राह बन सकता। 'कोइल' पाठक आ लेखक के बीचे सीढ़ी बनल चाहता। ताकी जनता के सही दुख-दर्द सामने आ सको आ भोजपुरी के संस्कृति, सगरो गमागम महके। भाषा के भीतर जवन शक्ति बा तवन जागो आ तमाम जनता के भीतर संघर्ष करे के ओह मादा के अउर बल देवो। ताकि करोड़ो हांथ ओह हाथ से लड़ सको। जेकरा खूनी पंजा में मानवता छटापटा रहल बिया।

बस अतिने

कु. वि.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भंइस के आगे बीन—

धान कूट··· हो दुल्हा

नेता लोग चुनाव में जनता के परिछावन करत-करत हाल खस्ता कइलहीं रहे। इचि जनता जनार्दन दम धइले रहन कि कसहुँ ऊचुकन लगा के भाजपा, आ दूगो सौतेला भाई रामो एण्ड वामो वगैरह मिल जुल के कांग्रेसी सरकार के तसला देश के दुल्हा पर बइठाइए देल लोग। अइसे पीछिला प्रधान मंत्री चन्द्रशेखर, जे भोजपुरी में कबो-कबो भाखन देत रहले, भोजपुरीया लोग के ओल देके चल गइले। सोना बंधक धई गइले कि निक राह लगइले कि नरसिम्हों जी चट-पट सोना बिदेश में बेंच दिहले। सांसद लोग कांव-कांव कइल। अब आइल बजट के मूसर से देश के ओखर में जनता के कूटे के नया प्रस्ताव। पूरा देश से कहाइल इचि बरदास्त करीं, तनि दाँति लगाईं। मंहगाई बढ़ी। 'जब ओखरी में सिर दिआ तब मूसरों से क्यों डरें।'

बताईं भला देश के जनता आ सांसद के बुद्धि के, कि बूढ़ ठूढ़ प्रधान मंत्री नरसिन्हा जी के दुल्हा बना दिहल। जनता गावत बिआ—धान कूटऽ हो ··· ··· दुल्हा ··· ··· धान कूटऽ हो·····

अब आईं भोजपुरी भाषा के बढ़न्ति का ओर तनि तिकईं। जब आँख का ऊपरे पूरा हथेली फइला के दूर देखत बानी त लउकत बाकि काशी में बइठल रोगि आइल एगो दण्ड लिहले झिरकुट सन्यासी जी, विमलानन्द सरस्वती। जेकर योगदान भोजपुरी कबो ना भुलाई। उहाँ के सांस-सांस कहत बाटे अकादमी के शर्मनाक कहानी। 'वउधायन' महाकव्य के रचनिहार के संगे अतिना लमहर मजाक? कादो राजधानी में क्रांति रोजे होला। कुछ लोग फिफिहिरी भइलो बाड़े। बाकिर भोजपुरिहा मुख्य मंत्री जी से सावंगे नइखे बइठत। भोजपुर के असली बेटा बाबा बिनेसरी दूबे भोजपुरी

(शेष पीठ २२ पर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गँवई ढिबरी

० विजय कुमार तिवारी

ई रमेसर के रोज के आदति ह। बाकिर उनुका के रमेसर कहल ठीक ना होई। हमरा लेखा विधार्थी से त अऊरु ना। गांव भरि के काका लोगन के काका आ हमरा पीढ़ी के बाबा हउवे ऊ। ऊ आपना सुभावे लेखा कइले बाड़े। 'आ भइले का बा ··· बस तनी ओनेने' अइसे कहल जा सकेला, थोरकी हेराफेरी।

भोर में ना जाने ऊ कब उठि गइले कि हमरा पतो ना° चलल। राति खानी ऊ आपन बँसखटिया हमरा नियरे बिबले आ पसरि गइल रहले। उनुकर आ हमार दुआर आमने-सामने बा। बीच में चरन बिया जेकरा ओह कगरी से उनुकर आवे-जावे के राह बा। उहो जमीन हमनिये के ह। राह उनुकर हो गइल बा। एह पर बाबू जी कुछु दोसरे ढंग से सोचेले, बाकिर हमरा कवनो विशेष अरथ दिखाई ना देला। ओइसही इहवाँ कवन भीड़ि लागल बा कि इंची भरि जमीन खातिर भागमभाग होखे।

थकान के कारन हमरा जागे में देरी भइल रहे। राति देर तकले उनुकर भाषन चलल रहे कि शहरी गंवई लोगन के धौंस हमरा पर ना चली। हम अइसहीं रहब। ऊहे लोग बुतात ढिबरी लेखा फफक से जरी आ बुता जाई।

'त, ई कहला के का जरुरत बा!' हमरा पूछला पर छन भरि खातिर बाबा रुकि गइले। अन्हार में उनुकर चेहरा ना लउकत रहे। बाकिर लागल—जरुरे फक्क रहि गइल होइहें। तनी देर रुकि के ऊ आपन चुप्पी तुरले, तोहनी के इहे अकड़ खराब बा। पइसा देखावतारस। जइसे जे शहर नइखे गइल ओकरा चेट में कुछु हुइये नइखे।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उहाँ तब बहस के पूरा गुंजाइस रहे, बाकिर हमहीं टारि दिहनी, 'का बेकार बतियावतारऽ। अइसहूं देखल जाय तऽ शहर चाहे देहात में रहे वाला लोग-बाग एह तरे ना सोचेला। पइसा कहवां नइखे ? गाँधो में बा। जहवें श्रम बा, साधन बा, पइसा बा। खेती, बारी, जानवर, अनाज, ब्यपार सब में पइसा बड़ले बा।'

दिनें पानी बरसल रहे। एह से हवा में शीतलता तनी अधिक रहे ! ठंडा हवा आछा लागत रहे। अन्हरिया में हम घड़ी देखल चहनी। अभी दस ना बजल होई ! गांव में सन्नाता हो गइल रहे। बाबा सुतल ना रहले। आपन आमदनी के हिसाब लगावत रहले। जमीन उनुका पासे कम नइखे ! खेतन के उत्पादन पहिले से बढ़ि गइल बा। दुआर पर दू गो बैल आ एगो लगहर जरूरे रहेला।

बाबा अचानके उठले आ कहले, 'अबे अइनी !' आ चलि गइले ! भंइसिया बाहर खाड़ा रहे। ओकर पगहा खोलले आ हांकि ले अइले। पेड़ के सोरी में बान्हि के गड़हा ओरि पेशाब करे चलि गइले।

'का डर लागत रहे कि इहवें बइठि गइला हा ?'

'डर ? कइसन डर ! हमरा डर-ओर ना लागे पहिले हमी राति-राति भरि घूमत रहनी गांव भरि के चक्कर लगा आवत रहनी कबो-कबो सरेहो का ओरि निकलि जात रहनी मालूम बा जब से हमार घुमल बन्द भइल, गांव में कई गो चोरी के घटना हो गइलीसं हमरे बैल चोरा ले गइले सऽ ई सब अन्हारा के करतूत ह जमीन में हिस्सा खातिर मुकदमा कइले रहे हमहूं कहि देले रहनी हमरा जीयते जमीन के एगो टुकियो ना मिली

भोरे उठनीं, तबतकले बाबा जवार के चक्कर लगा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आइलं रहले उनुकर दादी कहेलीं कि एकरा पांव में घिरनी बा। दिन भरि घूमत रेहेला ! दादी के अलावां उनुकर केहू नइखे। टोला पर चोरी भइल बा आ सनेही के बहू का बेटी भइल बीया, बाबा इहे दूगो खबर ले आइल रहले। खबर से प्रभावित उनुकर चेहरा कुछु दोसरे लेखा लागत रहे ! कहीं दहशत रहे उनुका चेहरा पर।

'कवनो खास बात बा का ..... ?' उनुका चेहरा के उड़ल रंगत देखि के पूछनी। बाबा गाँव भरि खातिर बेतार के तार हउवे जवार के सब समाचार उनुका पहिलही मालूम हो जाला। ओह में ऊपर से नमक-मिर्च मिलाके बाबा दोसरा के सोझा परोसेले।

'हँ' ऊ धीरे से कहले, 'तीन दिन से लगातार गाँव में पुलिस आवऽतीया। सूंघत फिरऽतीया।'

'कुछु तऽ मालूम होई ? आखिर दोसरा गाँव के हत्या खातिर एह गाँव में काहे डेरा डालल चाहऽतीया।'

'इहवों दू-तीन जाना बाड़े, जेकरा पर शंका कइल जाता।'

बात होते रहे कि सिपाही दुआर पर आ गइलेसऽ। आखि मिसत बाबा देखले। सिपाही लोग कान्हा से बनूख उतारल आ पसरि गइल। थाकल होई लोग। बाबा बाल्टी उठवले, पानी भरले लोटा मगवले आ नीम के गाछ पर चढ़ि के दतुअन तूरि ले अइले। सिपाही लोग जब तकले मुँह-हाथ धोवल, बाबा दही डलवा के गुड़ के रस बनवा ले अइले।

गाँव के तीन आदमी पकड़ाइल रहे। बाबा धीमे से हमरा से कहले, 'बेचारा नाहके पकड़ाइल बाड़ेसऽ।'

'कुछु करीं बाबा' पकड़ाइल लोगन में एक जाना के मेहरारु बाबा के हाथ जोरली।

'अब का भइल ? तब त अन्हारा साथे बड़ा दोस्ती रहे ! जो, ओकरे के बोला ले आउ !' बाबा देखावटी झिड़की दिहले !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बाबा सब लोग दुखी होके पुकारल !

पुलिस चलि गइल। तीनो जाना छुटि गइले। तनी-मनी पूछ ताछ भइल रहे। जात-जात बाबा चेतवले, 'इयादि रखिहे फुलेसरी। फुलेसरी चली गइल। सब लोग चलि गइल। बाबा जे अब तकले जमीन पर बइठल रहले, धोती झारत उठले आ आइके हमरा गोनतारी बइठि गइले।

'ना बाबा, गोनतारी ना, हेने सिरहाना का ओरि बइठऽ।'

'का फरक पड़ी, 'ऊ उठले आ सिरहाना बइठि गइले। ओ—इसे उनुकर उमिर बाबा कहाये लायक नइखे। गाँव में रिश्ता-नाता अईसहीं चलेला। गोदी में खेलत लइका केहू के बाबा हो सकेला चाहे कवनो बूढ आदमी कवनो नाया—नोचर दूलहिन के देवर। पैंतीस के आस-पास के उमिर, हठ्ठा-कठ्ठा गोर शरीर, आच्छा खास लम्बाई वाला रमेसर बाबा के देखदनो लेखा ना। मइल-कुचइल धोती, फाटल गंजी उनुकर सालोसाल के पहिनावा हऽ। कवनो-कवनो खाली धोतिये से काम चलि जाला। जाड़ा में एगो मइल चादर ओढ़ि लेले! गाँव त गाँव, जवार घूमि आवेले, भोज-परोज सम्हारि देले; मुखिया-मुख्तार से भेंट कई लेले, बाकिर भेख—भूषा इहे रहेला। कहला पर जवाब देले कि तोहनी का झारऽसऽ सूट—बूट। हमनी का इहे ठीक ना।

उनुकर दादी भरि लोटा माठा भेजली। बाबा गटागट पी गइले। मोछि पर माटा के गाज लागि गइल, जवना के ऊ आपना धोती से पोछि दिहले।

'बियाह काहे नइखऽ कई लेत? दादी कवले जिन्दा रहिहे। अब त उनुके सेवा-टहल के जरुरत बा! धन-सम्पत्ति बढ़ले जाता। केहू भोगहू वाला तऽ चाहीं।'

बाबा हमरा बात पर धियान ना दिहले! राति वाली बात धन-सम्पत्ति के नाम लेते उनुका इयाद आ गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कमाई गाँवे में हो सकेला। लोग शहर का ओरि भागल चली जाता। गाँव जइसे काटऽता। इ का आछा बा ? हं उहां आराम ना मिली। कपड़ा साफ ना रही। धूरि-माटी में सउनाईल रहे के पड़ी। मोट-झोट जे मिली, खाये के पड़ी। इहे नू ··· बस लोग बेकारे रोवत रहऽता। खेती हमहू कइले बानी। गाँव में केकरा से कम उपजऽता। पिछिला साले कारोबारो कइले रहनी। जवार भरि के आलू खरीदले रहनी।

पईसा कहवा से आइल बाबा ?

बाबा हँसे लगले, 'तोहनी का का बुझेलऽसऽ ··· गाँव के लोग निपट गंवारे होला।' तब उनुका चेहरा पर एगो कुटिलता के दर्शन भइल। देखि के डर लागल ! ऊ बतवले, 'पहिले हम केहू के पईसा ना दिहनी। सबकर उधारी रहे। हं, बनिया जवना भाव से लेत रहे ओह दू चवन्नी भाव बढ़ा दिहनी।'

तब ?

'तब का ··· बनिया गोड़ धरि लिहलसि। कहे लागल कि हम मरि जाइब बाबा। हम कहनी कि एह में जीयेमुए के का सवाल बा। मेहनत-मजूरी कइके जवार भरि के आलू एक ठांव गलिया देले बानी। ले आवऽ गाड़ी। हमर मेहनत-मजूरी दे दऽ, ले जा। मन पीछे दू रुपिया दिहलसि। ना हरे, ना फितकिरी, बइठल-बइठल आठ हजार के मुनाफा।'

उनुका चेहरा पर एगो चमक झलकल। बाजी जइसे जीतला के खुशी होखे। उनुकरे भाषन जारी रहे। बोलले, 'एमेले साहब अइले। पहिलहूं कबों एमेले एम्पीं गाँव में आइल रहले ? कस्बा में बइठक रहे। हम उहवे कहि दिहनी, ओट चाही तऽ गाँव में आवे के पड़ी। दऊरल अइले। एही जगह पर बइठल रहलें। जवार भरि के लोग रहे। सबका समनहीं सुना दिहनीं, गाँव में सरकारी ट्यूबेल गड़े के चाहीं। पछिमारी डीह पर तीन महीना से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गड़ल बा। अइसही ना लोग पूछेला रमेसर के !'

तब जवन आत्मा संतोष उनुका चेहरा पर झलकल, ओकर वर्णन ना हो समेला। मन उनुका बातन से उबिया गइल रहे। हमर मालूम बा कि ई लोग कइसे गाँव के लूटऽता। हम कहनी, नलकूप तऽ सरकारी योजना में गड़ल बा। सीधा-साधा लोगन में तू आपन माथा ऊँचा कइले बाड़ऽ। अउर छोट-बड़ लाभ त सोझे डकारि गइल होइबऽ। गंवई लोगन के मालूमो ना चलत होई। रुकऽ तोहार पोल हम खोलऽतानी। तोहार असलियत सबके बतावल जाई, तब लोग जानी कि ई बाबा का हउवे।'

'एह सब फेर में मति पड़िहे बचवा ! तोरा पढ़े के बा। जो, चुपचाप किताब पढ़।' ऊ हँसि के कहले, 'लोगन के बचावेनी तऽ भीतरो करवावेनी।'

'खुलेआम चुनौती दे तारे बाबा,' मन में आइल क्रोध के दबावत पूछनी, 'एह साल कथी के कारबार होई ?'

तोहरा लेखा लइकन के बियाह करवावऽतानी, ऊ हँसे लगले।

छुट्टी बितत रहे। शहर लवटे के तइयारी करत रहनी। भीतर आँगन में गइनी तऽ बाबा हाजिर रहले। जवार में सबसे अधिका महुआ के बगइचा हमनि के बा। फूली चुनवा-चुनवा के, सुखा-सुखा के माई गल्ला कइले बिया। रमेसर गजरा के भाव खरीदले बाड़े। आजु बनिया आवे वाला बा। बाबा व्यस्त बाड़े ! एगो लइका ढोई-ढोई के पानी ले आवता आ बाबा गल्ला पर फेकतारे। कम से कम पानी के वजन तऽ बढ़िये जाई।

हमरा के देखिके ऊ कुटिलता पूर्वक हँसले।

क्रोध के एगो चिन्गारी फूटल भीतर, 'सचहूं अइसना लोग के पहिचाने के जरुरत बा।'

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई आगि कब बुताई !

० डॉ. राजेन्द्र भारती

जतरा शुभ करे खातिर जब कतहीं से दही के जोगाड़ ना हो पावल तऽ बलेसर के महतारी मशाला के हाड़ी में हाथ डालि के उचिलावत-उचिलावत दू-चार दाना धनिया के पा गइली। ओही के बलेसर के मुँह में डालि के फकफक पड़ली। महतारी के रोअत देखि बलेसर से छोट दूनो भाई-बहिन, रोवे लगले स। बलेसरो से ना अराइइ। तबो सेआन होत बहिन आ पढ़े के ललाइल भाई के देख बलेसर करेजा काठ कके झोरा उठवले आ माई के गोड़ लागि के बहरिया गइले।

बलेसर के महतारी आपन करेजा के टुकड़ा के पेट के जरते विदा त कर दिहनी, बाकिर उनकर आत्मा बलेसर का संगे रहे। बलेसर के बहरिअइला एगो पहरो ना बीतल रहे बाकिर बुझात रहे कि कई बरिस बीत गइल। बलेसर के खाये-खेले के उमिर बा, बाकिर का करस ! एही उमिर में ऊ जोगाड़ में खेत में काम करि-करि के बाप के करजा भरले। अभी पाम्ही आवता, बाकिर बूढ़ जइसन बात-बेवहार हो गइल। कोशिलिया दिन पर दिन छाती पर चढ़ल जातिया, बस बलेसर के इहे चिन्ता घेर लेहलस। महतारी के बरिजलो पर ऊ ना मनले, कमाये कलकत्ता चलि दिहले—अपना मामा के भरोसे।

बिना कवनो खबर कइले अचानक बलेसर के देखि के मामा जी एके सांस में सब खैर-खैरियत पूछ गइले। नोकरी-चाकरी के बात सुनते मामा जी के चेहरा उतरि गइल। मामा जी बलेसर के टट्टी फराकित के जगहा देखा के अपने खाये-पिये के बनावे में लागि गइले।

होत भिनसहरे मामा जी आपन डिपाट के सरदार के डेरा पर पहुँचले। सरदार से काम के बावत बात कहले। सरदार के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाहे-बिगाहे मामा जी केतने काम आइल रहले, बाकिर सरदार जी साहेब-सूबा के बहाना बना के टार गइलें। मामा जी आपन डिपाट के साहेब के घरे रहू मछली लेके पहुँचले। मछरी तऽ साहेब राख लेहलस, कहलस, 'युनियन के पचड़ा आजकल बहुत बा, अइसे कवनो आदमी के रखला पर यूनियन वाला जिये ना दिहें जा। यूनियन के लोगन से मिलऽ। मामा जी यूनियन के दफतरन के चक्कर काटे लगलन। कबो एह पार्टी के यूनियन के दफतर तऽ कबो ओह पार्टी के यूनियन के दफतर। सब यूनियन वाला लोग के कहे के मतलब रहे कि हम अगर कुछ करतानी तऽ उऽ पार्टी के यूनियन विरोध करी। एही आपाधापी में महीना बीत गइल।

एने बलेसर के महतारी बबुआ के नोकरी खातिर देवता-पितर नेवतले लगली। रोज भोरहीं नहा-धो के शिवाला में माथा टेके लगली। बहिन कोशिलीया तऽ जवान होइए चलल रहे। ओकरा सपना में राजकुमार लउके लागल। हरदम मने-मने भईया कमा के अइहें तऽ का-का लेहब एकरे उधेड़ बुन में पड़ल रहे। छोट भाई रमेसर शहर के स्कूल में दाखिलो करवा के इन्तजार में जमीने पर गणित लगावे आ मिटावे। बलेसर के महतारी एगो नया उमंग से घर-घर काम करके अनाज ले आवस। उनका लगे अब दिन फिरले बोलता। पूरा परिवार के बलेसर पर आँखि लागल रहे।

मामा जी जब तन-मन-धन के अलावे सोरस-सिफारिस करि-के हारि गइले तऽ ई सब बलेसर से देखि ना गइल। ऊ मामा जी से चुपे, जब मामा जी डिउटी पर चलि जास, तऽ रिक्सा चलावे लगले। कांचि उमिर। जेठ के महीना। हारि-थाकि के भी मामा के सोझा झूठो तरोताजा रहस। एह तरे तऽ कुछ पइसा घरे बलेसर बिदा कइले।

रुपीया पाके महतारी, भाई, बहिन उतरा-इतरा गइल लोग।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलेसर के महतारी तऽ ओही लगले रुपीया देवता के अस्थान पर राखि के नाकि रगड़ली आ दूसरे दिन से जेतना देवता नेवतले रहली, ऊ पूजावे लगली।

महीना भर रिक्सा खिचला के बाद बलेसर अब बेमार रहे लगले। रात-राव भर खाँसते बिते। मामा जी बलेसर के सरकारी अस्पताल ले गइले। डाक्टर टी.बी. बतवलस। दवा-दारू होखे लागल। मामा जी चिन्तित रहे लगले। ई महीना बलेसर पइसा ना भेज पवले।

अस्पताल से छुट्टी पावते मामा जी काफी सोच-बिचार के बलेसर के गाड़ी धरा दिहले। अचानक बलेसर के घरे पहुँचते उनकर महतारी भाई-बहिन उनसे लिपट गइल लोग। हाड़ आ चाम के ठठरी देख के बलेसर के महतारी बिफट पड़ली। पौ फाटत रहे। बलेसर गटागट एक लोटा पानी पी के कोशिलिया के देखलन। ऊ लजा के आपन ओढ़नी ठीक करे लगल। बलेसर फरुहा उठा के बाहर चल दिहले।

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जय भोजपुरी ! जय भोजपुरिहा !!

कबीर जयन्ति का अवसर पर-
स्थापित १९९१

कबीर भोजपुरी पुस्तकालय प्रेस का ओर से निहोरा।
भोजपुरी लिखनिहार सभन सम्पर्क करीं–
भोजपुरी के खाँटी साहित्यिक रचना छपवावे खातिर।

पता :–

कबीर भोजपुरी पुस्तकालय प्रेस,
अलमस्त नगर साहेबगंज
पोस्ट-करनौल जिला-मुजफ्फरपुर
पिन-८४३१२५

नोट :—ई प्रेस 'नो लौस, नो प्रोफीट' के आधार पर भोजपुरी सेवा खातिर समर्पित बा !

कोइल/सितम्बर/१९९१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

असलियत

• जगदीश आर्य

ठाकुर जगमोहन सिंह के कवनो चीज के कमी ना रहे। अपना एलाका में उनकर बड़ा दबदबा रहे, कारण कि बहुत बड़ा जमिनदार जे रहन। उनका पेशाव से चिराग जलत रहे। परिवार में केवल दू प्रानी रहन—एक ठाकुर साहब और दूसर उनकर तीसरी पत्नी। ठाकुर साहब दू गो बिआह कइलन, पर केकरो से कोई संतान ना भइल। तब अधेड़ उमर में तीसर बिआह भइल। पत्नी बड़ा सुघर-सलोना आ पतिवरता रही। बिआह के समय ठाकुर साहब पचास के लगभग रहन आ पत्नी जेकर नाम राजमनी कुंअर रहे, के उमर पन्द्रह-सोरह बरिस के रहे। शादी भइला दस बरिस बीत गइल, पर संतान के मुँह ना देखलन जा। बहुत सा उपाय कइलन—मंत्र-तंत्र जोग-जाप वैद-डाक्टर सबका के अजमावल गइल पर संन्तान के मुँह ठकुराइन ना देखली। संतान-प्रेम बहुत बड़ा प्रेम ह, परन्तु एह सुख से ठाकुर साहब वंचित रहन। एकर दुःख ठकुराइन के छाती में बबूल के कांट नियन सालत रहे। सांप के लहर नियन सँतान के कमी के दुःख उठत रहे—खैर कसहूं दिन कटत रहे।

ठकुराइन के एगो मुँहलगी लउड़ी रहे सुखिया। सुखिया ठकुराइन के संगे लागल रहत रहे। ठकुराइन के दुःख से उहो दुःखी रहे।

एक दिन सुखिया ठकुराइन से कहलस—'मलिकाइन, एगो महातमा, साधु जी धिनहू ब्रहम बाबा के धाम पर पहुंचल बाड़न। उनकर बड़ा तेज बा। साधु जी सबकर मनो-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कामना पूरा कर देलन। देखीं न रमिया के कवनो बाल-बच्चा ना होत रहे। साधु जी के आशिरवाद से ओकर गोद भर गइल। मलिकाइन, कहाँ तक कहीं,—महातमा जी के बड़ा जस फइलल बा। उनका में बड़ा तेजी बा। रवों उनका शरन में चलीं-आउर गोद हरिअर होखे के आसिरबाद मांगीं। हमार बिसवास बा कि उनका बरदान से राउरो गोद भर जाई। ठकुराइन कहली—'अरे कतना त साधु, सन्यासी, के चरन पर, आउर देवी-देवता के चउरा पर माथा पटकलीं, पर सब बेकार गइल। अब हमार बिसवास खतम हो गइल बा। हमरा किसमत में भगवान लिखलहीं नइखन त गोद कइसे हरिअर होई। हम बांझ हईं—बाँझे रहब।'

एक दिन मिसराइनो ठकुराइन से साधु जी के पास चले के बहुत आगरह कइली। टोला-परोसा के लोगो साधु जी के महिना के बखान करस जा। सुनते-सुनते ठकुराइन क मन साधु जी के पास चले के होखे लागल। एक दिन ठाकुर साहब से ठकुराइन जी साधु बाबा के चरचा चलवली। ठाकुर साहब, ठकुराइन के बात के समरथन ना कइलन। साधु, महात्मा सब पाखंडी हवन, इनका चक्कर में मत पड़। भगवान जब किसमत में संतान देहले नइखन त संतान कहाँ से होई। राम-राम करऽ।

एक दिन सन्याशी ठाकुर साहब के हवेली पर पहुचल। सन्यासी के उमर तीस-पैंतीस के लगभग रहे। गोर रंग, जटा-जूट-दाढ़ी-मूंछ से आकृति बड़ा भव्य लागत रहे। बगल में मृगछाला एक हाथ में चिमटा और दूसरा हाथ में कमंडल रहे। लिलार पर चन्दन के तिलक बड़ा शोभायमान लागत रहे। ठाकुर साहब युवा सन्यासी के देखते,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रनाम कइलन। सन्यासी जी आसिस दे के कहलीं —'बच्चा, तोहरा सब कुछ बा—धन दौलत सब बा, पर तोहरा एको सन्तान नइखे। एह दुःख से तूं दुःखी रहत बाड़। तूं तीन शादी कइलऽ पर तोहार मनोकामना पूरा ना भइल।'

ठाकुर साब के बड़ा ताज्जुब भइल कि सन्यासी जी से कबो के देखा-देखी ना ह—हमरा दुःख के ज्ञान इनका कइसे भइल। श्रद्धा से ठाकुर साहब, सन्यासी के पुनः प्रनाम कइलन, आउर कहलन, 'महातमा जी, जब भगवान, संतान हमरा किसमत में दे नहीं नइखन तब संतान कहाँ से होई।' सन्यासी जी ठाकुर साहब से कहलन—'तोहरा औरते के नाम राजमनी कुंवर हंऽ! उनकर नइहर भगवानपुर ह। अपना औरत के हमरा सामने बुलावऽ। हम उनका के देख के बताइब कि सन्तान होई कि ना होई।' भीतर हवेली में, ठाकुर साहब खबर भेजवलन। ठकुराइन, सुखिया के साथ में लेके अइली। सन्यासी के देख के हाथ-जोड़ के गोड़ पर सिरे रख के प्रनाम कइली। महातमा जी पुत्र होखे के आसिस देलन। सन्यासी, ठाकुर साहब से कहलन—'स्वामी जोगानन्द जी, हमार गुरू जीं हईं। उनका पास अनहोनी के भी होनी देवे के शक्ति बा। स्वामी जी ब्रहम बाबा के सच्चा सेवक हवन। अगर भभूत दे दिहन त तोहरा पुत्र जरुर होई। बच्चा, तूं एक दिन ठकुराइन के लेके स्वामी जी के पास आवऽ। तोहार मनोकामना जरुर पूरा होई। कातिक अमावस्या के रात में स्वामी जी दरवत देहीलां—ओह दिन तूं जरुर पहुंचऽ।' कहके सन्यासी जी चल देलन।

धिनहू ब्रहम बाबा के धाम, रोहतास जिला के शिवसागर कसवा से एक की. मी. दूर एगो घना आम के बगइचा में बा। ब्रहम बाबा के बड़ा प्रसिद्धि बा। भूत-प्रेत-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डायन-ओझा के सतावल औरत-मरद सब उहां पहुंचेला। जवान औरत जब भूत खेलेलिसन त उ दृश्य बड़ा भयानक आ रहस्यमय छागेला। झूम-झूम के अनाप-शनाप बकेलिसन। बाबा के जहां स्थान बा, वहां लोहबान, अगर-तगर आ घीव के हुमाद से वातावरण सुगंधित भइल रहेला। गांव के जाहिल लोगे ना, बलुक पढ़ल-लिखल, वकील, प्रोफेसरो के घर के औरत उहां भूत-प्रेत बाधा दूर करावे पहुंचेलीस। अधिकतर एकहीं तरह के औरत लोग उहां पहुंचेला—संतान के इच्छा लेके। गांव के लोग गरीबी, अज्ञानता आ अंधविश्वास के अधिक शिकार होलन। इहे लोग उहां अधिका भीड़-भाड़ लगावेला।

पांच-छव महीना से एमे स्वामी जोगानन्द जी उहां निवास कइले बाड़न। स्वामी जी के उमर पच्चास के लगभग रहे। साथ में चेला लोग के समूहो बा। स्वामी जी कहां से आइल बाड़न, कहां जन्म-स्थान ह, कवन वरन (जाति) के हवन, एकर पता नइखे। स्वामी जी के रहे खातिर एगो कुटिया गांव के लोग बनवा देले बाड़न। स्वामी जी रात-दिन गांजा-भांग के नशा में डूबल रहीला। बड़ा-बड़ा जटा-खिचड़ी दाढ़ी-मूंछ, गोर रंग, सउंसे देह में भभूत लगवले रहीला। नशा से आंख लाल-लाल भइल रहेला—पर बात चीत में काफी असर बा।

स्वामी जी के प्रसिद्धि के एगो कारन इहो बा कि स्वामी जी रुपैया-पइसा आ औरतन के परछाई से दूर रहींला। उनकर चेला लोग के, एह ढंग से प्रचार कइला से, स्वामी जी के प्रभाव, गांव के लोगन में, खास कर औरतन में काफी बढ़ गइल रहे। चेला लोग नाना तरह के रुप बना के गांव-गांव में घूम-घूम के स्वामी जी के महिमा के प्रचार करस। ओही चेला में से एगो चेला ठाकुर साहब के परिवार से मिलल—जेकर चरचा ऊपर कइले बानी। चेला लोग गांव-गांव के रिपोर्ट, जोगानन्द जी से बता देस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठकुराइन के एगो भतीजा—'अखिलेश' रहन। पटना शहर में रह के मेडिकल में पढ़त रहन। आर्य समाज के विचार धारा से प्रभावित रहन। अंध-विश्वास आ ढोंग के प्रबल विरोधी। ठकुराइन, अखिलेश के दूर-दराज के चाची लागत रही। ठाकुर परिवार से अखिलेश के बड़ा आमद-दरफ्त रहे। जब-जब छुट्टी मिले चाचा-चाची से मिले चल आवत रहन।

एक दिन अखिलेश चाचा-चाची से भेंट करे अइलन। त चाचीं अखिलेश से स्वामी जोगानन्द के महिमा के बखान कइलीं, आउर कहली, हमार मन स्वामी जी के पास जाये के कर रहल बा। हमरा विश्वास हो गइल बाटे कि उनका आशिरवाद से हमर गोद भर जाई। तू हूं साथे चलऽ।' अखिलेश चाची के बात के विरोध कइलन आ कहलन कि साधु-सन्यासी के आशिर्वाद से संतान ना मिली ढोंगी पाखन्डी साधुओ से अलग रहे के चाहीं। तू उहां मत जा। हम तोहार आ चाचा जीं के डाक्टरी जांच करवाइब, बाकिर चाची जिद्द पकड़ली, 'हम जरुर जाइब। तूं चल, चाहे मत चल। कातिक अमावसा के दिने स्वामी जी के पास जाये के बा।' अखिलेश चाचा से प्रार्थना कइलन कि चाची जी के स्वामी जी के पास जाये से रोकीं। बाकिर ठा. जगमोहन सिंह अपना मेहरारु के बात के समरथन कइलन। टोला-परोसा के लोगो चाची के हां में हां मिलावल। सब तरह से समझा-बुझा के अखिलेश हार गइलन, बाकिर उनकर चाचा-चाची ना मनली।

कातिक अमावस्या के दिने जाए के रहे। काल अमावस्या बा। आजुए से तइयारी होखे लागल। ठा. साहब के एक जरुरी काम रहे, एहसे साथे ना गइलन। अपना एगो कारिन्दा के साथे लगा देलन। अमावस्या के शाम के समय जीप से लोग रवाना भइल। अखिलेशो छिप के पीछे स्कूटर से पीछा करत चललन। उनका चललाके केकरो पता ना रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CG-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डायन-ओझा के सतावल औरत-मरद सब उहां पहुंचेला। जवान औरत जब भूत खेलेलिसन त उ दृश्य बड़ा भयानक आ रहस्यमय छागेला। झूम-झूम के अनाप-शनाप बकेलिसन। बाबा के जहां स्थान बा, वहां लोहबान, अगर-तगर आ घीव के हुमाद से वातावरण सुगंधित भइल रहेला। गांव के जाहिल लोगे ना, बलुक पढ़ल-लिखल, वकील, प्रोफेसरो के घर के औरत उहां भूत-प्रेत बाधा दूर करावे पहुंचेलीस। अधिकतर एकहीं तरह के औरत लोग उहां पहुंचेला—संतान के इच्छा लेके। गांव के लोग गरीबी, अज्ञानता आ अंधविश्वास के अधिक शिकार होलन। इहे लोग उहां अधिका भीड़-भाड़ लगावेला।

पांच-छव महीना से एमे स्वामी जोगानन्द जी उहां निवास कइले बाड़न। स्वामी जी के उमर पच्चास के लगभग रहे। साथ में चेला लोग के समूहो बा। स्वामी जी कहां से आइल बाड़न, कहां जन्म-स्थान ह, कवन वरन (जाति) के हवन, एकर पता नइखे। स्वामी जी के रहे खातिर एगो कुटिया गांव के लोग बनवा देले बाड़न। स्वामी जी रात-दिन गांजा-भांग के नशा में डूबल रहीला। बड़ा-बड़ा जटा-खिचड़ी दाढ़ी-मूंछ, गोर रंग, सऊंसे देह में भभूत लगवले रहीला। नशा से आंख लाल-लाल भइल रहेला—पर बात चीत में काफी असर बा।

स्वामी जी के प्रसिद्धि के एगो कारन इहो बा कि स्वामी जी रुपैया-पइसा आ औरतन के परछाई से दूर रहींला। उनकर चेला लोग के, एह ढंग से प्रचार कइला से, स्वामी जी के प्रभाव, गांव के लोगन में, खास कर औरतन में काफी बढ़ गइल रहे। चेला लोग नाना तरह के रुप बना के गांव-गांव में घूम-घूम के स्वामी जी के महिमा के प्रचार करस। ओही चेला में से एगो चेला ठाकुर साहब के परिवार से मिलल—जेकर चरचा ऊपर कइले बानी। चेला लोग गांव-गांव के रिपोर्ट, जोगानन्द जी से बता देस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठकुराइन के एगो भतीजा—'अखिलेश' रहन। पटना शहर में रह के मेडिकल में पढ़त रहन। आर्य समाज के विचार धारा से प्रभावित रहन। अंध-विश्वास आ ढोंग के प्रबल विरोधी। ठकुराइन, अखिलेश के दूर-दराज के चाची लागत रही। ठाकुर परिवार से अखिलेश के बड़ा आमद-दरफ्त रहे। जब-जब छुट्टी मिले चचा-चाची से मिले चल आवत रहन।

एक दिन अखिलेश चाचा-चाची से भेंट करे अइलन। त चाचीं अखिलेश से स्वामी जोगानन्द के महिमा के बखान कइलीं, आउर कहली, हमार मन स्वामी जी के पास जाये के कर रहल बा। हमरा विश्वास हो गइल बाटे कि उनका आशिरवाद से हमर गोद भर जाई। तू हूं साथे चलऽ।' अखिलेश चाची के बात के विरोध कइलन आ कहलन कि साधु-सन्यासी के आशिर्वाद से संतान ना मिली ढोंगी पाखन्डी साधुओ से अलग रहे के चाहीं। तू उहां मत जा। हम तोहार आ चाचा जीं के डाक्टरी जांच करवाइब, बाकिर चाची जिद् पकड़ली, 'हम जरुर जाइब। तूं चल, चाहे मत चल। कातिक अमावसा के दिने स्वामी जी के पास जाये के बा।' अखिलेश चाचा से प्रार्थना कइलन कि चाची जी के स्वामी जी के पास जाये से रोकीं। बाकिर ठा. जगमोहन सिंह अपना मेहरारु के बात के समरथन कइलन। टोला-परोसा के लोगो चाची के हां में हां मिलावल। सब तरह से समझा-बुझा के अखिलेश हार गइलन, बाकिर उनकर चाचा-चाची ना मनली।

कातिक अमावस्या के दिने जाए के रहे। काल अमावस्या बा। आजुए से तइयारी होखे लागल। ठा. साहब के एक जरुरी काम रहे, एहसे साथे ना गइलन। अपना एगो कारिन्दा के साथे लगा देलन। अमावस्या के शाम के समय जीप से लोग रवाना भइल। अखिलेशो छिप के पीछे स्कूटर से पीछा करत चललन। उनका चललाके केकरो पता ना रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सात-आठ बजे रात्रि के लगभग ब्रहम बाबा के धाम के पास लोग पहुंच गइल। दूरे से, 'ब्रहम बाबा की जै-ब्रहम बाबा की जै' के जय जय कार सुनात रहे। चहल-पहल कम हो गइल रहे। भक्त लोग जै-जै कार करत अपना-अपना गांव के ओर जात रहन।

जीप सड़क पर खड़ा करके, पगडंडी पकड़ के ठकुराइन आ कारिन्दा ब्रहम बाबा के थान के ओर जाये लगलन जा। थोरी दूर चलल के बाद स्वामी जी के कुटिया के पास लोग पहुंच गइल।

बाबा थान पर आज सन्नाटा रहे। भक्त लोग चल गइल रहे। ब्रहम बाबा के मुख्य पुजारी अपना घरे चल गइल रहन। केवल स्वामी जी आ उनकर चेला लोग रहे। रात के दस बजे के समय रहे। आकाश में बदरी छवले रहे। जवन साधु पहिले ठाकुर साहब और ठकुराइन से मिलल चुकल रहन—उनका से भेंट भइल। ठकुराइन साधु के पैर पर सिर झुका के प्रणाम कइली। कारिन्दा भी प्रणाम कइलन। साधु के होठ पर मुस्कराहट नाच गइल। साधुजी आशिर्वाद दे के कहलीं—बाबा त औरत लोग से भेंट ना करस, मगर हमरा बहुत अनुरोध कइला पर भेंट करे के तइयार भइलन ह। साधु जी ठकुराइन से कहलन, रावा अकेले जाईं। डरे के कवनो काम नइखे। बाबा के समाधी अब टूटही वाला बाटे।' कारिन्दा कुटिया के बाहर खड़ा रहलन। ठकुराइन डेरात-डेरात कुटिया के भीतर गइली। बाबा जी आंख बन्द करके पलथी लगवले रहन। पास में धुनी जलत रहे। एक ठे दीया मधिम रोशनी से जलत रहे, जवना से कुछ प्रकाश होत रहे। ठकुराइन हाथ जोड़ के खड़ा भइल रही। थोड़ी देर के बाद—बाबा जी आंख

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोलजन। आंख का रहे, मालूम होखे, अंगार ह। जटा आ लम्बी दाढ़ी-मूंछ से चेहरा भयानक लागत रहे। बाबा जी गरज के बोललन, 'इका मांगे आइल बाड़िस बोल ?' ठकुराइन के त डर से देह कापत रहे। डरते-डरते कहल, 'बाबा हमरा के एगो बेटा चाही।' बाबा जी जोर से चिमटा पटकलन। त्रिशूल भांज के कहलन—'हमरा आज्ञा के पालन करु—साड़ी उतार के हाथ में ले के हमरा आसन के पांच बार परिकरमा करु।' ठकुराइन बहुत डर गइली, साड़ी खोले के हिम्मत ना भइल। बाबा जी फेरु एक बेरि चिमटा पटकलन और बाघ नियर हुंकार भर के कहलन—'जल्दी करु।' अबकी ठकुराइन डरते-डरते साड़ी उतार के हाथ में लेली और आसन के पांच परिकरमा कइली। बाबा जी इशारा कइलन—जमीन पर लेट जा। साक्षात् ब्रहम बाबा आ के आशिर्वाद दिहन। जल्दी करऽ।

ठकुराइन डर के मारे आख बन्द करके जमीन पर लेट गइली। सारा शरीर नंगन। बाबा जी जइसहीं ठकुराइन के नग्न देह पर झुके के चहलन—तबले न जाने कहाँ से अखिलेश पहुंच गइलन। डांट के बोलन—'अरे, ढोंगी,-पाँखन्डी-पापी।' आज तोर खैर नइखे। आज तोरा के हम ना छोड़ब। न जाने कतना औरतन के ते इज्जत लूटले बाड़े।' अखिलेश ठकुराइन से कहलन, 'तू उठऽ,. साड़ी पहिर ल।' ठकुराइन खड़ा हो गइली —सड़ी पहिर लेली। अखिलेश, बाबा जी के पटक के छाती पर चढ़ गइलन। उनकर कसरती देह, बाबा जो के सीना पर सवार होके हाथ से त्रिशूल उठा के गरदन में घसावे के चहलन। कुटिया के बाहर खड़ा कारिन्दो आ गइलन। बाबा जी के त डर से देह काँपे लागल। हाथ जोड़ि के ककलन—हमरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के माफ कर दीहीं—अब हम अइसन पाप ना करब। हम आजे इहाँ से चल जाइब।'

अखिलेश कुछ सोचलन—अगर साधु के हम हत्या कर देब—त सगरो हाल्ला हो जाई, गाँव के अंधश्रद्धालु लोग साधु के पक्ष में हो जाई। पुलिस आई—जाँच-पड़ताल करे लागी। ठकुराइन चाची के प्रतिष्ठा चल जाई। हमरा पासे कवनो प्रमाण बा ना ··· ··· बहुते बात सोंच के—बाबाजी से कहलन अभी तुरन्ते इहाँ से स्थान छोड़ के चल जा, नाहीं त हम तोहरा के जिन्दा ना छोड़ब।'

अखिलेश ठकुराइन चाची के लेके बाहर अइलन बाहर घुप्प अंधेरा रहे। कारिन्दा से कहलन कि एह घटना के चरचा मत करिह। चाचा से भी ना। चरचा कइला से चाचा-चाची के इज्जत खत्म हो जाई। कारिन्दा ठकुराइन के लेके जीप से चल देलन।

सुबह गाँव के लोग देखल सन्यासी आ उनकर चेला-चांटी बाबा धाम छोड़ के कहीं चल गइलन। पता ना लागल कि स्वामी जोगानन्द कहाँ गइलन।

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(शेष पीठ ४ बा)..

के कुछो ना कइले त ईहाँ के छपरा के असली बेटा होइए के भोजपुरी के का करब ? हँ सुनाइल हँ कि इहाँ के भोजपुरी, मैथिली, उर्दू, बंगला सबके ऐके में मेराके खिचड़ी बनाइब। खिचड़ी बनाके घीव डलाई तंव नू जीव बाँची। ऐकरे पर खुश होके लोग कहेला— जीहीं जी आं जितिगी भर जिहीं जी। इहे सब लीला में बेचारू अनबोलता जीव दण्डी विमलानन्द जी के 'बउधायन' महा काव्य प्रेस वाला के घरहीं सड़त-गलत बा। प्रेस के पइसा बाकी रहला से 'बउधायन' जस के तस बा। बकिर अपना पुस्तक सूची में वाह-वाही लूटे खातिर 'बउधायन' महा काव्य के नाम छपल बा। ऊ प्रेस में दिअका के खोराक हो रहल बा। भोजपुरी के गौरव ग्रन्थ नयकी छंद में लिखाइल बारह बरिस के घोर तपस्या भोजपुरी अकादमीअन के भूतपूर्व पदाधिकारिअन के घिनौनी साजिश के चपेट में मटियामेट हो रहल बा। साँचो भोजपुरी के आंदोलन तेज बा, क्रांति घटित हो रहल बिआ। एह बीचे बीसहन किताब छपाइल बाकिर 'बउधायन' के कैद से मुक्ति ना मिलल। ई कइसन मजाक कइल जाता बेचारू महा कवि से। बाकिर ई बात सांच बा कि अइसन महा कवि के आत्मा के आह से कहीं अकादमी गतल-खाना में मत चल जाव। का जाने वर्त्तमान अध्यक्ष पदमश्री बाबु लोहा सिंह जी एह बतिया पर ध्यान देब कि ना, हम नइखी कह सकत। सुनले रही एक-बेर सन्नाटा टूटिए चुकल बा कवि गोष्ठी कइके ... ... तब त चलिए रहल बिआ अकादमी।

इहो विचार ठीके बा कि 'भोजपुरी साहित्य बँचावल जाए' के नारा दिआए आ साहित्यकारन के रचना अकादमी आलमारी में राख के पन्द्रह बरीस से साड़ल जाव। अच्छा कनून बा ऐ अकादमी के डाइरेक्टर साहेब। साँचो अपने भोजपुरी पहेली बूझावत बानी भोजपुरिहा लोगिन के। कादो अपने के भले 'भोजपुरी के पहेली' जइसन निकहा सद ग्रन्थ निकसले बानी। बाबा विक्रमादित्य मिश्र जी। जै हो ... जै हो .. भुखाईल करमचारिअन के डायरेकटर जी धन्य बानी।

अन्त में हम कहल चाहबि कि जइसे भारत के अन्तिम बादशाह मोहम्मद शाह ज़फर सफर कइले ओसहीं अब अपने सभे के सफर के समय नगिचाइए ग़इल बा। सावधान !! भोजपुरी अकादमी के अन्तिम चिराग ... सलाम ...

० बकुप०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तक-पारेल

भारत INDIA

प्रेषक :

सम्पादक "कोइल"

अलमस्त नगर, गोटीघर (साहेबगंज)

करनौल, मुजफ्फरपुर (बिहार)

पिन-८४३ १२५

सेवा में,

दण्डिस्वामी श्री/श्रीमती पिमन्नानन्द सरस्वती

राजगुरुमठ, B-3/175,

शिवालय घाट, वाराणसी

पिन- (U.P.)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोइल

भोजपुरी के चेतनगर पत्रिका

साल पांचवा । अंक—सितम्बर १९९१ । दाम दू रुपया ।

प्रबन्ध-सम्पादक :
डा. धीरज कुमार भट्टाचार्य

सम्पादक :
डा. ब्रजभूषण मिश्र

संयुक्त-सम्पादक :
कुमार विरल

सहायक-सम्पादक :
दिनेश्वर मिश्र 'दिनेश'

—: शुभाकांक्षी—मण्डल :—
श्री सतीश्वर सहाय 'सतीश', श्री रिपुसूदन प्र. श्रीवास्तव,
श्री तैयब हुसैन "पीड़ित"

सम्पादन-आ सहयोग अवैतनिक :
श्री दिनेश्वर मिश्रद्वारा कबीर भोजपुरी पुस्तकालय प्रेस से मुद्रित ।

बुलेटिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिट्ठी मिलल

आदरणीय भाई

जमशेदपु

सादर प्रणाम

९.९.९

राउर भेजल 'कोइल' के जून ९१ अंक मिलल कृतज्ञ बानी। शिल्प आ भाव के दिशाई राउर कहानी 'पछतावा' प्रभावकारी बन परल बिया। कुमार विरल जी के व्यथा कथा 'अउरो रीतु ना आइल' पढ़ के पाठकीय सहानभूति त जागल बाकिर एकर शिल्प बहुत पुरान हो चुकल बा। विरल जी के गीत पसंद परल। अश्वनी कुमार 'आंसू' जी के गजल के पांति 'तन भइल बांसुरी छेद छाती में बा गीत बनके दरद सब निकते रही' बहुते मार्मिक आ संवेदना के अति कोमल तह तक पहुचे में समर्थ बिया एह स्तरीय गजल खातिर आंसू जी के हमार बधाई। बाकी सब रचनो ठीक बाड़ी सन। संपादकीय-चिंतन नया बा। आशा बा सानन्द बांनी।

राउर

कन्हैया सिंह 'सदय'

पोस्ट–लुबांबासां, बांया–इन्द्रा नगर ८३१००८

—०—

बन्धुवर,

जय-भोजपुरी

ससना

सादर नमन,

१३.५.९१

कुशलोपरान्त कुशलता के मंगल कामना। राउर पाति पावत हम अपन कविता संग्रह 'लहोक' रउवा सेवा में बुक-पोस्ट कर दिहनी। आशा बा रउवा मिल गइल होई। किताब पर अपनी विचार से हमरा के राह देखावे के कृपा करीं इहे निहोरा बा। हम एगो अदारी कवि बानी रउवा सभन के सुझाव आ सम्मति हमर सम्बल आशा बा 'लहोक' पर रउवा आपन बिचार जरुर भेजे के कष्ट करब। अगर आउर प्रति के जरुरत पुस्तकालय खातिर होखे त सूचित करब। स्नेह भाव बनवले राखब। एकरा साथे पत्रोतर के इन्तजार में :—वीरेन्द्र कुमार मिश्र 'अभय' ग्रा.–ससना पो.–सिसई सहाजितपुर, सारण ८४१४२२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादकीय —

राष्ट्रभाषा

१४ सितम्बर के हरेक साल हिन्दी दिवस के आयोजन कईल जाता। जगह-जगह संगोष्ठी, सम्मेलन आ मनोरंजनार्थ कवि-सम्मेलन करके, हिन्दी के गुण-अवगुण के चर्चा चला के लाखों–लाख रुपया स्वाह कर दिआला। एह से हिन्दी कागज में भले राजरानी बन जाओ, असली स्थिति ओकर चेरी के ही बा। राजनेता आ अफसरशाह लोग हिन्दी दिवस में लमहर-लमहर भाषण देके फेर अंग्रेजी के पाला पकड़ लेवेला।

जवना देश में ओकरा राष्ट्रभाषा के सम्मान नइखे, ओह देश के बाढ़-बढ़न्ती कइसे होई ? देश के भाषा के देश में प्रचार प्रसार के जरुरत पड़े, एकरा खातिर करोड़ों खर्च करे के पड़े, ई कतना लाज के बात बा। ई कवन मजबूरी बा ? चोर कहाँ बा, खोजे के चाहीं। चोर तनिका सा आँख खोलला पर साफ-साफ चिन्हाजाई। मुट्ठी भर ओह लोग के मनसा हिन्दी खातिर ठीक नइखे बुझात, जे कवनो बहाने अंग्रेजी के बरकरार राख के आपन वर्चस्व बनवले राखे के चाह बा, आपन उल्लू सीधा कर रहल बा।

भारत में अंग्रेजी कवना प्रदेश, कवना केन्द्रशासित प्रदेश के भाषा बा ? जवना चार प्रदेश के विरोध के नाम पर आज अंग्रेजी के बरकरार राखल गइल बा, ओह तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक आ आन्ध्र प्रदेश में आपन-आप तमिल, मलयालम, कन्नाड़ आ तेलगु भाषा बाड़ी स जवन उहाँ के राजो-काज के भाषा बाड़ी स। एह चारो प्रदेश प्रदेशन में तमिलनाडु ही अइसन बा जहाँ हिन्दी के नाम पर अन्धा-विरोध बा आ उहो राजनीतिक करण से। बाक़ी के तीन प्रदेशन में हिन्दी के उपस्थिति ना बढ़िया त बेजाय नाँ कहल जाई। अगर राजनीतिक विरोध बड़लो बा त उग्र नइखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सवाल मनसा के बा। ई मुट्ठी भर लोग के स्वार्थ आ चालाकी बा, जवना से ऊ लोग अंग्रेजी के बनवले राखे के चाहत बा। अगर मनसा सही बा, त काहे ना भारतीय भाषा के आ ओकरा जानकार लोग के मौका दिआत बा ? तामिल नाडु अगर हिन्दी के माध्यम केन्द्र आ अन्य राज्यन से सम्पर्क ना राख सके त तमिल में ही करे। कम से कम तमिल-हिन्दी अनुबाद कन के संख्या त बढ़ी। ओइसहीं आन प्रदेशिक भाषा के साथो ई संबंध राखल जा सकत बा। एह से हिन्दी आ आन भारतीय भाषा के त विकास होई ? सबसे बड़के गुलामी के भाषा माथा से उतरी। अस्तु।

—ब्र. भू. मि.

आपन भाषा खातिर

'कोइल' के यात्रा आगे जारी रहो एकरा खातिर पाठक लोग आ लेखक लोग के तनी फेर से विचार करे के होई। खास करके एह दिसाई कि जवन रचना 'कोइल' में छप रहल बा ऊ अपने के कइसन लागता। काहे कि अपने के प्रतिक्रियां के आधारे पर हम अपने लायक रचना परोस सकतानी। पाठक लोग सही मायने में एह ओर सोचसु आ ततकाल आपन प्रतिक्रिया भेजसु। हमनी अपने सभे के प्रतिक्रिया के बाट जोहत रहिला। लेखक भ ई जी लोग से अनुरोध बा कि 'कोइल' के स्तर जानिये के आपन रचना भेजसु। काहें कि 'कोइल' भोजपुरी भाषा साहित्य खातिर प्रतिबद्ध बिआ। हमनी का लगे ओइसन प्रौढ़ रचनन के अभाव रहता जवना का चलते काम चलावे वास्ते कुछ छापही पड़ता। खास कइके भोजपुरी के पुरान धुरान लेखक कवि आपन रचना भेजे में कोताही करतारे त नवका पीढ़ी के रचनाकारो लोग चुरा गइल बड़े। भोजपुरी के भाग खाली भूसा ओसावे में बाझल बा। हम मानतानी भोजपुरी पत्रिका छापे-छपवावे में आर्थिक तंगी के लम्बा पहाड़ खड़ा बा त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Sarayu Trust. Funding by MoE-MoE-Grant-2

लांघहुं के मिजाज भोजपुरीहा होखे के चाहीं। कुछ तत्काल फायदा वाला अंदाज भोजपुरी के रचनाकारन में घुन अइसन पइसल जात बा। जवन बहुते भयानक आ खराब बा। हम एकरा से नकार नइखी सकत कि भोजपुरी पत्रिका पढ़े के, चाहे किताब पढ़े के चाव पाठकन में नइखे जागत। हमनी कोशिस में बानी कि लोग भोजपुरी किताब, पत्रिका खाली पलटबे ना करे पढ़बो करसु। हम मानत बानी। 'कोइल' अकेले सब अदिमी के मन के सम्पूरन चाह ना मेटा सके। बाकिर हमर प्रयास इहे बाकि केहु ग अपने सभे भोजपुरी पढ़ी समझी आ विचार करीं। भोजपूरी के पत्रिकन में कुछ अइसन रचना रहो जवना के पढ़ के फेकल मत जाव। सहेज के राखल जाव। एकरा खातिर निबंध पर जोड़ दिहल जादा उचित बुझाता। गद्य विद्या पर रचना लिखे के चाव तनी कम बा। जादे रचनाकार कविए लोग बा। एह से कविता गीत त अनठेकाने भटाता बाकिर गद्य रचना के अभाव हर एक अंक में बनल रहता। नाटक विधा में एकांकी छोट-मोट भेजल जा सकेला। यात्रा संस्मरण, रिपोतार्ज, इन्टरभियू, समीक्षा ललित निबंध, शब्द-चित्र वगैरह विधा पर रचना लिखाए त भोजपुरी के पत्रिका भरल पूरल लागिहें स।

हमनी के 'कोइल' में कवनो सुझाव सीधे भेजल जाई त हमनी विचार करब आ एगो नया राह बन सकता। 'कोइल' पाठक आ लेखक के बीचे सीढ़ी बनल चाहता। ताकी जनता के सही दुख-दर्द सामने आ सको आ भोजपुरी के संस्कृति, सगरो गमागम महके। भाषा के भीतर जवन शक्ति बा तवन जागो आ तमाम जनता के भीतर सघर्ष करे के ओह मादा के अउर बल देवो। ताकि करोड़ो हांथ ओह हाथ से लड़सको। जेकरा खूनी पंजा में मानवता छटापटा रहल बिआ।

बस अतिने

कु. वि.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइस के आगे बीन—

धान कूट ··· हो दुल्हा

नेता लोग चुनाव में जनता के परिछावन करत-करत हाल खस्ता कइलहीं रहे। इचि जनता जनार्दन दम धइले रहन कि कसहूँ ऊचुकन लगा के भाजपा, आ दूगो सौतेला भाई रामो एण्ड वामो वगैरह मिल जुल के कांग्रेसी सरकार के तसला देश के चुल्हा पर बइठाइए देल लोग। अइसे पीछिला प्रधान मंत्री चन्द्रशेखर, जे भोजपुरी में कबो-कबो भाखन देत रहले, भोजपुरीया लोग के ओल देके चल गइले। सोना बंधक धई गइले। निश राह लगइले कि नरसिम्हों जी चट-पट सोना बिदेश में बेंच दिहले। सांसद लोग कांव-कांव कइल। अब आइल बजट के मूसर से देश के ओखर में जनता के कूटे के नया प्रस्ताव। पूरा देश से कहाइल इचि बरदास्त करीं, तनि दाँति लगाईं। मंहगाई बढ़ी। 'जब ओखरी में सिर दिआ तब मूसरों से क्यों डरे।'

बताईं भला देश के जनता आ सांसद के बुद्धि के, कि बूढ़ ठूढ़ प्रधान मंत्री नरसिन्हा जी के दुल्हा बना दिहल। जनता गावत बिआ—धान कूटऽ हो ··· ···दुल्हा ··· ··· धान कूटऽ हो·····

अब आई भोजपुरी भाषा के बढ़न्ति का ओर तनि तिकईं। जब आँख का ऊपरे पूरा हथेली फइला के दूर देखत बानी त लउकत बाकि काशी में बइठल रोगि आइल एगो दण्ड लिहले झिरकुट सन्यासी जी, विमलानन्द सरस्वती। जेकर योगदान भोजपुरी कबो ना भुलाई। उहाँ के सांस-सांस कहत बाटे अकादमी के शर्मनाक कहानी। 'वउधायन' महाकव्य के रचनिहार के संगे अतिना लमहर मजाक ? कादो राजधानी में क्रांति रोजे होला। कुछ लोग फिफिहिरी भइलो बाड़े। बाकिर भोजपुरिहा मुख्य मंत्री जी से सावंगे नइखे बइठत। भोजपुर के असली बेटा बाबा बिनेसरी दूबे भोजपुरी

(शेष पीठ २२ पर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गँवई ढिबरी

• विजय कुमार तिवारी

ई रमेसर के रोज के आदति ह। बाकिर उनुका के रमेसर कहल ठीक ना होई। हमरा लेखा विधार्थी से त अऊरु ना। गांव भरि के काका लोगन के काका आ हमरा पीढ़ी के बाबा हउवे ऊ। ऊ आपना सुभावे लेखा कइले बाड़े। 'आ भइले का बा ··· बस तनी ओनेने' अइसे कहल जा सकेला, थोरकी हेराफेरी।

भोर में ना जाने ऊ कब उठि गइले कि हमरा पतो ना चलल। राति खानी ऊ आपन बँसखटिया हमरा नियरे बिछवले आ पसरि गइल रहले। उनुकर आ हमार दुआर आमने-सामने बा। बीच में चरन बिया जेकरा ओह कगरी से उनुकर आवे-जावे के राह बा। उहो जमीन हमनिये के ह। राह उनुकर हो गइल बा। एह पर बाबू जी कुछु दोसरे ढंग से सोचेले, बाकिर हमरा कवनो विशेष अरथ दिखाई ना देला। ओइसही इहवाँ कवन भीड़ि लागल बा कि इंची भरि जमीन खातिर भागमभाग होखे।

थकान के कारन हमरा जागे में देरी भइल रहे। राति देर तकले उनुकर भाषन चलल रहे कि शहरी गंवई लोगन के धौंस हमरा पर ना चली। हम अइसहीं रहब। ऊहे लोग बुतात ढिबरी लेखा फफक से जरी आ बुता जाई।

'त, ई कहला के का जरुरत बा!' हमरा पूछला पर छन भरि खातिर बाबा रुकि गइले। अन्हार में उनुकर चेहरा ना लउकत रहे। बाकिर लागल—जरुरे फक्क रहि गइल होइहें। तनी देर रुकि के ऊ आपन चुप्पी तुरले, तोहनी के इहे अकड़ खराब बा। पइसा देखावतारस। जइसे जे शहर नइखे गइल ओकरा चेट में कुछु हइये नइखे।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उहाँ तब बहस के पूरा गुंजाइस रहे, बाकिर हमहीं टारि दिहनी, 'का बेकार बतियावतारऽ। अइसहूं देखल जाय तऽ शहर चाहे देहात में रहे वाला लोग-बाग एह तरे ना सोचेला। पइसा कहवां नइखे ? गाँवो में बा। जहवें श्रम बा, साधन बा, पइसा बा। खेती, बारी, जानवर, अनाज, ब्यपार सब में पइसा बढ़ले बा।'

दिने पानी बरसल रहे। एह से हवा में शीतलता तनी अधिक रहे ! ठंडा हवा आछा लागत रहे। अन्हरिया में हम घड़ी देखल चहनी। अभी दस ना बजल होई ! गांव में सन्नाता हो गइल रहे। बाबा सुतल ना रहले। आपन आमदनी के हिसाब लगावत रहले। जमीन उनुका पासे कम नइखे ! खेतन के उत्पादन पहिले से बढ़ि गइल बा। दुआर पर दू गो बैल आ एगो लगहर जरूरे रहेला।

बाबा अचानके उठले आ कहले, 'अवे अइनी !' आ चलि गइले ! भंइसिया बाहर खाड़ा रहे। ओकर पगहा खोललें आ हांकि ले अइले। पेड़ के सोरी में बान्हि के गड़हा ओरि पेशाब करे चलि गइले।

'का डर लागत रहे कि इहवें बइठि गइला हा ?'

'डर ? कइसन डर ! हमरा डर-ओर ना लागे पहिले हमी राति-राति भरि घूमत रहनी गांव भरि के चक्कर लगा आवत रहनी कबो-कबो सरेहो का ओरि निकलि जात रहनी मालूम बा जब से हमार घुमल बन्द भइल, गांव में कई गो चोरी के घटना हो गइलीसं हमरे बैल चोरा ले गइले सऽ 'ई सब अन्हारा के करतूत ह जमीन में हिस्सा खातिर मुकदमा कइले रहे हमहूं कहि देले रहनी हमरा जीयते जमीन के एगो टुकियो ना मिली

भोरे उठनीं, तबतकले बाबा जवार के चक्कर लगा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आइलं रहले उनुकर दादी कहेली कि एकरा पांव म घिरनी बा। दिन भरि घूमत रेहेला ! दादी के अलावां उनुकर केहू नइखे। टोला पर चोरी भइल बा आ सनेही के बहू का बेटी भइल बीया, बाबा इहे दूगो खबर ले आइल रहले। खबर से प्रभावित उनुकर चेहरा कुछु दोसरे लेखा लागत रहे ! कहीं दहशत रहे उनुका चेहरा पर।

'कवनो खास बात बा का ..... ?' उनुका चेहरा के उड़ल रंगत देखि के पूछनी। बाबा गाँव भरि खातिर बेतार के तार हउवे जवार के सब समाचार उनुका पहिलही मालूम हो जाला। ओह में ऊपर से नमक-मिर्च मिलाके बाबा दोसरा के सोझा परोसेले।

'हँ' ऊ धीरे से कहले, 'तीन दिन से लगातार गाँव में पुलिस आवऽतीया। सूंघत फिरऽतीया।'

'कुछु तऽ मालूम होई ? आखिर दोसरा गाँव के हत्या खातिर एह गाँव में काहे डेरा डालल चाहऽतींया।'

'इहवों दू-तीन जाना बाड़े, जेकरा पर शंका कइल जाता।'

बात होते रहे कि सिपाही दुआर पर आ गइलेसऽ। आखि मिसत बाबा देखले। सिपाही लोग कान्हा से बनूख उतारल आ पसरि गइल। थाकल होई लोग। बाबा बाल्टी उठवले, पानी भरले लोटा मगवले आ नीम के गाछ पर चढ़ि के दतुअन तूरि ले अइले। सिपाही लोग जब तकले मुँह-हाथ धोवल, बाबा दही डलवा के गुड़ के रस बनवा ले अइले।

गाँव के तीन आदमी पकड़ाइल रहे। बाबा धीमे से हमरा से कहले, 'बेचारा नाहके पकड़ाइल बाड़ेसऽ।'

'कुछु करीं बाबा' पकड़ाइल लोगन में एक जाना के मेहरारु बाबा के हाथ जोरली।

'अब का भइल ? तब त अन्हारा साथे बड़ा दोस्ती रहे ! जो, ओकरे के बोला ले आउ !' बाबा देखावटी झिड़की दिहले !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बाबा सब लोग दुखी होके पुकारल !

पुलिस चलि गइल। तीनो जाना छुटि गइले। तनी-मनी पूछ ताछ भइल रहे। जात-जात बाबा चेतवले, 'इयादि रखिहे फुलेसरी। फुलेसरी चली गइल। सब लोग चलि गइल। बाबा जे अब तकले जमीन पर बइठल रहले, धोती झारत उठले आ आइके हमरा गोनतारी बइठि गइले।

'ना बाबा, गोनतारी ना, हेने सिरहाना का ओरि बइठऽ।'

'का फरक पड़ी, 'ऊ उठले आ सिरहाना बइठि गइले। ओ—इसे उनुकर उमिर बाबा कहाये लायक नइखे। गाँव में रिश्ता-नाता अईसहीं चलेला। गोदी में खेलत लइका केहू के बाबा हो सकेला चाहे कवनो बूढ आदमी कवनो नाया—नोचर दूलहिन के देवर। पैंतीस के आस-पास के उमिर, हठ्ठा-कठ्ठा गोर शरीर, आच्छा खास लम्बाई वाला रमेसर बाबा के देवदनो लेखा बा। मइल-कुचइल धोती, फाटल गंजी उनुकर सालोसाल के पहिनावा हऽ। कबो-कबो खाली धोतिये से काम चलि जाला। जाड़ा में एगो मइल चादर ओढ़ि लेले! गाँव त गाँव, जवार घूमि आवेले, भोज-परोज सम्हारि देले, मुखिया-मुख्तार से भेंट कई लेले, बाकिर भेख—भूषा इहे रहेला। कहला पर जवाब देले कि तोहनी का झारऽऽऽ सूट—बूट। हमनी का इहे ठीक बा।

उनुकर दादी भरि लोटा माठा भेजली। बाबा गटागट पी गइले। मोछि पर माटा के गाज लागि गइल, जवना के ऊ आपना धोती से पोछि दिहले।

'बियाह काहे नइखऽ कई लेत? दादी कबले जिन्दा रहिहे। अबो त उनुके सेवा-टहल के जरुरत बा! धन-सम्पत्ति बढ़ले जाता। केहू भोगहू वाला तऽ चाहीं।'

बाबा हमरा बात पर धियान ना दिहले! राति वाली बात धन-सम्पत्ति के नाम लेते उनुका इयाद आ गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कमाई गाँवे में हो सकेला। लोग शहर का ओरि भागल चली जाता। गाँव जइसे काटऽता। इ का आछा बा ? हं उहां आराम ना मिली। कपड़ा साफ ना रही। धूरि-माटी में सउनाईल रहे के पड़ी। मोट-झोट जे मिली, खाये के पड़ी। इहे नू ··· बस लोग बेकारे रोवत रहऽता। खेती हमहू कइले बानी। गाँव में केकरा से कम उपजऽता। पिछिला साले कारोबारो कइले रहनी। जवार भरि के आलू खरीदले रहनी।

पईसा कहवा से आइल बाबा ?

बाबा हँसे लगले, 'तोहनी का का बुझेलऽसऽ ·· गाँव के लोग निपट गंवारे होला।' तब उनुका चेहरा पर एगो कुटिलता के दर्शन भइल। देखि के डर लागल ! ऊ बतवले, 'पहिले हम केहू के पईसा ना दिहनी। सबकर उधारी रहे। हं, बनिया जवना भाव से लेत रहे ओह दू चवन्नी भाव बढ़ा दिहनी।'

तब ?

'तब का ··· बनिया गोड़ धरि लिहलसि। कहे लागल कि हम मरि जाइब बाबा। हम कहनी कि एह में जीयेमुए के का सवाल बा। मेहनत-मजूरी कइके जवार भरि के आलू एक ठांव गलिया देले बानी। ले आवऽ गाड़ी। हमर मेहनत-मजूरी दे दऽ, ले जा। मन पीछे दू रुपिया दिहलसि। ना हरे, ना फितकिरी, बइठल-बइठल आठ हजार के मुनाफा।'

उनुका चेहरा पर एगो चमक झलकल। बाजी जइसे जीतला के खुशी होखे। उनुकरे भाषन जारी रहे। बोलले, 'एमेले साहब अइले। पहिलहूं कबों एमेले एम्पी गाँव में आइल रहले ? कस्बा में बइठक रहे। हम उहवे कहि दिहनी, ओट चाही तऽ गाँव में आवे के पड़ी। दऊरल अइले। एहीं जगह पर बइठल रहले। जवार भरि के लोग रहे। सबका समनहीं सुना दिहनीं, गाँव में सरकारी ट्यूबेल गड़े के चाहीं। पछिमारी डीह पर तीन महीना से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गड़ल बा। अइसही ना लोग पूछेला रमेसर के !'

तब जवन आत्मा संतोष उनुका चेहरा पर झलकल, ओकर वर्णन ना हो समेला। मन उनुका बातन से उविया गइल रहे। हमर मालूम बा कि ई लोग कइसे गाँव के लूटऽता। हम कहनी, नलकूप तऽ सरकारी योजना में गड़ल बा। सीधा-साधा लोगन में तू आपन माथा ऊँचा कइले बाड़ऽ। अउर छोट-बड़ लाभ त सोझे डकारि गइल होइबऽ। गंवई लोगन के मालूमो ना चलत होई। रुकऽ तोहार पोल हम खोलऽतानी। तोहार असलियत सबके बतावल जाई, तब लोग जानी कि ई बाबा का हउवे।'

'एह सब फेर में मति पड़िहे बचवा ! तोरा पढ़े के बा। जो, चुपचाप किताब पढ़।' ऊ हँसि के कहले, 'लोगन के बचावेनी तऽ भीतरो करवावेनी।'

'खुलेआम चुनौती दे तारे बाबा,' मन में आइल क्रोध के दबावत पूछनी, 'एह साल कथी के कारबार होई ?'

तोहरा लेखा लइकन के बियाह करवावऽतानी, ऊ हँसे लगले।

छुट्टी बितत रहे। शहर लवटे के तइयारी करत रहनी। भीतर आँगन में गइनी तऽ बाबा हाजिर रहले। जवार में सबसे अधिका महुआ के बगइचा हमनि के बा। फूली चुनवा-चुनवा के, सुखा-सुखा के माई गल्ला कइले बिया। रमेसर गजरा के भाव खरीदले बाड़े। आजु बनिया आवे वाला बा। बाबा व्यस्त बाड़े ! एगो लइका ढोई-ढोई के पानी ले आवता आ बाबा गल्ला पर फेकतारे। कम से कम पानी के वजन तऽ बढ़िये जाई।

हमरा के देखिके ऊ कुटिलता पूर्वक हँसले।

क्रोध के एगो चिन्गारी फूटल भीतर, 'सचहूं अइसना लोग के पहिचाने के जरुरत बा।'

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation; Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई आगि कब बुतांई !

० डॉ. राजेन्द्र भारती

जतरा शुभ करे खातिर जब कतहीं से दही के जोगाड़ ना हो पावल तऽ बलेसर के महतारी मशाला के हाड़ी में हाथ डालि के उचिलावत-उचिलावत दू-चार दाना धनिया के पा गइली। ओही के बलेसर के मुँह में डालि के फफक पड़ली। महतारी के रोअत देखि बलेसर से छोट दूनो भाई-बहिन, रोवे लगले स। बलेसरो से ना अराइइ। तबो सेआन होत बहिन आ पढ़े के ललाइल भाई के देख बलेसर करेजा काठ कके झोरा उठवले आ माई के गोड़ लागि के बहरिया गइले।

बलेसर के महतारी आपन करेजा के टुकड़ा के पेट के जरते विदा त कर दिहनी, बाकिर उनकर आत्मा बलेसर का संगे रहे। बलेसर के बहरिअइला एगो पहरो ना बीतल रहे बाकिर बुझात रहे कि कई बरिस बीत गइल। बलेसर के खाये-खेले के उमिर बा, बाकिर का करस ! एही उमिर में ऊ जोगाड़ में खेत में काम करि-करि के बाप के करजा भरले। अभी पाम्ही आवता, बाकिर बूढ़ जइसन बात-बेवहार हो गइल। कोशिलिया दिन पर दिन छाती पर चढ़ल जातिया, बस बलेसर के इहे चिन्ता घेर लेहलस। महतारी के बरिजलो पर ऊ ना मनले, कमाये कलकत्ता चलि दिहले—अपना मामा के भरोसे।

बिना कवनो खबर कइले अचानक बलेसर के देखि के मामा जी एके सांस में सब खैर-खैरियत पूछ गइले। नोकरी-चाकरी के बात सुनते मामा जी के चेहरा उतरि गइल। मामा जी बलेसर के टट्टी फराकित के जगहा देखा के अपने खाये-पिये के बनावे में लागि गइले।

होत भिनसहरे मामा जी आपन डिपाट के सरदार के डेरा पर पहुँचले। सरदार से काम के बावत बात कहले। सरदार के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाहे-बिगाहे मामा जी केतने काम आइल रहले, बाकिर सरदार जी साहेब-सूवा के बहाना बना के टार गइलें। मामा जी आपन डिपाट के साहेब के घरे रहू मछली लेके पहुँचले। मछरी तऽ साहेब राख लेहलस, कहलस, 'युनियन के पचड़ा आजकल बहुत बा, अइसे कवनो आदमी के रखला पर यूनियन वाला जिये ना दिहें जा। यूनियन के लोगन से मिलऽ। मामा जी यूनियन के दफतरन के चक्कर काटे लगलन। कवो एह पार्टी के यूनियन के दफतर तऽ कवो ओह पार्टी के यूनियन के दफतर। सब यूनियन वाला लोग के कहे के मतलब रहे कि हम अगर कुछ करतानीं तऽ उऽ पार्टी के यूनियन विरोध करी। एही आपाधापी में महीना बीत गइल।

एने बलेसर के महतारी बबुआ के नोकरी खातिर देवता-पितर नेवतले लगली। रोज भोरहीं नहा-धो के शिवाला में माथा टेके लगली। बहिन कोशिलीया तऽ जवान होइए चलल रहे। ओकरा सपना में राजकुमार लउके लागल। हरदम मने-मने भईया कमा के अइहें तऽ का-का लेहब एकरे उधेड़ बुन में पड़ल रहे। छोट भाई रमेसर शहर के स्कूल में दाखिलो करवा के इन्तजार में जमीने पर गणित लगावे आ मिटावे। बलेसर के महतारी एगो नया उमंग से घर-घर काम करके अनाज ले आवस। उनका लगे अब दिन फिरले बोलता। पूरा परिवार के बलेसर पर आँखि लागल रहे।

मामा जी जब तन-मन-धन के अलावे सोरस-सिफारिस करि-के हारि गइले तऽ ई सब बलेसर से देखि ना गइल। ऊ मामा जी से चुपे, जब मामा जी डिउटी पर चलि जास, तऽ रिक्सा चलावे लगले। कांचि उमिर। जेठ के महीना। हारि-थाकि के भी मामा के सोझा झूठो तरोताजा रहस। एह तरे तऽ कुछ पइसा घरे बलेसर बिदा कइले।

रुपीया पाके महतारी, भाई, बहिन उतरा-इतरा गइल लोग।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलेसर के महतारी तऽ ओही लगले रुपीया देवता के अस्थान पर राखि के नाकि रगड़ली आ दूसरे दिन से जेतना देवता नेवतले रहली, ऊ पूजावे लगली।

महीना भर रिक्सा खिचला के बाद बलेसर अब बेमार रहे लगले। रात-रात भर खाँसते बिते। मामा जी बलेसर के सरकारी अस्पताल ले गइले। डाक्टर टी.बी. बतवलस। दवा-दारू होखे लागल। मामा जी चिन्तित रहे लगले। ई महीना बलेसर पइसा ना भेज पवले।

अस्पताल से छुट्टी पावते मामा जी काफी सोच-बिचार के बलेसर के गाड़ी धरा दिहले। अचानक बलेसर के घरे पहुँचते उनकर महतारी भाई-बहिन उनसे लिपट गइल लोग। हाड़ आ चाम के ठठरी देख के बलेसर के महतारी बिफट पड़ली। पौ फाटत रहे। बलेसर गटागट एक लोटा पानी पी के कोशिलिया के देखलन। ऊ लजा के आपन ओढ़नी ठीक करे लगल। बलेसर फरुहां उठा के बाहर चल दिहले।

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जय भोजपुरी ! जय भोजपुरिहा !!

कबीर जयन्ति का अवसर पर-
स्थापित १९९१

कबीर भोजपुरी पुस्तकालय प्रेस का ओर से निहोरा।
भोजपुरी लिखनिहार सभन सम्पर्क करीं–
भोजपुरी के खाँटी साहित्यिक रचना छपवावे खातिर।

पता :–

कबीर भोजपुरी पुस्तकालय प्रेस,
अलमस्त नगर साहेबगंज
पोस्ट-करनौल जिला-मुजफ्फरपुर
पिन-८४३१२५

नोट :—ई प्रेस 'नो लौस, नो प्रौफीट' के आधार पर भोजपुरी सेवा खातिर समर्पित बा !

कोइल/सितम्बर/१९९१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

असलियत

० जगदीश आर्य

ठाकुर जगमोहन सिंह के कवनो चीज के कमी ना रहे। अपना एलाका में उनकर बड़ा दबदबा रहे, कारण कि बहुत बड़ा जमिनदार जे रहन। उनका पेशाब से चिराग जलत रहे। परिवार में केवल दू प्रानी रहन—एक ठाकुर साहब और दूसर उनकर तीसरी पत्नी। ठाकुर साहब दू गो बिआह कइलन, पर केकरो से कोई संतान ना भइल। तब अधेड़ उमर में तीसर बिआह भइल। पत्नी बड़ा सुघर-सलोना आ पतिवरता रही। बिआह के समय ठाकुर साहब पचास के लगभग रहन आ पत्नी जेकर नाम राजमनी कुंअर रहे, के उमर पन्द्रह-सोरह बरिस के रहे। शादी भइला दस बरिस बीत गइल, पर संतान के मुँह ना देखलन जा। बहुत सा उपाय कइलन—मंत्र-तंत्र जोग-जाप वैद-डाक्टर सबका के अजमावल गइल पर सन्तान के मुँह ठकुराइन ना देखली। संतान-प्रेम बहुत बड़ा प्रेम ह, परन्तु एह सुख से ठाकुर साहब बंचित रहन। एकर दुःख ठकुराइन के छाती में बबूल के कांट नियन सालत रहे। सांप के लहर नियन सँतान के कमी के दुःख उठत रहे—खैर कसहूं दिन कटत रहे।

ठकुराइन के एगो मुँहलगी लउड़ी रहे सुखिया। सुखिया ठकुराइन के संगे लागल रहत रहे। ठकुराइन के दुःख से उहो दुःखी रहे।

एक दिन सुखिया ठकुराइन से कहलस—'मलिकाइन, एगो महातमा, साधु जी धिनहू ब्रहम बाबा के धाम पर पहूंचल बाड़न। उनकर बड़ा तेज बा। साधु जी सबकर मनो-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कामना पूरा कर देलन। देखीं न रमिया के कवनो बाल-बच्चा ना होत रहे। साधु जी के आशिरबाद से ओकर गोद भर गइल। मलिकाइन, कहाँ तक कहीं,—महातमा जी के बड़ा जस फइलल बा। उनका में बड़ा तेजी बा। रवों उनका शरन में चलीं—आउर गोद हरिअर होखे के आसिरबाद मांगीं। हमार बिसवास बा कि उनका बरदान से राउरो गोद भर जाई। ठकुराइन कहली—'अरे कतना त साधु, सन्यासी, के चरन पर, आउर देवी-देवता के चउरा पर माथा पटकलीं, पर सब बेकार गइल। अब हमार बिसवास खतम हो गइल बा। हमरा किसमत में भगवान लिखलहीं नइखन त गोद कइसे हरिअर होई। हम बांझ हईं—बाँझे रहब।'

एक दिन मिसराइनो ठकुराइन से साधु जी के पास चले के बहुत आगरह कइली। टोला-परोसा के लोगो साधु जी के महिना के बखान करस जा। सुनते-सुनते ठकुराइन क मन साधु जी के पास चले के होखे लागल। एक दिन ठाकुर साहब से ठुकराइन जी साधु बाबा के चरचा चलवली। ठाकुर साहब, ठकुराइन के बात के समरथन ना कइलन। साधु, महात्मा सब पाखंडी हवन, इनका चक्कर में मत पड़। भगवान जब किसमत में संतान देहले नइखन त संतान कहाँ से होई। राम-राम करऽ।

एक दिन सन्याशी ठाकुर साहब के हवेली पर पहुचल। सन्यासी के उमर तीस-पैंतीस क लगभग रहे। गोर रंग, जटा-जूट-दाढ़ी-मूंछ से आकृति बड़ा भव्य लागत रहे। बगल में मृगछाला एक हाथ में चिमटा और दूसरा हाथ में कमंडल रहे। लिलार पर चन्दन के तिलक बड़ा शोभायमान लागत रहे। ठाकुर साहब युवा सन्यासी के देखते,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रनाम कइलन। सन्यासी जी आसिस दे के कहलीं—'बच्चा, तोहरा सब कुछ बा—धन दौलत सब बा, पर तोहरा एको सन्तान नइखे। एह दुःख से तूं दुःखी रहत बाड़। तूं तीन शादी कइलऽ पर तोहार मनोकामना पूरा ना भइल।'

ठाकुर साब के बड़ा ताज्जुब भइल कि सन्यासी जी से कबो के देखा-देखी ना ह—हमरा दुःख के ज्ञान इनका कइसे भइल। श्रद्धा से ठाकुर साहब, सन्यासी के पुनः प्रनाम कइलन, आउर कहलन, 'महातमा जी, जब भगवान, संतान हमरा किसमत में देनहीं नइखन तब संतान कहाँ से होई।' सन्यासी जी ठाकुर साहब से कहलन—'तोहरा औरते के नाम राजमनी कुंवर हंनू! उनकर नइहर भगवानपुर ह। अपना औरत के हमरा सामने बुलावऽ। हम उनका के देख के बताइब कि सन्तान होई कि ना होई।' भीतर हवेली में, ठाकुर साहब खबर भेजवलन। ठकुराइन, सुखिया के साथ में लेके अइला। सन्यासी के देख के हाथ-गोड़ के गोड़ पर सिरे रख के प्रनाम कइली। महातमा जी पुत्र होखे के आसिस देलन। सन्यासी, ठाकुर साहब से कहलन—'स्वामी जोगानन्द जी, हमार गुरू जीं हईं। उनका पास अनहोनी के भी होनी देवे के शक्ति बा। स्वामी जी ब्रहम बाबा के सच्चा सेवक हवन। अगर भभूत दे दिहन त तोहरा पुत्र जरुर होई। बच्चा, तूं एक दिन ठकुराइन के लेके स्वामी जी के पास आवऽ। तोहार मनोकामना जरुर पूरा होई। कातिक अमावस्या के रात में स्वामी जी दरवत देहीला—ओह दिन तूं जरुर पहूंचऽ।' कहके सन्यासी जी चल देलन।

धिनहू ब्रहम बाबा के धाम, रोहतास जिला के शिवसागर कसवा से एक की. मी. दूर एगो घना आम के बगइचा में बा। ब्रहम बाबा के बड़ा प्रसिद्धि बा। भूत-प्रेत-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डायन-ओझा के सतावल औरत-मरद सब उहां पहुंचेला। जवान औरत जब भूत खेलेलिसन त उ दृश्य बड़ा भयानक आ रहस्यमय छागेला। झूम-झूम के अनाप-शनाप बकेलिसन। बाबा के जहां स्थान बा, वहां लोहबान, अगर-तगर आ घीव के हुमाद से वातावरण सुगंधित भइल रहेला। गांव के जाहिल लोगे ना, बलुक पढ़ल-लिखल, वकील, प्रोफेसरो के घर के औरत उहां भूत-प्रेत बाधा दूर करावे पहुंचेलीस। अधिकतर एकहीं तरह के औरत लोग उहां पहुंचेला—संतान के इच्छा लेके। गांव के लोग गरीबी, अज्ञानता आ अंधविश्वास के अधिक शिकार होलन। इहे लोग उहां अधिका भीड़-भाड़ लगावेला।

पांच-छव महीना से एमे स्वामी जोगानन्द जी उहां निवास कइले बाड़न। स्वामी जी के उमर पच्चास के लगभग रहे। साथ में चेला लोग के समूहो बा। स्वामी जी कहां से आइल बाड़न, कहां जन्म-स्थान ह, कवन वरन (जाति) के हवन, एकर पता नइखे। स्वामी जी के रहे खातिर एगो कुटिया गांव के लोग बनवा देले बाड़न। स्वामी जी रात-दिन गांजा-भांग के नशा में डूबल रहीला। बड़ा-बड़ा जटा-खिचड़ी दाढ़ी-मूंछ, गोर रंग, सउसे देह में भभूत लगवले रहीला। नशा से आंख लाल-लाल भइल रहेला—पर बात चीत में काफी असर बा।

स्वामी जी के प्रसिद्धि के एगो कारन इहो बा कि स्वामी जी रुपैया-पइसा आ औरतन के परछाई से दूर रहींला। उनकर चेला लोग के, एह ढंग से प्रचार कइला से, स्वामी जी के प्रभाव, गांव के लोगन में, खास कर औरतन में काफी बढ़ गइल रहे। चेला लोग नाना तरह के रुप बना के गांव-गांव में घूम-घूम के स्वामी जी के महिमा के प्रचार करस। ओही चेला में से एगो चेला ठाकुर साहब के परिवार से मिलल—जेकर चरचा ऊपर कइले बानी। चेला लोग गांव-गांव के रिपोर्ट, जोगानन्द जी से बता देस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठकुराइन के एगो भतीजा—'अखिलेश' रहन। पटना शहर में रह के मेडिकल में पढ़त रहन। आर्य समाज के विचार धारा से प्रभावित रहन। अंध-विश्वास आ ढोंग के प्रबल विरोधी। ठकुराइन, अखिलेश के दूर-दराज के चाचीं लागत रही। ठाकुर परिवार से अखिलेश के बड़ा आमद-दरफ्त रहे। जब-जब छुट्टी मिले चाचा-चाची से मिले चल आवत रहन।

एक दिन अखिलेश चाचा-चाची से भेंट करे अइलन। त चाचीं अखिलेश से स्वामी जोगानन्द के महिमा के बखान कइलीं, आउर कहली, हमार मन स्वामी जी के पास जाये के कर रहल बा। हमरा विश्वास हो गइल बाटे कि उनका आशिरवाद से हमर गोद भर जाई। तू हूं साथे चलऽ।' अखिलेश चाची के बात के विरोध कइलन आ कहलन कि साधु-सन्यासी के आशिर्वाद से संतान ना मिली ढोंगी पाखन्डी साधुओ से अलग रहे के चाहीं। तू उहां मत जा। हम तोहार आ चाचा जीं के डाक्टरी जांच करवाइब, बाकिर चाची जिद्द पकड़ली, 'हम जरुर जाइब। तूं चल, चाहे मत चल। कातिक अमावसा के दिने स्वामी जी के पास जाये के बा।' अखिलेश चाचा से प्रार्थना कइलन कि चाची जी के स्वामी जी के पास जाये से रोकीं। बाकिर ठा. जगमोहन सिंह अपना मेहरारु के बात के समरथन कइलन। टोला-परोसा के लोगो चाची के हां में हां मिलावल। सब तरह से समझा-बुझा के अखिलेश हार गइलन, बाकिर उनकर चाचा-चाची ना मनली।

कातिक अमावस्या के दिने जाए के रहे। काल अमावस्या बा। आजुए से तइयारी होखे लागल। ठा. साहब के एक जरुरी काम रहे, एहसे साथे ना गइलन। अपना एगो कारिन्दा के साथे लगा देलन। अमावस्या के शाम के समय जीप से लोग रवाना भइल। अखिलेशो छिप के पीछे स्कूटर से पीछा करत चललन। उनका चललाके केकरो पता ना रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सात-आठ बजे रात्रि के लगभग ब्रहम बाबा के धाम के पास लोग पहुंच गइल। दूरे से, 'ब्रहम बाबा की जै-ब्रहम बाबा की जै' के जय जय कार सुनात रहे। चहल-पहल कम हो गइल रहे। भक्त लोग जै-जै कार करत अपना-अपना गांव के ओर जात रहन।

जीप सड़क पर खड़ा करके, पगडंडी पकड़ के ठकुराइन आ कारिन्दा ब्रहम बाबा के थान के ओर जाये लगलन जा। थोरी दूर चलल के बाद स्वामी जी के कुटिया के पास लोग पहुंच गइल।

बाबा थान पर आज सन्नाटा रहे। भक्त लोग चल गइल रहे। ब्रहम बाबा के मुख्य पुजारी अपना घरे चल गइल रहन। केवल स्वामी जी आ उनकर चेला लोग रहे। रात के दस बजे के समय रहे। आकाश में बदरी छवले रहे। जवन साधु पहिले ठाकुर साहब और ठकुराइन से मिलल चुकल रहन—उनका से भेंट भइल। ठकुराइन साधु के पैर पर सिर झुका के प्रणाम कइली। कारिन्दा भी प्रणाम कइलन। साधु के होठ पर मुस्कराहट नाच गइल। साधुजी आशिर्वाद दे के कहलीं—बाबा त औरत लोग से भेंट ना करस, मगर हमरा बहुत अनुरोध कइला पर भेंट करे के तइयार भइलंन ह। साधु जी ठकुराइन से कहलन, रावा अकेले जाईं। डरे के कवनो काम नइखे। बाबा के समाधी अब टूटही वाला बाटे।' कारिन्दा कुटिया के बाहर खड़ा रहलन। ठकुराइन डेरात-डेरात कुटिया के भीतर गइली। बाबा जी आंख बन्द करके पलथी लगवले रहन। पास में धुनी जलत रहे। एक ठे दीया मधिम रोशनी से जालत रहे, जवना से कुछ प्रकाश होत रहे। ठकुराइन हाथ जोड़ के खड़ा भइल रही। थोड़ी देर के बाद—बाबा जी आंख

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोलन। आंख का रहे, मालूम होखे, अंगार ह। जटा आ लम्बी दाढ़ी-मूंछ से चेहरा भयानक लागत रहे। बाबा जी गरज के बोललन, 'इका मांगे आइल बाड़िस बोल ?' ठकुराइन के तर से देह कांपत रहे। डरते-डरते कहल, 'बाबा हमरा के एगो बेटा चाही।' बाबा जी जोर से चिमटा पटकलन। त्रिशूल भांज के कहलन—'हमरा आज्ञा के पालन करु—साड़ी उतार के हाथ में ले के हमरा आसन के पांच बार परिकरमा करु।' ठकुराइन बहुत डर गइली, साड़ी खोले के हिम्मत ना भइल। बाबा जी फेरु एक बेरि चिमटा पटकलन और बाघ नियर हुंकार भर के कहलन—'जल्दी करु।' अबकी ठकुराइन डरते-डरते साड़ी उतार के हाथ में लेली और आसन के पांच परिकरमा कइली। बाबा जी इशारा कइलन—जमीन पर लेट जा। साक्षात् ब्रहम बाबा आ के आशिर्वाद दिहन। जल्दी करऽ।

ठकुराइन डर के मारे आंख बन्द करके जमीन पर लेट गइली। सारा शरीर नग्न। बाबा जी जइसहीं ठकुराइन के नग्न देह पर झुके के चहलन—तबले न जाने कहाँ से अखिलेश पहुंच गइलन। डांट के बोलन—'अरे, ढोंगी,-पाँखन्डी-पापी।' आज तोर खैर नइखे। आज तोरा के हम ना छोड़ब। न जाने कतना औरतन के ते इज्जत लूटले बाड़े।' अखिलेश ठकुराइन से कहलन, 'तू उठऽ, साड़ी पहिर ल।' ठकुराइन खड़ा हो गइली —सड़ी पहिर लेली। अखिलेश, बाबा जी के पटक के छाती पर चढ़ गइलन। उनकर कसरती देह, बाबा जो के सीना पर सवार होके हाथ से त्रिशूल उठा के गरदन में घसावे के चहलन। कुटिया के बाहर खड़ा कारिन्दो आ गइलन। बाबा जी के तर से देह काँपे लागल। हाथ जोड़ि के ककलन—हमरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के माफ़ कर दीहीं—अब हम अइसन पाप ना करब। हम आजे इहाँ से चल जाइब।'

अखिलेश कुछ सोचलन—अगर साधु के हम हत्या कर देब—त संगरो हाल्ला हो जाई, गाँव के अंधश्रद्धालु लोग साधु के पक्ष में हो जाई। पुलिस आई—जाँच-पड़ताल करे लागी। ठकुराइन चाची के प्रतिष्ठा चल जाई। हमरा पासे कवनो प्रमाण बा ना ... ... बहुते बात सोंच के—बाबाजी से कहलन अभी तुरन्ते इहाँ से स्थान छोड़ के चल जा, नाहीं त हम तोहरा के जिन्दा ना छोड़ब।'

अखिलेश ठकुराइन चाची के लेके बाहर अइलन बाहर घुप्प अंधेरा रहे। कारिन्दा से कहलन कि एह घटना के चरचा मत करिह। चाचा से भी ना। चरचा कइला से चाचा-चाची के इज्जत खत्म हो जाई। कारिन्दा ठकुराइन के लेके जीप से चल देलन।

सुबह गाँव के लोग देखल सन्यासी आ उनकर चेला-चांटी बाबा धाम छोड़ के कहीं चल गइलन। पता ना लागल कि स्वामी जोगानन्द कहाँ गइलन।

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(शेष पीठ ४ वा)

के कुछो ना कइले त ईहाँ के छपरा के असली बेटा होइए के भोजपुरी के का करब ? हँ सुनाइल हँ कि इहाँ के भोजपुरी, मैथिली, उर्दू, बंगला सबके ऐके में मेराके खिचड़ी बनाइब। खिचड़ी बनाके घीव डलाई तब नू जीव बाँची। ऐकरे पर खुश होके लोग कहेला— जीहीं जी आ जिनिगी भर जिहीं जी। इहे सब लीला में बेचारू अनबोलता जीव दण्डी विमलानन्द जी के 'बउधायन' महा काव्य प्रेस वाला के घरहीं सड़त-गलत वा। प्रेस के पइसा बाकी रहला से 'बउधायन' जस के तस वा। बकिर अपना पुस्तक सूची में वाह-वाही लूटे वास्ते 'बउधायन' महा काव्य के नाम छपल बा। ऊ प्रेस में दिअका के खोराक हो रहल वा। भोजपुरी के गौरव ग्रन्थ नयकी छंद में लिखाइल बारह बरिस के घोर तपस्या भोजपुरी अकादमीअन के भूतपूर्व पदाधिकारिअन के घिनौनी साजिश के चपेट में मटियामेट हो रहल वा। साँचो भोजपुरी के आंदोलन तेज वा, क्रांति घटित हो रहल बिआ। एह बीचे बीसहन किताब छपाइल बाकिर 'बउधायन' के कैद से मुक्ति ना मिलल। ई कइसन मजाक कइल जाता बेचारू महा कवि से। बाकिर ई बात सांच वा कि अइसन महा कवि के आत्मा के आह से कहीं अकादमी गतलू-खाना में मत चल जाव। का जाने वर्त्तमान अध्यक्ष पदमश्री बाबु लोहा सिंह जी एह बतिया पर ध्यान देब कि ना, हम नइखी कह सकत। सुनले रहीं एक-बेर सन्नाटा टूटिए चुकल वा कवि गोष्ठी बइके ... ... तब त चलिए रहल बिआ अकादमी।

इहो बिचार ठीके बा कि 'भोजपुरी साहित्य बँचावल जाए' के नारा दिआए आ साहित्यकारन के रचना अकादमी आलमारी में राख के पन्द्रह बरीस से साड़ल जाव। अच्छा कनून बा ऐ अकादमी के डाइरेक्टर साहेब। साँचो अपने भोजपुरी पहेली बूझा-वत बानी भोजपुरिहा लोगिन के। कादो अपने के भले 'भोजपुरी के पहेली' जइसन निकहा सद ग्रन्थ निकसले बानी। बाबा विक्रमादित्य मिश्र जी। जै हो ... जै हो .. भुखाइल करमचारिअन के डायरेक्टर जी धन्य बानी।

अन्त में हम कहल चाहबि कि जइसे भारत के अन्तिम बादशाह मोहम्मद शाह जाफर सफर कइले ओसहीं अबे अपने सभे के सफर के समय नगिचाइए गइल वा। सावधान !! भोजपुरी अकादमी के अन्तिम चिराग ... सलाम ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

प्रेषक :

सम्पादक "कोइल"
अलमस्त नगर, गोटीघर (साहेबगंज)
करनौल, मुजफ्फरपुर (बिहार)
पिन–८४३ १२५

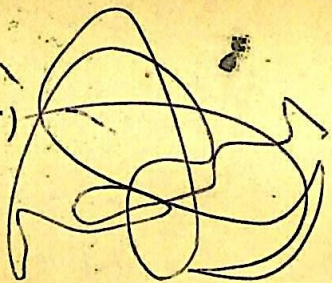

सेवा में,
श्री/श्रीमती (दण्डिस्वामी) विभवा...
सरस्वती
राजगुरुमठ बी 3/175 ...
घाट, पिन–
वाराणसी (...

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काइल

भोजपुरी के चेतनगर पत्रिका

साल पांचवा । अंक-अक्टूबर-नवम्बर ९१ । दाम-दू रुपया ।

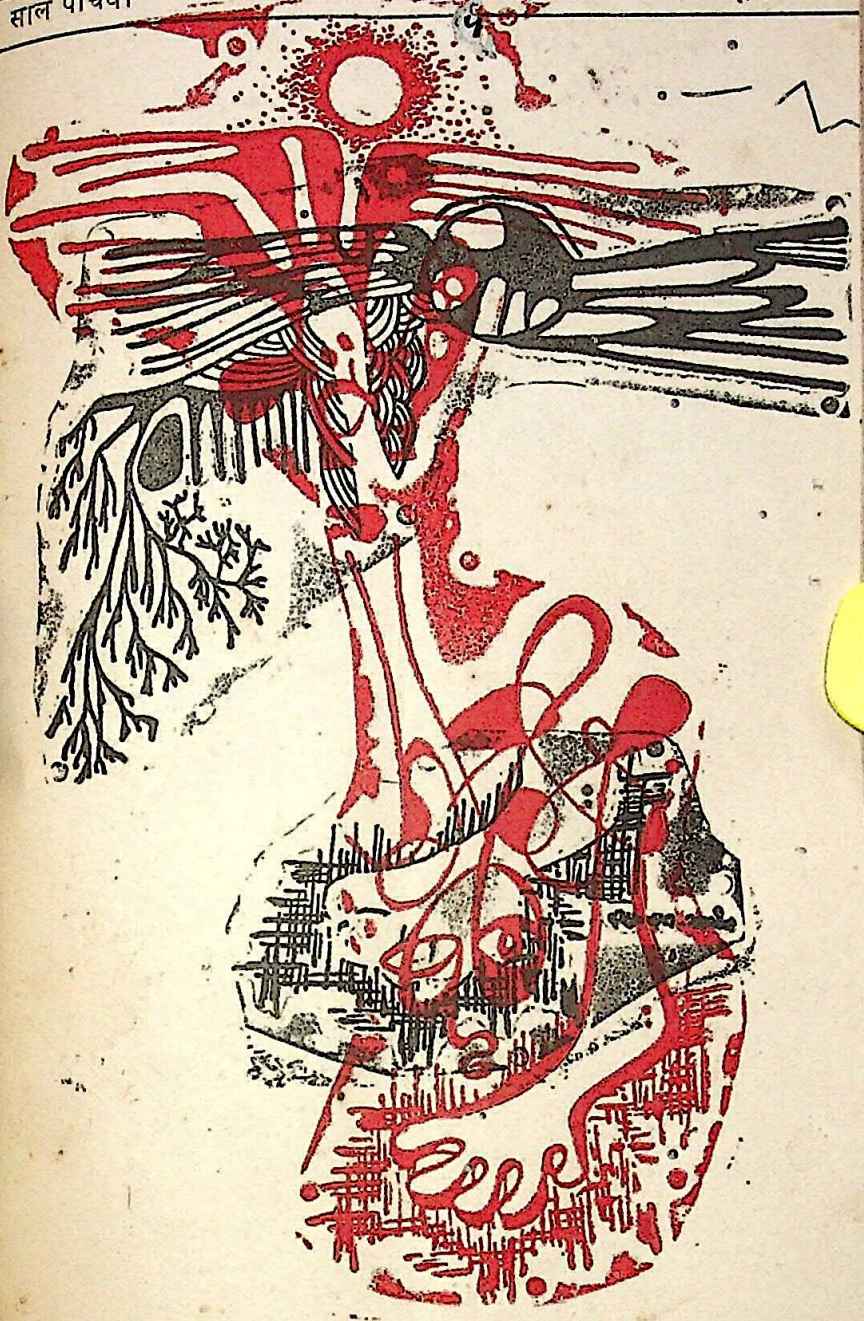

प्रबन्ध-सम्पादक-धीरज कुमार भट्टाचार्य । सम्पादक -डा. ब्रजभूषण मिश्र ।
संयुक्त-सम्पादक-कुमार विरल । सहायक-सम्पादक-दिनेश्वर मिश्र 'दिनेश' ।
[illegible]

Rajguru Math, Shivaji Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिट्ठी मिलल

दि. २-६-६१

आदरणीय मिश्र जी,

भोजपुरी के लोक प्रिय चेतनगर पत्रिका 'कोइल, के जून अंक बहुत पहिले मिल गइल तहे। पढ़ि के बड़ा खुशी भें भइल रहे कि रउरा हमके याद कइलीं। बाकिर हमार वे अदबी माफ करबि, हमरा चिट्ठी देबे में देर हो गइल।

ई बड़ा गौरव आ प्रशँसा के बात बा कि रउरा सभे अपना अध्यवसाय आ लगन से 'कोइल' के कूक भोजपुरी क्षेत्र में सुना रहल बानीं आ लगातार पाँच बरिस से अपना मिशन में लगल सफलता पा रहल बानीं। एकरा खातिर हमरा ओर से बधाई।

जून के एह अँक के सम्पादकीय बड़ा प्रेरणास्पद बा, गम्भीर ढँग से सोचे आ सोचि के भोजपुरी के सेवा में लागे के चाहीं। धीरज कुमार भट्टाचार्य जी के 'गाँव के चिट्ठी' बड़ा मर्मिक कहानी बा। ब्रज भूषण मिश्र जी के कहानी 'पछतावा' यथार्थ परक जीवन के उजागर कर रहल बा। पूज्वर पँ. गणेश चौबे जी के निबन्ध 'पिड़िया व्रत आ ओ-कर गीत' भोजपुरी क्षेत्र के सभ्यता सँस्कृति के धरोहर के भोजपुरी लोगन में सँजोवे के प्रेरणा दे रहल बा। कुमार विरल जी कहानी 'अउरी रीतु ना अइली' पढ़े में दूसर, बूझे में दूसर, बड़ा नीक लागल। हम त पढ़ि के अघा गइ-लीं। अइसन रचना विरले बाड़ी स। बाबुल, अकेला आ शशि जी के गीतो नीक लागल। कुमार विरल जी के गीत बहुत नीक लागले। कई बेर गा गाके पढ़लीं।

राउर—डा. राम सेवक विकल
पो.–हल्दी पोखर, पूर्वी सिंहभूम

(शेष पीठ २७ पर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri(Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादकीय

अखिल भारतीय के मोल राखल जाय

क्षेत्र-विस्तार, भाषा-भाषियन के संख्या, भाषा के सामर्थ्य, उन्नत संस्कृति, लोक साहित्य के विशाल भाण्डार, आ आधुनिक साहित्य के पोढ़-परम्परा के बावजूद भोजपुरी प्रतिष्ठित-स्थापित काहे नइखे हो पावत ? एकरा साहित्य के आदर काहे नइखे मिल पावत ? ई केहू समझ सकत बा कि एकरा पाछे राजनीति के खेल चल रहल बा। कई तरह के विरोधी बल लाग रहल बा। अइसनका हालत में भोजपुरियन के, खास करके बिखरल भोजपुरी समाज के एक जुट करे में भोजपुरी के साहित्यकारन का अहम् भूमिका निभावे के बा। अगर इहे लोग रूष्ट होखे लागी आ अपना के तुष्ट करे के कोशिश करी त भोजपुरी के बंटाढार हो जाई। ई सब एहसे लिखे के पड़त बा कि अइसन विवाद के बीआ रोपा गइल बा। सवाल बा भोजपुरी के संस्थन के साथे 'अखिल भारतीय' शब्दन के प्रयोग।

पिछला १९४६ आ १९४७ ई. सन में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संगे अखिल भारतीय स्तर पर अखिल भारतीय भोजपुरी-साहित्य सम्मेलन आयोजन भइल, बाकिर अखिल भारतीय स्वरुप वाला एगो संस्था—'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन सन् १९७३ ई. में पटना में अस्तित्व में आइल। ई संस्था आज तक आपन एगारह अधिवेशन बिहार, उत्तर प्रदेश आ मध्य प्रदेश में कर चुकल बाटे आ स्वनामधन्य—११ भोजपुरी भाषा-भाषी विद्वान-साहित्यकार एकर अध्यक्षता कइले बाड़न, जवना में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदि जइसन नाम सामिल बाटे। घोर अर्थाभाव का बावजूद भोजपुरी साहित्यकारन में आपसी सम्पर्क बढ़ावे भाषा-साहित्य के प्रति एगो जागरण पैदा करे,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साहित्य का विकास के आन्दोलनात्मक स्वरूप देवे के भरसक कोशिश एकरा द्वारा भइल बाटे ।

एने एह संस्था के पदाधिकारियन का मन में एगो स्वाभाविक शंका घर कर रहल बा । ई अनजाने नइखे । एकरा पाछे खास कारण बा । पहिले के बिहार राज्य भोजपुरी भाषा सम्मेलन, बाद के 'भोजपुरी भाषा सम्मेलन (निर्वंधित नाम) माह भर पहिले 'अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन' के नाम से देवघर में आपन चउथा अधिवेशन कइलख ह । एने लखनऊ में 'भोजपुरी लोक' परिवार ऊत्तर प्रदेश में भोजपुरी के प्रति जन जागरण पैदा करे खातिर 'अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद्' के स्थापना कइलस ह, जवना के स्थापना समारोह आहूत उपचुनाव का कारण स्थगित हो चुकल बाटे । पहिला जहाँ नाम मात्र के 'भाषा' आ 'साहित्य' मामूली फरक का बावजूद भरम पैदा करत बा, उहाँ दूसरका संस्था 'उत्तर प्रदेश' तक सीमित रह के आपन नाम 'अखिल भारतीय' कहत बाटे आ बिरोधाभाषी लागत बा । का एह से भोजपुरी भाषा का घाटा-बाटा ना लागी । भोजपुरी के बढ़न्ती के बिरोधी लोग एकरे के उछाल के कहीं कि पहिले अपने में फरिया ल, असल भोजपुरिया के ब.टे ? आ सबसे बड़का 'अखिल भारतीय शब्द' के मोल घटला के घाटा होई । अर्थ सम्पन्नता आ प्रकाशन का दिसाई पहिले से आ बाद में भी भोजपुरी के कई संस्था अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से बीस पड़ला के बावजूद अपना के ओकर अंग मान रहल बाटे । कहाँ कवनो टकराहट बा । एह से 'कोइल' ई अपील कइल चाही कि हरसंभे 'अखिल भारतीय' के प्रयोग मत कइल जाव, जवना से कवनो तरह के भ्रम आ बिवाद पैदा होखे आ आगे चल के भोजपुरी पर एकर कुप्रभाव पड़े । अखिल भारतीय संस्था एक रहे, आउर सब भारतीय अउर भोजपुरिया रहे के चाहो ।

ब्र.भू.मि.

कोइल/अक्टूबर–नवम्बर/९१–पीठ २

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बापन पन्ना—

माया (जं) जाल

ना, इ अलमारीयो में नइखे। हमरा मुह से अफसोस के लम-हर श्वास निकलल।

कथी नइखे अलमारी में। देखलीं गुलुदा उनकर गर्दा-भरल चरण सरिअवले कुर्सी पर आसीन मुस्कुरा रहल बाड़न।

गुलुदा, काहे ओइसन होला ?

अरे, उहे ना कह, का खोज रहल बाड़ ?

सम्पादक जी के तगादा बा एगो लेख खातिर। आ लेख लिखाइल ह। भोरे निकले के बेरा एहिजा धइले रही। बाकिर, अबहीं जरुरी बा त मिलत नइखे।

बहुत जरुरी लेख रहे बुझाता ! अच्छा छोड़। घबड़ा मत। एगो आउर लिखिये डाल। हमरा तागीद नइखे। बइठतानी।

बाकिर, गुलुदा, ओइसन काहे होला ? जेकर जरुरी बा ऊ काहे ऊब जाला। बात तनी धियान से सुनी। ... ...

बिहान कवनो जरुरी चिट्ठी डाक में देवे के ह। डाकघर में खबर कइल जाइ त लिफाफ गायब। ... ...

कचहरी में रेजिस्ट्रेशन के फारम भरे के जरुरी बा। ओहदिन बड़ा बाबु आपिस से लापत्ता। ... ...

चाँपाकल के मिस्त्री के जरुरी जे दिन होइ, खबर आइ बेचारा आजुये कुटुमाइता चल गइल बा। ... ...

अधेरा में ताला के कुंजी ढुँढ़ रहल बानी। सही चाभी हाथ में ना आइ। ... ...

बिस्तर से जल्दी निकले के बा। पैर में हमेसा उल्टा चप्पल समा जाई। ... .

केहू के इन्तेजार में रास्ता जोहत बानी। काहे कि उ हमेसा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

एही माहे गुजरले ओह दिन बेचारा जरूरे दोसर रास्ता धइले घर जाई। ... ...

आरे, आरे ..., तनी दमों धरब कि बकते चल जइब। गुलुदा बीच में टोक देलन।

ना, गुलुदा, एकर सही जबाब दीं ? हमनी हमेसा जे माँगब, चाहब। होइ ओकर उलटे ! इ कइसन विधान बा। हमर ममेरा-भाई एगो लड़की के बाद जोहत सात-सात गो बेटा के जन्मदाता बन गइलन। कहीं, काहे ?

एकर जबाब भगवान कुरूक्षेत्र में देले बाड़न। संकर एकर जबाब थोड़के दिन पहिले देले बाड़न।

गुलुदा तवले कुर्सी छोड़ के चले के कोशिश कइलन, आ जाते-जाते बम्ह के बतवलन, सब माया ह, माया ! केहुं-केहुं साचे एगो जाल जोड़ले बाड़न—माया जाल। हमहुं एगो अक्षर जोड़ले बानी मायाजंजाल। सब जंजाल बा, भ्रम पयदा करे वाला माया के पर्दा ह !

गुलुदा तवले हमरा आगे से अन्तर्हित हो गइले रहस।

लेखवा गुलुदा के छोड़ल कुर्सी पर से टुकुर-टुकुर ताकत रहे।

साँचो माया जाल, माया जंजाल बा !

—धी. कु. भ.

१२.११.९१

—o—

शास्त्री सर्वेन्द्र पति त्रिपाठी के निधन

भोजपुरी के नामी साहित्यकार, विभिन्न पुस्तकन के रचनिहार आ अनुवादक, भोजपुरी भाषा सम्मेलन आ भोजपुरी अकादमी के संस्थापक शास्त्री सर्वेन्द्र पति त्रिपाठी के निधन से 'कोइल' परिवारे आहत बा। भोजपुरी का शास्त्री जी के निधन से बड़का घाटा भइल बा। भगवान उहाँ का आत्मा के शांति दीं आ परिवार के एह दुख के सहे के शक्ति।

—सम्पादक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आलेख—

भोजपुरी कहानी, कालह से आज ले

तैयब हुसैन पीड़ित

भोजपुरी में कविता के बाद कहानी के लोकप्रियता आ विकास से इन्कार ना कइल जा सके। लोककथा के रुप में एह विधा के एगो लमहर, पुरानी आ समृद्ध परम्परा भोजपुरी भाषा पाले मिलेला। कहानी के एह मौखिक ढेरी के बाद जब लिखित साहित्य के शुरूआत भइल त देखे में ई आइल कि पत्र-पत्रिकन भा किताबन का रुप में प्रकाशित सामग्री में कविता के बहुतायन रहल बाकी कहानियो के आवश्यक रुप से जगह दिआइल। एह तरेह से पुरनका नामी पत्र—'भोजपुरी', 'अँजोर' आदि के हरेक अंक में एगो-दूगो कहानी छपल लउकी। (आजो मिश्रित विधा के पत्रिका एकर ख्याल राखेली।) बाकी अखिआन करे के बात बा कि भोजपुरी के कवि हिन्दी संगे नाम कमात रहलन, बाद में भोजपुरीयां कवि-सम्मेलन अलगा से आयोजित होखे लागल, कहानी का ओर एह रुप में ध्यान ना दिआइल।

हमरा कहे में तनिको हिचक नइखे कि भोजपुरी संसद वाराणसी से प्रकाशित 'भोजपुरी कहानियाँ' के सिर ई सेहरा बन्हाई कि ऊ ना खाली एह विधा के प्रचार-प्रसार आ विकास में सहयोग देलक, बलुक अनेकानेक कथाकार पैदा क के भोजपुरी कहानी में एगो आन्दोलन खड़ा क देलक। लोकप्रियता के त हद ई रहे कि भोजपुरी के ई साइत पहिला पत्रिका रहे जे रेलवे स्टेशन पर लागल ए. एच. व्हीलर के बुक स्टॉल पर शान से आवे आ बिका जाये।

तब से लेके आज ले 'जेहल क सनद' से लेके 'केरा के टुकी-टुकी पतई' तक के निजी कहानी-पुस्तक, कईक गो विभिन्न कथाकारन के कहानियन के सम्मिलित संग्रह, पत्र-पत्रिकन के निकलल कहानी विशेषांक आ प्रो. ब्रजकिशोर के सम्पादन में महेन्द्रू (पटना) कोइल/अक्टूबर–नवम्बर/९१ पीठ–५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

से निकल्ल कथा-कहानी नाम से कहानी-पत्रिका एह विधा के ना खाली चर्चा में रखे के काम कइलक, बलुक, एह विधा विशेष के महत्व देखावत, एकरा सामग्री का ओर लोग के ध्यान आकर्षित करत, एह विधा के ओह धारा के नगीच ले आवे में सफल रहल जहाँ हिन्दी कहानियन के लहर चलत रहे। हिन्दी कहानियन से एकर नजदीकी आ प्रभावे कहल जाई कि कुछ हिन्दी के नामी कथाकारो लोग भोजपुरी में कुछ कहानियन लिखे से अपना के ना रोक सकल। मधुकर सिंह, दिनेन्द्र अनिल, मिथिलेश्वर, जवाहर सिंह, बालेन्दु शेखर तिवारी, विन्दु सिन्हा आदि नाम अइसने श्रेणी में आई।

हमरा अफसोस बा कि भोजपुरी अपना आकर्षण में एह लेखक लोग के बहुत दिन ले आ निरन्तर बान्ह के ना रखे सकलक ना त ई विधा आउरो धनिक होके सही दिशा में आगे बढ़ित। रूपश्री आ दू-तीन गो आउर कहानी लेखिका के बाद महिला कथाकार के नामे हमनी शेष लउकतानीं। ओहू में विन्दु सिन्हा नियन हिन्दीयो में लोकप्रिय त अपना कन ना के बराबर बाड़ी। ओइसहीं 'भोजपुरी कहानियों' में बालेन्दु शेखर तिवारी के जे व्यंग्य-कथा पढ़ले होई ओकरा ओह चासनी के भोजपुरी में कवनो लेखक ना मिलिहें। हँ, हमनी भले चतुरी चाचा, काश्यप जी, रामेश्वर नाथ तिवारी आ 'ढिबरी' के लेखक शुकदेव सिंह 'सनेही' से काम चलाली। बाकी तिवारी जी के व्यंग्य हमरा समुझ से हिन्दी के हरिशंकर परसाई आ शरद जोशी के टक्कर के रहे। आश्चर्य ना कहाई कि बालेन्दु शेखर तिवारी भोजपुरी छोड़ के आज अपन व्यंग्य लेके हिन्दी साहित्य में बढ़े के कोसिस करत बाड़न।

एगो बात आउर कहल जरूरी बुझाता आ ऊ ई कि बीच-बीच में भोजपुरी अकादमी आ खानगी संगठन अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, भोजपुरी भाषा सम्मेलन आ जिला स्तर के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संस्थन का ओर से भोजपुरी कहानियन पर गोष्ठीयो भइल ह। ई चाहे अधिवेशन का अवसर पर विचार-गोष्ठी के तेहत होय भा कवनो कहानी पुस्तक के प्रकाशनोत्सव का अवसर पर। बाकी देखे में ई आइल कि तटस्थ भाव से ना त आलेख लिखावे के कौंसिस भइल ना ईमानदारी से विचारे लेल-देल गइल। बात खानापुरी नियम आइल-गइल होके रह गइल आ एह गोष्ठियन के आलोक में भविष्य के कथा-लेखन खातिर हमनी कवनो निर्देशो ना संजो पवलींजा।

अब जबकि एह सब में जम्हआ धइले जाता त हमनी के या त जानबूझ के बेमारी के पड़ताल नइखीं करत (काहे कि तब अपन असावधानी, गदगी आ बेईमानी पकड़ाई) खुशफहमी के शिकार बानी अथवा जानते नइखीं कि एकरा जड़ में कब अपने अपना स्वार्थ के कीड़ा लगा देली।

हमरा दृष्टि में एह विधा के विकास अब थथमल बुझाता। ना कवनो बराबर निकले वाली कहानी-पत्रिका बा ना जम के एह पर सेमिनार आ कार्यशाला होता। वजह साफ बा अकादमी अपना कर्मचारियन के भुगताने में हरान बा, खानगी संगठन गुटबाजी, क्षेत्रीयता, भाई-भतीजावाद आ जातवाद में। हाथ कंगन के आरसी का? रउरा पिछला पाँच सम्मेलन के अवसर पर बँटाइल पुरस्कारन के निष्पक्ष जायजा लीं, असलियत समुझ में आ जाई।

हद त ई बा कि सिलेबस में जवन कहानी-पुस्तक पढ़ावल जा ताड़ी स ओहू से छात्र भोजपुरी में लिखायेल एह विधा विशेष के प्रतिनिधि कहानी आ कथाकार से परिचित ना होके कवनो कथाकार विशेष में सीमित होयेला विवश कर देल जाताड़न। जबकि विभिन्न कथाकारन के सम्मिलित संग्रह एह काम खातिर उपयुक्त होइत।

हाल में प्रकाशित 'कोइल' के कथा विशेषांक देखत जो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भोजपुरी कहानियन् के अद्यतन स्थिति के पता लगावल जाय त निराशा हाथ लागी। हिन्दी में लगातार कहानी के सामयिकता, शाश्वतता, सामाजिक सरोकार आ शिल्प पर बहस हो रहल बा बाकी भोजपुरी कहानियाँ एह सबसे कटल अउंघात बिया। जगरम के लक्षण ओकरा में खाली अंगइठी-जम्हाई नियन कुछ बासी लिख देला से बुझाता बस।

हमनी पूछतानीं—आतंकवाद पर केतना तगड़ा कहानी हमनी दे पवलींह ? साम्प्रदायिकता का हमनी के कहानी के विषय ना बन सकें ? भोपाल के गैस-काण्ड हमनी के काहे प्रभावित ना कर सकल ? आज के राजनीति में जे विसंगति लउकता ऊ हमनी के भेजा में काहे नइखे घुसत ? समस्यन से जकड़ल जा रहल देश का हमनी खातिर तमाशा बा ? ना, त हमनी तटस्थ मूक दर्शक, यथास्थितिवादी भा अधोगामी प्रवृत्ति के काहे हौखत जा तानीं ? आलोच्य विषय भोजपुरी कहानियन के एह सबके हिसाब देवेला होखी, ना त हिन्दी के तुलना में तेजी से बिछड़ापन ओकर नियति बनी, जवना राहे ऊ स्पस्ट दे ख़ल जा रहल बा।

आखिर में कुछ बात एकरा भाषा आ शिल्प पर। भोजपुरी भाषा आ कला हमरा जानते आदान-प्रदान के माध्यम खातिर त बेजोड़ बा बाकी ओकर लिखित रुप सर्व साधारण खातिर हिन्दी के तुलना में ओतना ग्राह्य नइखे। जे भोजपुरी में लिखत-पढ़त नइखे ओकरा के कवनो भोजपुरी किताब दे द देखीं ऊ हिन्दी नियन प्रवाहपूर्ण ढंग से ना पढ़ पाई। एही रोशनी में जो हिन्दी नियन भोजपुरीयो कहानी लिखाये लागे ते सवाल उठता कि जवन चीज बेहतर रुप में समान लिपि के भाषा हिन्दी में मिल जाता ओके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी में रुक-रुक के पढ़े के जहमत केहू गवारा काहे करी ? काहे कि माने के पड़ी कि भोजपुरी-हिन्दी में अलगाव भाषा का दिसाई ओकर संस्कार लेके बा, साहित्य के दिसाई ओकर लोक साहित्य लेके। एही से हम कहे चाहब कि कभी बिस्तार से एहू बिन्दू पर विचार होय के चाहीं कि भोजपुरी कहानी का हिन्दी के शिल्प के नकल में लिखाव या ई अपना भाषा के संस्कार देखत कवनो खास शिल्प अपनावे आ ओके विकसित करे के कोसिस करो ? बात त वाद-विवादे से साफ होई, तत्काल हमरा समुझ से ई शिल्प लोक-कथा के नजदीक से कहूँ से शुरू करे के पड़ी। हिन्दी में त नाटक आ कहानी में लोक शिल्प के प्रयोग लेके तरह-तरह के प्रयोग हो रहल बा आ पावल जाता कि आमलोग के बीच अइसन रचना के सम्प्रेषणीयता में चमत्कारपूर्ण प्रभाव पैदा हो जाता। जो अइसन बा त कस्तूरी के मृग लेखा भोजपुरी अपना ढाँचा (फार्म) खातिर एने-ओने काहे भटकता ? ओकरा अपने नाभी का ओर ध्यान देवे के चाहीं।

जेड. ए. इस्लामिया कॉलेज, सीवान–८४१ २२६

—०—

"निहोरा"

'कोइल' का ओर से भोजपूरी के नामी-गिरामी, दामी आ कम-दामी लेखक लोगन से निहोरा बा कि आपन रचना (नव-गीत, आधुनिक कविता, निबंध, नाटक, कहानी समेत उपन्यास तक) छापे खातिर भेजीं। 'कोइल' अपना बल-बुता के मांफिक ई रचनन के एकहगो लेखक के नाम पर फलना-फलना-बिशेषांक का रुप में छपे के उम्मीद करी। जे आगे चलके एकहगो किताब के रुप में प्रकाशित होइ आ भोजपुरी साहित्य के बढ़ोतरी में सहायक बनी। सामग्री (रचना) दू-तीन फांमा (डिमाइ) के लायक होखें के चाहीं।

आगे एहपर बिचार आ फइल से जानकारी खातिर नीचे के पता पर सम्पर्क करीं। संकोच बिना···खुले दिल से ! शुभम् अस्तु।

ता. १९.११.९१

—राउरे डा. धीरज कुमार भट्टाचार्य
प्रबंध सम्पादक 'कोइल'

अलमस्त नगर, साहेबगंज पो. करनौल जिला मुजफ्फरपुर–८४३१२५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

गजल

प्रो. जौहर सफ़ियावादी

मुस्कान का मोती से मुखड़ा जे सजावेला।
छाती के दरद उहे छाती में छुपावेला॥
पनिघट-पनिघट पुरुवा पंछी पंछी पागल,
पापी रे पपिहरा जब पिहूकार सुनावेला॥

ए माटी का पनका में अमरीत के असर देखीं।
निके निर्जल अपने अनका के जुड़ावेला॥
मिल जाये खुशी कवनो ओकरा के जोगा राखीं,
कुछ लोग बा अइसन जे खुशिअन के चोरावेला॥

जिनगी का अन्हरिया में बड़ी दुर किरण झाँके,
असरा के धरोहर ई हमरा के जिआवेला॥
हम अपना नादानी में खुलल बा समझ लेनी,
ओकरो के जे ऊपर से बस हाथ मिलावेला॥

दुख-दरद के ई बखरा 'जौहर' का मिलल बाटे,
समुझे ला दरद अनकर आपन ई सुनावेला॥

२

साखी गतर गतर बा कटल तेज धार के,
कब ले जियब हे राम हम जिनगी उधार के॥
चेहरा पढ़ब की मन पढ़ब बोलीं सोच के,
केतना घुटन बा देखली नियरे निहार के॥

हर सांस के लिवास रंगल बा फरेब से,
अपना के अपने देखीं मुखौटा उतार के॥
आंकी कसक के टीस के तड़पन के आंक ली,
रउअे चुका दीं मोल जे होखेला प्यार के॥

रउआ ए कुरसी छाप विचारन का गाँव में,

कोइल/अक्टूबर-नवम्बर/९१ पीठ-१०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ लोग जी रहल बा मन मार मार के ॥
फनकार ऊ जे लेस दे लहास लोर से,
रुख मोड़ दे कलम से जे अपना कटार के ॥
कबले छुपा सकी ऊ समुझल निगाह से,
साजें जे माँग माँग के सेनूर उधार के ॥
रउआ तऽ चासवास टीपन के चलाइ ले,
मेहनत से हम मिटाई लें लिखल लिलार के ॥
'जौहर जी' ई गरीबी आ राउर कहीं सुमार,
सभ छोड़ के उमेद चलीं जीत हार के ॥

अध्यक्ष उर्दू विभाग
मशरक महाविद्यालय, मशरक (सारण)

गीत

डॉ. राम सेवक विकल

गोड़ में फफोला बा, रिसेला बेवाई,
नेता जी बोलेलन, आगे चल भाई ॥
अपने उड़ेलन कबे कार दउरावे,
लपो-चपो बातिन से सभके फुसलावे।
हमनी के खाड़ा-टुकी उनके मलाई,
नेता जी बोलेलन आगे चल भाई ॥
छोट बड़ सभ एके सँगे रहल चाहे,
बाकिर ऊ सभके लड़ावे के चाहे।
झगरे में बूझेलन आपन भलाई,
नेता जी बोलेलन आगे चल भाई ॥
हमनी के धरम करम सब कुछ डुबवले,
गदी के लोभे ऊ सबके अलगवले।
कबहूँ ना राम नाम उनके सुहाई,
नेता जी बोलेलन आगे चल भाई ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

ऊ दिन

लेखक—महेन्द्र गोस्वामी

"भगीह लोग ही। भगीह लोग हो। शिकारी आ गइलने स। भगीह भगीह भगीह लोग हो।' ई दू—अढ़ाई बजे बिरत रात के मिठु कुम्हार के आवाज, कोड़ाड़ ना, पूरब—पछिम, उतर दखिन, गाँव बाधार, बाग-बगइचा. बिजुली नियन सगरो फएल गइल। जेही सुनलस हजारों बिच्छी के डंक एके बेर मार देलस। लहर-जलन, दरद बेचैनी एके पर एक अतिना बढ़ गइल कि सभे के ठकमुरकी मार देलस। संज्ञाहीन कर देलस।

आज पूरनमासी के दिन आकाश साफ हो गइल रहे। अठवरन से बरखे-बरखे सभंकर मन कउआ गइल रहे। सूरुज-चान आ तरंगन के देखे खातिर लइका बूढ़ जवान सभे छटपटाइल रहे। दिन भर हर-हर, पट-पट, झर-झर पता ना बदरियन के अंचरा में कतिना पानी भरल रहे कि तनिको दमे ना लेत रहीं स। दिन भर बरखा, रात भर गरम। जतिने गरमी ओतिने डँस, ओतिने मच्छड़। रात भर बेना हाँकत हाथ दुखा जाय, छन भर छोड़ दिहला पर देह नोचा जाय। बाहर भितर सगरो एक समान। मर गइला ठीक बाकिर ई दुःख सहे आ बरदास्त के बाहर हो गइल रहे। मछरन के वार गोरा दुश्मनन से बहुते करूआ रहे जवन पलखत पावते टूड़ गड़ा के खून चूसकर जात रहन स। बइठला के तनिको पते ना चले, जब आपन काम बनालस तब बुझाए आ हाथ जाए के पहिले उड़ के कान भिरी भुनभुनाए लागस। आदमी जनावर सबके सोध के धइले रहन स।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चार बजे भोर से पुरवइया जे लहसल, सुरिआइल नाधआइल बिया त अबहीं तक दम नइखे धइले। एक सुरे हहास बान्ह के परल बिया। सोन के फोंफकारल, रह रह के डकरल, हहास बान्हल साफ़ साफ सुना रहल बा। जइसे कवनो हारल आदमी शक्ति विटोर के महावीर जी के जय मनावत आपन दुश्मन के सीमा में जा के बेर-बेर ताल ठोकत होखे, लड़ाई खातिर ललकारत होखे। दूती बन के पुरवइया गांव घर, खेत-बधार, वन वगइचा सभके जगावत, उठावत चलउआ चलावत फिरत होखे।

पनरहियन से रोज-रोज, जबे-तबे, केनहुँ ना केनहुँ हल्ला सुनाइए जात रहे—हे ह अइलन स, होह गइलन स। हेह आ होह शब्द गोरन के बदला में कहले जात रहे जवना के सुनते बच्चा-बच्चा के कान खड़ा हो जात रहे। गोरा शब्द अपने आप में काल भा भिरतु के दोसर नाम रहे जवन आम जनता के हिला के रख देत रहे, पानी पानी करके धर देत रहे। जिन्दा रहते मुआ देत रहे। अइलन स गइलन स शब्द देश के सपूतन बालक बूढ़ आ जवानन में बदला के अइसन भधकत अगिनी पैदा कर देत रहे जेकरा चलते कफन आ मुँखबाती, कबुरगाह आ मुरदघटिया के परवाह कइले बिना जे रहें ओहिजे से गोरेआ, बरहम, महावीर जी, देवी जी, शिव जी के गोहरइलही बिना ललकार के दउड़ पड़त रहे चरखाहन के स्वाहा करे खातिर। ओकनी के झुठा शान तुरे खातिर। कोइलवर के अब्दुल वारी साहेब एह इलाका के ओइसन लोगिन के जगा चुकल रहीं जेकरा भितरे अपना आ देश के प्रति सही अभिमान रहे। मातृ भूमि आ मतारी के रछेया करे खातिर सन्तान के का फर्ज होला, कुछ लोग समझ गइल रहे, जेकरा चलते पढ़ाई-लिखाई, नोकरा-नोकरी, काम धंधा सब छोड़-छाड़ के स्वतंत्रता के लड़ाई में कूद पड़ल रहे। बहुत कुर्वानी आ वलि चढ़ गइला का बाद ई जवन लहर आइल रहे ऊ सरवे पाटा-पार्टी के मिला के एक कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिहले रहे। लइका युवान आ बूढ़ सभका रोम-रोम से बस एके गो आवाज निकलत रहे—'अंग्रेजों भारत छोड़ो।' आजादी आ स्वतंत्रता खातिर सभका हिरिदा फूलचुभी चिरई के हो गइल रहे जवन सोनो के पिंजड़ा में रहल छनो भर सहस ना। ठोर से जाल तुड़ते-तुड़ते परान गंवा देवे ली।

गंगा पार करके आजादी के एगो दिवाना, कलकत्ता हाई कोट के वकालत पर लात मार के, छपरा से सीधे कुतुफपुर धाँगत बबुरा दीपनारायन सिंह का घरे डेग डाल चुकल रहन कुतुकपुर के दियरा इलाका के झोंपड़ी-झोंपड़ी में साँझ होते-होत कइएक गाँवन में एह बात के खबर, सरकारी बेतार के तारो से जल्दि मुँहों-मुँहें काने-कान देखते-देखत फएल गइल। सभकरा भिरीं एके बात के चरचा चले लागल—हमनी के सब केहु मिल-जुल के एह आजादी के लड़ाई लड़े के बा। जगह-जगह मिटिंग बइठ गइल। 'करऽ भा मरऽ' बच्चा बच्चा के जबान पर भूत नियन सवार हो गइल। बबुरा केन्द्र बनावल ना गइल बलुक अपरुपीए बन गइल। एक जगह समत लहकवला से जइसे गाँव जवार सगरो ईंजोर हो जाला, आस पास के गाँव देखी-देखी करके अपनो इहाँ के सम्मत में आग धरा देला, लड़िकन लुकवारी लेले के, खेत बधार, झुर-झूँठी देने भाँजे-जरावे लहकावे लागेलन स, ठीक ओसहिए भइल। गंगा के दखिन से लेले संदेश सोन के किनार धइले-धइले कैमूर पहाड़ी तक फिरु उतर पछिम होते करमनासा के किनार पकड़ले बक्सर से कुछ पछिम गंगा नदी तक लहके लागल। कोइलवर, चाँदी, अखगाँव, संदेश, सहार आदि जगहे-जगह सेन्टर बन गइल।

कोइल/अक्टूबर–नवम्बर/९१–पीठ १४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव दू भाग में बंटे लागल। पहिला भाग में आम आ अशिक्षित कुत्ता सियार पशु-पंछी अस 'खाई-पीहीं आनन्द करी' जिनिगी बितावे वाला गाँव के अधिकांश कुछ पढ़ुआ आ अधिकतर अनपढ़ुआ लोग रहन आ दोसरा तरफ ऊँच आ मध्यम वर्ग के धनी-मनी, गरीब भिखारी पढ़ल-वे पढ़ल बाकिर समझदार लोग। पहिलका वर्ग के कहनाम रहे कि राजा कोई होखो ओह से हमनी के कवनो मतलब-उतलब नइखे। मतलब एक गो बा कि सुख-सुविधा, अमन चैन के जिनिगी जिये में केहु कवनो तरह के बाधक मत बनो, रुकावत मत डालो। अगर डालित तब हमनी के खिलाफतो कइल शोभीत। हमनी के एह सब से कवनो मतलब नइखे कि राज हिन्दुस्तानीए चलाई, दोसर ना। दोसर अगर चलाइए रहल बा त ओह से हमनीं के का बिगड़त बा। कतिना बढ़िया त शासन चला रहल बा। आज बाघ आ बकरी दूनो के एके घाट पर पानी पीआवत बा। हिन्दुस्तान भर में चीजन के दाम एक बा। ना चोरी ना रहजनी। ना लुट-ना मार। एक रोपेया के बाज़ार कर लिहला पर बैल गाड़ी पर लदवा के घरे ले आवे के परत बा अतिना सस्ती बा। ना ना ई अंग्रेजी सरकार हमनी के कुछ बिगाड़त नइखे। मार पीट में तनी सा जे खून गिर जात बा त उनुका के कड़ुआ सजाय दे देत बा। बेचारा अंग्रेज हमनी के कुछ बिगारत नइख स। हमनी खातिर इहे ठीक बाड़न स।

गाँव के कुछ पढ़ल-लिखल लवढां लोग का जाने कउची दो स्वतंत्र होखे खातिर ई आग लहका के सरबे काम धंधा छोड़वा के, रेल तार कबार कें, भागा भुगी लगवइले फिरत बाड़न लोग। राज ह। अरे केहु चलइबे नु करी। चलाये देवे लायक बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरकारो कम नइखे नु ! ओकरा चाहत रहे कि खिला-फतै करेवाला लोग के धरीं-पकड़ीं । सँउसे गाँव का कइले बा । जब का जवरे बेचारा धुनवनो के पीसाए के पर जात बा । ना खाए के ठीक ना पेन्हे के । कब आके भूँज दिहन स । ओकनी के मोह दया तनिको ना होखे । एही से त भगवान भर देहे चरख फोरवा देले बाड़न । ओकनीए के सरकार बिआ । जान मारके, भींक के दिने दुपहर चल जात बाड़न स । जेकरा के चहियन स उड़ा दिहन स । केहु पुछवइया ना मिली । ओकनी पर कवनो तरह के मर मोकदमा ना चल सके । भरखर छुट मिलल हइन स के ।

दोसरका गुट ऊ रहे जे आपन धन-दौलत, घर दुआर, खाइल-पीअल, पहिरल ओढ़ल, कुल-परिवार, हित-नाता, परब-तेवहार, मुअला से जियला तक के सरवे संस्कार जेकरा बिना एक छन केहु जिन्दा ना रह सके सब पर लात मार के, सब कुछ भुला के एगो अइसन आदमी बन गइल रहे जवन परतंत्र, दोसरा के मातहत में रहके एक गिलास पानीओ पी के जिअल ना चाहत रहे । मतारी बाप कुल परिवार, मतलब देश प्रेम में बाधा पहुँचावे वाला, ओइसन सरवे लोग के तेयाग के, खेते-खेत, बने-बधारी, गाँवे-गाँव, काँटि-कुसे, पानीए-पत्थरे, चौबीसो घंटा धावल फिरत रहे, खाली स्वतंत्र होखे खातिर, आजाद होखे खातिर । आजादी के खिलल चनरमा, साफ-साफ सरग में उगल, ओकर चकोर मन के लउकत रहे, जवना के एह धरती पर उतार लावे खातिर, अपना अस अनेकन लारवन कड़ोडन लोगिन के गोलबंद कर-करवा के आकास के गोदो से छिन के ले आवे खातिर हर दम बेचैनी में घुमल फिरत रहे । संसार के सरवे दुख भेले पर तेयार रहत रहे खाली ओह चनरमा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खातिर-स्वतंत्रता खातिर। चाँद के चाँदनी में स्वतंत्र विचरन करे, आनन्द उठावे के प्रत्येक प्रानी के जन्म सिद्ध अधिकार होला—जवना के सात समुन्दर टपुपार से आइल बिना पानी वाला विदेशी बादल छापके, घर के, छेकले बाड़न स ओकरा के जान-परान, देइयो के एह धरती पर लइले बिनु हमनी ना मानब जा। गुलामी में रहेवाला देशी लोग ई जान जाव कि स्वतंत्रता कवना चिरई के नाम ह। आजादी का कहाला।

भाई चन्द्रमनी सिंह, बिन्देश्वरी सिंह एह इलाका के अगुआ बने खातिर अपने-आप मैदान में आ गइलीं। आजादो के दीवानन के हिरिदा अपने आप सँकार लेलस। गाँव-गाँव में सिटिंग होखे लागल। बुलहटा आवे लागल। सुतल लोग अपने आप जागे लागल। झाल ढ़ोलक रंग अबीर सब में "बाबू कुँअर सिंह के लाठी, दनादन तरवार। बाबू कुँअर सिंह, तेगवा बहादुर' आदि गीत गवाये लागल। जइसे खरिहान के सुखल डाँठ में केहु दियासलाई के एगो काठी बार के धरा देले होखे, सरबे लोग भितर बाहर सगरो से लहके लागल। 'इनकलाब जिन्दाबाद' "अग्रेजों भारत छोड़ो।' "करो या मरो' के नारा से समूचा शाहाबाद समूचा देश से अगते जाग के एकाएक हूँफल, हूंकारी देलस, ललकार के पीठिआवे दउग पड़ल। अब का रहे। पटना से दिल्ली तक के सरकार छटपटाए लागल। बोअखरे लेसाइल शहर से गाँव गवईं तक धावे लागल। बिहार पुलिस के मान के, जब ना रह गइल, इन्डियन सिपाही पर से विश्वास उठ गइल तब आपन राज कायम रखे खातिर अंग्रेजी सरकार आपन जाति-भाई अंग्रेज सिपाहियन के तैनात कर के भेज देलस, उग्रवादियन जन्म देवेवाला गाँव आ शहरन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

क गोली बंदुक, तोप से उड़ा देवे खातिर, मटियामेट करे खातिर, खाक में मिला देवे खातिर।

मिठु कुम्हार के जिमें रतजगा करके अंग्रेजन से बचावे खातिर गाँव के लोग बाग डिउटी दे दिहले रहन। पता ना कब आ कैने से आके अंग्रेज सिपाही गाँव घेर लिहन स। गाँव के चारों तरफ कोड़ाड़ में भर भर पोरसा मकई आइल रहन स। दोहरी तेहरी हाथ-हाथ भर के बाल कइले रहन स। पछिम तरफ ओने मंदिर पर दू-चार गो लोग हरदमे भरले रहत रहन। फिर कोड़ाड़ का बादे से धनखेती शुरु हो जात रहे। उतर तरफ छवर आ नरही के बाधार। ओने सब लोग रात भर अपने जागल रहेलन। दिने राते लीलो, लीलो। धा हो धा हो। धा धा धा हो कउआ के हल्ला मचले रहत बाड़न हँ, गुदी के बाग से कुछ डर बा। बहुत सम्भव बा कि जमीरा-चाँनी रोड से आके गाँव से पछिमाउते गाड़ी घोड़ा खाड़ करके आहरा-उगर मुँहें गुदी के बगइचा में पहुच के सुतली रात के समूचा गाँव घेर ल स। एह से पछिम भर के लोगिन के पूरा-पूरा समुझा दिआइल रहे, चेता दिआइल रहे। एगो के त बात रहे ना, ईहाँ सबकें जान पर बनी बरत रहे। सभे चेतले रहत रहे। दखिन आ पूरब तरफ से भय साफे रहे। सड़क तकले गाँव पसरले रहे। दिने रात आदमी डिउटी पर लागले रहत रहन।

आधा रात से बेर गिर गइल रहे। पूरबइया एको मच्छड़ के रहे देले ना रहे। कतिनो सचेत रहला का बादो निन कहे कि आज छोड़ कोलहे अइबो ना करब। बाहर से आइल कुछ साथी लोग देश दुनिया के बारे में बतिआ उतिआ के गाँव से बहरी चाँदी कुलहरिया स्टेशन रोड पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बनल दालान जवन चाँदी स्कूल से सटले पछिम रहे अउँघा गइल रहन लोग। कुलहरिया के भगदान शरण पाण्डेय आ दखिन से आइल साथी राम विलास चौधरी जी दूनो आदमी अतिना थाक चुकल रहीं कि लाख इयाद रहला का बादो सुतीए गइलीं। गाँव के कुछ मेहरारु जवन बरावर छनकल आ डेराइल रहँत रही लोग, जागले रही। सँर सँवाग सुत पर गइल बाड़न ओह हालत में उनुकर बचाव खातिर कुछ लोग जागल, आहट जोहत आ हरमेश कान पतले रहत रही। मरद मानुष के रछेआ खातिर घर घर में अइसन देवी लोग जागल रही। मूस भा बिलाइयो के ढुनढुनावल भा खुरखुरावल सुना जाय त दीया बार के देख लेत रही लोग।

साँझही राम विलास चौधरी जी सिखला के गइल रही कि अगर गोरा सिपाही आ जा स त मिरचाई के तेज बुकुनी ओकनी के आँखि में झोंक देवे के चाहीं। जब तक ऊ आँख मीसे लागस तब तक ओकनी के बन्दुक छिन के उठा क भाग जाए के चाहीं। मरद के जान पर आपत अाइल जान क सब मेहरारु घरे घर मिरचाई के बुकुनी बना बना के तेयार हो गइह रही।

"गोरा आ गइलन स। गोरा आ गइलन स। भगीह लोग हो।" मीठु कुम्हार के आवाज से वातावरण काँप उठल। मीठु जी मचान पर खड़ा होके जोर-जोर से चिचिआत रहन। अगल बगल के नरही, चाँदी, भदवर गाँव तक के लोग बाग जाग के गाँव के सजग कर दिहेलन। नरवीर पुर गाँव के चारों तरफ से तड़-तड़ धड़-धड़ बन्दुक के फायरिंग साफ साफ बता देलस कि अब गाँव दुश्मन घेर लिहलस स। केहु बाँचे ना पाई।

कोइल/अक्टूबर–नवम्बर/९१–पीठ १९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

मीठु के आवाज कुछ गोरा सिपाही चिन्ह लेले रहन स। आवाज पर पाँच सेल के टार्च जब परल तब मीठु मचान धर खड़ा होके गाँव देने हाथ उठइले, मुँह कइले रहन। सिपाहियन के आपन दुश्मन के पहचाने में देर ना लागल। आवते, कोध्र में पागल छव साढ़े छव फिट के लमहर नव जवान सिपाहीं मीठु के बाह धर के झटके पर नीचे खींचलस। मीठु हबकुरीए जमीन पर कटला ऊख नियन बिना आह अलम के गिर पड़लन। धाँय धाँय घोड़ा के नाल वाला बूट जूता के ऐंड़ी उनुका देह पर गिरे लागल। आह करत उठल चहलन तव तक दोसरका सिपाही बन्दूक के हूँथा से छाती पर अइसन मरलस कि ऊ आँय करके चिताने पर गइलन तब तक पहिलका आपन बन्दूक के बैनेट उनुका पेट में भिरा देलस। खून से धरती नेहा गइली।

—०—

कहानी

बिवेक

शशि भूषण सिंह 'शशि'

बिबेकी पांड़े अपना विवेक खातिर इलाका भर में परसिद्ध रहन। उनका आचार-बेवहार से के ना अवगत रहे। ऊमिर त बहुते कम रहे, लेकिन उनकर बेवहार के चलते बड़-बूढ़ सभे इज्जत करत रहे। कुछ लोग त उनकर निमन बात, बेवहार के देख के अतिना तक कह देत रहे लोग कि पांड़े जी एह युग के अदमिये ना हवन; ई सतयुग के हवन।

एक दिन के बात ह कि बिबेकी पांड़े परबचन कहे, गाँवही महबीर जी के मन्दिर प जात रहन। रहते प जगत राय के गेरुअन के नाद तड़त रहे। जगत राय अपना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भईस के नाद में सानी-पानी गीतत रहन आ उनका बगले में उनकर पोसल कुकुर पोंछ डोलावत रहे। कुकुर के रंग-रुप बड़ा लोभावन लागत रहे। ओकर पोंछ डोलावत देख के अचके में बिवेकी पांड़े के मुँह से निकस गइल कि बड़ा बढ़ियाँ शान्त सुधर कुकुर बा नू। पांड़े जी का मुँह से निकसल ई बात जगत राय के कानन में गरम तेल लेखा लागल। राय जी खोज के झगड़ा करे वाला मे से रहन- तुरते बोलन—"का कहलऽ हऽ ? देखल चाहत बाड़ऽ का ई कुकुरा के मरदई ! कहऽ त तुरते भम्होरवा के देखवा दीं।"

आ कहते के साथ कुकुर लिलकारे लगलन—"लियो, लियो ... ...।"

जगत राय के लिलकार सुन के कुकुरा पांड़े जी प लाल-लाल आँख कइले गुरनाए लागल। ऊ कुकुरा के खीस ओकर आपन खीस ना रहे, बलुक जगत राय के खीस रहे, जवन कुकुरा के आँख आ मुँह से निकलत रहे। अब काट लीही कि तब, कहल एकदम मुश्किल रहे। खीस अब बिवेक पर पैंतरा बदल-बदल के वार करत रहे। कुछ छन खातिर खीस बिवेक प भारी बुझात रहे।

अब बिवेकी पाड़े ओकर खीस के जबाब अपना बिवेक से देवे के कोशिश करे लगलन। जइसहीं कुकुरा काटे खातिर छरकल, पांड़े जी चुचकारे लगलन। पांड़े जी के चुचकार सुन के कुकुरा के खीस गदहा के कपार के सिंग अइसन गायब हो गइल आ ऊ बेचारा कुकुर परेम से पोंछ डोलावे लागल आ फिर पांड़े जी कुकुरा के पीठ प्यार से सुघरावे लगलन। अइसन बुझात रहे, जइसे ऊ कुकुर जगत राय के ना पांड़े जी के होखे।

फिर पांड़े जी महबीर जी के मदिर प पहुंच गइलन। परवचन करे लगलन। ओही बीच बिवेक से सम्बन्धित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

प्रसंग आ गइल आ उदाहरन के रुप में अभी बितल घटना कहे लागलन। जगत राय भी परबचन सुने आइल रहन। सुबहे ऊ जाके पांड़े जी के गोड़ प जा के भरल सभा के बीच झांफी मंगलन।

साचहूँ जगत राय के खीस पांड़े जी के बिवेक के सामने लाजे मुड़ी झुका लेले रहे।

—मोहकमपुर, भोजपुर

—०—

कहानी

किरदार

चौधरी कन्हैया प्र: सिंह

नाइट डियुटि से लौटत रहीं त ऊ मिल गइल रहे। एगो मोड़ पर खाढ़ रहे आ जीप देख के भागे लागल रहे हमरा शंका भइल रहे आ ओकरा के धरवा लेले रहीं।

पूछला पर कहले रहे, "मैदान होखे आइल रहीं ' खेत से आके सड़क पर चढ़त रहीं त एक-ब-एक जीप सामने आ गइल रहे आ हड़बड़ा के पाछे हट गइल रहीं। अन्हार हे। सड़क साफ लउकत ना रहे। बरसात के समय हो सकेला किक तो पानी होखे आ छिटा पड़ जाय। अउर कवनो बात ना रहे।"

ओकरा बात से हमरा पूरा पूरा संतोष ना भइल रहे आ ओकरा के थाना तक ले आइल रहीं। करीब-करीब चार बजत रहे। रात-भर के जागल पलक पहाड़ अस भारी लागत रहीन।

ओकरा के संतरी के पास बइठा के "तनी इनका पर नजर रखिह। भोरे पूछ-ताछ करब।" कहत हम अपना क्वाटर में चल गइल आ वर्दी खोल के सुत गइब रहीं।

कोइल/अक्टूबर-नवम्बर/९१ पीठ २२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोरे उठ के थाना पर गइनी तब का देखत बानी कि दारोगा जी ओकरा के हेरी बेरी पहरा के बेंत से मार-मार के बेदम कर देले बाड़े। "हं ! हं ! ई का करत बानी ? इनका के धर के हम ले आइल रहीं। हमरा से कुछ पूछबो ना कइनी आ मार-मार के एकर देह खराब कर देनी।" कहत दउड़ल गइनी आ ओकरा के छाप लेनी।

"थाना में अइनी हां त देखनी हाँ। हम त बुझनी हा कि कवनो चोर-बदमाश होई। एह में पूछे के का रहे ?" कहत दारोगाजी हमरा के डपट देले।

"नाइट डियुटि में मिलल रहना पूछ ताछ कइले रहीं। मन ना भरल रेहे। दिन में अउरे पूछे खातिर बैठा देले रहीं। हम त ढेर पुलिस आफसर के अइसे करत देखले बानी। पूछताछ से कवनो गड़बड़ ना बुझाय त छोड़ देल जाला नात आगे के कारवाई होले।"

"तब कर। के छंकले बा ?"

"अब का करीं ? मारत-मारत देह के चाम बिधुनी बान कर देनी। बेचारा के सास लेल मुश्किल भइल बा। जबाब का दी।"

पानी मंगवा के ओकरा के पी अववनी, हाथ-मुँह साफ करवनी आ रिक्सा बोलवा के भेजवा देनी।

"रउवा अजीब आदमी बानी। तनिको-आग-पाछ ना सोचीं। मर जाइत तब ?"

"तब का संतरी से रिपोर्ट लेके मुठ भेंड़ के केस बना देल जाइत।"

"अबहीं त ढेर सुझत बा बाकिर जाके केस कर दी तब बुझाई।"

"त जाना। जाके करवाइए द।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

"हम काहे के करावे जाई । कवनो हमार सार-ससुर हवन का ?"

"देख तोहरा से हम कईबार कर चुकल बानी कि इहां के प्रभारी पदाधिकारी हम हईं, हम जे चाहब से ही इहाँ पर होई। तोहरा हमार बात पसंद नइखे पड़त तब आपन इहां से बदली करा ल।"

"ओकरा बाद ढेर बात बढ़ गइल रहे। हम उहां पर जामादार रहीं आ ऊ दारोगा रहन। उनकर मिजाज तरीका अंग्रेजन क समय के रहे। हम उनका से बराबर कहब, "आवन तरीका बदलीं" आ उनका खराब लागत रहे। हम कहब, "सब काम कानून से ना होखे।" ऊ अबही नया-नया नौकरी में आइल रहन आ किताब पढ़-पढ़ के काम करत रहन।

ओह दित स्टाफ के मुंशी, सिपाही लोग के बीच-बीचांव कइला से बात खतम हो गइल रहे आ कवनो दूर्घटना होखे से बांच गइल रहे बाकिर हम बराबर सोचिला कि अइसे कब तक चली ? पन्द्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालिस के दिन देश आजाद भइल। बेयालीस साल से ज्यादा हो गइल बाकिर अंग्रेजने के बनावल आइन कानून आज तक लागू बा। का हमरा नेता लोग के नइखे बुझात कि कल्याण कारी राज्य के पुलिस के किरदार का होखे के चाहीं ?

जगन्नाथपुर, व. सिंहभूमि

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding MKS-MoE-Grant-2

ग्रंथ समीक्षा

'मुण्डदान' : राष्ट्रीय आन्दोलन के कथा

पं. गणेश चौबे

मुण्डदान–रच. डा. कमला मिश्र 'विप्र'; प्रका. भोजपुरी साहित्य मंडल, विप्र नगर, बक्सर, पृ. सं. १६८, मूल्य २० रुपये।

डा. विप्र जी हिन्दी आ भोजपुरी के मशहूर कवि आ लेखक बाड़े, जिनकर अनेक पुस्तक विद्वानन में आदर का साथ पढ़ल जाला। समीक्षा ग्रँथ इनकर एगो ऐतिहासिक उपन्यास ह।

एह ग्रंथ में देश का राष्ट्रीय आन्दोलन का कथा के बरनन बाटे लखनउ के एगो राष्ट्रीय विचार वाला सेठ के बेटा अपना तीन गो साथिन का संगे आई. सी. एस. बने का अभिलाषा से इंगलैंड जाये लागि बंबई जात बाड़ें। उहाँ जहाज मिले में देरी रहे। एह बीच ऊ महासभा के अधिवेशन देखे चल जात बाड़ें। उहाँ एगो खद्दर पहिरे वाला संत के भाषण सुन के देश का सेवा के ब्रत लेत बाड़ें। उनका साथ एगो देशी राजवाड़ा के राजकुमारो रहस। ऊ लोग साबरमती आश्रम में जाके रहे लगलें। उहाँ कुछ विद्यार्थी ओह संत से मिललें त ऊ दिहले कि तोहनी अंग्रेजी विद्यालयन के छोड़ के राष्ट्रीय विद्यालयन में पढ़े के ओह लोग के राय दिहलें। सेठ के बेटा ओकरा बाद महासभा का अनेक अधिवेशन में भाग लिहलें आ उनका नेतन से वेद के रचनाकाल प्राचीन हिन्दूराज्य, इसलाम धर्म, देश पर मुसलमानो आक्रमण आ ओह लोग के शासन अंग्रेजी राज्य के स्थापना आदि पर चर्चा में भाग लेवे के अवसर मिलल। एह सब चर्चा का सिलसिला में चम्पारन में नीलहन के अत्याचार, अंग्रेजन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

द्वारा देश के शोषण, असहयोग आन्दोलन, गोलमेज कॉन्फे-रेन्स, बेयालिस के आन्दोलन नेता जी के आजाद हिन्द फौज, स्वराज के प्राप्ति वोट का राजनीति आ पद लोलुपता पर प्रकाश डारल गइल बाटे। एह तरह से उपन्यास के संत होत बाटे।

एह उपन्यास के पात्र राष्ट्रीय आन्दोलन के कर्णधार बाड़ें जेकरा उन्नत आ त्यागमय चरित्र के चित्रण आइल बाटे। एह उपन्नास में आइल अधिकांश नेतन के कविपत नाम दिहल गइल बाटें। एह ग्रंथ का संबंध कोई आदमी इहो कह सकेला कि ई उपन्यास ना ह, ई एगो आदर्शवादी कथा-ग्रंथ ह। चाहे ई-विद्या का दृष्टि से जे लय, एह में कथा का बहाना से राष्ट्रीय आन्दोलन के विस्तृत झांकी मिलत बाटे। ई ग्रंथ पठनीय आ संग्रहणीय बाटे आ लेखक साधुवाद के अधिकारी बाड़ें।

—गणेश चौबे

गीत

उमड़-घुमड़ रह गइल बदरिया।
तनिको छलकल ना सजल गगरिया ॥१

वीर भितरिया भितरे समाइल,
गमक सकल ना साच सोन्हाइल,
लछुमन रेखा खिचले विजुरिया ॥२

धरती के धीर छुआइल पिआसे,
परती पड़ल मन, मनुहार उपासे,
नीरस भइल आशा के नगरिया ॥३

प्रीत पात के मुअल सपनवा,
भरे पनिहारिन नेह नयनवा,
'सुमन' अकुलाइल आठो पहरिया ॥४

सुरेन्द्र 'सुमन'

स्टूडियो रुपसी, चन्द्रलोक मार्केट (मुज.)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(चिट्ठी मिलल)

मान्य डॉ. साहेब,

सप्रेम वन्दे !

कुशल से रहत, अपने सभन के स्वास्थ्य आ सफल प्रकासन के शुभकामना करत रहिला। साहेबगंज में छपाई के व्यवस्था बइठइला से, एतना त भइल बा कि बिना नागा हर महीने 'कोइल' मिल रहल बा। ई बड़ा खुशी के बात बा। लगभग पाँच बरिस ले कवनो भोजपुरी-पत्रिका के जिआ के चलावल, अपने के बूता के बात बा। बिना कवनो स्वारथ के अपने केतना लेवकन, खास कर नयका पीढ़ी से भोजपुरी भासा महतारी के सेवा करवा रहल बानी--बड़न बात बा। एकरा खातिर भोजपुरी पत्रिका के इतिहास राउर नांव सोनहुला अच्छर म लिखि। हमार तन, मन, धन से सहयोग रउरा ला अर्पित बा। रउरे भोजपूरी के साँच सेवा बानी। पत्रिका के सम्पादक लोग के अब जागे के पड़ी। पहिले से भी अच्छा स्तर "कोइल" के होखे के चाहीं। पाँच बरिस के अवधि कम ना होखे। राउर संकल्प के मसाल नीक से जगावल उनके लोग के काम बा। ना त धोबा दिहल कहाई। फारूक साहेबगंजवी से पता चलल कि अपने छापा मशीन के जोगाड़ में कलकत्ता गइल बानीं। छापा मशीन के आ गइल से राउर ई ऐतिहासिक काम बड़ा सुविसता से आगे बढ़ी। आउर एगो राय बा कि प्रूफरीडिंग क काम ठीक ढंग से होखे के चाहीं। भोजपुरी स्वर बहुल भासा हऽ। मात्रा पर धेआन देला जरुरी बा। ना त कहीं अरथ के अनअरथ हो जाई। भेंट भइला प भविष्य के योजना हमनीं बनाएब स। छापा मशीन अइला पर हमनीं के हिम्मत बढ़ल बा। शुभ

राउर आपन-प्रो. सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश'

कोइल/अक्टूबर-नवम्बर/९१ पीठ-२७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant.

खड़गाझार (गणेश मंदिर के पास) पो.-लुवाबासा
वाया-इन्द्रा नगर जमशेदपुर ८३१००८

आदरणीय भाई ८-११-९१

सादर प्रणाम !

'कोइल' के सितम्बर १९९१ अंक मिलल । रउरा स्नेह के आभारी बानी । अबकी 'कोइला' के सुर गद्यात्मक बा । अमराई में कूके वाली कोइला के मुँह से कहानी ··· कल्पना से यथार्थ में उतरे के संकल्प ··· जमाना के दरद महसूस करेके प्रयास ··· ई सभ केतना उत्साह वर्द्धक बा, बेहद संतोष हो रहल बा 'कोइल' प ··· हम एकरा एह सुर क कहानी विशेषांक के संज्ञा देत बानी ।

एह अंक के तीनू कहानी भोजपुरी कहानी विकास के प्रमुख दहलीजन प सुशोभित बाड़ी सन । जगदीश आर्य जी के कहानी 'असलीयत' आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानी बिया । ई कहानी गवई परिवेश में फइलल अंध विश्वास, धोखाधड़ी आ व्यभिचार के काई प बिछिनात जिनिगी के दस्तावेज बिया, जवना के रोक थाम खातिर कहानीकार के नैतिक दृष्टिकोण सराहनीय बा । एह कहानी क भाव बोध, शिल्प आ पात्र भोजपुरी कहानी के पहिलका दहलीज पर खड़ा बाड़े । विजय कुमार तिवारी जी के कहानी 'गवई ढिबरी' भोजपुरी के 'नई कहानी' के भाव बोध आ शिल्प के समेटे में सक्षम बिया । एह कहानी के नायक रमेसर एगो अइसन तिकड़मबाज घटिया व्यक्तित्व के प्रतिनिधि बा जवन गांव के गरीब लाचार जनता के मसीहा बनल जोंक अइसन अकरे खून चिहुटत बा । कहानी पढ़ला प एगो अजीबो गरीब किसिम के कड़ुवाहट मन के भीतर पसर जात बा । एह कहानी में मात्र आरंभ, विकास आ अंत बा, जवन एकर शिल्पगत विशेषता बा ।

" कोइल/अक्टूबर-नवम्बर/९१ पीठ २८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नौकरी, बेरोजगारी के समस्या हल करेके एगो उपाय बा, पूर्ण समाधान ना। एही भाव के व्यापक परिपेक्ष में देखे के प्रयास डॉ. राजेन्द्र भारती के कहानी 'ई आगि कब बुताई' में कइल-गइल बा। कहानी के नायक बलेसर नोकरी के तलाश में दरदर भटकत जब निराश होके गांवे लवट आवत बा त ओकरा एह तथ्य के ज्ञान होत बा आ ऊ फरुहा उठा के खेत में चल देत बा। इहे दिशा बोध एह लघुकाय कहानी के भोजपुरी के आधुनिक कहानी के कोटि में राख देत बा। हलांकि विषय आ भाषा के दिशाईं ई कहानी कुछ आउर मजबूत होखे चाहत रहल हिया।

संपादकीय में राष्ट्रभाषा आ भोजपुरी के प्रति राउर सोच न्यायसंगत बा। 'धान कूट ... हो दुल्हा' के माध्यम से 'बउधायन' महाकाव्य के दुरदशा के बारे में पढ़ के मन क्षुब्ध हो गइल एकर उद्धार एगो गम्भीर समस्या बा, जवना के बारे में मिलजुल के सोचल जरुरी बा।

पत्रिका के छपाई एके साइज के अक्षर में होइत त नीक लागित। सफल सम्पादन खातिर बधाई।

राउरे—कन्हैया सिंह 'सदय'

पुनश्चः अबकी पत्रिका के पृष्ठ भाग प लिखल हमार पता अधुरा रहल हा कृपा करके पत्राचार खातिर पूरा पता लिखी ना त डाके विभाग के कृपा हो जाई

'सदय'

जय भोजपुरी ! जय भोजपुरिहा !!

कबीर जयन्ति का अवसर पर—स्थापित १९९१

कबीर भोजपुरी पुस्तकालय प्रेस का ओर से निहोरा भोजपुरी लिखनिहार सभन सम्पर्क करीं भोजपुरी के खाँटी साहित्यिक रचना छपवावे खातिर !

पता :—कबीर भोजपुरी पुस्तकालय प्रेस, साहेबगंज (मुज.)

नोट—ई प्रेस 'नो लौस, नो प्रोफीट' के आंधार पर भोजपुरी सेवा खातिर समर्पित बा !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुक्तक

आनंद संधिदूत

सांझ दीपक जरा लिहल करिह
तनिकी रतिया हटा लिहल करिह

जा न जागत बने अकेले में
कौनो सपना जगा लिहल करिह।

रात आई कब गुजर जाई
झूम आई हवा डहर जाई

जिन्दगी भी इहा नशा होले
कब आई कबे उतर जाई।

नैन रोकल बड़ा शरमल बाटे
आरु आपन बड़ा अरझल बाटे

काश, पिघले कि हम चलां कुछ
गोड़ जइसे बड़ा थथमल बाटे।

—०—

सम्पादन आ सहयोग अवैतनिक :
श्री दिनेश्वर मिश्र द्वारा कबीर भोजपुरी पुस्तकालय प्रेस से मुद्रित

प्रकाशक :
श्री दिनेश्वर मिश्र 'दिनेश'

मुद्रक :
कबीर भोजपुरी पुस्तकालय प्रेस, साहेबगंज (गुज.)

सेवा में,
श्री/श्रीमती विमलानन्द सरस्वती
राजगुरुमठ ... 13-3/175
पिन शिवाला घाट

बुक-पोस्ट

प्रेषक :
सम्पादक "कोइल"
अलमस्त नगर, गोटीघर (साहेबगंज)
करनौल, मुजफ्फरपुर (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काइल

भोजपुरी के चेतनगर प्रतिका

साल [illegible] । पांचवा । अंक—जनवरी–९२ । दाम—दू रुपया ।

प्रबन्ध-सम्पादक—डा० धीरज कुमार भट्टाचार्य ।
सम्पादक-डा. ब्रजभूषण मिश्र । संयुक्त-सम्पादक-कुमार विरल ।
सहायक-सम्पादक-दिनेश्वर मिश्र 'दिनेश', अखिलेश्वर मिश्र 'अखिलेश' ।

Rajguru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant.

चिट्ठी मिलल

देवरिया (उ० प्र०) २७४६०१

आदरनीय श्री ब्रजभूषण जी,

नमस्कार

कोइल अक्तूबर-नवम्बर ९१ अंक सजधज के मीलल। एकर प्रगति आ रूप विन्यास देखि के मन आह्लादित हो ऊठल। कोइल के ई आकार-प्रकार बहुत बढ़िया बा। कवर पेज दू रंग भइला से अउर आकर्षक लागत बा। कवर पेज के चित्र समुझ में ना आइल। एह मे ढेर कौशल के प्रदर्शन बा। कवनो ना कवनो जोरदार आइडिया एह में जरूर बा। आधुनिक कूची के कमाल सराहनीय बा। राउर सम्पादकीय पढ़िके ई बुझाइल कि लखनऊ भोजपुरी लोक कवनो अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद् नांव से भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पटना के समानान्तर नया संस्था कायम हो रहल बा। भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अखिल भारतीय स्वरूप पर केहू कुछू करे। कवनो विपरीत प्रभाव ना डारि सकेला। सम्मेलन के अस्तित्व ऐतिहासिक हो गइल बा। एकरा कवे बहुत काम करे के बा। ई विशुद्ध साहित्यिक संस्था ह ! लखनऊ वाली संस्था हमरा बुझात बा बहु उद्देश्यीय हँ। ई राजनैतिक सामाजिक और कुछ आन्दोलनकारी बुझात बा। ई अखिल भारतीय होखो भा क्षेत्रीय एसे भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से कवनो तुलना नइखे ना कवनो विरोध बा। ई अपने रस्ते ऊ अपने रस्ते। मन करे त अपने में मिल जुल के भोजपुरी के सर्वांगीण विकास के कार्यक्रम अउर बेजवनावें सँ अखिल भारतीय नांव त देश के बाजार में सिधरी-मछरी नीयर धड़ा गइल बाड़ी सँ। रउरा अपने सम्पादकीय में झूठ-मूठ में अकुलाइल बानी। कोइल के खूब खियाई-पियाई कि ऊ जोर-जोर से अमराई में करके आ मन के मस्त बनावे।

राउर

मोती, बी० ए०

कोइल/जनवरी/९२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादकीय

भोजपुरी प्रबंध काव्य में विषय के विविधता

भोजपुरी में कविता के धारा बहुत पुरान भइला के बाव-जूद एकरा में प्रबंध-काव्य लेखन के शुरुआत एकदम आधुनिक कहल जाई। भोजपुरी के पहिला प्रबंध-काव्य-'बलिदानी बलिया' (प्रसिद्ध नरायण सिंह) १९५४ ई. सन में प्रकाशित भइल। तब से आज तक ले कई दर्जन प्रबध-काव्य (महाकाव्य आ खण्डकाव्य) प्रकाश में आ चुकल बाटे।

एह प्रबंध-काव्यन से ई त सावित होइये रहल बा कि भोजपुरी में प्रबंध-काव्य-महाकाव्य आ खण्ड काव्य लेखन के क्षमता बा, सबसे बड़हन बात भोजपुरी प्रबंधकाव्य कारण के नया-नया विषयन पर लिखला के बा। इहो बात नइखे कि भोजपुरी में प्रबंध काव्य परम्परा से कट गइल बा। भोजपुरी में पौरानिक प्रबंधकाव्य-राम कथा विषयक आ कृष्ण कथा विषयक प्रबंधकाव्यन के प्रचुरता बा। बाकिर, राहू में भोजपुरी कवि नया कुछ जोड़े के कोशिश कइले बा।

भोजपुरी के प्रबंध काव्यकार भारत के स्वतन्त्रता आंदोलन आ ओकरा योद्धा लोग से प्रभावित देखाई पड़ रहल बा। काहे से कि भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन के प्रथम योद्धा बाबू कुँवर सिंह अउर सन ४२ के भारत छोड़ो आंदोलन के पृष्ठभूमि पर ५-गो प्रबंध-काव्य लिखाइल बाटे। अपना राष्ट्र के आजादी बनवले राखे आ एकरा तरफ समाज के प्रेरित करे में एह प्रबंध काव्यन के महत्व बढ़ जात बा। नारायण, बउधायन आ के त भोजपुरी प्रबंध काव्यन में आपन विशेष महत्व राखत बा! बउधायन भगवान बुद्ध के जन्म, सन्यास, बोधिसत्व, धर्म-प्रचार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust Funding IKS-MoE-Grant

आदि के लिखायेवाला दुनिया के अखघोष के बुद्ध चरित, के बाद दुसरका महाकाव्य बा !

'के' दार्शनिक दृष्टिकोण के सोझा राख के एह सृष्टि के क्रिया-कलाप क समुझे-समुझावे के नया रास्ता खोजे के कोशिश कइले बा। अगर ई कहल जाय कि 'के' 'कामायनी' (जय शंकर प्रसाद, हिन्दी) के टक्कर के चीज बा त बड़ बोलापन ना समुझे के चाही। 'के के कवि एह सृष्टि के उद्भव, विलास आ अवसान के कथा सोझा रखले बा। बाकिर, कामायनी के अइसन ऊ पात्रम में स्थूलता नइखे आवे देले बल्कि एह सृष्टि के संचालित करेवाला शक्ति के जिज्ञासु दृष्टि से देख रहल बा– के सुतल, के जगावल।

'रूक जा बदरा' अइसन खण्डकाव्य बा जे में कवनो चरित विशेष के ना एगो पूरा परिवेश के उभारे के कोशिश एक लोक कथा के माध्यम से कइल गइल बा। दलित-शोषित समाज के विवशता के करूणा के साथ कवि रखले बा। :कुणाल' युवा वर्ग में चारित्रिक उत्कर्ष पैदा करेवाला विषय के उठवले बाटे।

'श्री राम कथा' में कवि परम्परागत रामकथा के माध्यम बनवला के बावजूद अन्तर्जातीय विवाह के चर्चा कइले बाटे। 'सेवकायन में हनुमान के चरित के माध्यम से भोजपुरियन के स्वामी भक्ति के स्वभाव के रेखांकित करे के कोशिश बा, 'श्याम-शतक' दूत काव्य के उदाहरण बा, जवन प्रवासी भोजपुरियन के आ गाँव पर रहेवाला ओकरा स्वजन-परिजन के व्यथा-गाथा प्रस्तुत करत बाटे।

एह तरह से भोजपूरी प्रबंध-काव्य में विषय के विविधता आंदेशकाल के प्रभाव त स्पष्ट रूप से लउकत बा, कवि गण अपना परिवेश आ परिस्थिति से भी प्रभावित देखाई पड़त बाड़न।

भोजपुरी प्रबंध काव्यन के महत्व के समझल जरूरी बा। ओकर नजर अछूता विषयनो पर गइल बा। ह परम्परा के निर्वाह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के साथ-साथ सामयिक परिवर्तन के अपना में समेटले बाटे। ई भारतीय साहित्य के श्री वृद्धि में आपन महत्वपूर्ण योगदान देले बाटे ! अस्तु !

—ब्र० भू० मि०

नया साल के बधाई

'कोइल' परिवार के तरफ से भोजपुरी के कवि-लेखक, नेही-छोही आ पाठक वर्ग के तरफ नया वर्ष के आगमन पर हिरदया के साथ शुभकामना। नया वर्ष सभके बाढ़ बढ़न्ती करे आ खुशहाली से भर देवे।

—ब्रज भूषण मिश्र

भोजपुरी लोकगीतन में चित्रकला

—गणेश चौबे

प्राचीन भारतीय साहित्य में त चित्रकला के सुन्दर आ मनभावन बरनन मिलबे करेला, लोक साहित्यो में अइसन बरनन के अभाव नइखे। भोजपुरी लोकगीतन में घर का देवाल के तरह-तरह का चित्रन से सोभ-नउक बनावे के चरचा आइल बाटे। लेकिन अइसन चरचा खाली बिआहे का गीत में आइल बाटे। अइसन चित्रन के बनावे लागि उरेहल भा लिखल शब्द के बेवहार होखेला। एह तरह के चित्र घर का भीतर भा बाहर का देवाल पर कोहबर में बनावल जाला। बिआह का एगो गीत में देवाल पर बनावल चित्र के एह रूप में चरचा बाठे—

पानन मोरे बाबा मँड़वा छवावेले,
फुलवा के बान्ह बन्हाई।
नाहि भीतरि बाबा पुतरी उरेहेले,
चारू चिरइआ जोड़ी हंस॥
काहे के मोरे बाबा पुतरी उरेहेले,
चारू चिरइया जोडी हंस।
काहे के बाबा सजन सब नेवतिले,
काहे जोगे खोजिले दामाद॥
भीति जोगे बेटी हो पुतरी उरेहिले,
चारू चिरइया जोड़ी हँस।
अपने संपति लागि सजन सब नेवतिले,
तुह जोगे खोजिले दाहाद॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

एहगीत में कन्या का पिता के देवाल पर उरेहल पुतरी, चार गो चिरइ आ हंस का जोड़ी के चरचा आइल बाटे। एह गीत का अलावे आउरे-आन गीतन में भीत पर तसवीर बनवला केवात मिलेला। जइसे—

राजा जनक द्वारे हाथी उरेहल,
चनन रचेला लिलार।
भीतर चित्र उरेहल समधी,
मोहेला जग संसार॥

अइसही एगो दोसर गीत में आइल बाटे—

आधा भीति लिखलू एजासो आलर निखा।
आधा भीति पाकल पान।
कोहबर लिखब चान रे सुरूजवा,
मँड़वा लिखब गोपीचन्द॥

एह से ई बात साफ नजर आवत बाटे कि राजा जनक का दुआर पर हाथी के चित्र लिखल रहे जवना के लिलार चनन से सँवारल रहे - उनका देवाल पर अइसन सुन्दर चित्र बनल रहे कि जे देखे सेही मोहा जाय। अइसन दोसरा गीत का अनुसार देवाल पर तेजी से बढे वाला लतर आ पान उरेहल रहे कोहबर में चनरमा आ सुरुज के चित्र लिखल रहे आ माड़ो में कृष्ण के।

ई त भइल गीतन में आइल भीत पर लिखल चित्रन के बात। एकरा अलावे कोहबर में देवाल पर पुरइन, कमल के फूल, पालकी, घोड़ा आ तरेगन के चित्र लिखल जाला। लोक मानस हाथी, घोड़ा, पालकी के धन-सम्पदा के, कृष्ण आ पुतरी के वर-कन्या के, सुरूज, चनरमा आ तरेगन के खूब बड़हन उमिर के हंस आ मोर के सुखी जीवन के आ कमल, पान, लता आदि के कलात्मक रूचि के प्रतीक मानेला।

इहाँ एगो झूमर में आइल प्रसंग के चरचा कइल जा रहल बाटे। कवनो स्त्री के पति परदेश गइल बाटे। ऊ स्त्री अपने पढ़ल-लिखल नइखी, एह से ऊ एगो कायथ से आग्रह करत बाड़ी कि ऊ उनका पति का पास एगो चिट्ठी लिख देसु। कायथ से जबाव मिलत बाटे कि उनका पास ना त कागज बाटे ना दवात। तब ऊ स्त्री कहत बाड़ी—

अँचरा में फारि-फारि कोरा रे कगदवा,
नएना कजरवा मसिहान।

(शेष पृष्ठ २७ पर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चोर मनावे होली

प्रदीप कुमार मिश्र

भष्टाचार भरल भारत में
बढ़ल जात बइमानी
सुभहित पावे अन्न सती ना
वेश्या काटे चानी

साधु जेल में लोर बहावे
चोर मनावे होली
दुष्टन के बहुते बहकल कर
धरे सती के चोली

ओने बेचत बनिया धनिया
धूर मिला के माटी
एने ग्वालिन बेचे पानी
दूध बोल के खाटी

खेतन के चकबन्दी होता
गाव लुटाता रोजे

करे लोग गदहन के आदर
खाला बैल जलेबी
अइठत देह चलेला रहिया
चलिया चले फरेबी

धास-पात के चले चलन्ती
कुकुर सियार पूछाता
सन्तन के हड्डी चबाई के
रोजे गीध गोटाता

चीनी माटी तेल दिआता
गाँव-गाँव सरकारी
डिलर बेच देता बीचे में
मुखिया पदाधिकारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant.

अपसर चुपके लत ओने
एने बाबू खोजे

गोट दहेज मंगाता बड़
बेटी के बाप चिलाता
उलटे पुत्र बधू के काटल
हाय ! इहाँ अब जाता

दशा देश के बिगड़ल जाता
लोभ अधिक बढ़िआइल
लाज शील औदार्य कहा बा
पूर्वज सभ घवड़ाइल

जागऽ हो कैलास निवासी
जागऽ औढ़र दानी
कर में लऽ तिरिशूल भगावऽ
असुर करे मनमानी

ग्राम, पोस्ट–हेतमपुर (भोजपुर)

धान रोपले रोपनिया

धान रोपेले रोपनिया
निहुरि निहुरि। टेक।

चारू ओरि खेतवा में लेडवा लागल बा,
जागल किसान के जवनिया। निहुरि।

कजरी के लहरी पर गावे गुजरिया,
बदरी से बरिसेला पनिया। निहुरि।

तन-मन धन देके अन उपजावे
हँसुवा से काटे सोना-चनिया। निहुरि।

माटी के हर फार माटी के बरधा
माटी के ह ई जिन्दगनिया। निहुरि।

राम बिहारी ओझा 'रमेश'
प्रधाना अध्यापक मध्य विद्यालय, पाथडीह (धनबाद)

कोइल/जनवरी/६२ पीठ–६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घाइल घटा घनघोर

घाइल घटा घनघोर निरमोहिया,
घाइल घटा घनघोर
धरती के सरसे सोन्हाइल करेजा
बरिसे बदरिया सजोर
फहरे बदरिया के हरियर अंचरिया
दहरेला मनवा के मोर। निर०।
नदिया में धावे छछाइल जवानी
गावे विरह पोरे-पोर
रहि-रहि के रसवा के आवे हिलोरा
भींजे चुनरिया के घोर। निर०।
चमके विजुरिया त दमके अन्हरिया में
दुलहिन के टिकुली के कोर
पुरुवा के किहिरे जुड़ाइल बेचरिया
सिहिरे सनेहिया के डोर। निर०।
पिउ-पिउ पुकारेला पागल पपिहरा
ढारेला नैना से लोर
सैंया के ढूँढ़े सँकाहल नजरिया
सपना मचावेला शोर। निर०।

राम विहारी ओझा 'रमेश'
प्रधाना अध्यापक मध्य विद्यालय, पाअडीह (धनबाद)

जल भरे चललो सवरिया

जल भरे चलली सँवरिया
गगरिया कमर धरि के। जल भरे।
कुछु सखी आगा-रागा, कुछु सखि पाछा-
सँग के करत मसखरिया। गगरिया।
माथ पर गेडुर, गेडुर पर गागरि-
टेढ़-मेढ़ जमुना डहरिया। गगरिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

गतर-गतर सिहरावे पवनवा—
लेत बाटे लहंगा लहरिया ॥ गगरिया ०
सावन सुहावन, भदउवा भयावन—
घिरि अइली करिया बदरिया ।। गगरिया०
चढ़ती जवानी में अब का देरी—
माथ पर चमकी सेनुरिया ॥ गगरिया०
हाली-हाली धरे चलऽ धइलो भकाऊँ—
बाट जोहे बाप महतरिया ॥ गगरिया०
कुछु दिन अउरी सबुर करऽ सँवरो—
दुलहा के जइबू दुअरिया ॥ गगरिया०

राम विहारी ओझा 'रमेश'
प्रधाना अध्यापक मध्य विद्यालय पाथरडीह (धनबाद)

हिन्दुस्तानी

रचना सं० १ जयकान्त सिंह 'जय'

देश ला देवे जान करे ना इचको आनाकानी
ई देहिया हिन्दुस्तानी"

नियत निरेखेला दुनिया के जोहे छन-छन मोका
बुकूने ईट के पत्थर से ना खाला कबहु धोखा,
राखे देश के पानी करि मूदई के पानी-पानी ।। ई देहिया ०
अनका पेटे लात ना मारे समुझे सभ के भाई,
सहन करे भर सहन करे मूंदई ला बने सवाई
बल दूगिना पावे आपन सून के इतिहास पुरानी ।। ई देहिया ०
अमर शहीद के इहे हऽ धरती, इहें के नेहरू गाँधी
मंगल कूअँर के जगवा जाने लइले कइसन आँधी
अरे बटोही इहवे के तऽ झाँसीवाली रानी ॥ ई देहिया ०
त्याग तपस्या इहवे अपिने होला नेह के खेती
चानक का चतुरई के आगे कवन नंद ना चेती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहां के दानी पूरा करे सपनो के दिहल बानी। ई देहिया।
सभकर ई अरमान बटोही सजल रहो फुलवारी
सिर पंगावे खातिर देखऽ लइकन के तइयारी
गोली घटल रहे गोरन के घटल कहाँ बलिदानी। ई देहिया।
हलस-हलस के बूलबूल बोले पपीहा राग जगावे
मेघ देख के मोरवा नाचे कोइलर कुक सुनावे
'जय कवि' कहे जे ईहां के चिरई गावे वेद के वानी। ई देहिया।

जान रहके का करी

रचना सं०-२

रही ना आन देश के तऽ जान रहके का करी ?
नीख ना दिही जो दूध के संतान रहके का करी ?
जब ले बा सांस देह में कूल्ह कांट कुस उजाड़ के,
बढ़त चलब चढ़त चलब ढ़ाहत ढूहत पहाड़ के,
तूफान तेज बा तऽ बा अब डेग पीछे ना करेब,
उनको के पानी-पानी क के छोड़ देब भले मरेब,
आंच आ गइल गुमान पर परान रहके का करो ? रही ना .....
मेहनत का बल ए धरती से सोना उगा के घर भरी,
सभका मिलो सम्मान हम मिल जूल के ई नीति गढ़ी,
केहू का कुटनीति के शिकार होके जनि लड़ी,
गुमराह भइल भाई के समुझावेवाला आगा बढ़ी,
इहे जो ना होई तऽ बुद्धि ग्यान रहके का करी ? रही ना .....
बा खून खलबला गइल रगे रगे जवान के,
तरूआर तड़फरा उठल छोड़ेला आज म्यान के।
केकरा में बा दम जे बाँटी हमरा हिन्दुस्तान के,
लहू से लाल कर ना देहब सँउसे आसमान के।
रही ना शान-बान बुढ़ जवान रहके का करी ? रही ना.....
नइखे कमी आजो इहां शिवा राणा प्रताप के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS-Grant-

इज्जत आजादी ला पिहले बलुआ अपने खाम के !
भगत गुरू आजाद के सुभाष सहनवाज के,
शहीद का सपूत के ना चाह तख्त ताज के ।
खाम बा जे नेत के दरवान रहके का करी ? रही ना.....

घर–चरिहारा, डाकघर–मशरक, जिला–सारण

अर्जी लेके वापस अइनी

राम स्वरूप महतो 'गजब'

बहुत दिनन से ललसा रहे, मंत्री बनके अइतीं हम ।
पुस्तक में इतिहास लिखाइत, केहू से ना रहती कम ।।
करती हम समाज के सेवा, जनता के करती बम-बम ।
देश में अपन नाम कमइतीं, देश के नाम बढ़इतीं हम ।।
पार्टी के अध्यक्ष के आगे, टिकट माँगे गइनी हम ।
झूक के हम नमस्ते कइनी, अर्जी देके धइनी हम ।।
पूछलन जब अध्यक्ष महोदय, अता-पता बतलवनी कम ।
पुछलन फिर मोर काम-काज, त जोगिता तक बतलवनी हम ।।
कहनी एम. ए. बी. एड. पास हम, शिक्षक बानी हे सरकार ।
कविता, लेख, कहानी, नाटक, मुक्तक त लिखनी भरमार ।।
जिला-जवार के सज्जन सबसे, बढ़िया बा व्यवहार-विचार ।
ब्लॉक से लेके डिस्ट्रिक्ट भर के अफसर सबसे हऽ सरोकार ।।
अपना क्षेत्र में घूम-घूम के, जनता के समुझवले बानी ।
जिला, ब्लॉक के अफसर से कह,सड़क, बांध बनववले बानी ।।
जन वितरण के सभो दुकान के, हम धांधली मेटवले बानी ।
राशन, खाद, किरासन, चीनी खड़ा होय बँटववले बानी ।।
हमरा सेवा से जनता सब, जय-जयकार मनावत बाड़े ।
बढ़िया काम के खातिर हमके, गाँवे-गाँव बोलावत बाड़े ।।
उत्सव के अवसर पर हमके मुख्य अतिथि बनावत बाड़े ।
नया काम के अवसर पर उदघाटन भी करावत बाड़े ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Funding by MoE-Grant-2

खिसिया के बयान पर में गोलेबाजी बाद किनारे कइले।
हमर बात बकवास बता के, नया प्रश्न भरमारे कइले ॥
सुन के प्रश्न सिर ठनकल हमर, तबहूँ प्रश्न बढ़ावत गइले।
अइसन प्रश्न कबो ना सुनलीं, प्रश्न के धार बहावत गइले ॥
पुछलन कै गो केस मुकदमा, तहरा पर बा से बतला द।?।
केतना बार तू जेल में गइलऽ, एक-एक कर हमके समझा द।?।
हत्या, डाका, बलात्कार के, कै गो केस बा से गिनवा द।?।
केतना जयदाद कटवलऽ, दखल करवलऽ से लिखवा द।?।
तहरा आगे-पीछे केतना गुंडा, दादा घूमत बाड़े?
कै गो लंठ बदमाश लखैरा, आगे-पीछे झूमत बाड़े?
केतना बा रंगदार साथ में, कै गो मुखिया गूनत बाड़े?
कै गो लखपति, बनिया तहरा डर से माथा धूनत बाड़े?
बोली रउरा बूथ लूट के ताकत, मत पेटी छिनववले बानी?
वोट में पाटी हारत देखके, मत पेटी छिनववले बानी?
डाकू, हत्यारन के कबहूँ कोट में बेल दिलवले बानीं?
पुलिस विभाग के अधिकारो के, कबहूँ भोज करवले बानी?
एक-एक प्रश्न हम सुनके, सबके उत्तर में 'ना' करत गइनीं।
उत्तर सुन अध्यक्ष महोदय, नाक-भौं सीकोड़त गइनी ॥
कहलन-" मास्टर साहेब सुनी, रउरा टिकट के पात्र ना भइनी।
मन्त्री पद के आशा टूटल, अर्जी लेके वापस अइनी ॥

केन्द्रीय विद्यालय, मुजफ्फरपुर

-: कर्म-प्रशंसा :-

अइसन सुन्दर कर्म भूमि दुनिया में आके
उहे अभागा जे ना नर सत कर्म करेला
ऊ वैदूर्य मणि से निर्मित बटलोही में
चनन इन्हन से तिल के खली पकावेला
अर्कन-मूल उखाड़े खातिर ऊ बसुधा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-Grant-

कचन के हर के अग्रभाग से जोतेला
उ कपूर के कइके टुकी से मानुस फिर
खेतन के चारो ओर पगार बनावेला

सभ सुर के सुमिरत हम पहिले
पर सुर पर बिधि के अधिकार
तब बिधि के बन्दना, उहो बिधि
फलद कर्म के पांव-पखार
ना दरकार रहल बिधिना के
ना बिधिना से कवनो काम
रहल कर्म कहूं के बश ना
अतह कर्म के करत प्रणाम

पोस्ट-हेतमपुर, भोजपुर

गजल

सूर्यदेव पाठक 'पराग'

इंसानियत के रास्ता बा लोग आजु, भटक गइल
तोपे के आपन चेहरा नीमन नकाब लटक गइल
कइसे कहीं के नेक दिल अब रह गइल इंसान बा
जब बँढनिहारे सभ रसद जनताके बीच गटक गइल
पाकिट टटोरीं तब कहीं अफिस तरफ आगे बढीं
अफिस में रूपया के बिना फाइल हमार अँटक गइल
दफना दिहल इंसानियत से ही बनल इंसान बा
साहब से हमरा एही कारन बार-बार खटक गइल
कुरसी के बात पर शेर बनके बइठ जात सियार बा
कुरसीं के डर से सिंह असली हाथ जोड़ सटक गइल
आखिर चली कबतक तमाशा सिंह अउर सियार के
आइल हुआँस पराग के दिल में ई बात चटक गइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२

अब साँच कहल गुनाह बा,
मन आजु भइल तबाह बा।
कइसे कहीं दिन, रात के,
उलिटा इहाँ के राह बा।
खेती करेके झूठ के,
सच्चा बने के चाह बा।
मुँह से झरे अगरित भले,
दिल में जहर बेचाह बा।
सिखलीं खुशामद ना कभी,
कतहीं मिलत ना पनाह बा।
कउअन के भीढ़ बढ़त गइल,
कोइल का दिल मे कराह बा।
जीयल मुहाल 'पराग' के,
उल्लुए जब शाहंशाह बा।

—०—

३

जिन्दगी बन मोमबत्ती जल रहल,
ताप से हर रोज़ तन बा गल रहल।
लोग के दिल ठेठ रेगिस्तान बा,
मरम मे आशा लगावल पल रहल।
बहुत जल्दी बात के एतबार से,
लोग डेगे-डेगे पर बा छल रहल।
काम में अपने भुलाइल बा सभे,
हर मुसाफिर मौज में बा चल रहल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाँव पर ज. खुद खड़ा ना हो सकल,
आज तक बा हाथ आपन मल रहल।
नेक दिल इंसान भइलो बा बुरा,
जान पवलीं देर से ई खल रहल।

सूर्य देव पाठक 'पराग'
संपादक : 'बिगुल'
पो०-भिट्ठ, वाया गोरया कोठी,
जिला-सिवान-८४१४३४

—०—

जब कलियुग आइल बा

धरम धसल धरती में पापे अगराहल बा,
साँच गइल दुनियाँ से झूठे छितराइल बा,
धरती के तलमहल परजा बढ़िआहल बा,
कपटी पुजात बाड़न सुभे घबड़ाइल बा,
लइका लड़े बाप से हसे भकुआइल बा,
साले साल कर बढ़े सुविधा पर राहल बा,
सोरह रुपये सतुआ बूंट के निकहल बा,
महँगाई के मार से जनता चिटहल बा,
कहीं बरषा बरिसेला कहीं बाढ़ आहल बा,
जेने तेने लूट मार जिनिगी ओराहल बा,
तन के बसाह कइलें मने बउराइल बा,
सही राह छूट गइल उलटे राह धराइल बा,
केकर, कब ? का होई ? जब कलियुग आइल बा,
'विधुर' बेहाल बाड़न अकिले हेराइल बा;

—जग नारायण पाण्डेय 'विधुर'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: MoE-Grant-2

जमुना के तीर आजु बाजे बँसुरिया

जमुना के तीर आजु बाजे बँसुरिया,
नाचे गुजरिया सेआन, छूम छनन। नाचे०

लहरे कि हिरि फिरि पुरवा पवनवाँ,
डाढ़ि-पात-कली-फूल सिहरे मधुबनवा;
नदिया के आर-पार ठहरे अंजोरिया—
हहरेला पुनिया के चान। छूम छनन०

सखियन का अँखियन में कजरी अहम के,
मन में लगन भरे बिजरी बरम्ह के;
भरल अंग-अंग में उमंग के लहरिया—
रग-रग में मस्ती के गान। छूम छनन०

गोपिन्ह का चोटिन्ह में चनिया जड़ल बा,
मनिया के लर गरदनिया पड़ल बा,
छलके अँचरिया के उमड़ल गगरिया—
मदना भइल बेइमान। छूम छनन०

दूर-दूर आस-पास छलिया के छाया,
साँस-साँस में महके मोहन के माया,
कुँज-कुछ स्वागत के सजल बा सेजरिया,
पहुना भइल बाड़े कान्ह। छूम छनन०

लुटा रहल बा भरि-भरि रसवा के जाम रे,
एक-एक राधा संग एक-एक श्याम रे,
गाँछ-गाँछ पर जइसे चढ़ेले बँवरिया,
तसहीं प्रियतम के संग प्रान।
छूम छनन, नाचे गुजरिया सेआन।

—रामबिहारी ओझा 'रमेश', प्रधानाध्यापक
मध्य विद्यालय, पाथरडीह (धनबाद)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमार गाँव हेतमपुर

साधना-सुगंध पर आत्म-तत्व-छन्द पर
गमक उठल गाँव बा गुरु रामानन्द पर
भोग केन गाँव निष्काम कर्म योग के
रोग शोक ना जहां शान्त चित लोग के
धूप के सुगंध से दिव्य देहि जोति बा
लोग के ललाट पर कुंउ के विभूति बा
बात में न घात बा गाँव बा सुजान के
नेह-छोह से जहाँ देत प्रान आन के
तिरस्कार ना जहाँ जांचक के मान बा
दान-शूरमा सभे कर्ण के समान बा
बावली बिचित्र बा गाँव से लगाव बा
गंगा के गुन नियर अतुलित प्रभाव बा
संगमरमरी घाट थाट पर निहाल बा
पूर्वज के कीर्ति पर गाँव खुशहाल बा
सुर तुल्य पीपर के बाभ, घाट पर जहाँ
करे लोग अर्चना भक्ति भाव से जहाँ
मानस मराल नियर बकतन के हार बा
तैरत तड़ाग महय एह ओह पार बा
चिरइ के शोर जहाँ करेला बिहान रे
कुंअन के कान सुने गगरी के तान रे
नाद जहाँ वेद के पाक करे कान के
हवन कुंड के धुंआ छुवे गगन चान के
घंट घहराय शंख मन्दिर में सांस बा
सोमनाथ के जहाँ बास बा निवास बा
लाखन में एक बा काशी कैलाश बा
प्रकृत कृत गाँव बा बास बा सुबास बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शान स्वाभिमान भरा गौरव के गान का
भग्नावशेष दुर्ग शौर्य के निशान बा
एक ओर बा जहाँ करूणा के खान बा
आहरा निठाह बा भिष्म के समान बा
शान बा किसान के घाट बाट गाँव के
सजल करे ताल के खेतन के पाँव के
जोतेला ताल पर एने केवाल पर
झूमेला बासमती कंचन के बाल पर
उच्च चुत्तरंग पर गजबे गौरांग पर
चटकार चोली पर छेरा लवेली पर
भादो के धार पर सोरहो-सिंगार पर
चाल मस्तानी पर राह मनमानी पर
मर्मर बँसवार पर सैकत के थार पर
गुलगुल गलइचा पर हरियर बगइचा पर
फागुन के प्रीत पर चइता के गीत पर
रसल बसल गाँव बा गीता नवनीत पर
ढेर मालदार बा सेठ साहुकार बा
राखेला लोग के जून जे उदार बा
छुआ छूत के जहाँ नाग ना निशान बा
दिल एक लोग के एक ही जुबान बा
बड़ छोट के खियाल शुद्ध व्यवहार बा
एक से एक लोग बुद्ध जानकार बा
लोग दूर-दूर के नाम लेत भाव से
कविवर अलमस्त के पढ़े लोग चाव से
धन्य जन्म भूमि बा स्वर्ग से बरिष्ट बा
उज्जवल नक्षत्र नियर चमकत सब शिष्ठ बा

—प्रभात कुमार मिश्र 'प्रभात', बी० ए० ऑनर्स
महाराजा कॉलेज, आरा, पो० — हेतमपुर (भोजपुर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गजल

डा० जौहर शफियावादी

जे चाही रउवा छीन लीं पहुँचा मरोर के !
बाकीर ई आग सुनूगी त जाई ना छोर के !
संतोख हम करीलें दिलासा के बा लकम,
अंजूरी में अपना आँख के मोती बटोर के !

लिख द ईकीसवीं सदी नेहीया का लास पर,
काका कथा सुनावेलें चन्दा चकोर के
जनता से दूर ताजमहल के कानून बा,
रउवे बताईं चोर सहेला अंजोर के ।

कुर्सी के लोभ नाचता जहीया से रोड पर,
जागता गाँव रात भर टोला अगोर के !
गजरा के बा गमक ना कजरा कटार बा,
लिख द गजल करेज के कनखा खखोर के !

जौहर डरेर खेत के कचरता पान जस,
का सांच में बा आँच कहीं हाथ जोर के !

(अध्यक्ष उर्दू विभाग मशरक कॉलेज–मशरक–सारण–विहार)

—०—

(ई कविता अंजोर जो के प्रबंध काव्य अंश बा । एह में ई देखावल गइल बाकि द्रोपदी के नइहर आ सासुर कइसन बा। काहेकि पाण्डव लोग एगो कुम्हार के झोंपड़ी में दिन काटत रहले। ई झोंपड़ी पश्चिम आ लगले पुरब, द्रुपद के अलिशान इमारत रहे। पूरा आज के जिवन बोध देखाई देता एह कविता अंश में)

१

पूरब नइहर, पश्चिम सासुर, बीचे बसीं ई महा नगरी बा ।
छान्हि कोंहार के बा एक ओर त एने अँटारी छुए बदरी वा ॥
भीखि अहार बा मोरा पतिन के इहाँ अन्न से ठक चलि बखरी बा।
नइखे प्रभाव, अभाव के माई हो, दीपे लिलार फबे पगरी बा॥

२

दहब के लाल बली एँव पाण्डवं, देखि के काल इन्हें सिहराला।
भीम के नांव सुने मुदई, छन में, वन में रन में शहराला॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पारथ-बान के का बरनू, नद-धार रुके आ बलासो छराला ।
धीर युधिष्ठिर शील समुन्दर, धर्म-ध्वजा हियरा फहराला ॥

३

सेज-धरा ओढना में अमृत बा, बाँस प बा निहुकाह-गुडैया ।
राज न मन्त्री बा, पाट न संत्री बा, दूत न जूथ बा, दास न दइया ॥
माँगे के बा रोज़िगार दुआरे कहे के इहे बहिनी अरू भइया ।
बाटे भरोसा दुआरिका नाथ के, सांचो सहइया ऊ कृष्ण कन्हैया ॥

४

गाई नियन हई सासु हमार, सदा मुँहवा से असीस ढरेला ।
देवी दया के छछात ऊ मूरति नित्य उदारता-दीप बरेला ॥
शान्ति विराज रहे मुख मंडल, जे पल में तन-ताप हरेला ।
आँचर में ममता भयी गंग आ बोली से अमृत-धार झरेला ॥

५

अइसन भाग बा हाँडी न साग बा,
भइया हो नाहीं बा सागो क पानी ।
अइलऽ भुखासल अउर पियासल,
कइसे के आजु तोहें सनमानी ॥

नइहर के सुधि आवे-सुनावे-
गावाही में लोर-सलोर कहानी ।
ई जिनगानी ऊकारथ बीरन ।
हाय ! दुआरे प भइलीं बेपानी ॥

७

बंस महा कुरू पांडु- बधू, महाराज दुपद के
मो लागीं दुलारी ।
धीर धुरंधर पांचो पति,
निकहा जग जानत जंग जुझारी ,
यज्ञ के बेटी कहाईं भूमंडल,
सासु सती कुंती महतारी ।
जेकर भाई दुआरिका नाथ,
सहे बहिना हइ दुरगति भारी ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलहद भीम के ताप विराजत, के बा धरा प गदा रोकवइया ।
पारथ-बान पतालो के फारत, भारत में न केहू लड़वइया ।।
भाई बेजोड़ बा तीनहुँ लोक में, नाथ अनाथ के कृष्ण कन्हैया ।
मोरा अभागी के केहू सहइया नं लउकत बा बिपदा बँटवइया ।।

(८)

देखि दुखी बहिना द्रौपदी के कन्हइया के फूटलि अमृत बानी ।
दैव के ना गति जानत केहू हो, ओकर बाटे विचित्र कहानी ।।
धीरज-धर्म के ढाल बनावऽ मिटी लगले सऽसे हलकानी ।
पोंछत लोर पितम्बर कोर से, ढारेलू काहें तूँ आँखि के पानी ।।

(९)

द्रौपदी
धर्म के राह चलँऽ नित पांडव, एहू प छूटि गइलि रजधानी ।
घोर सहँऽ अपमान खलन के, इहौं खड़साने प बा जिनगानी ।।
न्याय जँताइल बा अन्याय से, बा बिधि बाम ऊहो कल्यानी ।
कौरव क्रूर कुकर्म के कारन, काटि रहँऽ सुख-चैन के चानी ।।

(१०)

ढेरे कटल अब थोरे बा काटे के, बे कटले न कटी कलकानी ।
काटिलऽ रोइके, चाहे तूँ गाइके, काटे के बा बिधना के लिखानी ।।
बान्हिलऽ खूँटा कहीं सँचकी, गनले दिन बा दुरदिन के उठानी ।
ताज मिली, समराज मिली, रजधानी मिली बनबू पटरानी ।।

(११)

कृष्ण—
जे अपमान सभा में कइल, बुड़ी बंस—
सहित नहिं बाँची निसानी ।
रुंड आ मुंड से भुइयाँ पटी,
ना रही अछइत कवनो अभिमानी ।।
होके रही सँचहूँ महभारत,
खूने नहइहें धरा महरानी ।
लवटत बानी पियासल आजु—
पियब तहिए तोरा हाथे क पानी ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुत अच्छा

अगस्त्य—एउरा सभेक नीचे मुंडी करके अइसे काहे लटकल बानी ?

मुनीलोग—हमनी के तोहरे पूरवज हईजा आ पुत्र होरने के आशा में अइसे नीचे मुंडी कर के लटकल बानी जा। बेटा अगस्त्य ! तोरा एको लइका हो जाय तब हमनी के एह नरक से छुटकारा मिल जाय। तोरो सादी हो जाय।

अगस्त्य—पूरबज लोग ! रउवा सभे निश्चिन्त रहीं, हम रउवा सभे के ईच्छा पूराईब।

बंश खतम ना होखे के चाहीं। बिबाह कइल जरूरी बा बाकिर कवनो स्त्री हमरा नजर में अपना योग्य लउकत नइखे।

विदर्भ नरेश ! पुत्र पैदा करे के इच्छा से हम बिबाह कइल चाहत बानी। एही से हमरा रउरा से रउरा पुत्री लोपामुद्रा के मांगत बानी। रउरा ओकरा साथे हमार बिबाह कर दीं।

विदर्भ नरेश—प्रिये ! अगस्त्य मुनी आइल बानी। पुत्र पैदा करे खातिर लोपामुद्रा से शादी चाहत बानी। (कुछ रूक के) महर्षि अगस्त्य बड़ी तेजस्वी बानी। क्रोधित हो जाइब तब हमनी के शाप के भयानक आग में जले पड़ी। बताव एह में तोहार का राय बा ?

लोपामुद्रा—बाबुजी ! हमरा खातिर रउवा चिन्ता मत करी। हमरा के अगस्त्य मुनी के देके आपन रक्षा करी।

अगस्त्य—देवी ! तु एह बहुमुल्य वस्त्र-गहना के उतार द। चीर, पेड़ के छाल के वस्त्र भा मृगचर्म धारण कर।

लोपामुद्रा—बहुत अच्छा।

अगस्त्य—देवी ! तोहरा सेवा, पवित्रता, संयम, कांति आ रूप माधुरी के देख के हमार मन मुग्ध हो गइल बा। एह पल के अमरत्व प्रदान कर, देवी। हमरा पितरन के उधार कर, देवी।

लोपामुद्रा—मुनीवर ! एह में दु राय ना हो सके कि पति-पत्नि के संताने खातिर स्वीकार करेला बाकिर हमरा प्रति राउर जे प्रेम बा ओकरो के सार्थक करे के चाही। हमार इच्छा बा कि अपना पिता के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

घर अस इहवो अच्छा अच्छा वस्त्र गहना पहिरि तब रउरा इच्छा के पूर्ति करी। रउवो बहुमुल्य हार आ वस्त्र से सुसज्जित हो जाई। एह गेरूवा वस्त्र में हम रउरा इच्छा के पूर्ति ना करब। ई तप के बाना बहुत पवित्र बा। एकरा के संभोगादि के द्वारा अपवित्र ना करे के चाही।

अगस्त्य—लोपामुद्रा ! तोरा बाप के पास जतना धन बा ओतना धन ना तोहरे पास बा ना हमरे पास तब अइसे कइसे हो सकी।

लोपामुद्रा—तपोधन ! एह लोक मे जतना धन बा ओह सब के रउरा अपना तपोबल से पल भर में प्राप्त कर सकिला।

अगस्त्य—प्रिये ! तू जे कहत बाड़ु से ठीक बा बाकिर अइसब करे से तप के नाश होई। कवनो अइसन उपाय बताव जवना से हमरा तप के नाश ना होखे।

लोपामुद्रा—तपोधन ! हमु रउरा तप के नाश नइखी चाहत एह से रउरा ओकर रक्षा करत हमार कामना पूरा करी।

अगस्त्य—सुभगे ! अगर तू अपना मन में धन भोगे के कामना कइले बाडु तब तू इहवे रह के इच्छानुसार धर्माचरण कर, हम तोहरा खातिर धन ले आवे जात बानी।

महाराज श्रुतर्वा ! तू हमार अगुवानी अपना सिवाना पर कइल, प्रेम-सत्कार जवन देल तवना से हमार मन खुश हो गइल बाकिर हमरा आवे के कारण जानत बाड़ ?

श्रुतर्वा—ना महाराज !

अगस्त्य—राजन ! हम धन खातिर तोहरा पास आइल बानी। तोहरा जवन धन बिना केहू के कस्ट देले मिलल होखे, ओही में से अपना समर्थ भर दे द।

श्रुतर्वा - महामुनी ! हम अपना धन के लेखा जोखा रउरा आगे में रख देत बानी। देख ली। जतना इच्छा होखे ले।

अगस्त्य—राजन ! तोहरा धन के लेखा जोखा बराबर बा। एह में से तनिको सा ले लेला पर जीव सब के कस्ट होई हमरा तोहार धन ना चाही।

ब्रहनश्व—महामुनी ! रउवा आवे के सम्वाद पा के हम सपरिवार सिवान पर जाके राउर अगुवानी कइनी। घर ले आके राउर आ राजा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रुतवी के हर तरह से सेवा, सत्कार कइनी बाकिर आशा होइत तब हम कुछ पूछतीं।

अगस्त्य—पूछ ! प्रेम से पूछ। निर्भय होके पूछ।

ब्रहनश्व—रउरा सभे के चरणरज पाके हम गदगद बानी रउरा सभे के आवे के कारण वा ?

अगस्त्य—राजन ! हमनी के तोहरा पास धन खातिर आइल बानी जा एह से तू बिना दोसरा के कस्ट देले प्राप्त कइल धन में से कुछ भाग हमनी के, जतना हो सके द।

ब्रहनश्व—अहोभाग्य ! हई हमरा आय-व्यय के लेखा देखी आ जतना ज्यादा बुझाय ले ली। हमरा खुशी होई।

अगस्त्य—राजन ! तोहरा आय-व्यय के लेखा बराबर बा। एह में से तनिको ले लेला पर जीव सब के महान कष्ट हो जाई। हमनी के तोहार धन ना चाहीं।

इच्वाकुकुल भुषण इहाराज त्रसदश्यु ! तु पुरूकुत्स के पुत्र आ महान धनवान ठहरल। हमनी के मन तोहरा स्वागत सत्कार से बहुत खुश भइल।

त्रसदश्यु—हमार सौभाग्य !

अगस्त्य—हमनी के धन खातिर तोहरा पास आइल बानी जा। बिना दोसरा के कष्ट देले प्राप्त कइले होख तब ओह धन में से हमनी के कुछ द।

त्रसदश्य—मुनीवर ! हमार सब धन रउरे सब के ह। हमार आय-व्यय देख ली। जतना मन करे ले जाइजा।

अगस्त्य—राजालोग ! इहां धन के लेखा बराबर बा। तनिको निकालन अनुचित होई बाकिर हमरा धन चाहीं। अब कहां चलल जाय।

तीनो राजा—मुनीबर ! एह समय संसार में इत्मवल नांव के दैत्य बहुत धनी बा। ओकरा के छोड़ हमनी के सब आदमी धन के इच्छा रखेवाला बानी। हमनी के ओकरे पास चलि जा।

इत्मवल—रउरा सभे, एने कइसे कृपा कइनी ? कहीं हम कवन सेवा करी ?

अगस्त्य—असुरराज ! हमनी के रउरा के बहुत समर्थ आ धनवान समझत बानी जा हमरा साथे जवन राजा लोग बा, ई लोग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

विशेष धनी नइखे आ हमरा धन के बहुत जरूरत बा। एह से दोसरा के बिना दुख देले जवन उचित धन रउरा मिलल होखे, अपना ओह धन में से कुछ भाग यथाशक्ति हमनी के दीं।

इत्मवल—मुनीवर ! हम जतना धन देल चाहत बानी, अगर रउवा हमरा ओह मनोभाव के बता दीं तब हम रउरा के धन दे देब।

अगस्त्य—असुरराज ! तू हर एक राजा के दस हजार गाय आ ओतने सोना के रुपया देल चाहत बाड़ अउर हमरा के ओतने गाय आ सोना के रुपया, एक रथ आ मन के समान गतिवाला दुगो घोड़ा देवे के तोहार इच्छा बा। तू पता लगा ल हई सामने रथ सोने के ह।

लोपामुद्रा—भगवन ! रउरा हमार सब कामना के पूरा कर देनी अब रउरा अपना वंश विस्तार कर सकिला।

अगस्त्य—सुन्दरि ! हम तोहरा आचरन से बहुत खुश बानी एह से सन्तान के प्रति हमार जे बिचार बा से कहत बानी, सुन। बताव, तोहरा हजार पुत्र चाही, कि हजार लइकन के बराबर सौ पुत्र चाही ? सौ-सौ के समान दस पुत्र होखे या हजारन के हरावे वाला एके पुत्र ?

लोपामुद्रा—तपोधन ! हमरा त हजारन के बराबरी करेवाल एके पुत्र चाही। अनेकन अयोग्य लोगन से त एके योग्य आ विद्वान आदमी अच्छा होला।

अगस्त्य—बहुत अच्छा !

—चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह
जगन्नाथपुर, प० सिंहभूम (८३३२०३)

०:—:०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization FreeChange@Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुनी के बिआह

बुनी के बिआहवा में बेंग बरिआती !
बन्हले गगनवा बकुलवा के गाती !!
पहिले-पहिले जब ले बरखे ना पानी
माँग फार के ताकत रहे धरती के रानी
साँप बिछी कनगोजर मुस हरखाती ··· ॥ बुनी०

बेंग बाजा करर कोय झींगूर सहनाई
गदही पीलुइया जऊआँ हो जाई ।
धरती के सेनुरा विवूटी से मातीं··· ॥ बुनी०

चेंयरा के सेहरा जोंकवा के चोटी
कोंकड़ा कछुइया मींन बडी मोटी
घोंघवा सीतुहिया के जुड़ भइल छाती··· ॥ बुनी०

चुटीया पीपअरिया समा गईलि मान्ही
दींअका फीतिंगीयाँ के ऊठ गइल आँन्ही
रात भगजोगनी बारत रहे बाती ··· ॥ बुनी०

धरती के दुभिया गइले हरिआई
गईया बछरूआ चरले अगराई
किसनवा पलटे लागल खेतवा के माटी··· ॥ बुनी०

अयोध्या प्रसाद
पचैना बजार
पो.-नया महम्मदपुर, ८०२१६३
(भोजपुर)

—o—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निहोरा

'कोइल' का ओर से भोजपुरी के नामी-गिरामी, दामी आ कम-दामी लेखक लोगन से निहोरा बा कि आपन रचना (नव-गीत, आधुनिक कविता, निबंध, नाटक, कहानी समेत उपन्यास तक) छापे खातिर भेजीं। 'कोइल' अपना बल बुता के माफिक ई रचनन के एकहगो लेखक के नाम पर फलना-फलना-विशेषांक का रुप में छपे के उम्मीद करी। जे आगे चलके एकहगो किताब के रुप में प्रकाशित होई आ भोजपुरी साहित्य के बढ़ोतरी में सहायक बनी। सामग्री (रचना) दू-तीन फरमा (डिमाइ) के लायक होखे के चाहीं।

आगे एहपर बिचार आ फइल से जानकारी खातिर नीचे के पता पर सम्पर्क करीं। संकोच बिना···खुले दिल से ! शुभम् अस्तु।

ता. १७.१२.९१ —राउरे डा. धीरज कुमार भट्टाचार्य
प्रबंध सम्पादक 'कोइल'

अलमस्त नगर, साहेबगंज, पो. करनौल, जिला मुजफ्फरपुर—८४३१२५

जय भोजपुरी ! जय भोजपुरिहा !

कबीर जयन्ति का अवसर पर—स्थापित १९९१
कबीर भोजपुरी पुस्तकालय प्रेस
का ओर से निहोरा

भोजपुरी लिखनिहार सभन सम्पर्क करीं
भोजपुरी के खांटी साहित्यिक रचना छपवावे खातिर
पता :-
कबीर भोजपुरी पुस्तकालय प्रेस, अलमस्त नगर साहेबगंज
पोस्ट—करनौल जिला—मुजफ्फरपुर पिन—८४३१२५

नोट : ई प्रेस 'नो लौस, नो प्रोफीट' के अधार पर भोजपुरी सेवा खातिर समर्पित बा !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(पृष्ठ ४ का शेष)

अँउठी-पँउठी लिखिहे रे कएथा मोर रे मजुरवा,
बीचे ठँइआ धनी के बिरोग ॥

बिरहिनी स्त्री जबाब देत बाड़ी कि उनका अँचरा के फार के कागज बनी, उनका आँख का काजर से सिआही, ऊ कायथ में कहत बाड़ी कि ओह चिट्ठी का दूनू किनारा पर मोर-मजुर के तसवीर बना दीह आ बीच में हमरा बियोग के दुख-कथा लिखिह। मोर संसार का सुन्दर चिड़ियन में एगो बाटे। ऊ सुखी दाम्पत्य जीवन के प्रतीक मानल जाला, एह से कि ऊ मोरनी के खुश राखे लागि ओकरा सामने नाच-नाच के ओकरा के रिझावेला। ई भारतवर्ष के राष्ट्रीय पक्षी ह।

एगो बिआह का गीत में राजा जनक बढ़ई से आग्रह करत बा ई कि ऊ काठ के एगो पुतरी बना देव। गीत अइसन बाटे—

राजा जनक घरे धिअवा जनमेली,
मनहिं करले गुनानी।
हमरे निरधन घरे धिअवा जनमली,
कइसे के होइहें बिआह ॥
मोरे पछुअरवा बढ़इआ भइआ हितवा,
काठे के पुतरिआ गहि देव।
असकें पुतरी उरेह भाई बढ़ई,
दहेज परिजड़हे थीर ॥
गहि गहि बढ़ई पुतरी लेइ अइले,
पुतरी हँसे मुसकाय।
दान दहेज समधी घरे धइ राखब,
बढ़ई छोकड़वा हमें देब ॥

बढ़ई के बेटा अइसन सुन्दर स्त्री के मूरत गढ़ले रहे जे कबहीं हँसत आ कबहीं मुसकात नजर आवे। वर के पिता दान-दहेज के मोह छोड़ के बढ़ई का बेटा के माँगस आ कन्या के पिता देवे से इनकार करस। ई सवाल ले के दूनु समधी में कहा-सुनी हो गइल। ई लोक मानस का प्रबल कला प्रेम के प्रगट करत बाटे।

कोहबर आ भीत पर लिखल चित्रन के उरेहे में कवना कवना सामग्री के जरूरत होला, अब एह पर बिचार कइल जाता। अइसन चित्रकारी लागि खास करके चूना, सेनुर, हरदी के रंग, काजर, गेर आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चउरठ काम में आवेला। पहिले देवाल के चूना से भा पीअरी माटी से लीप देहल जाला। एकरी बाद चउरठ में बूकल हरदी फेंट के लेप तइआर कइल जाला, ओह में देवाल पर चित्र उरेहल जाला आ गेरु, सेनुर आ कांजर से ओकरा के सवारल जाला। एगो गीत में आइल बाटे कि कोहबर भीत चन्दन से लिपाइल बाटे। एगो कोहबर का गीत में आइल बा कि—

आधा भीति लिखलों में नव रङ कोहबर,
आधा भीति चूनवे चुनवटल।'

एगो आउर दोसर गीत में नवरंग कोहबर लिखे के चरचा भइल बाटे। ई कवन नव गो रंग भा प्रकार रहे, एकर चरचा कवनो गीत में ना मिलल ह'। भोजपुरी लोक गीत में चित्र उरेहला के बहुत चरचा मिलेला।

इहाँ हम इहो बात कहल उचित समुझत बानी कि देश का हरेक प्रान्त का लोक गीतन में चित्र उरेहला के बरनन आइल बाटे। एकरा अलावे प्राचीन साहित्य में, जेकरा के शिष्ट साहित्य भा अभिजात्य साहित्य कहल जाला, चित्रांकन के ढेर चरचा मिलला। तुलसी दास विभिषण का घर का सम्बन्ध में कहले बाड़े—

'रामायुध अंकित गृह, सोभा बरनि न जाई'

कादंबरी का सूते वाला कोठरी में एतना तरह के चित्र बनल रहे कि चंद्रापीड़ का भरम भइल कि समुचा संसार चित्र रूप में इनकर सुन्दरता देखे आइल बाटे। जायसी का मेदनावल का अनुसार रतन सेन के बरात सोना का चित्रकारी में उतारल गइल रहे। अजन्ता का गुफा का देवाल पर के चित्र सब त संसार भर में अपन नाम उजागर कइले बाटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन पन्ना–

भारतीय-संघीय एकता

एक दरजन चिट्ठी आइल रहें।

बहुत रूसिआइल, खिसिआइल, मानल जाव कि पत्रिका के बंदही करेके पड़ी।

केहूं धमकी देले बा, केहूं छोड़के फुसलवले बा। आ केहुं केहुं चुपके से समर्थनो कइले बा।

बहुत चिंतित रहलीं।

आ ठीक ओही घड़ी गुलुदा आ गइलन।

कहलीं गुलुदा, रूस के फुसलावल टिहुकावल चिट्ठी त आगा पड़ल बा। अबनहूँ डंटबे करब का ?

तबले गुलुदा दू-एगो चिट्ठी के नमुना पढ़ गइल रहलें। आ धीरे-धीरे प्रशांत-मुस्कान भरले कहलन, अच्छा ई बताव जे लिखले बाड़ से दिलो-जान साफ कके लिखले बाड़ कि केहूं के दबाव ना त मुंह देख के लिखले बाड़।

कहलीं, आज तक त अइसन काम नाहिये भइल बा। आगे के ना कहब।

त सुन; गुलुदा शुरू कइलन, भारत के शेष सिपाही गांधी जे एह देश के एगो पूर्ण रूप से निहरलन, समझलन आ काम कइलन। इनकर पहिले एह दिसा में बहुत जना बाड़न।

जइसे –

'ई दरिद्र भारतवासी, ई मुर्ख भारतवासी तोहार भाइ' कहेवाला विवेकानन्द के सिवा के होई ?

काहे ? विवेकानन्द त असली हिन्दू रहस। त काहे ना कहलन कि ई जनता हिन्दू ह ? ..... आ ओइसने ढ़ेर सारा उदाहरण आगा-पाछा बा। जेकर जरूरत इहां नइखे।

बाकिर गुलुदा अपने सवाल से आगा बढ़ गइल बानी !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सवाल एहिजे, जबाबो एहिजे, भारत के आँख खोलके झाँक। भारतीय के वेश-भूषण कथा-कहानी, खान-पान, रहन-सहन दूकोश पर बदलता, ई आगहू रहे, आजो बा।

भारत टुकड़ा-टुकड़ा पर बिखरल बा। एगो टुकड़ा दोसर-का टुकड़ा से मिलल नइखे।

कइसे मिली, भारतीयता एगो आण्विक सत्वा ह। केहुं पाँजि-टन त केहूं न्यूट्रन आदि। बाकी, ह एकही आण्विक सत्वाके, आत्मा के बान्हल।

बड़-जोड़ी 'मेलबा-मेलबा' कहला से मेल ना बुझाई, जवतक ओकरा आत्माके सत्वा के केहुं ना समझीं!

धो. कु. भ.

२०.१२.९१ (चितहरा)

गजल

—पाण्डेय कपिल

पीर मन-प्राण के धरम होला
अइसन प्यार के मरम होला

कह दीं रूखर जबान से कइसे
बात दिल के बड़ा नरम होला

एकटक रूप निहारल मुश्किल
काहें दो आँख में शरम होला

कइसे ओह बेरुखी के सहीं
चाव के ताव त गरम होला

दउड़ते मन के मृगा रह जाला
हाय, अइसन कहीं भरम होला

आग हिरदय में, आँख में पानी
प्रेम के अइसने करम होला

इन्द्रपुरी, पटना—२२३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खडंगाझार (गणेश मंदिर के निकट)
पो०—लुवाबासा
वाया—इन्द्रानगर, जमशेदपुर
८३१००८, २७.१२.९१

आदरणीय भाई

सादर प्रणाम

'कोइल' के अक्टूबर-नवम्बर १९९१ अंक मिलल, आभारी बानी। राउर संपादकीय विचारणीय बा। आलेख भोजपुरी कहानी, काल्ह से आज ले में अभिव्यक्त तैयब हुसैन पीड़ित जी के चिंता स्वाभाविक बा भोजपुरी पत्र-पत्रिकन के कमी, पुरान कथाकारन के सुस्ती आ नया कथाकारन में प्रोत्साहन के अभाव के चलते भोजपुरी कहानी के गति कुछ धीमा जरूर हो गइल बा।

प्रो० जौहर सफिया वादी के गजल पसंद परल। महेन्द्र गोस्वामी जी के महानी 'ऊ दिन,' आजादी के लड़ाई में भोजपुरी जनपद के गतिविधि आ योगदान के इयाद दिलावत बिया। चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के 'किरदार' समायिक स्तरीय आ प्रभावकारी कहानी बिया। पुलिस अधिकारिन के दब-दबा, अत्याचार आ मनमानी के चित्रण करे में ई कहानी भाव आ शिल्प के दिशाई सफल बिया। बाकी आउर रचना समान्य कोटि के बाड़ी सन।

आशा सानंद बानी।

राउर'
कन्हैया सिंह 'सदय'

RajGurukul Kanya Maha Vidyalaya Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुभाकांक्षी-मंडल—
श्री सतीश्वर सहाय 'सतीश',
श्री रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव,
श्री तैयब हुसैन 'पीड़ित'.

(बुलेटि

सम्पादन आ सहयोग अवैतनिक :
श्री दिनेश्वर मिश्र द्वारा
कबीर भोजपुरी पुस्तकालय प्रेस से मुद्रि

प्रकाशक :
श्री दिनेश्वर मिश्र 'दिनेश'

मुद्रक :
कबीर भोजपुरी पुस्तकालय प्रेस
साहेबगंज, (मुजफ्फरपुर)

प्रेषक :
सम्पादक "कोइल"
अलमस्त नगर, गोदीघर (साहेबगंज)
अरनौल, मुजफ्फरपुर (बिहार)
पिन-८४३१२५

बुक-पोस्ट

सेवा में,
श्री/श्रीमती [illegible]
[illegible]
[illegible]
[

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोइल

भोजपुरी के चेतनगर पत्रिका

साल पाँचवाँ । अंक —फरवरी—९२ । दाम—तीन रुपया ।

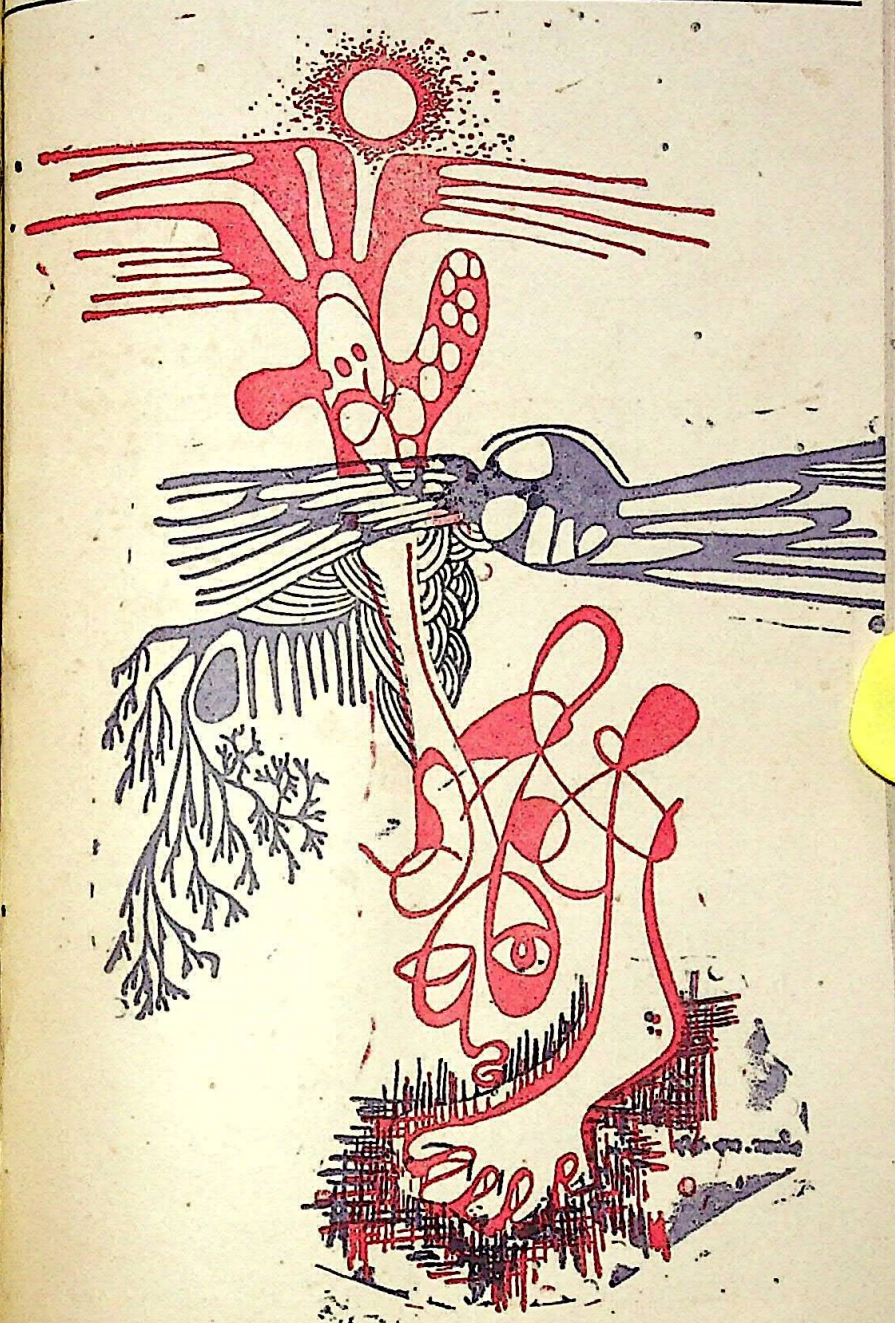

प्रबंध सम्पादक—डॉ. धीरज कुमार भट्टाचार्य । सम्पादक—डॉ. ब्रजभूषण मिश्र ।

RajGuru Math, Shivaji, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिट्ठी मिलल

आदरनीय भट्टाचार्य जी आ मिश्र जी,

सप्रेम अभिवादन !

दीपित होखे दिग दिगन्त तक यश से राउर भाल,
जिनगी में लक्ष्मी सरस्वती मिलि के करस कमाल।
सत्साहित्य सुधा से सींची भोजपुरी के बगिया,
नव उमंग, उत्साह नया ले आवे नयका साल ।।

शुभाकांक्षी,
सूर्यदेव पाठक 'पराग'

प्रेषक—रामबिहारी ओझा 'रमेश'
प्र० अ० मध्य विद्यालय
स्थान-पो०—पाथरडीह (धनबाद)
२८-१-९२

श्रद्धेय भाई ब्रजभूषण जी,
बार बार सादर प्रणाम !

आजु 'कोइल' के जनवरी' ९२ अंक मिलल, खुशी ई महान कि पत्रिका के साइज-सरूप आ साहित्यिकता के स्तर में दू-तीन अंक ले काफी सुधार भइल—देखा रहल बा बाकिर एकर जवन सकले बढ़ समस्या बा—प्रूफ रीडिंग के, ओकरा में कवनो सुधार ना बुझाइल। एगो त भोजपुरी अइसहीं लोगन का पढ़े में अनगँव परेले ओहू में एकरा छपाई में अतना अशुद्धि रही त कइसे काम चली ! भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पत्रिका लेखा शुद्धि के ओ स्तर बा ओकरा खातिर राउर व्यक्तिगत ध्यान खींचे में हमार दू-तीनिगो पत्र बेकार चलि गइल बुझाता। राउर जब भारी भरकम नाम एकरा पर छपता सम्पादक का रूप में त भाई जी, रचनन के शुद्ध छपाई का दिशाई पहिल ध्यान देबे

(शेष अगिला कभर पर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

सम्पादकीय—

भाषा पर एगो भाषण

हमनी के देश भारत में एक एगो बात बड़ा विचित्र बा, हमनी का पुरान चीज के बड़ा सहेज के रखे के चाही ले। पुरान चीज के सहेजला में कवनों खराबी नइखे, बाकिर हमनी का आँख मुन के खाली ओही पर ध्यान ना देवे के चाही। अपना आगे आवे वाला समय का बारे में भी सोचल जरुरी बा। आज जवन भाषा, चाहे देश आगा बढ़ल बा, उ पहिले हमनी से भी पाछा रहे। संस्कृत संसार के सबसे पुरान आ महान भाषा ह। आज अपना हाल पर ओकरा अफसोस हो सकता। हमनी का भी बा। एकर कारण खोजेला भी बहुत आगा बढ़े के जरुरत ना पड़ी। संस्कृत आगा आवे वाला समय से अपना के ना जोड़ सकल। साहित्य उहे रह सकेला जे समय का साथ चले। जवन भाषा के हमेशा समय का साथे चले के चाही, उहे भाषा आगा भी बढ़ी।

आज संस्कृत खाली पूजा, ज्योतिष आ भगवान के भाषा बन के रह गइल बा। उ सामान्य आदमी के भाषा ना बन सकल।

हमरा एतना बात कहे के मतलब एके गो बा कि हमनी के भोजपुरी भाषा के भी उहे हाल ना हो जाए जे संस्कृत के बा। भोजपुरी भाषा में बहुत काम हो रहल बा इ संतोष के बात बा, बाकिर ओकरा अभी बहुत आगा जाये के बाटे। आगा आवे वाला समय का साथ चले के होई। भोजपुरी में कविता, लेख, कहानी त हो रहल बा, अभी सबसे जरुरी जे बात के बा, उ बा विज्ञान, राजनीति आदि नया-नया दिशा के अपना भाषा में ले आवे के। अपना भाषा के भी समाज के बर्तमान समय के समस्या के साथ लड़े के पड़ी। भोजपुरी के सब रचनाकार से अरजी बा जे उ लोग बर्तमान समय का जरुरी के ध्यान में रख के रचना करसु।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी पत्रिका के भी ये क्षेत्र में बहुत काम करे के पड़ी। रचनाकार के ए दिशा में आगा बढावे में उहां के योगदान जरुरी बा। एह काम ला सब पत्रिका में एक-एक स्थायी कालम रखल जा सकेले। जबतक हमनी के भाषा सामान्य जनता का समस्या से के ना जुड़ी तब तक हमनी के भाषा खाली कागजी भाषा मानल जाई। राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में अपना भाषा के आगे बढ़ावे ला, सब भोजपुरीआ भाई, रचनाकारन सभे के गंभीरता से सोचे के जरुरत बा।

आशा बा एह समस्या पर एगो खुलल बाद-बिबाद हो सकी जे से हमनी का आगा बढ़े के मौका मीली। आ "अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन" ओकरे "डायास" हो सकता —

--अखिल

—: • :—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"एगो 'कालु' के खातिर"

—१—

गुलुदा के जानल-चिन्हल आसान नइखे। अइसे हम उनका के बचपने से जान रहल बानी, चाहे देख रहल बानी। बाकिर, गुलुदा के भरपूर जाने में ई आसानी नाहिये होखी।

चौक-चौराहा पर जइसे बहुत पुरान मित्र से भेंट हो गइला पर अचरज लागेला आ हृदया के गति एक-ब-एक तेज हो जाला, ओइसही गुलुदा से हमरा भेंट भइला पर भइल।

गुलुदा 'रौद' पर टहलत रहस, साथे आठ-दस गो बिलाइ आ कुत्ता से घिरल रहस। आ पाकिट से कुछोओ-कुछोओ निकाल के ओकनि के खिआवत रहस।

कहलीं, गुलुदा, अपने के ई कइसन आचरण हो रहल बा। कबहु जानवर से अइसन प्यार त अपने के हम नइखीं देखले।

गुलुदा चट से जबाब ना देलन। इमारा से बतवलन साथे चले के। हमर बाजार जाये के बेरा पार होत रहे तबहुं उनका जवरे चले लगलीं।

गुलुदा के एगो बिलाइ तवले कवनो अहिरिण का कारणा के जुठ क देलक। अहिरिण 'जा, जा' करत बेसुमार खिसिआये लागल, आ दू-चार छड़ी बिलाइ के देहो पर जमा देलक।

गुलुदा अहिरिण के शांत करे खातिर कहे लगलन, मारी मत, मारी मत, कृष्ण के जोव हवन! ओकर दोष नइखे। दोष हमरे में बा कि तीन दिन से ओकनि का पेट में दुध के बुँदो नइखे गइल।

आह, हा, हा! दुलार देख ····· बुढ़व के! खिआवे-पिआवे के अवकाद नइखे त दुलार कइसन? पोषहुं के रहे त एगो पोषतीं। एक आध कचोरा दूध हम मंगनीयो में दे देती। अहिरिण खिसे तमतमात रहली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहिन, मंगनी के दूध ओकनि के काहे खिआवे जाई !. अपना नदीया के कीमत हमरा से लीं।

आ सांचो गुलुदा पूरा नदीया के मुंह ओकनी का आगा खोल देलन। तवले बिलाइ-कुत्ता छक-छक के दूध पीये लागल आ नदीया साफ हो गइल।

देखलीं, गुलुदा अपन फतुहा के पाकिट से नोट निकाल के दूध के दाम दे देलन।

कहली, गुलुदा, सौदा अपने का महँगा पड़ल !

बबुआ, जिनगी के कवन सौदा महँग नइखे ? आ हमरा जिनगी में सौदा हमेसा महँगे पड़ल। बाकिर, ओकर गम नइखे।

—२—

गुलुदा के आँख का कोणा में लोर चमके लागल।

कवने गलती हमरा से हो गइल ह का ? ना बुझाइल आ हम उनुका जवरे धीरे-धीरे चले लगलीं। नाहीयों कहला से पता चल जाता कि गुलुदा का जवरे कुत्ता-बिलाइ के जमात चल रहल बा।

बबुआ, हमर कहनाम सही नइखे। गुलुदा अपन मौन के तुड़ के कुछ कहे लगलन। जिनगी के हर सौदा महँग ना होखे बाकिर अनमोलो होला।

नइखे समझ में आवत "गुलुदा" !

बात कुछ अइसन बाड़नस जे कोशिशो कइला पर समझ में ना आवे आ जहिआ समझ में आवे के होला तहिआ बिना-कोशिशो के समझ में आ जाला। गुलुदा धीरे-धीरे रहस्य के जाल बिनत चल जात रहस।

हमर जिनगी घुमक्कर के जिनगी ह। आज इहां त कल्ह ऊहां। अइसही घुमते-घुमते एकजना धनाढ्य मित्र का घरे एकदिन पहुंच गइलीं। मित्र बहुत खुश भइलन आ आदर-सतकार में तनिको कमी ना कइलन। रहते-रहते मन लाग गइल आ दू-दीन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के जगह दस दिन ठहर गइलीं।

रइस के घर के रसमलाइ के रस कुछ अवर होला, "गुलुदा"।

बबुआ अइसे तूँ जे कह, बाकिर हमरा कहानी से उनका सर्म्पक खास नइखे।

हमरा रहे खातिर जे डेरा मिलल, ऊ सड़क का किनारे आ सुन्दर रहे। मित्र का घरे से हमरा ला खाना-नास्ता समय पर आ जात रहे, आ हम बिछावन पर सुतल-सुतल आराम के दिन काटत रलीं ह।

ओइसही एकदिन आराम करत रही कि रसोई घर से गरमे गरम भोजन के सामान नगोच के टेबुल पर रखा गइल। हम उठीं कि-ना-उठी करते-करते एक नींद मार देले रहीं। बाकिर नींद वाला आराम हमरा छोड़े के पड़ल। काहे कि मित्र खुदे आके हमरा के जगा देलन।

"गुलुदा," सुतल बानी! जागल जाव, रात ढेर हो गइल बा, आ अपने के भोजन सेरा गइल होइ।

उठे के पड़ल। मित्र हमर खड़ा रहके "ई खाईं," "ऊ खाईं" करते-करते खिआवे लगलन।

भोजन के रकम ओह दिन कुछ बेसी रहे। खाते-खाते पेट भर गइल, बाकी तबहुँ छिपा के सामान ओराइल ना।

अचावे खातिर बाहर बरंडा में जबही आवतानी तबहीं एगो कड़िया कुच-कुच कुत्ता से हमरा भेंट हो गइल। कुतवा बहुत सुन्दर आ मोट-झोंट रहे।

धनीक इयार के दूध-मलाई के बनल देह बुझाता, कहलीं।

ना, कुतवा लावारिस रहे। बाकिर दूध-मलाई ना हो मछली के कांट आ मांस के हड्डी अकसरे मिल जात रहे बुझाता मित्रे का मकान से। ... ... बूझ हमरे लेखा। हा-हा-हा। गुलुदा ठाठा के हँसे लगलीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त सुन , कुतवा के हम नीमन से अपना छिपा के उबरल सामान खिअवलीं।

बेटा साइत भूखाइल रलख, कुछोओ छोड़लख ना। आ हमरा शान्ति मिलल कि अन्न जिआन ना भइल।

तूं सोंचत होइब जे अबसे हमर इहे काम भइल कि कुतवा के रोजे खिआवल करीं। ना, ई बात ना ह। छिपा में कुछुओ उबरे तबही ओकरा मिले, बाकिर ऊ हमरा कुल्ला करे के आवाज सुनतहीं कहीं से ना कहीं से आके खड़ा हो जाय।

धीरे-धीरे ऊ हमर मन खीचे लागल अपना स्वुभाव आ चुप्पी से। कभी काल ओकरा देह पर हाथ फेर दीं। ऊ धीरे-धीरे खुशी से पूँछ हिलावे लागे।

—: ३ :—

एकदिन ऊँहा के डेरा उठल। घुमक्कर-फक्कर के एक जगह अधिक दिन रहे के मोका कहाँ! मित्र से विदा लेके चल देली। मनही मन कुतवा के खोंजे लगलीं, बाकिर, ऊ कतहुं ना भेटाइल।

रास्ता चलते-चलते एको छोट लइका से पुछलीं, बबुआ, एह जगेह के कड़िआ कुतवा के कहीं देखल ह?

कालु के?

ह, उहे कालु। पहिले-पहिले ओकर नाम सुनली।

ऊ त अबगे बाजार का ओर जात रलख। लइकावा कहलस।

जा, हमरे से नू गलती भइल बा! ओकरा के हमरा विदोई के खबर कहाँ सुनवली हँ।

मनके कोणा में एगो दुःख के बोझा धइले आगा बढ़े लगलीं।

दिन बीतत गइल। साल भर का बाद एक बेर फनु मित्र का घरे एगो काम से जाये के पड़ल। उनका बैठाका में बइठल इन्तजार करत रहीं। 'कालु' कहाँ से दुं आ गइलन, ओंकर मुँह से एगो अजबे आवाज निकले लागल, जेहसे हमरा बुझाइल कि

RajGun Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

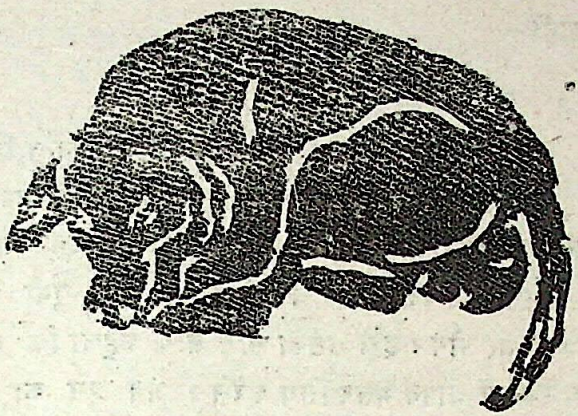

ऊ पूछ रहल बा 'कहाँ रलीं ह भुलल-बिसरल' ?

'कालु' हमरा पैर का आगा बइठ के दोम डोलावे लागल आ पैर के अंगुली चाटे लागल। —धी.कु.भ. ८.७.९१

गजल

—रामचन्द्र प्रसाद 'चन्दन'

बीतल दिनन के इयाद के सरगम बा आज ले
लवटल ना फेरू फागुन इहे गम बा आज ले।
ई साँच बा शामियाना तानल बा चोप पर
डोरी पर भार तबहुं कहाँ कम बा आज ले।
अब तक त सुख जाईत पेखुरी गुलाब के
तोहरे उमेदे मधुबन चम चम बा आज ले।
कतनों कहे ई दुनिया कि ह प्यार वासना
हमरा बदे त प्यारे अवलम बा आज ले।
हमरा गजल में अब तक 'चन्दन' के गन्ध बा
जेकरा के पिये खातिर हमदम बा आज ले।

लेखापाल—बिहार राज पथ परिबहन निगम
परिबहन भवन, पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी –

ओझइती

–जयकान्त सिंह 'जय'

'बाप रे बाप, ओकरा जाउत से ते काहे लगले हऽ। ऊ त आसाम के सीख हिअ। सुनिले जे कुंआरा में नइहर के केतना घर मठिया कई दिहलस। बरका-बरका ओझा-गुनी अझुरा के बुझ लेले बा लोग। इहो झूठकी साँच लोग कहेला कि दसई भर मूरघटिया में आपन मंतर सिध करेले। अब हम का करीं रे बाप! जेठको बबुनी सूनत बानी, तनी केसउवा के रघुनाथ दादा से देखा लाईं। जाईं झाल्दी करीं, ना होखे तऽ अगरबती चार गो लवंग, एगो सूई, एक पत्ता खइनी आ मलिया में मीठा तेल लेले जाईं।'

'कइले तऽ जरुर बिआ, अभगती, लइका के झुझुआवन मुँहे देखला से लागता। माई केने गइल बिआ।'

'रउआ माई का गोतियारो कइला से फूरसत बा कि घरे बइठस। इहे कहला पर तऽ टोलो के लोग कहेला कि फलना के पतोहिया काड़ा हिअ। रउआ जुरते लइका के देखाईं ना तऽ हम लइका से बेलइका के हो जाएम। बनला के सभे हऽ, दोसरा का लइका से हम नेहाल नानू होखेब।'

'आवऽ ए हमार बाबू! चल तऽ रघुनाथ दादा से तोहरा के देखवा लाईं।' एतना कहके केसउवा के फुआ ठाड़ भइली।

संउसे गांव का नजर में लछमी डाइन रहस। विधि के विधान अइसन भइल कि बेचारी ससुरा आवते मुसमात हो गइली। घर भर के खोबसन जरला पर नून छीटे के काम कइल। टोला-महल्ला के फूहरी-उढ़ारियो कुछ आभी-गाभी मारे से बाज ना आवऽसन। कुलछनी नाम धरा गइल। उनकर नेम-टेम आ पूजा-बरत देख के टोला भर का मूँहामूँही होखे लागल कि फलनवा बऽ तऽ रोज डइनपन के मंतर जाप करेले। एहू पर बेचारी केहू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से कुछ कहासूनी ना कके आपन धन्धा में लागल रहेली। घर का नण्ही-नन्ही लइकन के हर वखत करेजा में सटले रहस। दूलार-पुचकार पाके लइकनो के उनके में परान बसे।

एक बेर उनका जेठको देयादिन का लइका के इनर के बेटा कपार फोड़ दिहलस। फेर दुनु घर का ठन गइल। रमुआ का माई से कुटिन झगड़ा भइल। लछमी का मूँह से एतने निकलल रहे 'तोहार बेटा का हीरा-मोती हऽ आ अनकर बेटा बहारन हऽ। तोहरे छुलाछन से केहू नेहाल तरन नानू होखी। बेटा जीये तऽ सुपातर, कुपातर बेटा उफर परस।' आहरे राम, दिन में झगड़ा भइल आ रात में रमुआ का ठंढ़ा मरलस। डाकदर आवे-आवे तले ओकर गरदन झूल गइल। गांव भर का हो गइल कि फलना बऽ इनर के बेटा खा गइली। अछरंग अइसन लागल कि बेचारी के जोंअल उपदर हो गइल। ऊ भीतर से आउर टूट गइली। एतनो पर ऊ अपना काम-धन्धा में बाझल रहस। देह के देह ना बूझस। एक पराते से अधरतिया ले बहार-सोहार, चउका-बासन आ कुटनी-छटनी में लागल रहस। तबहूं उनका के घर के लोग अदमी का गिनती में ना राखे। लुलुआवत-झहरावत रहत रहे लोग।

ओने केसउवा पर ओझइती ना लहल। रात में पेट का बाथा से आलाय लागल। घर भर का चिकरो-भिकरो लाग गइल। 'बाप रे बाप, ई सभ ओही आभागी के कारामात हऽ हो दादा।' एगो मेहरारू बीचे में छाती पीट के कहलस। ई बात भुआ अइसन तनीके में संउसे गांव पसर गइल। ई सभ बात जब लछमी का कान में पड़ल तऽ उनका ठकुआ मार दिहलसू। देह में कटले खून ना रहे। उनका ना जाने का सूझल, 'शिवालय जाके भगवान का आगू अछोधाह होके गिर पड़ली। कलप-कलप के कहे लगली-'हे भगवान, एह विपत्ती से कवन चूक भइल कि जरला पर आउर जारत बानी। एह अछरंग से बचाईं ए भोलानाथ!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगर केसउवा का कुछ भइल तऽ हम गांव में मूँह देखावे लाएक नाँ रह जाएब। हमार लाज राखीं हे शिवजी।' एतना कहत फेर गिर पड़ली। उनका बुझाइल जइसे कान में एगो आवाज आइल हऽ कि 'बेटी, केसव का कुछ ना होई। डाकदर का दवाई से ओकर रोग ठीक हो जाई।' ई बात दिमाग में आवत भइल कि लछमी दउड़ल-दउड़ल गांव का डाकदर किहाँ पहुँचली आ उनकर गोर छान लेली। फेर रो-रो के कहे लगलीं-'डाकदर साहेब रउआ केसउवा के बचा लीं। ऊ पेट का दरद से बेचैन बा। गाँव भर हमरे पर धुआता कि हम डाइन बानी। ओकरा के क देले बानी। ई अपजस हमरा के जीये ना दिही। केसउवा का मरे का पहिले हमहीं जहर खाके जान दे देहब। टोला भर ओझइती का भगंडल भें पड़ल बा। रउआ केसउआ के बचालीं डाकदर साहेब, जल्दी करीं।

एतना हड़बड़ाए के ना चाहीं लछमी। पहिले तूँ अपना के सम्हारऽ। हम अबहीं जाके देखत बानी। हम अपना से एको उठा ना धरब, केसव के रोग ठीक करेला। आगे भगवान के मरजी,' ई कहत डाकदर साहेब आपन थइली उठा के चल भइनी।

एने ओझा जी फेने-फेन भइल रहस। बाथा कम होखे के नावे ना लेवे। बेचारू कहस—'खूब सरिआ के बान चलवले बिआ।लरिका के तऽ पाछ देले बिआ।' लवंग घांस-घांस के लिलार आ पेट पर मलात-छोपात रहे। हूमाद का धुँआ से घर भर गइल रहे। डाकदर साहेब आवते कहलें—'हई धुँआ घर से निकालीं सभे। तनिका हमरो के देख लेवे दीं, फेर जवन बुझाइ, करत रहेम।' उहाँ का लाहे-लाहे केसउवा के पेट दबवनी। आला लगा के ऊपर-नीचा सांस खिसववनी, जीभ देखनी। फेर एक बेर पेट टोवनी कि ओकरा जेब में कुछ धइल बुझाइल। निकाल के देखीं तऽ कांच आम के दूगो फांक। बेमारी अब धरा गइल रहे। उहां का अपना थइली से एगो टाबलेट निकाल के केसव के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खिआ दिहनी। फेर उहां का आँखि का आगू लछमी के अछोधाह होके रोवत चेहरा झलके लागल। आँखि डबडबा गइल। उहां का आपन भाव छुपावत कुछ देर ला बइठ गइनी। दसे मिनट में बाथा छू मंतर हो गइल।

अबहियों केसव के माई का आँखि से झर झर लोर गिरत रहे। सूसूकत कहली —'डाकदर साहेब, ई लछमिनिया के कइल रहल हs। ओझा जो केतना झाड़-फूंक कइलीं हs। रउआ भगवान बनके मोका पर चहूप गइलीं हs, ना तs आज हम बेटावाली से बे-बेटावाली हो जइतीं। ई सुन सून के डाकदर साहेब के कान कपार दूनु फाटे लागल। जब ना रहल गइल तs कहे लगनीं— 'रउआ सभन झूट-सूठ के ओह बेचारी पर अछरंग लगावत बानी। केसव के केहू जादू-टोना ना कइले रहल हs। ऊ दिन भर खूब कांच आम खइले बा, जवन ढोंढो में धई लेले हs आ ओकरे बाथा से तड़पत रहल हs। जवना लछमी पर सउसे गांव डइनपन के अछरंग लगावता, अगर आज ऊ ना रहित तs केसव सचहूं ना बांचीत आ झाड़-फूंक होखत रह जाइत। ऊ तs कहीं कि उहे हमरा के ठीक समय पर बुला के ले आइल हिअ। लछमी डायन ना, सती बिआ सती। केहू पर झूठ दोष ना लगावे के चाहीं। एगो तs कवना जनम के चूक रहे कि बेचारी आवते मूसमात हो-गइल आ दोसरे गांवभर डाइन कहके जरला पर जारिल। एतना सून के केसव के माई कहली —'हे राम, डाकदर साहेब ना अइतीं तs ओझइती में अबरेरे नू जान चल जाइत।' फेर ऊ अँचरा से लोर पोंछत उठली।

स्नातक कला (भोजपुरी प्रतिष्ठा) तृतीय–१९८९-९०
बिहार विश्व विद्यालय मुजफ्फरपुर
ग्राम–चरिहारा, डाकघर–मशरक जिला–सारण (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अविश्वास

• संध्या कुमारी

ई सूनसान संसार में, अपना के कहाँ खोजी ?
रऊआ आश्चर्य होइ की, ई आदमीयन से भरल संसार में
केतना लोग आपन बा, ? फेर सूनापन कइसन ?
लोग तऽ अनगिनत बा ! कभी पत्थरो बोलत रहे,
आज आदमी पत्थर हो गइल बा। काहे कि विश्वास उठ गइल बा,
आदमी पर से आदमी के। का जाने कब राऊर,
आपने, रउए गिरेबान में हाथ डाल देवे।
आउर इन्सानियत के दफना देवे।

भोजपुरी स्नातक (प्रतिष्ठा)
लंगट सिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर

गजल

रेसा-रेसा कूट गइल बा—

सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश'

जूटी ना, मन टूट गइल बा ! समय लुटेरा लूट गइल बा !!
केहू नइखे अपना वस में— रिश्ता-नाता छूट गइल बा !!
सभ घर देखीं एके लेखा— प्रेम गगरिया फूट गइल बा !!
चलत हथौड़ा देहिया धन पर रेसा रेसा कूट गइल बा !!
मरदाही जीए में बाटे हिम्मत धोती खूंट गइल बा !!

गीत

• अवधेन्द्र देव नारायन

कबले चुप रहब कुछ बोल
ए भीतर के देव हुलस के मन के बंधन खोल।
हेर-हेर अँखियाँ, कुन्हलाइल
बाट भूल, धीरज छिटराइल
टूटल बिसरल तार जोड़ के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिलल-राग रोस घोल।
दुख के हँस, सुख में डूबे द
बोझ बढ़ा के मत ऊबे द
काँटन के फूलन में बदल
साथ उमग के होल।
अपना ल, पंजरी काँपत बा
दाव हार, जियरा हाँफत बा
पिंजरा में सुगना अकुलाइल
पलक खोल, गुन तोल।

छतियाना हाउस, रामधनपुर (गाया)

ए हमार पहिली

रामाकांत पाठक 'स्नेही'

(१)

कब अइबु ए पहिली चढ़ल बा खीस पचीस के
लुकाइले चलीं गलिये गली कब अइबु ए पहिली
मिलते तनखाह होखिला खरखाह रेजकी अछइत तुराइला नमरिये
आवते-२ पचीस, मुंह प पड़ेला फेंफरिये कब अइबु ए पहिली
दस दिन ले गरमी फेरु आइल नरमी
आवते पचीस हो जाइले बेसरमी कब अइबु ए पहिली
टंगाइल बा गरदन पचीस के फांस पर
कटी, जाई फांस पहिली के आस पर
आबाद रहसु नोकरी आबाद रहसु लोन
बीबी-बच्चा संगे मजा करसु टोके वाला कौन
बात करींला फोन से काम निकालींला लोन से
केहू के बतकही प बात करीला जोम से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आंच ना सहाला

(२)

सूरज धाह से धनपद तातल, आंच जिनकर नाहीं सहाला
गरमाली धरती सूरज धाह से धन पद से मानुस गरमाला
ढोल के बोल तबहीं टनटन सेंकिके जब चढ़ावल जाला
निकसेला तबहीं बड़-बड़ बोल सुनेवाला के नाहीं ठटाला।
उहे ढोल शीते मेहराइल ढोल बोल होला तब अइसन
पंजरो रहला पर नाहीं सुनाला आंच जिनकर नाहीं सहाला
उहे काट पानी में भींजला प घुमवलो पर घुग जाला
पावते सुरज के धाह जेकरा छुअला प अंग छेदाजाला

माटी के गंध आ किरिन छुअत दरपन

शशि भूषण सिंह 'शशि'

साचहूं जदि साहित्ये समाज के दरपन ह, त कुमार गिरल रचित 'किरिन छुअत दरपन' हमरा देश आ समाज के सामने एगो अइसन दरपन बा; जवना में अपना माटी के रूप-रस, गुन-गंध सभ कुछ साफ-साफ लउकत बा। एकर कविता अतीत के खाई में के ना, बल्कि वर्त्तमान धरातल प के सांस्कृतिक जिनिगी के पहचान ओसहीं संजो के रखले बा। जइसे गुलाब आपन पंखुड़ियन के बीच में पराग संजो के रखेला। साथ ही साथ एकर कवितन में ऊ-भावात्मकता बा, जे आपन गंवई शब्दन के शृंगार से कथ्य आ शिल्प दूनों के अलंकृत करत बा। ओइसन शब्दन के प्रयोग भी नइखे दिखलाई देत जवन जबरदस्ती तुक बइठावे खातिर कइल गइल होखे।

भोजपुरी भाषा के एह कविता संग्रह में नवयुग के सृजन बा भाव, भाषा आ बिम्बन के संगम से सरस, प्रवाहपुर्ण आ श्रुतिमधुर हो गइल बा। अइसने संगम से कवनों कविता सफल हो सकेला। एह संग्रह के कवितन में आइल भावात्मकता अपना माटी के भावात्मकता ह। जवना कविता में अपना माटी के गंध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ रस ना होखे; ऊ कविता निरर्थक होला जड़ माटी में रहेला, रस माटी से मिलेला—त गंध अपना माटीये के होखे के चाहीं। एगो बानगी देखीं—

फगुआ आ चइता के चहकत ऊ रतिया
कजरी के लहरी रोपनिया के बतिया
पीसिया के गीतिया गवात नइखे ॥

भोजपुरी के पंत कुमार विरल के 'किरिन छूअत दरपन' में प्रकृति सहज रुप में ना, बल्कि तनि बन-ठन के धानी चुनर ओढ़-ले अगरात, इठलात आ मुसकात आइल बिआ। प्रकृति-चित्रण के एगो-दूगो नमूना लीहीं—

बरखा रानी सजि के अइली घूघ तानि के अइसन,
गोर रांति में पानी छहरे छरहर रुप बा कइसन,
झीसी में झिलमिल देहिया अब केंचुन अस लपेटाइल,
ठनके देखि के अकसवा भगनवां में।

— — — — —

गली-गली गोरकी चाननिया लचकावेली देहिया
चुपके-चुपके आससान प दिअरी बारे रतिया
हम देखनी आ देखलसि कनइल गछिया

इहां के भोर बनल मन भिनुसहरा के चित्र कइसे देख रहल बा—

जिनिगी कुँआर रस भरे लागे गगरी
पसरे ले धरती प भोर जब सगरी
घरे-घरे बाँटेले अंजोर भिनुसहरा।

स्वदेश प्रेम के पावन भावना कवि के रगे-रग में भरल बा। देश के एकता आ अखंडता के रक्षा खातिर दृढ़ संकल्प बारन, आपन सभ-कुछ अर्पित करे प तइयार बाड़न। एगो कविता के बानगी देखीं जेकरा में कवि डंका के चोट प कह रहल बाड़न—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मथरा माथा पटकट रहिहें
तबहूं ई घर फूटी ना ।
दिआ देवल के बूती ना ॥

अन्त में 'किरिन छुअत दर्पन' खातिर कवि के बहुत-बहुत धन्यवाद आ आशा करब कि आगे भी अइसन रचना प्रकाश में ले आ के भोजपुरी माई के देवल में आपन कवितन के दिअरो जुरावसु ।

ग्राम–मोहकमपुर, पो.–डुमरिया बिशुनपुरा
जिला–भोजपुर (आरा)

मुक्तक

रामाज्ञा प्रसाद सिंह 'विकल'

(१)

सांच संगत सँचले पर शुभ काम होलें ।
तप में तन के कसले पर मन धाम होलें ।
सिद्ध होले साधना कौसिक के कतहीं
तीर ले तैनात जहवाँ राम होलें ॥

(२)

अपंच से उबिआ के अगिन खाण्डव ला तानेलें ।
अन्याय उटकेरे त रण में पाण्डव आ फानेलें ।
जग खातिर त्यागे जे भोग सारी वसुधा के
कर अन्हेर जनि, शिव ताण्डव भी जानेलें ॥

(३)

स्वारथ के सिद्धि अब शान हो गइल बा ।
धरती के शोषक अब चान हो गइल बा ।
बनल बा आदमी अर्दली जब से मउअत के
काल के काम बड़ा आसान हो गइल बा ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(४)

पांव कर मजबूत अब धावे के होई।
जंग के जुझारू गीत अब गावे के होई।
विन्ध्य बढ़त अब जा रहल आकाश में
कुंभज का एकरा माथ पर आवे के होई॥

(५)

अजीब ताल बेताल के इहां दउड़ होता।
आदमी कलहँटत गोबर गऊर होता।
कइसन समय के फेर जे घोड़ा सड़त तबले में
कुकुर बा संगलउर आ गदहा का माथे मऊर होता।

(६)

चाणक्य के चश्मा इहां लोग रोज लेता।
नन्द आ के माथ पर सौ जूत देता।
कहाँ गइल अपमान के खुलल शिखवा
छान जग चन्द्रगुप्त कहाँ कोई खोज लेता॥

(७)

सागर कोई तबे मथी जब मथानी मंदर के होई।
बानरी सेना तबे सजी जब आवाज अंदर के होई।
सोना का नगरी से का, मन ना जो सोना भइल।
ऊलाह अस लहक जाई जब बास दसकंधर के होई॥

(८)

बाड़ें बहुरुपिया बनले नर, मत बंध तू बोल में।
नांक के चढ़बांक राख ल सुंघनिया गोल में।
आज त भय से भयातुर भेंड़ धइले मेंड़ बा।
भेड़िया आ के बसल बा आदमी का खोल में॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(९)

दूरा चलके पूनम के चान हो जाला ।
साधना से सिद्ध हर अरमान हो जाला ।
चान, भान, जोन्ही सजी राखे जोगा के बान के
बून्द भर से सागर के पहचान हो जाला ॥

(१०)

फकड़ पड़ी ऊ ओठ से जइसन क्रिया में गीत होई ।
रंग बदली ए धारा के जब जहाँ में प्रीत होई ।
बांचीं कहेंवा तन के केहूं के आज का माहौल से ।
कांप जाई तन के ताकत जब हवा में शीत होई ॥

(११)

सुख-दुख के दाव जिनगी का साथ में होला ।
मऊअत से बढ़ के दुःख मीत का घात में होला ।
जिन्दगी के नाव का भल मांझी दीढ़ पतवार चाहीं
बे मांझी के नाव हवा का हाथ में होला ॥

(१२)

माटी के आपन अलग अरमान होला ।
माटी के पुतला माटी ला बलिदान होला ।
रग के रकट नैवेद्य होला बेदी के
रक्त दान से राष्ट्र के पहचान होला ॥

(१३)

पट पड़े पुरुषार्थ सार असार हो जाला ।
जेकरा सिर सत भार उहे भार हो जाला ।
लड़खड़ाला पांव जब आदर्श का अंगार पर
आदमी के हर कदम उदार हो जाला ॥

अरदेवा, सारण (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। मेंहदी ।।

० सुरेन्द्र सुमन

ललसा रहे
अपना पैरे खड़ा होखे के
बाकिर
तुर देहल गइनीं
परिजन के सम्बन्ध गाछ से
आ डोभ देहल गइनीं
धरती के छाती में
एगो डेहुँगी हम।
मिलल हमरा शितलता चनरमा के
आ ··· ··· ···
सुरुज के धाह से धिकावल—
काया कंचन भइल।
ऋतुअन के हिंडोला में
सुन-सुन के लोरी
नेहीं बदरिया के खींचल डोरी
पी के सेवाती के पनिया
भइनी जवान।
त ··· पकड़ लिहल मथबथ्थी
कठकरेज पाथर के—
सुहाग विन्दिया अस रुप
झूमर अस झूमत
पतिया सिसोह के
शीला-सिलवट पर
लाडला लोढ़ा से
थूर देहल गइनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तब
लोर नियर टपकावल गइनीं—
सोरहो सिंगार से सजल संवरल
सुकुमारी यौवन के
गरम तरहत्थी पर—
सुखावल देहिया के
खरोंच-खरोंच के
बयार में बांट देहल गइनी
काहे कि
ओकरो नेह के-ऋण
चुकावे के रहे
तब आउर निखर गइनीं
लाल-लाल
हम
मेंहदी।

स्टूडियो रुपसी
चन्द्रलोक मार्केट (मुज.)

कोइल/फरवरी/९२—पीठ २०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के कृपा करीं। एगो अउरी बात बुझाइल कि पत्रिका खातिर रचनन के कमी हो रहल बा नाहीं त हमरे अस अउरी एकाध लो के रचना थोक भाव से ना छपित।, ईहो अनुभव होता कि नामी गिरामी लो के खुशामदी पत्र पत्रिका में छापल गइल बाकिर एकरा स्तर के सुधार खातिर दोसर पत्रन के प्रस्ताव भा सुझाव के हलुको ना लिआइल' हम चालू साल खातिर कवनो रचना भेजीं त शुद्ध छपाई के गारंटी के दी ? अरे, राँवा त बेवजह अतना बुरा मानि गइलीं। अच्छा अब ना लिखि के कोंचबि।

राउरे—'रमेश'

प्रिय ब्रजभूषण जी,

नमस्कार। उमेद बा, रउरा सकुशल बानी। राउर 'कोइल' समय-समय पर मिलेला। धीरे-धीरे एकरा स्वास्थ्य सुधार से बड़ा खुशी होता। हम महसूस करत बानी कि केतरे रउरा सभे बराबरे निकाल रहल बानी। बड़ा साहस के काम करत बानीं—सभे।

रेलूकूट का बाद भेंट ना भइल। बुझाता कि अब छपरे में भेंट होई। विरल जी आ सब भाई लोग के हमार नमस्कार देब। एह घरी संकाय के सेवा के अलावा मूर्ति संरचना का जाल में जोर से फँसल बानीं।

अपने के

पी० चन्द्रविनोद

रीडर, मूर्तिकला, दृश्यकला संकाय

का.हि.वि.वि., वाराणसी-२२१००५

कोइल/फरवरी/९२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुभाकांक्षी मण्डल —

श्री सतीश्वर सहाय 'सतीश'

श्री रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव

श्री तैयब हुसैन 'पीड़ित' बुलेटिन

सम्पादन आ सहयोग अवैतनिक :

श्री दिनेश्वर मिश्र द्वारा

कबीर भोजपुरी पुस्तकालय प्रेस से मुद्रित

प्रकाशक :

श्री दिनेश्वर मिश्र 'दिनेश'

मुद्रक :

कबीर भोजपुरी पुस्तकालय प्रेस, साहेबगंज

(मुजफ्फरपुर)

बुक-पोस्ट

सेवा में,

श्री / श्री ... ...

... ...

... ...

प्रेषक :

सम्पादक "कोइल"

अलमस्त नगर, गोटीघर (साहेबगंज)

करनौल, मुजफ्फरपुर (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंगिका और भोजपुरी भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन

[भोजपुरी अकादमी, पटना के उद्घाटन समारोह (४ एवं ५ फरवरी, १९७९) के अवसर पर आयोजित भाषणमाला में प्रस्तुत]

परमानन्द पाण्डेय
अनुसन्धान-पदाधिकारी
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना-८००००४

भोजपुरी अकादमी
बोरिंग रोड
पटना-८००००१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंगिका और भोजपुरी भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन

किसी भी भाषा के भाषित और लिखित दो रूप होते हैं। जब केवल बोलकर भावों का आदान-प्रदान होता है, तब भाषा को 'बोली' कहा जाता है और जब लिखित रूप में उसका साहित्य तैयार हो जाता है, तब सामान्यतः उसको 'भाषा' की संज्ञा दी जाती है। किन्तु, भाषावज्ञानिक दृष्टि से बोली को भी 'भाषा' ही कहा जाता है। अंगिका और भोजपुरी अब सीमित परिभाषा में भी भाषा का स्तर प्राप्त कर चुकी हैं। दोनों भाषाओं के प्राचीन रूप उपलब्ध नहीं हैं। वह काल इन भाषाओं के इतिहास में 'तमिस्र युग' कहा जायगा। उपर्युक्त परिस्थिति में अन्वेषक, प्राप्त अपभ्रंश साहित्य में इन लोकभाषाओं का मूल रूप ढूँढ़ते हैं। कुछ भाषाओं की परस्पर आन्तरिक एकता के कारण अपभ्रंश साहित्य में उन सभी के भाषिक तत्त्व कुछ न्यूनाधिक प्रतिशत में प्राप्त हो ही जाते हैं। इस प्रकार प्रत्येक भाषा-भाषी को अपभ्रंश साहित्य में अपनी-अपनी भाषा के पूर्वरूप प्राप्त करने का अधिकार अक्षुण्ण हो जाता है। अंगिका और भोजपुरी के विषय में भी यही कहा जा सकता है। तर्कसंगत आधार पर इन दोनों भाषाओं का सम्बन्ध भी अपभ्रंश भाषा से जोड़ा गया है। आर्यभाषा-परिवार का प्राचीनतम अभिलेख संस्कृत साहित्य में सुरक्षित है। अतः अपभ्रंश का मूलस्रोत भी संस्कृत है। किन्तु, संस्कृत और अपभ्रंश के बाद आधुनिक लोकभाषाओं का क्रमबद्ध अभिलेख अप्राप्त है। ऐसी स्थिति में उनके क्रमिक विकास के अध्ययन में कठिनाई होती है। लिपिबद्ध नहीं होने के कारण कितनी भाषाएँ लोक-भाषा के स्तर पर ही अतीत के अंक में विलीन हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गयीं और इस प्रकार मानवजाति की वाक् सम्पदा की अपूरणीय क्षति हुई है। अतः भाषा को जीवित रखने के लिए, उसके भाषिक स्वरूप को अक्षुण्ण रखने के लिए लोकभाषाओं का अध्ययन आवश्यक है। साथ ही पारम्परिक भावधारा को सतत प्रवाहित रखने के लिए अनेक विधाओं में साहित्य-सर्जना साहित्यकारों का सारस्वत दायित्व है। हमारे लोकसाहित्य में भी मानव-प्रज्ञा के अलेख्य अनुपम अवदान—मुहावरों, कहावतों, पहेलियों, लोककथाओं, लोकगाथाओं और लोकगीतों के रूप में, भरे-बिखरे पड़े हुए हैं। यह भारतीय वाङ्मय का बहुत बड़ा अंश है जो लोक-कण्ठ से ही धीरे-धीरे लुप्त हो रहा है। वस्तुतः यही लोकवेद है। ये कृतियाँ उन अज्ञात-नामा लोक-ऋषियों की हैं, जिनकी शिष्य-परम्परा नहीं है। वे परोपकारी तरुवर इसी मिट्टी में विलीन हो गये; किन्तु, उनके सुफल आज भी हमारी वाणी को सुपुष्ट और पूर्ण कर हमें सुख दे रहे हैं। इनका संकलन एवं संरक्षण हमारी संस्कृति का महान् स्मारक हो गया। अतः यह कार्य भी अन्यतम महत्त्व रखता है।

अंगिका और भोजपुरी दोनों के पूर्वरूप सिद्ध साहित्य में खोजने के प्रयास हुए हैं। सिद्धों के जन्मस्थल और वास-स्थान के अनुसार उनके साहित्य में तद्वत क्षेत्रीय भाषाओं के तत्त्व उपलब्ध हैं। सिद्ध सरहपा और उनके शिष्य लुचिकपा भंगल (भागलपुर) के ही निवासी थे। सिद्ध सरहपा का जन्मस्थान 'राज्ञी' (वर्त्तमान रानी ग्राम) भी अंगदेश में ही था। चौरासी सिद्धों में बत्तीस सिद्ध तो सदा विक्रमशिला (भागलपुर) में ही रहते थे। एक समय सभी चौरासी सिद्धों ने वहाँ निवास किया था। आज भी विक्रमशिला पहाड़ी की एक चट्टान पर उत्कीर्ण भित्ति-चित्र 'चौरासी-मुनि' के नाम से पूजित हैं। सिद्धों के अतिरिक्त अनेक सन्त-कवि अंगक्षेत्र में हुए हैं। भोजपुरी क्षेत्र भी सिद्धों और विश्रुत संत कवियों का जन्म-स्थान और कर्म-स्थान रहा है। इन सुकृती महात्माओं के साहित्य में अध्येताओं के लिए भोजपुरी के पर्याप्त भाषिक तत्त्व विद्यमान हैं। किन्तु, समय और स्थान की सीमाओं में आबद्ध रहने के कारण भोजपुरी और अंगिका के आधुनिक भाषिक स्वरूपों को ही तुलनात्मक अध्ययन का आधार बनाया गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंगिका और भोजपुरी भाषा-क्षेत्र

प्राचीन अंगजनपद अर्थात् वर्त्तमान बिहार के भागलपुर, मुंगेर, पूर्णिया, संथालपरगना, सहरसा, कटिहार, बेगूसराय जिलों की भाषा अंगिका है। मालदह (प० बंगाल) जिले के कुछ भागों में भी अंगिका बोली जाती है। इनके अतिरिक्त अन्य स्थानों में भी काफी संख्या में अंगिकाभाषी बसे हुए हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर अंगिकाभाषिओं की संख्या लगभग तीन करोड़ है। अंग प्राचीन काल में एक प्रसिद्ध महाजनपद था। अथर्ववेद, ऐतरेय ब्राह्मण, अरण्यक, गोपथ ब्राह्मण, स्मृति ग्रन्थों, रामायण, महाभारत, पुराणों, तन्त्र-ग्रन्थों तथा बौद्ध और जैन साहित्यों में अंग का प्रचुर उल्लेख प्राप्त है। राजा सगर के समकालीन राजा बलि की पत्नी सुदेष्णा से महर्षि दीर्घतमा के पाँच पुत्र—अंग, बंग, कलिंग, सुह्म और पुण्ड्र हुए जिन्होंने अपने-अपने नाम पर पृथक्-पृथक् राज्य बसाये। इनमें सबसे प्रतापी राजा अंग ने अपने नाम पर अंगराज्य की स्थापना की। बौद्धों के अनुसार अपने शरीर के सौन्दर्य के कारण यहाँ के लोग अंग कहलाते थे।[1] शक्ति-संगम तन्त्र के अनुसार अंग की सीमा एक शिव मन्दिर (वैद्यनाथ धाम) से दूसरे शिव मन्दिर तक यानी पुरी एवं भुवनेश्वर पर्यन्त थी।[2] ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार राजा अंग ने समस्त पृथ्वी को जीतकर अश्वमेध यज्ञ किया था।[3] अवधनरेश राजा दशरथ के मित्र, अंग के वंशधर राजा लोमपाद, ऋष्यश्रृंग को पुत्रेष्टि यज्ञ कराने के लिए ले गये थे। अंग के राजा अधिरथ ने गंगा में बहते हुए कुन्ती-पुत्र को लाकर उनका पालन-पोषण किया था। वही कर्ण महाभारत का प्रसिद्ध योद्धा और बाद में अंगनरेश हुए। राजनैतिक उत्कर्ष के साथ ही अंग अपनी सारस्वत उपलब्धियों के लिए भी प्रसिद्ध रहा है। महर्षि दीर्घतमा की स्त्री कुक्षीवती के पुत्र कुक्षिवन्तों ने ऋग्वेद के अनेक सूक्त निर्मित किये। महर्षि अष्टावक्र,

---

१ दीघ निकाय की टीका १-२७९

२. शक्ति संगम तन्त्र—सप्त पटल।

३. ऐतरेय ब्राह्मण २९-८-२२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लंकावतार सूत्र के रचयिता जिन, हस्त्यायुर्वेद के प्रणेता पालकाव्य मुनि, अंगिरा, वसुपूज्य, मौद्गल्य, और थेरीगाथा के लेखक सोम अंगदेश के ही रत्न थे। विश्व प्रसिद्ध बिक्रमशिला विश्वविद्यालय के आचार्य रत्नाकर, शान्तिरक्षित, दीपंकर श्रीज्ञान, पद्मसम्भव आदि प्रकाण्ड विद्वानों ने विदेशों में भी जाकर बौद्धधर्म का प्रचार किया। हिन्दी के चौरासी सिद्धों में से अधिकांश इसी विक्रमशिला में निवास करते थे। आज भी वहाँ उत्खनन में विक्रमशिला विश्व-विद्यालय के अनेक महत्त्वपूर्ण सामग्री और अवशेष प्राप्त हो रहे हैं।

भोजपुरी भाषा-क्षेत्र लगभग पचास हजार वर्गमील में फैला हुआ है। यह बिहार के सारन, चम्पारन, शाहाबाद, राँची तथा पलामू तथा उत्तर प्रदेश के बलिया, गाजीपुर, बस्ती, गोरखपुर, देवरिया, और बनारस जिलों में तथा मिर्जापुर, जौनपुर, आजमगढ़ एवं फैजाबाद के कुछ भागों में बोली जाती है। विदेशों में फिजी, ट्रिनिडाड और मॉरिशस में भी यह बोली जाती है। कुल मिलाकर भोजपुरी भाषियों की संख्या लगभग आठ करोड़ है। देश के बड़े भूभाग के अतिरिक्त विदेशों की भाषा भी होने का गौरव एकमात्र भोजपुरी को ही प्राप्त है। भोजपुरी, बिहार के पश्चिमी तथा उत्तर प्रदेश के पूर्वी भागों की बोली है और अंगिका बिहार के पूर्वांचल की। अंगिका के दक्षिण में संथाली, पूरब में बंगला, उत्तर में मैथिली पश्चिमोत्तर में बज्जिका तथा पश्चिम में मगही भाषा-क्षेत्र हैं। भोजपुरी और अंगिका के मध्य मगही और बज्जिका भाषा-क्षेत्र है। भोजपुर-क्षेत्र का अतीत भी गौरवपूर्ण रहा है। इस क्षेत्र में प्राचीन मल्ल, बज्जि, काशी, करुष आदि जनपद सम्मिलित हैं।[1] कुछ विद्वानों के अनुसार ऐतरेय ब्राह्मण में वर्णित महाराजा भोज इसी क्षेत्र के शासक थे। उक्त महाराज भोज के पुरोहित विश्वामित्र थे। इनके अनुसार उक्त राजा भोज के नाम पर इस क्षेत्र का नाम पड़ा है, परमारवंशी राजा भोज के नाम पर नहीं।[2]

---

१. हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास—ना० प्र० सभा, भाग-१ पृ० ३२

२. डॉ० ए० जी० बनर्जी शास्त्री-प्रोसिडिंग्स ऑफ सिक्स्थ ऑल इंडिया ओरिएंटल कानफ्रेंस, पटना १९३०; ५-१८६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुर्जरप्रतिहारवंशी राजा मिहिर भोज का बसाया हुआ भोजपुर आज भी 'पुराना भोजपुर' के नाम से विद्यमान है। अतः 'भोजपुर' राजामिहिरभोज के नाम से ही सम्बद्ध प्रतीत होता है। विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि जैसे महर्षियों के आश्रम भी इसी क्षेत्र में थे। स्मृतिकाल में वैवस्वत मनु के छठे पुत्र राजा करुष यहाँ शासन करते थे। बौद्धकाल में इसी क्षेत्र में शाक्य, कोलिय, मौर्य, मल्ल, वुलि, काशी और मग्ग जनपद भी थे। भोजपुर क्षेत्र अपने अनुपम शौर्य एवं पराक्रम के लिए पुराकाल से प्रसिद्ध रहा है। भोजपुर क्षेत्र में बहुत दिनों तक एक राजा का शासन नहीं रहा। यहाँ के शासकों को अनेक शत्रुओं से जूझने का अवसर मिलता रहा। भोजपुरी मिट्टी की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि यहाँ के वीर दुश्मनों की आँच नहीं सह सकते। राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर, उन्होंने जान की बाजी लगाकर बराबर दुश्मनों से लोहा लिया। यहीं के भारशिव नागों ने विदेशी कुषाणों को खदेड़ा था। सम्राट समुद्रगुप्त और स्कन्दगुप्त की अपराजेय सेना में भोजपुरी जवानों का महत्त्वपूर्ण स्थान था। यहीं के इतिहास प्रसिद्ध शासक शेरशाह ने बहादुर भोजपुरी जवानों की सहायता से शक्तिशाली मुगलसाम्राज्य को उखाड़ फेंका था। भोजपुरी वीरों की पराक्रम-कथाओं से इतिहास भरा पड़ा है। बृटिश काल में भी फिरंगी शासक से लोहा लेने के लिए अस्सीवर्षीय वृद्ध बाबू कुँवर सिंह पर सारे देश को गौरव है।

अंगिका और भोजपुरी का नाम-करण

सातवीं शती के, काशिका वृत्ति के, रचयिता वामन जयादित्य ने अष्टाध्यायी के 'न प्राच्य भर्गादि यौधेयादिभ्यः,[1] सूत्र की व्याख्या करते हुए प्राच्या के अन्तर्गत पांचाली, वैदर्भी, आङ्गी, वाङ्गी तथा मागधी का उल्लेख किया है। १७वीं शती, में सिद्धान्तकौमुदी के प्रणेता भट्टोजी दीक्षित ने उक्त सूत्र की व्याख्या करते हुए 'पाञ्चाली, वैदर्भी, आङ्गी, वाङ्गी, मागधी एते प्राच्याः' कहा

१. अष्टाध्यायी ४-१-१७६ : काशिका वृत्ति, तारा प्रका०, वाराणसी, १९६६, भाग—३, पृ० ५०४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है।[१] भरत के नाट्यशास्त्र में 'सप्तभाषा' के अन्तर्गत 'प्राच्या' की भी गणना की गयी है।[२] उक्त संदर्भों के सामंजस्य से स्पष्ट है कि अंगजनपद की तत्कालीन भाषा 'आंगी' थी। वही आंगी आधुनिक काल में 'अंगभाषा' या 'अंगिका' के रूप में विकसित है। डॉ० ग्रियर्सन ने इसे 'छीका-छीकी' नाम दिया था।[३] किन्तु अंगिका को 'छीका-छीकी' कहना भोजपुरी को 'बाटे-बाड़े' कहने जैसा भ्रामक है। किसी भाषा का नाम स्थान या क्षेत्रवाची हुआ करता है। अतः 'छीका-छीकी' नाम अपारम्परिक और अवैज्ञानिक भी है। महा-पंडित राहुल सांकृत्यायन ने अंगभाषा को 'अंगिका' नाम दिया और अब यही प्रचलित हो गया है।[४] अंगभाषा की अपनी प्राचीन लिपि का नाम 'आङ्गी' था। ललित विस्तर में उल्लिखित ६४ लिपियों में इसका स्थान चतुर्थ है और विदेहलिपि का ४०वाँ स्थान है।[५] आज भी आङ्गीलिपि शिलालेखों में प्राप्त है।[६]

भोजपुरी का नामकरण शाहाबाद के भोजपुर परगने के आधार पर हुआ है। भोजपुरी भाषा का सर्वप्रथम उल्लेख १७८९ ई० में मिलता है। फिरंगियों की सेना के सिपाही की बोली को 'भोजपुरिया' कहा गया था।[७] १८६८ ई० में जॉन बिम्स ने 'भोजपुरी' का एक बोली के रूप में उल्लेख किया था।[८] इसके बाद डॉ० ग्रियर्सन, हौर्नले, फ्रेजर आदि विदेशी तथा भारतीय विद्वानों ने इस भाषा को 'भोजपुरी' कहा। अब देश-विदेश में यह इसी

---

१. सिद्धान्तकौमुदी अपत्यादिप्रकरण, सूत्र सं० २७, पृ० ७१३, चौखम्बा सं० सिरीज १९४८ ई०।

२. नाट्यशास्त्र अ० १८ श्लो० ३५-३६।

३. लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया, जि० ५ खं० २

४. आज की समस्याएँ पृ० ३७, किताब महल, इलाहाबाद।

५. ललितविस्तर-लिपिशाला संदर्शन परिवर्त : अ० १०

६. अंगिकांजलि—सं० परमानन्द पाण्डेय, पृ० २

७ भोजपुरी भाषा और साहित्य—डॉ० उदय नारायण तिवारी, प्रथम खण्ड पृ० ६।

८. रोयाल एशियाटिक सोसाइटी जर्नल, भाग ३, पृ० ४८५-५०८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाम से प्रसिद्ध है। सिद्धान्तकौमुदी में ही भट्टोजी दीक्षित ने 'कारूशी' का भी उल्लेख किया है; अतः भोजपुरी का प्राचीन नाम 'कारूशी' होना चाहिए।[१] भोजपुरी पहले कैथीलिपि में लिखी जाती थी। कैथी के पूर्व प्रयुक्त भोजपुरीलिपि पर शोध की आवश्यकता है।

इस पूर्व पीठिका के उपरान्त अंगिका और भोजपुरी भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है।

अंगिका और भोजपुरी ध्वनियाँ

किसी भी भाषा की न्यूनतम इकाई ध्वनि होती है। अतः सर्वप्रथम अंगिका और भोजपुरी ध्वनियों पर विचार करना आवश्यक है। यहाँ दोनों भाषाओं की ध्वनियों का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

स्वर ध्वनियाँ

अ-आ

अंगिका और भोजपुरी दोनों भाषाओं में अ-आ कंठ्य स्वर हैं और इनका उच्चारण लगभग खड़ी बोली के अ-आ जैसा ही होता है। किन्तु, दोनों भाषाओं में आ का ह्रस्व प्रयोग भी उपलब्ध है। भोजपुरी और अंगिका में इस वर्ग की अन्य ध्वनियाँ इस प्रकार हैं—

अऽ

अंगिका और भोजपुरी में यह ध्वनि दीर्घ विलम्बित अर्द्ध विवृत पश्च स्वर है। इसके अंगिका उच्चारण में ओठ अर्द्ध वर्त्तुलाकर हो जाते हैं। भोजपुरी में भी ओठ कुछ वर्त्तुल होते हैं, किन्तु, अंगिका की अपेक्षा कम। बंगला के वर्त्तुल अऽ से इस ध्वनि का किंचित् साम्य है। लेकिन, भोजपुरी से अंगिका और बंगला में इसकी दीर्घता और वर्त्तुलता क्रमशः अधिक होती जाती है। अंगिका भाषा में वर्त्तुलता की प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है, इसलिए इस ध्वनि का प्रचुर प्रयोग प्राप्त है। यह अंगिका की संज्ञा, सर्वनाम, परसर्ग, विशेषण तथा क्रिया में भी प्रयुक्त होती है। भोजपुरी के

१. सिद्धान्तकौमुदी अपत्यादिप्रकरण सूत्र सं० २७ पृ० ७१३ चौखम्बा सीरीज १९४८ ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ क्रियापद और अव्यय में इसका प्रयोग पाया जाता है। अंगिका की इस ध्वनि के स्थान पर तद्वत परिवेश में भोजपुरी अ, आ और ए का प्रयोग होता है। प्रस्तुत तालिका से यह भेद स्पष्ट हो जायगा—

	अंगिका	भोजपुरी
अऽ > अ संज्ञा—	अऽन (अन्न), घऽर (घर), माथऽ (सिर), गोयठऽ	अन, घर, माथ गोइठ, गोइठा
अऽ > अ सर्वनाम—	हमरऽ, तोरऽहऽ, तोरऽ, ओकरऽ	हमार, तोहार, तोर, ओकर
अऽ > ए, आ, अ परसर्ग—	रामऽरऽ (रामका, भोरकऽ, राम के, भोरका, भोरक	
अऽ > अ विशेषण—	बड़ऽ, छोटऽ, कारऽ, गोरऽ	बड़, छोट, कार, गोर
अऽ > अऽ क्रिया—	पढ़बऽ (पढ़ूंगा, पढ़ेंगे)	पढ़बऽ (पढ़ोगे)
अ ⁄ अऽ क्रियाविशेषण	मत	मऽत

दोनों भाषाओं की क्रियाओं में इस ध्वनि का प्रयोग होता है; किन्तु, अन्तर यह है कि अंगिका में उससे उत्तम पुरुष तथा भोजपुरी में मध्यम पुरुष के क्रियारूप सम्पन्न होते हैं। अंगिका में भी मध्यम पुरुष में आदरसूचक क्रिया 'आपने पढ़बऽ' (आप पढ़ेंगे) होता है। भोजपुरी में क्रिया विशेषण में इसका प्रयोग पाया जाता है : यथा— ई काम मऽत करऽ। अंगिका में यह 'अ' से पृथक् ध्वनिग्राम है; इसके अनेक व्यतिरेकी अल्पतम युग्म भी प्राप्त हैं : यथा—

घर (रखना, पकड़ना)	घऽर (शरीर)
चांड़ (चालाक, धूर्त्त)	चाँड़ऽ (खंभा, अड़ानी)

भोजपुरी में करब (करूँगा) और करबऽ (करोगे, में रूप-भेद द्रष्टव्य है।

अं

अंगिका में यह दीर्घ विलम्बित मध्य स्वर है। भोजपुरी में इसका ह्रस्व विलम्बित रूप मिलता है। भोजपुरी के जवन, कवन, तवन शब्दों के ज, क, त में यह उच्चारित है। अंगिका में इस ध्वनि का भी प्रचुर प्रयोग प्राप्त है। भोजपुरी में तद्वत व्याकरणिक परिवेश में 'अं' के स्थान पर अऽ, ऊ, ए, आ और अ ध्वनियों का प्रयोग होता है : यथा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

		अंगिका	भोजपुरी
अ'>अऽ, ऊ	क्रिया : सामान्य भविष्यत्-	तोइँ जैभ' (तुम जाओगे)	तु जैबऽ, तु जैबू (स्त्री०)
अ'>ई	सम्भाव्य भविष्यत्-	जो ऊ चले ऊ चले (यदि वह चले)	जो ऊ चली
अ'>अऽ	विधि-	किताब ल' ल' (किताब ले लें)	किताब लेलऽ
अ'>ए	परसर्ग . कर्म कारक-	राम क' देखलियै (राम को देखा)	राम के देखलीं
अ'>अऽ, अ	अव्यय : तं' (तो), तब' (तब), आब' (अब)		तऽ, तब, अब
अ'<ए	विशेष बल देने के लिए 'ही' के अर्थ में :	बह' (वही), यइ' (यही)	ओहे, एहे।

आँ, आ'

अंगिका अ-आ वर्ग की ये दो ध्वनियाँ—आँ, आ' भोजपुरी में अप्राप्य हैं। भोजपुरी में इनके स्थान पर स्वर-संयोग देखा जाता है।

आँ

अंगिका में यह अर्द्धविवृत दीर्घ पश्च स्वर है। अँगरेजी के कॉल (call) तथा ऑल (all) शब्दों में ऑ के उच्चारण से इसका साम्य है। इसके अंगिका उच्चारण में 'आ' के ऊपर व् की अल्प श्रुति होती है। भोजपुरी में इसके स्थान पर आ-उ स्वर-संयोग होता है : यथा—

	अंगिका	भोजपुरी
आँ>आउ	चाँर (चावल)	चाउर
	जाँत (देवर या भैसुर का पुत्र)	जाउत

आ'

अंगिका में यह अर्द्धविवृत दीर्घ मध्य स्वर है। इसके उच्चारण में 'आ' के ऊपर 'य' की अल्पश्रुति होती है। भोजपुरी में इसके स्थान पर आ-इ स्वर-संयोग होता है।

	अंगिका	भोजपुरी
अ'>आइ	सा'त (साइ्त शायद)	साइत
	डा'न (डायन)	डाइन
	पंडिता'न (पंडिताइन)	पंडिताइन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई, इ, इ्

अंगिका और भोजपुरी दोनों में ई-इ संवृत अग्रस्वर है। आदर्श भोजपुरी में इसके तीन रूप प्रयुक्त होते हैं—ई दीर्घ, इ-ह्रस्व और इ् अतिह्रस्व।[1] किन्तु, अतिह्रस्व इ् अपूर्ण ध्वनि है और साधारणतः श्रव्य नहीं है। अंगिका में इसके प्रथम दो ही रूप प्राप्त हैं; इसमें अतिह्रस्व इ् अप्राप्त है। भोजपुरी की विशेषता है कि इसमें दीर्घ ई और ह्रस्व इ् दोनों का वितरण शब्दों के आदि, मध्य तथा अन्त में और अतिह्रस्व इ् का केवल अन्त में होता है। यथा– ह्रस्व इ फिकिरि, अतिह्रस्व इ्–ऊखि्, ओकि् आदि।

किन्तु, अंगिका में ह्रस्व इ का अन्त्य प्रयोग अप्राप्त है। भोजपुरी शब्दों की ये ध्वनियाँ (ह्रस्व इ, अतिह्रस्व इ्) अंगिका शब्दों में दीर्घ ई, अ, और य के रूप में प्रयुक्त हैं : यथा—

	भोजपुरी	अंगिका
इ>ई	ओकि्	ओकी (कय, वमन)
इ>अ	फिकिरि	फिकिर
इ>य	कोइ, जोइ्	जोय

दोनों भाषाओं में ई और इ के व्यतिरेकी युग्म भी प्राप्त हैं।

ऊ, उ, उ्

भोजपुरी और अंगिका में ऊ, उ संवृत वर्त्तुलोष्ठ्य पश्चस्वर हैं, ह्रस्व उ का स्थान दीर्घ ऊ से थोड़ा नीचे है। आदर्श भोजपुरी में अति ह्रस्व उ् का प्रयोग होता है किन्तु, अंगिका में अतिह्रस्व उ् अप्राप्त है। भोजपुरी में ह्रस्व उ शब्द के आदि, मध्य और अन्त में तथा अतिह्रस्व उ् का शब्द के अन्त में प्रयोग होता है। अंगिका और भोजपुरी दोनों में दीर्घ ऊ का आदि, मध्य और अन्त में प्रयोग होता है :

यथा–	अंगिका	ऊन	सिनूर	गोरू
	भोजपुरी	ऊखि	मूस	गोरू

आदर्श भोजपुरी में ह्रस्व उ का शब्द के अन्त में तथा अति ह्रस्व उ् का शब्द के आदि में प्रयोग नहीं होता।[2] वस्तुतः ह्रस्व उ आदर्श भोजपुरी की अन्त्यस्थिति में अतिह्रस्व होता है।

---

१. भोजपुरी भाषा और साहित्य—डॉ० उदय नारायण तिवारी, पृ० ७४

२. ,, ,, ,, ,, पृ० ७४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंगिका में ह्रस्व उ शब्द के अन्त में प्रयुक्त नहीं होता। भोजपुरी का शब्दान्त 'उ' अंगिका में अ, दीर्घ ऊ और व हो जाता है : यथा—

	भोजपुरी	अंगिका
उ>अ	सासु	सास
उ>ऊ	लाङु	लाङ़ू
उ>व	नाँउ	नाँव (नाम)

ए, ए॰ ए॰

अंगिका और भोजपुरी में ए तथा ह्रस्व ए का प्रचुरता से प्रयोग होता है। यह अर्द्धसंवृत कण्ठतालव्य प्रसृतोष्ठ्य अग्रस्वर है किन्तु, भोजपुरी में यह अर्द्धविवृत स्वर है। दीर्घ 'ए' अंगिका तथा भोजपुरी में शब्दों के आदि, मध्य और अन्त में प्रयुक्त होता है :

यथा—अंगिका : एक कनेल सकारे (सबेरे)
भोजपुरी : एक कनेर सकारे (सबेरे)

ह्रस्व ए॰ अंगिका शब्दों के आदि और मध्य में प्रयुक्त होता है, अन्त में नहीं; किन्तु, भोजपुरी ह्रस्व ए॰ आदि, मध्य, और अन्त में भी प्रयुक्त होता है। यथा—

अंगिका ए॰करा (इसको) मे॰मना (बकरी का बच्चा)
भोजपुरी ए॰केरार (इकरार) दे॰कुआरी (धृतकुमारी)
हँसे॰ले॰ (वह हंसता है)

डॉ॰ तिवारी के अनुसार भोजपुरी में अतिह्रस्व ए॰ का प्रयोग भी प्राप्त है; किन्तु, ह्रस्व ए और अति ह्रस्व ए॰ शब्दान्त में नहीं आते।[1]

सन्धि-स्वर और स्वर-संयोग

महाभाष्यकार ने ए, ओ, ऐ, औ को सन्ध्यक्षर कहा है।[2] डॉ॰ उदय नारायण तिवारी ने भी उपर्युक्त (ए, ऐ, ओ, औ) को सन्ध्यक्षर

---

१. भोजपुरी भाषा और साहित्य पृ॰ ७५।

२. एओङ् ऐऔच् इमानि सन्ध्यक्षराणि—महाभाष्य, द्वितीआह्निक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहा है।[1] उन्होंने सन्ध्यक्षर और स्वर-संयोग की व्याख्या करते हुए दोनों का अन्तर स्पष्ट किया है। किन्तु, उदाहरण में उन्होंने भोजपुरी संयुक्त स्वरों को भी अंकित किया है। वस्तुतः उपर्युक्त चार स्वरों का निर्माण दो-दो स्वरों की सन्धि से ही हुआ है क्योंकि दो स्वरों के सन्धि-जनित विकार से एक तीसरा स्वर विकसित होता है और मूल दो स्वरों का अस्तित्व इसी में समाहित हो जाता है, यथा—अ + इ = ए; अ + ए = ऐ; अ + उ = ओ; अ + ओ = औ। दूसरी ओर स्वर-संयोग में दो स्वर इस प्रकार संयुक्त होते हैं कि दोनों का अस्तित्व स्पष्ट रहता है; यथा—गइया, मउर आदि। अंगिका में उपर्युक्त स्वर ए, ऐ, ओ, औ सन्धि-स्वर अर्थात् सन्ध्यक्षर हैं। अंगिका में स्वर-संयोग के उदाहरण अप्राप्त हैं। भोजपुरी में सन्ध्यक्षर तथा स्वर-संयोग दोनों प्राप्त हैं :—ए और ओ सन्ध्यक्षर तथा ऐ और औ के स्थान पर क्रमशः अइ, अए तथा अ-उ, अ-ओ के स्वर-संयोग प्राप्त हैं। आगे अंगिका और भोजपुरी के सन्ध्यक्षरों तथा स्वर-संयोगों का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है :—

ऐ, अए, अइ

अंगिका में "ऐ" अर्द्धविवृत प्रसृतोष्ठ्य कण्ठ तालव्य अग्रस्वर है, यह शब्द के आदि मध्य और अन्त में प्रयुक्त होता है, यथा—ऐब (अवगुण), मैल, बोलबैं (एक प्रकार का लोक नाट्य)। भोजपुरी में ऐ के स्थान पर संयुक्त स्वर अइ का प्रयोग होता है यथा :—मइल (मैल) चइत (चैत), दइव (दैव), मनइ। भोजपुरी में ऐ के स्थान पर कहीं-कहीं अ-ए सन्ध्यक्षर (Dipthong) का प्रयोग होता है :— यथा—अएब (ऐब), कएलास (कैलास), बएल (बैल) आदि। अंगिका में अ-इ का संयोग अप्राप्त है।

ओ, औ

ओ अर्द्ध संवृत दीर्घ पश्च कण्योष्ठ्य स्वर है। अंगिका में इसके उच्चारण में ओठ भोजपुरी की अपेक्षा कुछ अधिक और बंगला से

---

१. भोजपुरी भाषा और साहित्य, डॉ० उदय नारायण तिवारी पृ—७६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ कम वर्त्तुल होते हैं। यह शब्द के आदि, मध्य और अन्त में प्रयुक्त होता है। यथा—

अंगिका—ओछऽ (छोटा) जोत (ज्योति) पल्लो (पल्लव)
भोजपुरी—ओछ (छोटा) जोत (,,) बोरो (बोड़ा)

अंगिका और भोजपुरी दोनों में ह्रस्व ओ का भी प्रयोग होता है। भोजपुरी में यह शब्द के आदि, मध्य और अन्त में प्रयुक्त होता है, किन्तु अंगिका में इसका अन्त्य प्रयोग अप्राप्त है। यथा—

भोजपुरी—ओसरा (बरामदा, आंगन का) बटोहिया कोरो (बाँस का कोरा)
अंगिका—ओसरा ,, बटोहिया अप्राप्त

औ, अउ

अंगिका में औ अर्द्धविवृत पश्च दीर्घ कण्ठौष्ठ्य स्वर है और यह शब्द के आदि, मध्य और अन्त में प्रयुक्त होता है। यथा—

औगल (अच्छा) गनौरऽ जौं (जाऊंगा)

भोजपुरी में औ के स्थान पर संयुक्त स्वर अउ का प्रयोग होता है: यथा—

कउआ (कौआ), मउर (मौर), लउर (लाठी)।

स्वर-संयोग

अंगिका में स्वर-संयोग का प्रयोग अप्राप्त है जबकि भोजपुरी में स्वर-संयोगों की प्रचुरता है। कुछ उदाहरण यहाँ दिये जा रहे हैं:—

अइ, अई पइसा, मइल, चिरई,
इअ, इआ—दिअरी (दीया) करिआ (काला), चदरिआ,
अउ उअ—हउए शोर), पुअरा (पुआल)

भोजपुरी इ-अ तथा उ-अ स्वर-संयोग में अ के स्थान पर अंगिका में क्रमशः य और व अर्द्ध स्वर का प्रयोग होता है। इस ध्वनि पद्धति में भोजपुरी प्राकृत का तथा अंगिका संस्कृत का अनुसरण करती है। यहाँ उदाहरण द्रष्टव्य हैं:—

	भोजपुरी	अंगिका
इ अ>य	दिअरी	दियरा
उ अ>व	पुआल	पुवाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी में तीन स्वरों का भी संयोग प्राप्त है : यथा—

अ उ अ—मउअति (मौत)। इ आ उ—ननिआउर (ननिहाल)

अ उ आ—कउआ (कौआ)। उ आ ई—आगुआई,

अंगिका में इनके रूप इस प्रकार हैं :—मौव्वत, ननिहर, कौव्वा अगुवं।

स्वरों में अनुनासिकता

अंगिका और भोजपुरी के प्रायः प्रत्येक स्वर में अनुनासिकता पाई जाती है। उदाहरण इस प्रकार हैं :—

अंगिका	भोजपुरी
अँ—अँचरा, हँस,	अँचरा, हँस,
आँ—आँख, आँच,	आँखि, आँच (आग की लपट)
अँ—करँ (करो), धरँ (रखो)	डँस, (ह्रस्व)
अँऽ—घँऽट, घरँऽ (घर में)	घँऽसु (घिसो), हँऽसु (हँसो)
आँ गाँव, पाँव,	—
आँ कनियाँन (बधू)	—
इँ—इँजोर, हिँसखऽ (आदत)	इँजोर, इँकड़ी (कँकड़ी)
ईँ—ईँटऽ (ईँट), सींघ	ईँटि, सींधि (सींग)
उँ—उँचका (ऊँचा स्थान), उँह,	खुँखड़ी, भुँजिया
ऊँ—ऊँट, बूँट	ऊँट, बूँट
एँ—एँड़ी, फेँट (मिलावट)	एँडी, फेँट (मिलावट)
एँ—एँड़िया (एँडी), फेँटबऽ (मिलाना)	एँड़िया, गेँडुरि (वृत्ताकार)
ओं—ढोंड़ (साँप विशेष) सोंफ, सोंठ	डोंड़, गोंड़ (जाति विशेष) सोंठि
ओं—खोंयछऽ	खोंपड़ी (खोपड़ी)
एँ—एँठ, एँठन, देखथें (देखते ही)	(अइँठ, अएँठन)
एँ—एँठ बोंकरी (अंहकार, एँठना)	—
औं—औंठ (कनारा), हौंस (हौसला)	(अउँठ, हउँस)
औं—औंकरी, बौंसली	(अउँकरी, बउँसरी)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुनासिकता से व्यतिरेक

भोजपुरी और अंगिका में अनुनासिकता से अर्थ-व्यतिरेक भी होता है, अतः अनुनासिकता का ध्वनिग्रामीय महत्व है। अनुनासिकता जनित व्यतिरेकी अल्पतम युग्म के कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं—

	अंगिका	भोजपुरी
आदिस्थिति—	आक (अकबन)	आक (अकबन)
	आँक (छानन, सूखी वस्तु चूण, मैदा आदि के लिए; तरल पदार्थ के लिए 'छाँक' होता है।)	आँक (अंक)
	आय (आज)	अकवार (समाचार-पत्र)
	आँय (पुकार के उत्तर में 'जी' के स्थान पर प्रयुक्त)	अँकवार (आलिंगन)
मध्य स्थिति—	चाक (कुम्हार का चाक)	बाट (रास्ता)
	चाँक (चौकस, काटना)	बाँट (बाँटना, हिस्सा)
	बास (वास-स्थान)	बास (वास-स्थान)
	बाँस (बांस)	बाँस (बाँस)
अन्त्य स्थिति—	करं (करे)	करी (करेगा)
	करँ (करो)	करीं (करें)

अंगिका और भोजपुरी की व्यंजन ध्वनियाँ

अंगिका और भोजपुरी में कुल पैंतीस व्यंजन ध्वनियाँ तथा अर्ध स्वर (य और व) हैं। दोनों भाषाओं में मूर्द्धन्य—ण, तालव्य—श, मूर्द्धन्य—ष, का उच्चारण अप्राप्त है। दोनों भाषाओं में नासिक्य ध्वनियाँ ङ, न, म की महाप्राण ध्वनियाँ भी ङ्ह, न्ह्, म्ह् प्राप्त हैं। इनके अतिरिक्त उक्षिप्त—ड़, लुंठित—र् तथा पार्श्विक ल्—की भी महाप्राण ध्वनियों ढ़, र्ह् तथा ल्ह् का प्रयोग प्रचलित है। दोनों भाषाओं में चवर्ग का पंचम वर्ण—ञ् का स्वतंत्र प्रयोग होता है। इसका उच्चारण 'यँ' जैसा होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंगिका और भोजपुरी के पार्श्विक ल्, ल्ह् के उच्चारण में इतना ही अन्तर है कि भोजपुरी में ल, ल्ह वर्त्स्य, किन्तु, अंगिका में ल्, ल्ह् तालव्य हैं।

दो भाषाओं में ड़, ढ़, ञ, ङ, ङ्ह्, म्ह्, र्ह्, ल्ह् ध्वनियों का शब्दों के मध्य और अन्त में प्रयोग होता है। किन्तु, शब्दों के आदि में इनका प्रयोग अप्राप्त है। शेष सभी व्यंजन ध्वनियाँ शब्दों के आदि, मध्य और अन्त में प्रयुक्त होती ह।

व्यंजन संयोग

अंगिका और भोजपुरी में व्यंजन ध्वनियों के संयोग खड़ी बोली हिन्दी की अपेक्षा बहुत कम पाये जाते हैं। तत्सम शब्दों में प्राप्य अधिकांश संयुक्त व्यंजन ध्वनियाँ इन भाषाओं में स्वर-भक्ति के कारण पृथक् स्थितियों में प्रयुक्त होती हैं, जैसे– प्रेम>परेम, धर्म>धरम, कर्त्तव्य>करतब आदि। अंगिका और भोजपुरी दोनों में शब्द के आदि में व्यंजन संयोग का अभाव है। मध्य और अन्त्य व्यंजन-संयोग और व्यंजन-द्वित्वों के उदाहरण दोनों में प्राप्त हैं : जैसे—

	अंगिका	भोजपुरी
क्+क्	कक्का, पक्का, चक्का	चक्कू, पक्की, कुक्कुर (चाकू कुकुर भी)
क्+ख्	मक्खी, मक्खा (कृपण)	मक्खी; अक्खड़,
क्+स्	झाक्सऽ, बक्सा, चिक्सऽ	एक्सठ, (एकसठ भी)
ग्+ग्	रग्गड़, एकबग्गा	झग्गड़,
ग्+घ्	बग्घी	सुग्घर
ट्+ट्	भुट्टा, पट्टी	नट्टी, भुट्टा, पट्टी
ठ्+ठ्	ठट्ठा, मट्ठा	ठाट्ठा, माट्ठा
ड्+ड्	अड्डी, बड्डी, हड्डी	अड्डा, हड्डी
त्+त्	पत्ता, कुत्ता	पत्ता, कुत्ता
त्+थ्	हत्था, कत्था	कात्था, हात्था
द+द्	भद्दा, गद्दी, जिद्दी	भद्दा, गद्दी, जिद्दी
द+ध्	अद्धी, मद्धिम	अद्धी, मद्धिम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

	अंगिका	भोजपुरी
प+प्	छप्पर, चुप्पी	छप्पर, चुप्पी
फ्+फ्	फुफ्फा	(फूफा)
ब्+ब्	रब्बी, झब्बा	रब्बी, झब्बा
ब्+भ्	गब्भा (निकलता हुआ नया पत्ता)	भब्भड़
च्+च्	चच्चा, बच्ची,	बुच्ची
च+छ्	बिच्छीऽ, अच्छा,	बिच्छी, आच्छा, बरच्छा
ज्+ज्	मुज्जा, वज्जड़	उज्जर
ज+झ्	सिज्झा	—
म्+म्	नम्मा, नम्मर	लाम्मा, लम्मर
न्+न्	कन्न, चन्नन	केन्ने (केने), चन्नन
र्+र्	कर्रऽ (कड़ा), कर्रा (एक पक्षी)	
ल्+ल्	हल्ला-गुल्ला	हाल्ला-गुल्ला
स्+त	वस्ता, कुस्ती	वस्ता, कुस्ती (कुसती भी)
स्+स्	खिस्सा, हिस्सा	हिस्सा, खिस्सा (खीसा, हीसा भी)
न+ख्	कन्खी	कन्खी
न्+त्	खन्ती	खन्ती
न्+म्	पन्थ, महन्थ, (महन्त भी)	पन्थ, महन्थ
न्+ट्	अन्टी, डन्टी	भन्टा, डन्टी
न्+ठ्	सन्ठी, कन्ठी	सन्ठा, कन्ठी
न्+छ्	कन्छा, पन्छी	पन्छी (पनछी भी)
न्+स्	उन्सठ, हन्स, बन्स	ओन्सठ, हन्स, बन्स
व्+व्	कौव्वा, झौव्वा	(कउआ झउआ)
य+य्	घैय्यर (चतुर) मय्या	(मइआ)

अंगिका और भोजपुरी संज्ञा

अगिका और भोजपुरी में संज्ञा प्रातिपदिक का अन्त स्वर या व्यंजन में होता है। अंगिका के शब्दान्त में ह्रस्व स्वर का प्रयोग नहीं होता; किन्तु, भोजपुरी में ह्रस्व का शब्दान्त प्रयोग भी होता है। दोनों भाषाओं में संज्ञा के अन्त्य व्यंजन अ ह्रस्व का अस्तित्व तो रहता है; किन्तु, वह हलन्त जैसा उच्चरित होता है। यहाँ अंगिका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और भोजपुरी के स्वरान्त संज्ञा के रूप उद्धृत किये जा रहे हैं—

अंगिका	भोजपुरी
आ—बच्चा, घोड़ा	आ - पंखा, खटिआ
अऽ—माथऽ, भौरकऽ (झोपड़ी)	इ—गाइ, आँखि
ई—गाड़ी, पानी	ई—पानी, छूरी
ऊ—मूँ (मुँह), बाबू (पिता, अमीर आदमी)	उ—सासु, आजु
ए—दे (देह), दूबे	ऊ—नाऊ, बालू
ऐ—मिरजै, तसमै	पाँड़े, चौबे
ओ—बगरो (गौरैया)	ओ—कोरो, बोरो (शाक विशेष)

अंगिका और भोजपुरी की सभी व्यंजन ध्वनियाँ संज्ञा के अन्त में प्रयुक्तहोती हैं :—जैसे—आक्, पाँख आदि। अतः यहाँ सभी को उद्धृत करना आवश्यक नहीं। कुछ विद्वान् इन व्यंजनांत शब्दों के अन्त में 'अ' स्वर की स्थिति मानते हैं। वस्तुतः प्रातिपदिक हलन्त होता है, किन्तु, प्रयोग में 'अ' के योग से वह पद बनता है। अतः प्रातिपदिक के रूप में आंख्, नाक् आदि में ख्, क् हलन्त व्यंजन है; किन्तु, नाक, आँख जब पद के रूप में प्रयुक्त होते हैं तब ये पद अजन्त हो जाते हैं।

संज्ञा के रूप

अंगिका और भोजपुरी में भी संज्ञा के तीन रूप मिलते हैं—लघु, गुरु, अतिगुरु या अनावश्यक। यथा—

	अंगिका	भोजपुरी
लघु	घऽर, घोड़ा, माली, चरन	घर, घोड़ा, माली, चरन
गुरु	घरबा, घोड़बा, मलिया, चरनमा	घरवा, घोड़वा, मलिआ, चरनवा
अतिगुरु	घरबबा, घोड़बबा, घोड़ब्बा मलियबा, मलियब्बा,	घरववा, घोड़ब्बा, मलिअबा मलिअव्वा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोनों भाषाओं में सामान्य या लघु रूपों में आ-बा, वा,-या प्रत्ययों के योग से गुरु रूप निर्मित होते हैं। संज्ञा और विशेषणों के लघु और गुरु रूप ही ज्यादा प्रचलित ह। अंगिका और भोजपुरी के गुरु रूपों में अन्तर यह है कि भोजपुरी में जहाँ-वा और-आ वहाँ अंगिका में—बा —मा और या प्रत्ययों का योग होता है। इसी प्रकार अंगिका के अतिगुरु रुपों में वा के स्थान पर बा और—मा प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं। उपर्युक्त प्रत्यय के जुड़ने पर संज्ञा प्रातिपदिक के उपधापूर्व आद्य दीर्घ स्वर ह्रस्व में परिणत हो जाते है : यथा—

मोहन–मोहना–मोहनमा। यहाँ लघुरुप मोहन का मो गुरु और अतिगुरु रुपों ह्रस्व मो हो गया है।

संज्ञा के भेद

अंगिका में संज्ञा के तीन भेद हैं –सामान्य संज्ञा (जाति वाचक), विशेष संज्ञा (व्यक्ति वाचक) तथा भाव वाचक। समूह वाचक और द्रव्य वाचक संज्ञाएँ भी सामान्य संज्ञा के अन्तर्गत हैं क्योंकि अंगिका में इनका कोई पृथक व्याकरणिक स्तर नहीं है। भोजपुरी के व्याकरण में अँगरेजी के अनुकरण पर इन दोनों संज्ञा-भेदों को भी रखा गया है, किन्तु, इनका विशेष महत्व नहीं है।

लिंग

भोजपुरी और अंगिका में दो लिंग हैं—पुँलिग स्त्रीलिंग। अंगिका में अप्राणी वाचक शब्द पुँलिग होते हैं। किन्तु, अप्राणी वाचक पदार्थ का मानवीकरण होता है अथवा उसमें देवत्व या मातृत्व की प्रतिष्ठा होती है तो उसमें भी लिंग आरोपित हो जाता है : यथा—

स्त्री-गंगा मैया, जमुना मैया, चानन मैया, पुं०–सुरुजदेबता, चान मामू, पीपर बाबा, गाछ रे गछेली मैया आदि।

अंगिका की भाषिक प्रकृति के कारण केवल प्राणी वाचक शब्दों में सीमित रहने के कारण अंगिका के लिंग-विधान में जटिलता नहीं है। हिन्दी में शिक्षित कुछ लोगों में अंगिका के अप्राणी वाचक एवं अनार्थक शब्दों को स्त्रीलिंग में प्रयोग करने की प्रवृत्ति देखी जाती हैं; किन्तु, उनका प्रभाव नगण्य है। भोजपुरी के वैयाकरणों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तथा लेखकों ने अप्राणी वाचक शब्दों को पुंलिंग और स्त्रीलिंग में विभक्त कर दिया है और राति, भीड़ि, जमाति, दुनिया, खाटी, रोटी, टोपी, ढोलकी, लोटकी, गगरी आदि ऐसे अनेक शब्दों को स्त्रीलिंग की श्रेणी में रखा है। लेकिन डॉ० तिवारी के अनुसार समूहवाची संज्ञापदों का लिंग अस्पष्ट है।[1] उनके कथनानुसार 'खड़ी बोली हिन्दी में शिक्षित भोजपुरी के मन में यह धारणा अवश्य रहती है कि इ-तथा ई से अन्त होनेवाले शब्द स्त्रीलिंग होते हैं; (किन्तु) भोजपुरी में इन शब्दों में लिंग-पार्थक्य नहीं है। कुछ लोगों के अनुसार अधिकतर अचेतन संज्ञाओं में बड़े आकार की चीजें पुंलिंग तथा छोटे आकार की चीजें स्त्रीलिंग हैं : यथा—

हउदा-पुंलिंग	हउदी-स्त्रीलिंग
बटुला ,,	बटुली ,,
खुरपा ,,	खुरपी ,,
पीढ़ा ,,	पिढ़ई ,,

किन्तु, आकार के आधार पर किसी पदार्थ का लिंग भेद करना सर्वथा अवैज्ञानिक है।

मेरे ख्याल से छिपुली, लोटकी, गगरी, ढोलकी, डिबिया जैसे शब्द ऊनार्थक हैं, न कि स्त्रीलिंग। भोजपुरी को बिल्कुल अनपढ़ जनता द्वारा अप्राणी वाचक शब्दों के लिंग-प्रयोग को ही भोजपुरी की मौलिक प्रकृति मानना उचित होगा। इस सम्बन्ध में भोजपुरी के विद्वान-लेखकों से मेरा विनम्र प्रस्ताव होगा कि यदि अप्राणी वाचक शब्दों को स्त्रीलिंग-पुंलिंग की जटिलता से मुक्त कर दिया जाय तो भोजपुरी के भाषिक स्वरूप की प्रियता एवं सहजता में अभिवृद्धि ही होगी।

अंगिका और भोजपुरी दोनों में दो भिन्न शब्दों द्वारा तथा पुंल्लिग शब्दों में स्त्रीलिंग प्रत्यय के योग से लिंग भेद प्रकट होता है : आगे उदाहरण दिये जा रहे हैं यथा—

---

१. भोजपुरी भा० सा०—पृ० १८६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

	अंगिका		भोजपुरी	
(क)	पुँलिंग	स्त्रीलिंग	पुँलिंग	स्त्रीलिंग
	बाप	माय	बाप	माई
	भाय	बहिन	भाई	बहिन
	बरद	गाय	बैल	गाइ
	राजा	रानी	राजा	रानी

(ख) अंगिका के पुँलिंग शब्दों में मुख्यतः -ई, -इन, -नी, -आन (आयन), -ऐन आदि स्त्री प्रत्ययों के योग से स्त्रीलिंग शब्द बनाये जाते हैं। भोजपुरी में —ई, —इन, —आइन, —आनी आदि प्रमुख स्त्री प्रत्यय हैं। —ई, —इन प्रत्यय दोनों भाषाओं में समान हैं; किन्तु, भोजपुरी के —आइन, और —आनी के स्थान पर अंगिका में—आन (—आयन), -ऐन प्रत्यय लगते हैं। यहाँ अंगिका और भोजपुरी के उपर्युक्त प्रत्यय युक्त कुछ शब्द उद्धृत किये जा रहे हैं—

अंगिका		भोजपुरी	
पुँलिंग	स्त्रीलिंग	पुँलिंग	स्त्रीलिंग
चच्चा (चाच्) + ई = चाची		चाचा (चाच्) + ई = चाची	
कुमारS (कुमार्) + ई = कुमारी		कुँआर (कुँआर्) + ई = कुँआरी	
सोनार (सोनार्) + इन = सोनारिन		सोनार (सोनार्) + इन = सोनारिन	
दुसाध (दुसाध्) + इन = दुसाधिन		दुसाध (दुसाध्) + इन = दुसाधिन	
धोबी (धोब्) + इन = धोबिन		धोबी (धोब्) + इन = धोबिन	
मोर (मोर्) + नी = मोरनी		मोर (मोर्) + नी = मोरनी	
घँसगढ़ा (घँसगढ़्) + नी = घँसगढ़नी		घँसगढ़ा (घँसगढ़्) + नी घँसगढ़नी	
हाथी (हथ्) + नी = हथनी		हाथी (हथ्) + नी = हथनी	
ओझा (ओझ्) + आयन = ओझायन		ओझा (ओझ्) + आइन = ओझाइन	
दूबे (दुब्) + आयन = दूबायन		दूबे (दुब्) + आइन = दुबाइन	
सेठ (सेठ्) + आयन = सेठायन		सेठ (सेठ्) + आइन = सेठाइन	
		सेठ (सेठ्) + आनी = सेठानी	
मेहतर (मेहतर) + आयन = मेहतरायन		मेहतर (मेहतर) + आनी = मेहतरानी	

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चमार (चम्) + ऐन = चमैन
चमार (चम) + इन = चमइन
दुलहा (दुलह्) + ऐन = दुलहैन
दुलहा (दुलह्) + इनि = दुलहिनि
कुम्हार (कुम्म्) + ऐन = कुम्हैन
कुम्हार (कुम्ह् + इन) = कुम्हइन

पूर्वोक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि स्वराद्य स्त्री प्रत्यय के योग से पुँलिंग शब्द का अन्तिम व्यंजन हलन्त हो जाता है और कुछ शब्दों का उसके पूर्व का, दीर्घ स्वर ह्रस्व में परिणत हो जाता है। किसी-किसी पुँलिंग शब्द के अन्त्य व्यंजन का लोप भी हो जाता। यथा—

कुम्हार—कुम्हैन (अंगिका), कुम्हइन (भोजपुरी)।

अंगिका और भोजपुरी दोनों भाषाओं म कुछ प्राणीवाचक शब्द सदा पुँलिंग तथा कुछ सदा स्त्रीलिंग माने जाते हैं। यथा—

पुँलिंग—कौवा (कौआ—भोज०), कबुतर झिगुर, उड़ीस, हुड़ार, तोता, लेरु, स्त्रीलिंग—मैना (मइना—भोज०) माछो, मछरी, लुक्खी, (रूक्खी—भोज०)

कुछ शब्दों में 'नर' और 'मादा' जोड़कर स्त्रीलिंग और पुँलिंग का भेद किया जाता है। यथा—

नर-कबुत्तर, (कबूतर—भोज०), मादा-कबुत्तार (कबूतर—भोज०), नर-खरगोस, मादा-खरगोस। कबूतर का स्त्रीलिंग रूप—कबुतरी भी होता है।

भोजपुरी में विशेषण और क्रिया के प्रयोग द्वारा लिंग-भेद प्रकट होता है। यथा—

विशेषण द्वारा—बड़का लइका—पुँलिंग
बड़की लइकी—स्त्रीलिंग

क्रिया द्वारा—लड़का जाता—पुँलिंग
लइकी जातिया—स्त्रीलिंग

अंगिका में विशेषण, सम्बन्ध कारक परसर्ग तथा क्रिया के कुछ रूपों द्वारा लिंग-भेद प्रकट होता है। यथा—

विशेषण द्वारा—बड़का लड़का—पुँलिंग
बड़की लड़की—स्त्रीलिंग

सम्बन्ध कारक परसर्ग द्वारा—रामऽ रऽ बेटा, रामऽ केरऽ बेटा—पुँलिंग
रामऽ री बेटी, रामऽ केरी बेटी—स्त्रीलिंग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्बोधन कारक द्वारा— रे, अरे बेटा—पुंलिंग
गे, अगे बेटी—स्त्रीलिंग
हमरी बेटी गेली (मेरी बेटी गयी)।

क्रिया द्वारा लिंग भेद—निम्नलिखित स्थितियों में ही अंगिका में क्रिया द्वारा लिंग भेद प्रकट होता है—

(क) उत्तम पुरुष से कर्त्ता का सम्बन्ध रहने पर सामान्य भविष्यत तथा सामान्य भूत में क्रिया स्त्रीलिंग होती है—

हमरी बेटी गेली मेरी बेटी गयी)
हमरी बेटी जैती (मेरी बेटी जायगी)

किन्तु, अन्य पुरुष और मध्यम पुरुष से कर्त्ता का सम्बन्ध रहने पर क्रिया द्वारा लिंग-भेद नहीं होता। यथा—

ओकरी बेटी गेलै (उसकी बेटी गयी)
तोरी बेटी जैतौ (तुम्हारी बेटी जायगी)।

तात्कालिक वर्त्तमान तथा अपूर्णभूत काल की क्रियाओं में भी क्रिया लिंग के अनुसार प्रयुक्त होती है : यथा—

सीता जाय रहली छै (सीता जा रही है)। राम जाय रहलऽ छै।
राधा जाय रहली छेलै (राधा जा रही थी)। मोहन जाय रहलऽ छेलै।

वचन

अंगिका और भोजपुरी दोनों भाषाओं में दो ही वचन हैं—एक वचन और बहुवचन। अंगिका में -सिनी, -सनी, -आरनी, -आनी, -आर, -आरो आदि समूहवाची प्रत्ययों के योग से शब्दों के बहुवचन रूप बनाये जाते हैं। इसी प्रकार भोजपुरी में भी -न, -अन, -इन, -उन, -अन्ह, -अन्हि, -न्ह, -अनि आदि बहुवचन प्रत्यय हैं। इनके अतिरिक्त अंगिका में सब, लोग तथा भोजपुरी में सभ, लोग, लोगन्, लोगनि, लोगन्ह, लोगन्हि जैसे समूहवाची शब्दों के योग से बहुवचन रूप सिद्ध होते हैं। दोनों भाषाओं के बहुवचन प्रत्ययों की तुलना से स्पष्ट है कि दोनों में न् विद्यमान है जिसका सम्बन्ध संस्कृत के बहुवचन प्रत्ययों से सहज ही जोड़ा जा सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यहाँ अंगिका और भोजपुरी के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

अंगिका		भोजपुरी	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बुतरू + सिनी =	बुतरूसिनी	लइका + न =	लइकन
मौगी + सनी =	मौगीसनी	गाइ + अन =	गइअन
बुतरू + आरनी =	बुतरुआरनी	गाइ + अन्ह =	गइअन्ह
बुतरु + आनी =	बुतुरुवानी	गाँव् + अन्हि =	गाँवन्हि
घोड़ा + आरो =	घोड़ाआरो	गाइ + न्ह =	गाइन्ह
घोड़ा + आर =	घोड़ाआर	दिआ + अनि =	दिअनि
वोकिल + लोग =	वोकिललोग	मोकिल + लोग =	मोकिललोग
अमला + सब =	अमलासब	नेता + लोगनि, लोगन्हि =	नेतालोगन, नेतालोगन्हि

कभी-कभी समानार्थी या पर्यायवाची शब्दों के योग से भी बहुवचन रूप सम्पन्न होते हैं : यथा—

अंगिका—लुङा-फट्टा, बरतन-बासन, कागज-पत्तर, बुतरु-बच्चा (बुतरू-बानर भी), चीज-बस्तर,

भोजपुरी— कपड़ा-लत्ता, बरतन-बासन, कागच-पत्तर, बुतरू-बाचा, चीज-बतुस

भोजपुरी और अंगिका दोनों भाषाओं में एकवचन के पूर्व संख्यावाची शब्द रहने पर अथवा सब, सभ्भे, सभ आदि बहुवचन या समूहवाची शब्दों के रहने पर बहुवचन रूप में कोई परिवर्त्तन नहीं होता अर्थात् एकवचन रूप से ही बहुवचन का भाव प्रकट होता है : यथा—

अंगिका		भोजपुरी	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
एक आदमी	दस आदमी	एक आदमी	दस आदमी
एक लड़का	बीस लड़का	एक लइका	बीस लइका
एक मौगी	सब मौगी	एक मेहरारू	सभ मेहरारू
एक बुतरू	सभ्भे बुतरू	एक बाचा	सभ बाचा
एक ठो आम	तीस ठो आम	एकगो आम	तीस गो आम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कारक

अंगिका और भोजपुरी में भी आठ कारक माने जाते हैं। यहाँ दोनों के कारकरूपों पर विचार करना आवश्यक है। भोजपुरी में कर्त्ताकारक का केवल मूल रूप ही प्रयुक्त होता है। अर्थात् कर्त्ता की कोई विभक्ति नहीं होती। अन्य बिहारी भाषाओं, मगही और मैथिली में भी कर्त्ता का मूल रूप ही प्रयुक्त होता है। किन्तु अंगिका की यह विशेषता है कि इसमें कर्त्ता के तीन रूप पाये जाते हैं: मूल, संश्लिष्ट और परसर्गसहित। अंगिका की अकर्मक क्रियाओं में कर्त्ता का मूल रूप प्रयुक्त होता है यथा—राम गेलै (राम गया)। किन्तु सकर्मक क्रियाओ में कर्त्ता में—नेँ परसर्ग का योग होता है यथा – रामं नेँ खैलकै (राम ने खाया), हरी नेँ पढ़लकै। कर्त्ता का नें परसर्ग नहीं लगने पर मूल शब्द का अन्त्य स्वर विकल्प से अँ एँ और अं में परिणत हो जाता है और इस प्रकार कर्त्ता का संश्लिष्ट रूप सिद्ध होता है। यथा—रामें पढ़लकै, मोहन खैलकै आदि। संज्ञा के अन्त में आ, ई, ऊ या य रहने पर सानुनासिक हो जाता है यथा—घोड़ा मारलक, हरीं देखलकै, मंगलूं टाका लेलकै, गायं खैलकै, देखलकै। एक विशेषता और है कि उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष के कर्त्ता में 'नें' परसर्ग लगता ही नहीं। इसका स्पष्ट कारण यह है कि इनमें पहले से ही सानुनासिकता विद्यमान है जिससे कर्त्ता का संश्लिष्ट रूप सिद्ध हो जाता है। यथा—हम्में खैलियै तोहें खैलं, आपनें खेलियै आदि कर्ता का चिह्न लगने से अर्थ व्यतिरेक हो जाता है। यथा—बकरीं खैलकै (बकरी ने खाया), बकरी खैलकै (बकरी को खाया)।

अंगिका कारक रूपों के सम्बन्ध में यह भी ज्ञातव्य है कि अकारान्त तथा अऽकारान्त शब्दों में परसर्ग लगने पर उसमें विकार भी होता है। जैसे–राम+ने=रामेंने, माथऽ+में, = माथा में राम+कं=रामऽ कं माथऽ+रऽ=माथारऽ आदि।

भोजपुरी कर्मकारक में के परसर्ग का प्रयोग होता है, किन्तु अंगिका में कं' परसर्ग का योग होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यथा— भोजपुरी—राम के समुझाव ।
अंगिका—रामऽ क' समझाबऽ ।

भोजपुरी और अंगिका दोनों भाषाओं के कर्म, करण, सम्प्रदान अपादान, अधिकरण तथा सम्बोधन कारक रुपों में पृथक् रुप से समानान्तर परसर्गों का प्रयोग होता है जो दी हुई तालिका से स्पष्ट है। परन्तु, अंगिका के सम्बन्ध कारक के रूपों की विशेषता को यहां दरसाना उचित होगा। हिन्दी खड़ी बोली तथा भोजपुरी, अंगिका, मगही, मैथिली जैसी बिहारी भाषाओं में सम्बन्ध कारक में क् और र् ध्वनिमूलक परसर्ग होते हैं।

अंगिका को छोड़कर इन सभी भाषाओं के सर्वनाम में ही र् ध्वनि के संयोग से सम्बन्ध कारक के रुप सिद्ध होते हैं। यथा—

भोज० हमार, तोहार, ओकर मगही हम्मर, तोर, ओकर
अंगिका हमरऽ, तोरऽ, ओकरऽ मै० हमर, तोहर, ओकर

किन्तु अंगिका में संज्ञा में भी रऽ, री (स्त्री०) परसर्ग के योग से सम्बन्ध कारक-रुप बनाये जाते हैं।

यथा— रामऽ रऽ किताब, गायरऽ दूध, मोहनऽ री बेटी आदि

यहाँ अंगिका और भोजपुरी के कारक-रुपों को उद्धृत किया जा रहा है—

	अंगिका	भोजपुरी
कर्त्ता—	राम, रामें रामं, रामेंने, रामं ने	राम
कर्म—	रामऽ क', राम	राम, राम के, राम क(अल्पप्रयोग)
करण—	रामऽ सें घरऽ सें	राम से, राम ले,
सम्प्रदान—	रामऽ लं, रामऽ क' रामऽ लेली, लेलीं, लेलू, लेलऽ, वास्तें,	राम से, राम के, राम ले, लोगि, खातिर, वास्ते
अपादान—	रामऽ सें,	राम से,
सम्बन्ध—	रामऽ रऽ, रामऽ के, रामऽ केरऽ रामऽ केरी, भोर कऽ,	राम के, राम क, राम का
अधिकरण—	राम में, राम पर, राम पं, घरऽ, भोरऽ, भोरे	राम में राम पर, घरें, घरे, भोरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्बोधन—हो, अहो, हे, अहे, रे, अरे, हेरे हे, ए, अरे, हो, रे राम, ए राम, जी, अजी मोहन, गे, अगे, माई, अरे बुचिया, रे भौजी, हेगे लाय, गे नुनियाँ, हे, अहे हे सखी, रे तेतरी भौजी, अजी सक्खी, गेतेतरी,

दिये गए कारक रुपों से स्पष्ट है कि भोजपुरी में स्त्रीलिंग संज्ञा के लिए भी ए, अरे, रे सम्बोधन का प्रयोग होता है जबकि अगिका में ए, अरे, का पुंलिंग में ही व्यवहार होता है।

सर्वनाम

अंगिका और भोजपुरी में सर्वनाम के मुख्य छः भेद हैं—पुरुष वाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, निजवाचक, सम्बन्धवाचक और प्रश्नवाचक। सभी सर्वनामों के तीन रुप होते हैं—अविकारी, विकारी या तिर्यक और सम्बन्ध कारकीय। यहाँ तुलनात्मक रुप तालिका प्रस्तुत की जा रही है।

पुरुषवाचक

	अंगिका		भोजपुरी	
	ए० व०	ब० व०	ए० व०	ब० व०
उ० पु० अवि०	हम्में,	हम्मैं सिनी, (हमरा सिनी भी)	हम	हमनी, हमनीका
वि०	हमरा	हमरा सिनी	हमरा	हमरा, हमनी के
सम्बन्ध, का०	हमरः,	हमरा सिनी रऽ, के, केरऽ	हमार,	हमनी के, हमारि(स्त्री०)
म० पु० अवि०	तोईं, तों,	तोहें सिनी,	तूं, तूँ, रवाँ	हमनी सभ के
	आपनें (आदर)	आपनें सिनी	रउरा	तोहनी, तोहन
वि०	तोरा, तोहरा, तोरहा,	तोए सिनी, तोहरा सिनी, तोरह, सिनी	तोहार, रउआ,	तोहनी, तोहन तोहनी सभ रवाँसभ, रउआ सभ
सम्बन्ध का०	तोरः,	तोरासिनी रऽ, तोहरासिनीकेरऽ	तोहार,	तोहनी सभ के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तोहरऽ, तोर्हऽ, आपने रऽ; तोरी, तोहरी तोर्ही, आपने री (स्त्री०)	केरऽ तोहरासिनीरऽ, (क, केरऽ) तोरासिनी रो, केरी आदि (स्त्री०)	राउर	रउरा सभ के
अन्य पु० अवि० ऊ, हो (बें, में कर्त्ता) आ० हुनी,	ऊसिनी-सब, हौंसिनी, सब आदि आ० हुनका, सिनी सभ आदि	ऊ, हऊ	उन्हन, उननी ऊसभ, ऊलोग आ० ऊहाँका
वि० ओकरा, होकरा	ओकरा सिनी, होकरा -सिनी,- सब, आरनी		ओहनी ओकरा उन्हनी के
सम्बन्ध का० ओकरऽ, होकरऽ, होकरी (स्त्री०)	ओकरा सिनी रऽ होकरा सिनी रऽ, (के, केरऽ)	होकर, ओकरी, होकरी (स्त्री)	हुन्हनी के आदि
आ० आपने रऽ आपने री (स्त्री)		त्रिका०	होकरा उन्हकरा ओकरा,

अन्य पुरुष निकटवर्त्ती

अवि० ई, है, यें हिनीं,	ईसिनी, हैसिनी एकरासिनी, हिनी	ई, हई इहाँ का	इन्हन, इन्हनी इन्हिका हिन्हिका
वि० एकरा, हेकरा, हिनका	हेकरासिनी हिनका -सिनी	(आ०)	-सभा, -सभन लोगन अदि
सम्बन्ध-एकरऽ, हेकरऽ हिनकऽ	एकरा सिनी रऽ हेकरा सिनी रऽ	एकरि, हेकरि (स्त्री)	इन्हिकर हिकर
एकरी, हेकरी, हिनकी (स्त्री०)	हिनकासिनी रऽ	इकर, हेकर	इन्हिकरि हिन्हिकरि (स्त्री०)

ज्ञातव्य है कि भोजपुरी पुँल्लिग और स्त्रीलिंग दोनों के लिए हमार, तोहार, होकर, हेकर का प्रयोग ही होता है; किन्तु, कभी-कभी और किसी-किसी क्षेत्र में स्त्रीलिंग के लिए हमारि, तोहारि, होकरी, हेकरी आदि का भी प्रयोग होता है। इसके विपरीत अंगिका में स्त्रीलिंग के लिए हमरी, तोहरी, ओकरी आदि का ही प्रयोग होता है; किन्तु, यदा-कदा प्रमादवंश कुछ लोग स्त्रीलिंग विशेष्य के लिए भी हमरऽ, तोहरऽ, ओकरऽ आदि का प्रयोग करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनिश्चयवाचक

अंगिका		भोजपुरी	
अवि०	कोय, कोयें	कोयसिनी आदि	केहू, केऊ, केओ केहू-केऊ, केओ सब
वि०	के.कर्हो,	के.करहौसिनी	वि०, कवनो कवनोलोग
सम्बन्ध०	केकरो	के.करहौसिनीरऽ,-री-	,, ,,
	के.करियो(स्त्री)	केरी	सम्ब० वि० के.करा, के.हकरा, किन्हिकर ..

अनिश्चयवाचक : मनुष्येतर प्राणी तथा जड़

अंगिका			भोजपुरी	
अवि०	कुछ, कुच्छू	व० व० रूप नहीं	किछु, कुछु	×
	वि० कर्त्ता-कूथूं	होता; एक० व०	किछुओ, कुछुओ	×
वि०	कथू, कुच्छू	ही ब० व० के लिए	,,	
सम्बन्ध	कुच्छूरऽ, कथूरऽ,	प्रयुक्त होता है।		

सम्बन्धवाचक

अंगिका		भोजपुरी	
अवि०	जे, जोन	जेसिनी, जेकरासिनी	जे, जवन जौनजिन्हि जे, जवनलोग
	वि०जें, जौने आ० जिनों		जे, जवने जे. जवनेलोग
वि०	जेकरा, जिनका(आ०)	जेकरासिनी, जिनका-सिनी	जेकर, जेकरि (स्त्री), जिन्हन जिन्हनीलोग
सम्बन्ध	-जेकरऽ, जेकरी (स्त्री०)	जिनकासिनी	रऽ,-री जेकर, जेकरि (स्त्री०) जेहकर, जिन्हिकर आदि
	जिनकऽ, जिनकी (आ०)	जिनकासिनीरऽ, -री	जेहकर, जिन्हिकर विका० जेकरा, जिन्हिकरा जेहकरा आदि

अंगिका में सम्बन्ध वाचक सर्वनाम 'जे' का नित्य सम्बन्धी या संगतिमूलक 'से', हैं; 'से' के स्थान पर ऊ और हौ रूपों का भी प्रयोग होता है। इसी प्रकार भोजपुरी में नित्यसम्बन्धी से, ते, तवन के विकारी आदि रूप होते हैं। प्रश्नवाचक सर्वनाम के अंगिका में के, कोन, तथा भोजपुरी में के, कवन के रूप पूर्वोक्त जे, जोन, जवन के समानान्तर ही होते हैं। की, कथी अं) तथा का, कथी (भो०) से मनुष्येतर रूप बनते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विशेषण

अंगिका और भोजपुरी में विशेषण के पाँच भेद हैं—

गुणवाचक—लाल, छोटऽ-छोट (भोज०); परिणामवाचक—ढेर, कम; संख्यावाचक—तीन, दोसरऽ-दूसर (भोज०); सार्वनामिक-ओकरऽ, होकर (भो०), ई गाय, ऊ आदमी; व्यक्तिवाचक—भागलपुरी, बनारसी, आदि।

दोनों भाषाओं में विशेषणों के लघु, गुरु और गुरुतर रूप होते हैं; यथा—

अंगिका—	छोटऽ	छोटका	छोटकबा,
	गोरऽ	गोरका	गोरकबा
भोजपुरी—	छोट	छोटका	छोटकबा
	गोर	गोरका	गोरकबा

उपर्युक्त विशेषणों के कई उपभेद हैं जो दोनों भाषाओं में समान स्तर पर हैं। केवल कुछ ध्वन्यात्मक परिवर्त्तन के अतिरिक्त प्रयोग में कोई अन्तर नहीं है।

क्रिया

अंगिका और भोजपुरी में दो प्रकार की धातुओं का प्रयोग होता होता है :—मूल या सिद्ध तथा यौगिक या साधित।

मूल धातुएँ चार प्रकार की हैं :—

(क) संस्कृत की तत्सम तथा अर्द्ध तत्सम धातुएँ—जो मूल रूप में अंगिका और भोजपुरी में प्रयुक्त हैं : यथा—चल्<सं० चल्; जप्<सं० जप्; जित्<सं० जित्; गन्, गिन्<सं० गण्; तप्, तब्<सं० तप्।

(ख) संस्कृत मूल धातुओं से विकसित तद्भव धातुएँ—यथा—अरज्<सं० अर्ज्; अरप<सं० अर्प; कर<सं० कृ; क्रान्<सं० क्रन्द; कह्<सं० कथ्; सोपसर्ग धातुएँ—उरेह्<सं० उत्+रेख्; बिसर्<सं० वि+स्मृ।

(ग) णिजन्त अथवा प्रेरणार्थक धातुएँ जो संस्कृत प्रेरणार्थक धातुओं से विकसित हैं : यथा—मार्<सं० मारयति; जरा<सं० ज्वालयति;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(घ) अंगिका और भोजपुरी में अनेक ऐसी धातुएँ हैं जिनका संस्कृत मूल अप्राप्त अथवा अनिर्देश्य हैं। इन धातुओं को देशज या देशी कहा जाता है। यथा—

भोजपुरी—ओल्ह (एक से दूसरी शाखा पर कूदना), अवाँस् (प्रथम बार प्रयोग करना); चहेट् (पीछा करना), चिहुक् (चौंकना), बिटोर् (एकत्र करना)

अंगिका—ओल (मोटे अनाज या पदार्थ को अलग करना); ओड़ाना (प्रथम बार प्रयोग करना) रगेद् (पीछा करना); चौंक् (चौंकना); बटोर् (एकत्र करना) औंसना (थोड़ा तेल लेकर घसना)।

यहाँ अंगिका और भोजपुरी धातुओं में समता और विभेद स्पष्टः देखा जा सकता है।

अंगिका और भोजपुरी में भी यौगिक या साधित धातुओं को पाँच भागों में बाँटा जा सकता है—

(क) आकारान्त णिजन्त धातु—भोजपुरी और अंगिका दोनों में आकारान्त णिजन्त अर्थात् प्रेरणार्थक धातुओं की प्रचुरता है। भोजपुरी धातु में—आव प्रत्यय के योग से प्रेरणार्थक क्रिया बनायी जाती है : यथा—बइठ > बइठाव; लिख् > लिखाव

अंगिका में—आव के स्थान पर -ऐबऽ हो जाता है : यथा—

प्रयोग—बइठावता बैठता है लिखाई है (लिखायगा)।

भोजपुरी-आव और अंगिका के-ऐबऽ की उत्पत्ति सं० आप से हुई है। भोजपुरी और अंगिका में भी द्विगुण णिजन्त के प्रयोग प्राप्त हैं जो भोजपुरी में—वाव् और अंगिका में—बैबऽ प्रत्यय के योग सिद्ध होते हैं। दोनों प्रत्ययों की उत्पत्ति संस्कृत—आप्+-आप से हैं। अंगिका और भोजपुरी प्रत्ययों में केवल ध्वन्यात्मक भेद हो गया है। प्रयोग—भोजपुरी—लिखवावता (लिखवाता है), बइठवाई (बैठवायगा), अंगिका—लिखवाय छै (लिखवाता है), बैठैबैतै (बैठ-वायगा)।

(ख) नाम धातु—अंगिका और भोजपुरी में संज्ञा, विशेषण और अव्यय में—शून्य,-आठ,-इया,-आ, आदि प्रत्ययों के योग से निर्मित नाम धातुओं के प्रचुर प्रयोग हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बात + -आ बतिआ—अं० बतियाय छै भो० बतिआवता (बतियाता है)
लाल + -आ = ललिआ—अं० ललियाय गेलै भो० ललिआ गइल (लाल हो गया)
भीतर + -आ = भितरा—अं० भितराय गेलै भो० भितर गइल (भीतर गया)
छेद + ० = छेद—अं० छेदै छै भो० छेदता (छेद करता है)
हूरा + -आठ = हुराठ—अं० हुराठै छै भो० हुराठता (हूरा से मारता है)

(ग) मिश्रित या संयुक्त धातु—अंगिका और भोजपुरी में मिश्रित धातुओं अर्थात् दो धातुओं के मिश्रण से बनी धातुओं का भी प्रयोग प्राप्य है। कुछ मिश्रित धातुओं के उदाहरण इस प्रकार हैं :—

पसता<पश्चात् + ताप् (पछताना)
फूंक<फुत् + कृ (फूंकना)
रोक<रुध् + कृ (रोकना)

(घ) अनुकरणात्मक धातु :—अंगिका और भोजपुरी दोनों ध्वनियों के अनुकरण पर अनेक धातु निर्मित हैं, यथा—

टप्>टपक्, टप-टपा, कड़>कड़कड़ा; ठक्>ठोक्, ठक-ठका; खट्>खट्खटा।

(ङ) यौगिक धातुओं में अज्ञातमूल देशी धातुओं की भी बहुलता है।

संयुक्त क्रिया

दो या तीन धातुओं के योग से संयुक्त क्रिया सिद्ध होती है। अंगिका और भोजपुरी में संयुक्त क्रियाओं के विपुल प्रयोग प्राप्त हैं। संयुक्त क्रिया में पूर्व या मुख्य क्रिया—क्रियार्थक संज्ञा अथवा कृदन्त के रूप में प्रयुक्त होती है। अर्थ की दृष्टि से पूर्व क्रिया मुख्य और पर-क्रिया सहायक होती है, किन्तु, रूप की दृष्टि से पर—क्रिया मुख्य होती है क्योंकि काल, रीति, वाच्य, पुरुष के अनुसार पर-क्रिया ही प्रयुक्त होती है।

संयुक्त क्रिया वस्तुतः क्रिया का मुहावरा अर्थात् मुहावरेदार प्रयोग है जिसे वैयाकरणों ने संयुक्त क्रिया कहा है। डॉ० केलाग के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुसार यह संयुक्त क्रिया न होकर कृदन्त, क्रियार्थक संज्ञा अथवा संज्ञा और क्रिया का समूह है।[1]

यहाँ अंगिका और भोजपुरी की कुछ संयुक्त क्रियाओं के उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(क) सामर्थ्यबोधक—मुख्य क्रिया के आगे सक्, पार् धातु के योग से बनती है: यथा—

अंगिका—जाब पारबऽ, दिय सकबऽ, बैठ पैबऽ
भोजपुरी—जाए पारल, दिए सकल, बइठ पावल

(ख) आरम्भ बोधक—मुख्य क्रिया में लग्, लाग् धातु के योग से बनती है—

अंगिका—कह लागबऽ,
भोजपुरी कहे लागल,

(ग) समाप्ति बोधक—मुख्य क्रिया में चुक्, ले धातु के योग से—

अंगिका—करी चुकबऽ, खाय लेबऽ
भोजपुरी—चुकल, खाए लेब

(घ) एकार्थक धातु—दो समानार्थ अथवा मिलते-जुलते धातुओं के योग से—तथा दो भिन्नार्थक धातुओं के योग से—

(१) अंगिका—चलबऽ-फिरबऽ, मारबऽ-पीटबऽ
भोजपुरी चलल-फिरल, मारल-पीटल

(२) अंगिका—देखबऽ-सुनबऽ, पढ़बऽ-लिखबऽ
भोजपुरी—देखल-सुनल, पढ़ल-लिखल

इस प्रकार अंगिका और भोजपुरी संयुक्त क्रियाओं के अर्थ एवं रूप के अनुसार भेदोपभेद हैं।

सहायक क्रिया

उपर्युक्त धातुओं के अतिरिक्त क्रिया की रूप रचना में सहायक क्रियाओं का भी महत्वपूर्ण स्थान है। अंगिका में 'छ' मूलक सहायक क्रियाओं का प्रयोग होता है, कुछ अर्थों में 'र्ह्' मूलक सहायक

1. A Grammar of Hindi Language—Kellog δ 425 p 258

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रियाएं भी प्रयुक्त होती हैं। डॉ० टर्नर ने 'आक्षेति' तथा डॉ० चटर्जी ने भारोपीय <एस् + विकरण स्क<सं० च्छ इसकी उत्पत्ति बताई है। किन्तु, इसकी उत्पत्ति सं० अस् से मानना अधिक युक्ति-संगत लगता है। यथा—सं० अस्>प्रा० अच्छ>आ० भा० आ० भा० अछ, अछै, आछे, छै आदि। अंगिका आदि लोकभाषाओं में स् का छ् में परिवर्त्तन के और भी उदाहरण उपलब्ध हैं : यथा—सं० साक्षात् >छछात, छच्छात, छहाछत, सं० वत्स>बाछा आदि। भोजपुरी में 'ह्' और 'ब्' मूलक सहायक क्रियाएँ हैं। र् ह् अंगिका और भोज-पुरी दोनों में है। 'ह्' की उत्पत्ति सं० अस् तथा 'हो' 'भे' 'भइल' आदि की उत्पत्ति सं० भू से है। बाटे', 'बाड़े', बानी आदि की उत्पत्ति सं० वर्त्तते से मानी जाती है। भोजपुरी 'होख' की उत्पत्ति सं० भू+खलु तथा न-खे को स० न+अक्षेति से मानी गयी है। अंगिका और भोजपुरी 'रह्' की उत्पत्ति सं० अर्ह से है।

क्रिया के प्रकार, वाच्य, रीति आदि पर सम्यक विचार करना यहाँ सम्भव नहीं है। अब मैं संक्षेप में क्रिया की काल रचना एवं रुपावली पर विचार करना चाहता हूँ। क्रिया की रुप रचना की दृष्टि से समस्त काल भेदों को दो वर्गों में विभक्त किया गया है। (क) मौलिक काल (ख) संयुक्त काल। अंगिका और भोजपुरी को भी कालभेदों के उपर्युक्त दो वर्ग हैं। मूल धातु में प्रत्यय के संयोग से मौलिक काल के रूप बनते हैं : यथा—

अंगिका—बें करतै; भोजपुरी—ऊ करी (वह करेगा)।
ऊ, हौ, गेलै; ,, ऊ, हऊ गइल (वह गया)।

कृदन्त में सहायक क्रिया के योग से संयुक्त काल के रुप बनते हैं : यथा—

अंगिका—ऊ, हौ जाय छै; भोजपुरी—ऊ जाइत बाड़े बाटे (वह जाता है)।
,, तोहें खाय छें; तू खाइत बाड़ऽ (तुम खाते हो)।

यहाँ तुलनात्मक अध्ययन के लिए अंगिका और भोजपुरी के मौलिक और सयुक्त कालों की तालिका प्रस्तुत की जा रही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मौलिककाल

अंगिका	भोजपुरी	हिन्दी
सामान्यभूत : हम्में करलियै	हम करली	मैंने किया
भूत संकेतार्थक : वें करतियै	ऊ करत	वह करता
सामान्य वर्त्तमान : हम्में छियै, छी,	हम बानी	मैं हूं
सामान्य भविष्यत् : तोहें करबे	तू करबऽ	तुम करोगे
सम्भाव्य भविष्यत् : (जों) ऊ करें	(जो) ऊ करी	(यदि) वह करे
प्रत्यक्ष विधि : तोहें करें	तू कर	तुम करो
परोक्ष विधि : तोहें करिहें	तू करिहऽ	तुम करना
सा० वर्त्त० वें ने, वें करै, जाय	ऊ करता, जाला	वह करता है, जाता है

ऊपर की तालिका में सामान्य वर्त्तमान काल के रूप के सम्बन्ध में ज्ञातव्य है कि अंगिका की सहायक क्रिया (छियै, छी) मुख्य क्रिया के रूप में प्रयुक्त होने से मौलिक काल का रूप बना है। किन्तु, 'करता', मूल धातु से मौलिक काल बना है। अंगिका में केवल पद्य में 'करै', 'जाय' (करता है, जाता है) से सामान्य वर्त्तमान काल की क्रिया बनती है। भोजपुरी में बोल-चाल तथा गद्य में 'करता', 'जाला' आदि का प्रयोग सामान्यतः प्रचलित है।

संयुक्तकाल

अंगिका	भोजपुरी	हिन्दी
सामान्य वर्त्तमान : हम्में जाय छियै	हम जाइत बानी	मैं जाता हूं।
पूर्ण वर्त्तमान : (आसन्नभूत) वें खैलें छै	ऊ खइले बाड़े	उसने खाया है।
पूर्णभूत : वें ने, वें करलें छेलै, रहै	ऊ कइले रहे	उसने किया था।
अपूर्णभूत : हम्में करै छेलियै	हम करइत रहली	मैं कर रहा था।
भूत संदेहार्थक : वें ने करलें होतै	ऊ कइले होइत	उसने किया होगा।
वर्त्तमान : वें, वें ने लिखतें होतै	ऊ लिखत होई	वह लिखता होगा।
भूत संकेतार्थक वें, वें ने करलें होतियै (हेतु हेतु मद्भूत)	ऊ कइले होइत	उसने किया होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्तमान संकेतार्थक वें, वें ने लिखतें ऊ लिखते होइत वह लिखता होता।
होतियें

भूत सम्भावनार्थक वें, वें ने करलं हुअं ऊ कइले होई उसने किया होगा।

अंगिका और भोजपुरी क्रिया रूपों की विशेषताएँ

क्रिया का स्तर

अंगिका में मध्यम पुरुष के क्रिया रूपों के तीन स्तर होते हैं। (क) लघुतासूचक, (ख) समतासूचक, (ग) आदरसूचक। अपने से छोटे के लिए लघुता-सूचक, बराबर के लिए समतासूचक तथा बड़े के लिए आदरसूचक क्रियाओं का प्रयोग होता है। यथा—

(क) लघुतासूचक : तोहें जैबे (तू जायगा)
(ख) समतासूचक : तोहें जैभं (तुम जावोगे)
(ग) आदरसूचक : आपनें जैबऽ (आप जायेंगे)

आत्मीयता की स्थिति में बड़ों के लिए भी समतासूचक क्रिया का प्रयोग होता है। भोजपुरी में भी क्रिया के उक्त तीन स्तर हैं : यथा—

(क) लघुता सूचक : तू जइबे (तू जायगा)
(ख) समता सूचक : तू जइबऽ (तुम जावोगे)
(ग) आदर सूचक : रउआँ जाइब (आप जायेंगे)

किन्तु, भोजपुरी व्याकरणों में दो ही स्तरों का उल्लेख है। लघुतासूचक 'तू जइबे' क्रिया-रूप का बहुत कम प्रयोग है। समतामूलक क्रिया का अपने से छोटे और बड़े आत्मीयजनों के लिए भी प्रयोग होता है।

अंगिका और भोजपुरी में भी अन्य पुरुष में क्रिया के दो स्तर होते हैं—लघुतासूचक और आदरसूचक।

	अंगिका	भोजपुरी	
लघुतासूचक :	ऊ जैतै	ऊ जाई	वह जायगा
आदर सूचक :	हुनी जैतथिन	उहाँका जाइब	वे जायेंगे

अंगिका और भोजपुरी में उत्तम पुरुष क्रिया का एक ही सामान्य स्तर होता है : यथा—

अंगिका	भोजपुरी	
हम्में जैबऽ	हम जाइब	मैं जाऊँगा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञातव्य है कि भोजपुरी में क्रिया के स्तर केवल कर्ता तक ही सीमित हैं, किन्तु, अंगिका में कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, सम्बन्ध, और अधिकरण कारकों के अनुसार पूर्वोक्त स्तरों पर क्रिया के रूप बनते हैं। आगे 'क्रिया का सम्बन्ध' शीर्षक के अन्तर्गत इस पर प्रकाश डाला जायगा।

क्रिया और वचन

अंगिका के क्रिया-रूपों पर वचन का प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् एकवचन और बहुवचन में क्रिया के रूप समान रहते हैं। यथा—

एकवचन	बहु वचन
लड़का गेलै	लड़कासिनी गेलै

भोजपुरी में भी क्रिया-रूपों पर वचन का प्रभाव नहीं पड़ता। यथा—

एकवचन	बहु वचन
लइका गइल	लइकासभ गइल;

कुछ लोग भ्रमवश आदर-सूचक रूपों को बहुवचन रूप मानते हैं।

क्रिया और लिंग

भोजपुरी में लिंग के अनुसार क्रिया के रूप बदलते हैं : यथा—

लइका जाता	लइकी जातिया

किन्तु, अंगिका में लड़का जाय छै, लड़की जाय छै, राम गेलै, सीता गेलै क्रिया के रुप प्रयुक्त होते हैं।

अंगिका में कुछ ही स्थितियों में लिंग के अनुसार क्रिया-रूपों में परिवर्त्तन होते हैं : यथा—

(क) आत्मीयता की स्थिति में अर्थात् कर्त्ता उत्तम पुरुष का सम्बन्धी होने पर सामान्यभूतकालिक क्रिया स्त्रीलिंग कर्त्ता के अनुसार होगी : यथा—

हमरी बेटी गेली।

मध्यम पुरुष या अन्य पुरुष का सम्बन्धी होने से क्रिया के रूप पर लिंग का प्रभाव नहीं होता : यथा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओकरी बेटी गेलैं, ओकरऽ बेटा गेलैं।
तोर ही बेटी गेलैं, ओकरऽ बेटा गेलैं।

पूर्णभूत, अपूर्णभूत तथा तात्कालिक वर्त्तमान कालों में स्त्रीलिंग में क्रिया के रूप बदलते हैं : यथा—

तोर ही बेटी गेली छौ। ओकरी बेटी जाय रहली छैं। तोर ही बेटी जाय रहली छौ। हमरी बेटी जाय रहली छैं।

क्रिया का सम्बन्ध

खड़ी बोली हिन्दी में काल, रीति (Mood), पुरुष लिंग और वचन के अनुसार क्रिया के विविध रूपों की रचना होती है और कर्त्ता तथा कर्म से ही क्रिया प्रभावित होती है, अर्थात् क्रिया के रूप-विधान में कर्त्ता और कर्म पर ही विचार किया जाता है; किन्तु, अंगिका की यह विशेषता है कि इसमें कर्त्ता और कर्म के अतिरिक्त अन्य कारक-भेदों से भी क्रिया के रूप प्रभावित होते हैं। इस प्रकार सभी कारकों से क्रिया का सम्बन्ध हो जाता है। भोजपुरी में इस प्रकार के प्रयोग अप्राप्त हैं। सम्बन्ध की दृष्टि से भोजपुरी क्रिया का रूप-विधान भी खड़ी बोली के समकक्ष है। यहाँ कुछ उदाहरणों द्वारा इसे स्पष्ट किया जा रहा है—

खड़ी बोली का एक वाक्य है—'बेटा गया'। यहाँ 'बेटा' कर्त्ता के साथ 'जाना' क्रिया का सामान्य भूतकालिक रूप 'गया' है। भूतकाल के इस भेद में खड़ी बोली में सर्वत्र, किसी भी परिवेश में 'गया' रूप ही होगा। भोजपुरी में 'बेटा गया' का 'बेटा गइल' रूप होगा। किन्तु, अंगिका में वाक्य का कर्त्ता 'बेटा' के पूर्व सम्बन्ध कारक का योग होने पर तदनुसार क्रिया 'गेलैं' का रूप परिवर्तित हो जायगा जैसा कि तुलनात्मक तालिका में द्रष्टव्य है—

सामान्य भूतकाल

अंगिका	भोजपुरी	खड़ी बोली
बेटा गेलैं	बेटा गइल	बेटा गया
अ०पु०लघुता सूचक ओकरऽ बेटा गेलैं	ओकर बेटा गइल	उसका बेटा गया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंगिका		भोजपुरी		खड़ी बोली	
आदर सूचक	हुनकऽ बेटा गेल्हैन	उनकर	,, ,,	उनका	,, ,,
म-पु०लघु०सू०	तोरहऽ बेटा गेलौ	तोहर	,, ,,	तेरा	,, ,,
,, समतासू०	तोरहऽ बेटा गेल्हौं, गेल्हौन	तोहार	,, ,,	तुम्हारा	,, ,,
,, आदर सू०	आपनेरऽ बेटा गेलऽ	राउर	,, ,,	आपका	
उ० पु० —	हमरऽ बेटा गेलऽ	हमार	,, ,,	मेरा	,, ,,

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि खड़ी बोली के रूप 'गया' तथा भोजपुरी रुप 'गइल' में कोई परिवर्त्तन नहीं हुआ; किन्तु, अंगिका में अन्य पुरुष, मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष कर्त्ता का सम्बन्ध होने पर क्रमशः -ऐ, -हैन, -औ, -हौं, -हौंन, -अऽ, प्रत्ययों के योग से क्रिया के गेलै, गेलौ, गेल्हैन, गेल्हौं, गेल्हौंन तथा गेलऽ कुल छह रुप सिद्ध हुए।

इसी प्रकार वर्त्तमान और भविष्यत् काल के क्रिया-रुपों को भी देखा जा सकता है :—

सामान्य वर्त्तमान

	अंगिका	भोजपुरी	खड़ी बोली
	बेटा जाय छै	बेटा जाइत बा	बेटा जाता है
अन्यपुरुष लघुतासू०	ओकरऽ बेटा जाय छै	ओकर बेटा ,,	उसका बेटा ,,
,, आदर सू०	हुनकऽ बेटा जाय छैन,छैन्ह	उनकर बेटा ,,	उनका बेटा ,,
मध्यमपु०लघुतासू०	तोरहऽ बेटा जाय छौ	तोर बेटा ,,	तेरा बेटा ,,
,, समता सू०	तोरहऽ बेटा जायछौं, छौन्ह	तोहार बेटा ,,	तुम्हारा बेटा ,,
,, आदर सू०	आपने ऽ बेटा जाय छ	राउर बेटा ,,	आपका बेटा ,,
उत्तम पु० सामान्य	हमरऽ बेटा जाय छ	हमार बेटा ,,	आपका बेटा ,,

सामान्य भविष्यत्

अंगिका	भोजपुरी	खड़ी बोली
बेटा जैतै	बेटा जाई	बेटा जायगा
अन्यपु०लघु तासू० ओकरऽ बेटा जैतै	ओकर बेटा ,,	उसका बेटा ,,
,, आदर सू० हुनकऽ बेटा जैथैन	उनकर बेटा ,,	उनका बेटा ,,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंगिका	भोजपुरी	खड़ी बोली
मध्यमपु०लघुता ,, तोरहऽ बेटा जैतौ	तोर बेटा ,,	तेरा बेटा ,,
,, समता ,, तोरहऽ बेटा जैथौं,जैथौंन्	तोहार बेटा ,,	तुम्हारा बेटा ,,
,, आदर ,, आपनेरऽ बेटा जैतऽ	राउर बेटा ,,	आपका बेटा ,,
उत्तम पु० सामान्य हमरऽ बेटा जैतैऽ	हमार बेटा ,,	मेरा बेटा ,,

उक्त तालिकाओं में अंगिका के कर्त्ता कारक के पुरुषों और कोटिओं में परिवर्त्तन के फलस्वरुप घटित क्रिया के रुप-भेदों को दरसाया गया। अंगिका की यह विशेषता है कि इसी प्रकार कर्म, करण, सम्प्रदान, सम्बन्ध और अधिकरण कारकों के भी पुरुषों और स्तरों के परिवर्त्तन से क्रिया के रूप प्रभावित होते हैं. कुछ उदाहरणों द्वारा इसे स्पष्ट करना उचित होगा।

कर्मकारक के पुरुष और स्तर के अनुसार क्रिया के रूप

सामान्य भविष्यत्

अंगिका	भोजपुरी	खड़ी बोली
अ०पु०लघुतासू०(कर्म)हम्मेंऽ ओकरा देखबैं	हम ओकरा देखब	मैं उसको देखूंगा
,, आदर ,, ,,	,, हुनका देखबैन	,, उन्हुकरा ,, ,, उनको ,,
म०पु०लघुता ,, ,,	,, तोरहा देखबौ	,, तोरा ,, ,, तुझको ,,
,, समता ,, ,,	,, तोरहा देखबौं,बौंन	,, तोहरा ,, ,, तुमको ,,
,, आदर ,, ,,	,, आपने कऽ देखबऽ	,, रावाँ के ,, ,, आपको ,,

करणकारक के पुरुष और स्तर के अनुसार क्रिया के रूप

सामान्य भविष्यत्

अंगिका	भोजपुरी	खड़ी बोली
अ० पु० लं० सू० करण वें ओकरा सें पढ़तैं	ऊ ओकरा से पढ़ी	वह उससे पढ़ेगा
,, आदर ,, ,, वें हुनका सें पढ़थैन	ऊ उन्हुकरा से ,,	वह उनसे ,,
म०पु० ल० ,, ,, वें तोरहा सें पढ़तौ	ऊ तोरा से ,,	वह तुझसे ,,
,, समता ,, ,, वें तोरहा सें पढ़थौं	ऊ तोहरा सें ,,	वह तुमसे ,,
,, आदर ,, ,, वें आपने सें पढ़तऽ	ऊ रावाँ से ,,	वह आपसे ,,
उ०पु०सामान्य ,, ,, वें हमरा सें पढ़तऽ	ऊ हमसे, हमरा से ,,	वह मुझसे ,,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि अंगिका में कर्त्ता एक रहने पर भी कर्म और करण के पुरुष और स्तर में परिवर्त्तन होने से क्रिया के रूपों में भी अन्तर हो गया; फिर भी, कर्त्ता से क्रियां पूर्ण स्वतंत्र नहीं हैं। द्रष्टव्य है कि कर्मकारक के उदाहरण में उत्तम पुरुष कर्त्ता है, इसलिए धातु में -वे,- भेन,- बौ,- भौं - भौन औरबऽ प्रत्ययों के योग से क्रिया सम्पन्न हुई है, तथा करण कारक के उदाहरण में अन्य पुरुष कर्त्ता के लिए—तैं, —थैन, —तौं, —थौं, -थौंन, और —तऽ, के योग से क्रिया के रूप बने हैं। जहाँ अंगिका में परिवर्तित परिवेश में क्रिया के रूप परिवर्तित हुए वहीं भोजपुरी और खड़ी बोली में क्रिया के रूपों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

अंगिका में सम्प्रदान, सम्बन्ध और अधिकरण के अनुसार भी इस प्रकार क्रिया-रूपों में परिवर्त्तन होते हैं जिसकी विस्तृत चर्चा यहाँ आवश्यक नहीं है, केवल भोजपुरी और अंगिका की क्रियाओं के रूप-विधान का अन्तर दिखलाना अभीष्ट था। भोजपुरी और अंगिका दोनों भाषाओं का क्षेत्र बहुत विस्तृत होने के कारण सर्वनाम तथा क्रिया के रूपों में वैविध्य का बाहुल्य है, सभी रूपों को एक साथ दिखाना सम्भव नहीं। ऐसी स्थिति में सामान्यतः अधिक प्रचलित रूपों को ही उद्धृत किया गया है।

अंगिका और भोजपुरी के कृदन्त

भाषा में क्रिया के बाद कृदन्त का महत्वपूर्ण स्थान है, अतः अंगिका और भोजपुरी कृदन्तों पर विचार किया जा रहा है। अंगिका तथा भोजपुरी में विकारी और अविकारी कृदन्तों के भेद इस प्रकार हैं-क्रियार्थक सज्ञा, वर्तमानकालिक कृदन्त, भूतकालिक कृदन्त कर्त्तृ वाचक संज्ञा, पूर्वकालिक कृदन्त, तात्कालिक कृदन्त, अपूर्णक्रिया द्योतक कृदन्त तथा पूर्णकालिक क्रियाद्योतक कृदन्त।

क्रियार्थक संज्ञा

धातु में 'ना' प्रत्यय के योग से खड़ी बोली की मूल क्रिया (infinitive) बनायी जाती है। यथा कर्+ना = करना। इसीका क्रियार्थक में भी प्रयोग होता है। भोजपुरी, मगही, मैथिली, आदि में 'ब' प्रत्यय के योग से क्रियार्थक संज्ञा बनायी जाती है। अंगिका में यही—बऽ, वर्त्तुल हो जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'रमायन 'पढ़बऽ' अच्छा काम छेकै। भोजपुरी में यही 'रमाएन पढ़ब निमन काम बा' होगा। किन्तु, भोजपुरी में क्रियार्थक संज्ञा के रूप में 'पढ़ब' का प्रयोग अब प्रायः लुप्त हो गया है। इसके स्थान पर भूतकालिक कृदन्त 'पढ़ल' का प्रयोग ही अधिक प्रचलित है, यथा, —रमाएन पढ़ल निमन काम बा। अंगिका में 'पढ़ल' के स्थान पर वर्तुल 'पढ़लऽ' भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग होता है : यथा—'रमायन पढ़ला सें ग्यान होय छै, यहाँ 'सें' परसर्ग लगने से 'पढ़लऽ' का 'पढ़ला' हो गया है। दोनों भाषाओं में 'ब' प्रत्यय से भविष्य काल की क्रिया बनती है।

अंगिका और भोजपुरी में धातु में 'अ' और 'ई' प्रत्यय लगाकर भी क्रियार्थक संज्ञा बनायी जाती है : यथा—बाल्+अ=बोल, बोल्+ई=बोली।।

अंगिका में कर्त्तव्य अथवा बाध्यता का बोध कराने के लिए धातु में -ना प्रत्यय लगाकर भी क्रियार्थक संज्ञा बनायी जाती है : यथा—

जा+-ना=जाना, हमरा जाना छै (मुझको जाना है।)

पढ़्+-ना=पढ़ना, हमरा पढ़ना चहियऽ (मुझको पढ़ना चाहिए)।

भोजपुरी में इन वाक्यों को इस प्रकार लिखा जायगा—

हमरा जायके बा; हमरा पढ़े के चाही।

क्रियार्थक संज्ञा के 'जाना', 'पढ़ना' आदि रूपों से प्रतीत होता है कि इसमें 'भोजपुरी' की अपेक्षा 'अंगिका' खड़ी बोली के अधिक निकट है।

वर्त्तमान कालिक कृदन्तीय विशेषण

अंगिका धातु में—ता,- अन्ता तथा -तू और भोजपुरी धातु में -ता तथा त प्रत्ययों के योग से वर्त्तमानकालिक कृदन्तीय विशेषण बनाये जाते हैं : यथा—

अंगिका	भोजपुरी
चल्+ता=चलता घोड़ा	रम्+ता=रमता जोगी।
बह्+तू=बहतू पानी	चल्+त=चलत आदमी
कुद्+अन्ता=घोड़ा कुदन्ता भला	उड़्+त=उड़त चिरई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खड़ी बोली के प्रभाव से- ता का -ती भी हो जाता है : यथा—
अंगिका—चलती गाड़ी सें मत उतरें (चलती गाड़ी से मत उतरो।)
भोजपुरी—ऊ चलती गाड़ी से कूद गइल (वह चलती गाड़ी से कूद गया)।

भूतकालिक कृदन्तीय विशेषण

धातु के अन्त में-लऽ प्रत्यय लगाकर अंगिका के तथा-ल प्रत्यय लगाकर भोजपुरी के भूतकालिक कृदन्दीय विशेषण बनाये जाते हैं। वस्तुतः दोनों की सं०- त+अल् से उत्पत्ति है।

अंगिका की प्रवृत्ति के कारण इसमें 'लऽ' (वर्त्तुल) हो गया है।

यथा:—अंगिका- देखलऽ, मरलऽ, भोजपुरी-देखल, मरल। लऽ प्रत्यय लगने पर अंगिका शब्द का आदि दीर्घ ह्रस्व हो जाता है।

कर्मवाच्य रूप भोजपुरी में -आइल तथा अंगिका में ऐल के योग से बनता है; जैसे—भोजपुरी-पिटाइल, देखाइल -अंगिका-पिटैलऽ, देखैलऽ।

उक्त 'आइल' और ऐलऽ' की उत्पत्ति सं० त+आ+इल् से है। अंगिका में सभी लिंगरूप देखली, मरली, पिटैली और भोजपुरी में देखलि, मरलि पिटाइलि हैं।

कर्त्तृवाचक संज्ञा

धातु में -बैया तथा -वइया के योग से क्रमशः अंगिका और भोजपुरी कर्त्तृवाचक संज्ञा के रूप बनाये जाते हैं : यथा—अंगिका : देख्+-बैवा=देखबैया भोजपुरी : देख्+बइया=देखवइया

क्रिया के विकृत रूप में -वला, -वाला, तथा -हार प्रत्ययों के योग से भी भोजपुरी और अंगिका के कर्त्तृवाचक संज्ञा के रूप बनायें जाते हैं। अंगिका में -बला, -बाला का अधिक प्रयोग होता है। -हार प्रत्यय जुडने के पूर्व धातु में -न (अंगिका) और-नि (भोजपुरी) का योग होता है।

अंगिका—देख>देखै+बला, बाला=देखैबला, देखैवाला :
देखैवाली (स्त्री०)

जा>जाय + बला=जायबला
कर>करन+हार=करनहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी देख > देखे + वला, वाला = देखेवला, देखेवाली (स्त्री०)
कर > करनि + हार = करनिहार

कर्तृवाचक संज्ञा का विशेषण रूप में भी प्रयोग होता है : यथा—
अंगिका—देखबैया लोग, भोजपुरी—देखबइया लोग,

पूर्वकालिक कृदन्त

वाक्य में मुख्य क्रिया के पूर्व घटित व्यापार या क्रिया की समाप्ति का बोध कराने के लिए क्रिया विशेषण के रूप में पूर्वकालिक कृदन्त का प्रयोग होता है। इसे असमापिका अथवा पूर्वकालिक क्रिया भी कहा जाता है। अंगिका और भोजपुरी में पूर्वकालिक बनाने के नियम यहाँ उद्धृत किये जा रहे हैं—

(क) व्यंजनान्त धातु में ई, ई, कं लगाकर अंगिका के तथा इ, इ के लगाकर भोजपुरी के पूर्वकालिक कृदन्त बनाये जाते हैं : यथा—

अंगिका—देख + ई कं = देखी कं, ओकरा देखी कं राम हाँसलै।
काव्य, मुहावरों, कहावतों आदि में केवल 'देखी' 'करी' का भी प्रयोग होता है: तथा—दोसरा कं देखी जे हाँ सं ओकरा देखी दुनिया हाँसं :

भोजपुरी—देख् + इ के देखि के, ओकरा (ह्ओकरा) देखि के राम हाँसल।
भोजपुरी के काव्य, मुहावरों, कहावतों आदि में 'देखि', 'करि' का भी प्रयोग होता है: यथा—तानि करेज चलल मरदाना।

(ख) आकारान्त धातु में जहाँ अंगिका में -य कं, -बी कं लगाकर पूवकालिक कृदन्त बनते हैं वहाँ भोजपुरी में केवल के का योग होता है : यथा—

अंगिका—खा + य के = खाय कं, राम खाय के इसकुल गेलै।
आ + बी कं = आबीकं, ऊ आवी कं नहैलै।
जोजपुरी—खा + के = खाके, राम खा के इसकुल गइले।
आ + के = आके, ऊ आ के नहाइले।

इसी प्रकार अंगिका के ईकारान्त तथा ऊकारान्त धातु में -बी का योग होता है और एकारान्त धातु के ए का अं हो जाता है, किन्तु, भोजपुरी धातु में कोई परिवर्त्तन नहीं होता : यथा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंगिका —पी + वी कं = पीवीकं, पानी पावी कं जो
छू + वी कं = छूवी कं, कागच छूवी कं देख लियै
ले + कं = लंकं, रुपैया लंकं गेलै

भोजपुरी—पी + के = पीके, पानी पीके जा।
छू + के = छू के, कागच छूके देखलीं।
ले + के = लेके, रुपेआ लेके गइल।

कं के स्थान पर अंगिका करी कं तथा के के स्थान पर भोजपुरी करके का प्रयोग भी होता है : यथा—

अंगिका—जाय करी कं देखलियै।

भोजपुरी—जा करके देखलीं।

तात्कालिक कृदन्त

इस कृदन्त से मुख्य क्रिया के तत्काल पूर्वघटित व्यापार का बोध होता है। यह कृदन्त क्रिया विशेषण के रुप में प्रयुक्त होता है। धातु में थैं तथा -ते ही लगाकर क्रमशः अंगिका और भोजपुरी के तात्कालिक कृदन्त बनाये जाते हैं। अंगिका के थैं में तैं और ही के योग से महाप्राणत्व आ गया है।

अंगिका—दबाय दे थैं दरद छूटी गेलै।

भोजपुरी—दवाइ देते ही दरद छूटि गइल।

भोजपुरी में कभी-कभी ही का प्रयोग नहीं भी होता है।

अपूर्ण क्रिया द्योतक कृदन्त

यह मुख्य क्रिया के साथ होनेवाले व्यापार की अपूर्णता का द्योतक है। धातु में तैं और ते लगाकर क्रमशः अंगिका और भोजपुरी में इस कृदन्त के रुप सम्पन्न होते हैं :

द्विरुक्ति द्वारा भी इस कृदन्त का रुप बनाया जाता है : यथा—

अंगिका—ओकरा घरऽ सें निकलतें लाज लागै छै :

भोजपुरी—ओकरा घर से निकलते लाज लागता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्णक्रिया द्योतक कृदन्त

यह मुख्य क्रिया के साथ होनेवाला व्यापार की पूर्णता सूचित करता है। धातु में ले, ले, तथा ले लगा- कर क्रमशः अंगिका और भोजपुरी में यह कृदन्त बनाया जाता है। यथा—

अंगिका—ओकरा गेलें तीन घण्टा होलै।
लड़का किताब लेलें इसकुल गेलै।

भोजपुरी—ओकरा गइले तीन घण्टा भइल।
लइका किताब लेले इसकुल गइल।

ज्ञातव्य है कि कृदन्त और सहायक क्रिया के योग से संयुक्त काल के रूप सिद्ध होते हैं। पूणक्रियाद्योतक कृदन्त में सहायक क्रिया के योग से संयुक्त काल की रचना होती है : यथा—

अंगिका—वें खेलें छें (उसने खाया है)
वें खेलें छेलै (उसने खाया था)।

भोजपुरी—ऊ गइल बा (वह गया है)
ऊ गइल रहे (वह गयी थी)।

अव्यय

अंगिका और भोजपुरी में अव्यय मुख्यतः चार प्रकार के हैं—क्रिया-विशेषण, सम्बन्ध-सूचक, समुच्चय बोधक और विस्मयादि बोधक। यहाँ सभी पर विचार करना सम्भव नहीं है।

अतः सक्षिप्त तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

क्रिया विशेषण

अंगिका और भोजपुरी में क्रिया विशेषण चार प्रकार के हैं—

स्थान वाचक

अंगिका—याहाँ, (यहाँ, नहाँ), यैठियाँ, (नैठियाँ) आदि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी–येजाँ, इहाँ, उहाँ, इहवाँ, उहवाँ, जहवाँ, कहवाँ आदि।

काल वाचक

अंगिका—आय, काल, परसू, तरसू, एखनी, जखनी आदि।
भोजपुरी—आज, काल्हु, काल्हि, परसो, तरसो, अखनी आदि।

परिमाण वाचक

अंगिका—एतनाय, हेतना, ओतनाय, होतना, एत्त आदि।
भोजपुरी—अतना, हतना, कतना, एते, हेते, ओते, कते आदि।

भाववाचक अथवा रीतिवाचक

अंगिका—आस्तें-आस्तें, धीरँ-धीरँ, कलं-कलं, रूहूँ-रूहूँ आदि।
भोजपुरी—आहिस्ते-आहिस्ते, धीरे-धीरे, कले-कले, आदि।

समुच्चय बोधक

अंगिका—आरो, आरू, अरू, औरो, व, वो; या, अथबा आदि।
भोजपुरी—आ, अउरी, आउर, बाकिर, बाकी, मगर आदि।

सम्बन्ध बोधक

अंगिका—पर, ऊपर, तरे, तरँ, मांझें, लं, लेली, लेलीं आदि।
भोजपुरी—आगा, ऊपर, बिना, पीछा, तर, तरे, बीचे आदि।

विस्मयादि बोधक

अंगिका—आहा, अहा, बाह, वाह–वाह, खूभ आदि।
भोजपुरी—वाह, ओहो, खूब, बहुत खूब, चाबस आदि।

व्यंजना शक्ति की अभिवृद्धि के लिए मुहावरों और कहावतों का भाषा में अन्यतम स्थान है। पहेलियाँ भी भाषा की विलक्षण वृत्ति की द्योतिका हैं। अंगिका और भोजपुरी में उपर्युक्त सामग्री का विशाल भाण्डार है।

भाषा की चरम उपलब्धि का प्रतिफलन उसका नवनीतोपम साहित्य है। प्रसन्नता और गौरव की बात है कि अंगिका और भोजपुरी में उपलब्ध साहित्य, गुण को दृष्टि से, किसी भी विकसित भाषा के साहित्य के समस्तर पर रखा जा सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वस्तुतः अंगिका और भोजपुरी की ध्वनियाँ, प्रातिपादिक, प्रत्यय, अव्यय क्रिया आदि स्वतन्त्र अध्ययन के विषय हैं, छोटे-से भाषण में उपर्युक्त सभी अंगों के सम्यक् विवेचन एवं विश्लेषण सम्भव नहीं। कुछ भाषिक तत्त्वों का विश्लेषण कर दोनों की भाषिक प्रवृत्तियों को दरसाने का प्रयास मात्र किया गया है।

दोनों के तुलनात्मक अध्ययन के फलस्वरूप हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अंगिका और भोजपुरी में आन्तरिक एकता है तथा भेदक तत्त्वों की अपेक्षा समानताएं ही अधिक हैं।

अपने उद्घाटन समारोह में ही अंगिका को प्रतिष्ठा देकर भोजपुरी अकादमी ने अपनी अनुपम उदारता का परिचय दिया है। अतः मैं समस्त अंगिका-भाषी समुदाय की ओर से अकादमी के प्रति आभार व्यक्त करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

शुभमस्तु।

—परमानन्द पाण्डेय

❀

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुद्रक : जयदुर्गा प्रेस, नयाटोला, पटना-८००००४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

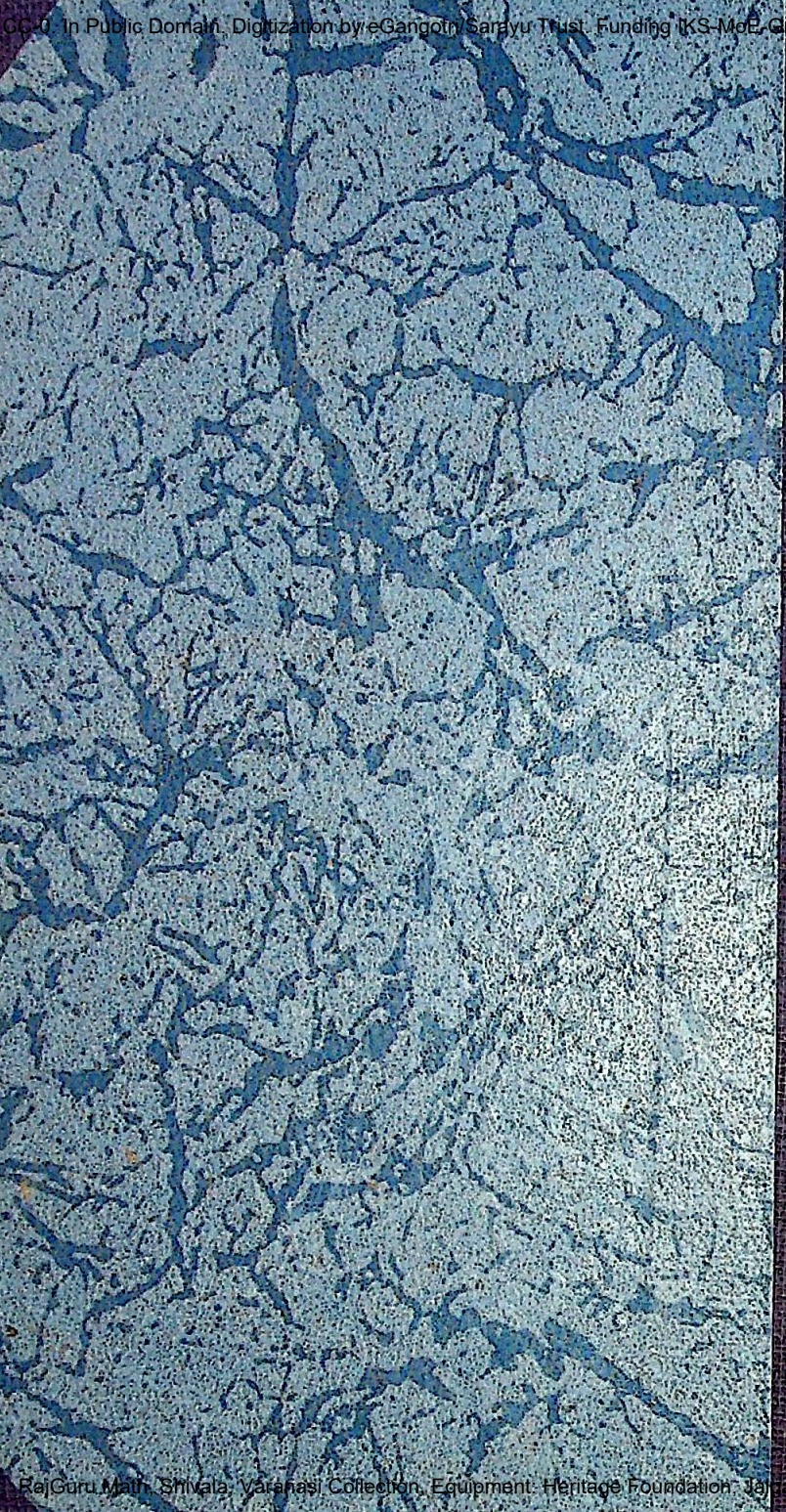

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur.